MARJ-02

वर्धमान महावीर खुला विश्वविद्यालय, कोटा

आधुनिक राजस्थानी पद्य साहित्य

MARJ-02 ISBN - 13/978-81-8496-144-7

MARJ-02

वर्धमान महावीर खुला विश्वविद्यालय, कोटा

आधुनिक राजस्थानी पद्य साहित्य

पाठ्यक्रम निर्माण समिति

अध्यक्ष

प्रोफेसर (डॉ.) नरेश दाधीच
कुलपति
वर्धमान महावीर खुला विश्वविद्यालय, कोटा

संयोजक/समन्वयक एवं सदस्य

प्रो. कल्याणसिंह शेखावत
परामर्शदाता, राजस्थानी कार्यक्रम
वर्धमान महावीर खुला विश्वविद्यालय, कोटा

सदस्य

1. **डॉ. हीरालाल माहेश्वरी**
   पूर्व अध्यक्ष, हिन्दी विभाग
   राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर
2. **डॉ. रघुराजसिंह हाडा**
   पूर्व प्रधानाचार्य, उच्च माध्यमिक विद्यालय (राजस्थान सरकार)
   झालावाड़ (राजस्थान)
3. **डॉ. गोरधनसिंह शेखावत**
   निदेशक, श्री कृष्ण सत्संग बालिका महाविद्यालय
   सीकर (राजस्थान)
4. **डॉ. अर्जुनदेव चारण**
   अध्यक्ष, राजस्थानी विभाग
   जय नारायण व्यास विश्वविद्यालय, जोधपुर

सम्पादन एवं पाठ्यक्रम–लेखन

सम्पादक
प्रो. कल्याणसिंह शेखावत
परामर्शदाता, राजस्थानी कार्यक्रम
वर्धमान महावीर खुला विश्वविद्यालय, कोटा

लेखक

डॉ. बद्रीप्रसाद पंचोली — **इकाई 11**
पूर्व विभागाध्यक्ष, हिन्दी
राजकीय महाविद्यालय, अजमेर (राज.)

डॉ. एम.एम.एस. माथुर — **इकाई 1,2,5**
पूर्व सह–आचार्य, राजस्थानी विभाग
जय नारायण व्यास विश्वविद्यालय, जोधपुर

डॉ. भगवती लाल व्यास — **इकाई 10**
प्राचार्य, आर.एन.टी.
शिक्षण–प्रशिक्षण महाविद्यालय
कपासन, चित्तौड़गढ़ (राज.)

डॉ. मंगत बादल — **इकाई 3, 4**
पूर्व विभागाध्याक्ष, हिंदी विभाग (सेवानि.)
शहीद भगतसिंह स्नातकोत्तर महाविद्यालय
रायसिंह, श्रीगंगानगर (राज.)

डॉ. मदन सोनी — **इकाई 12**
व्याख्याता हिंदी
ब.ज.सी. रामपुरिया जैन महाविद्यालय, बीकानेर (राज)

डॉ. लक्ष्मीकांत व्यास — **इकाई 6, 7**
व्याख्याता एवं प्रभारी राजस्थानी
राजकीय महाविद्यालय, अजमेर (राज.)

डॉ. उषाकंवर राठौड़ — **इकाई 8,9**
राजस्थानी शोध संस्थान, चौपासनी, जोधपुर (राज)

अकादमिक एवं प्रशासनिक व्यवस्था

प्रो. (डॉ.) नरेश दाधीच	**प्रो. (डॉ.) अनाम जेटली**	**योगेन्द्र गोयल**
कुलपति	निदेशक	प्रभारी अधिकारी
वर्धमान महावीर खुला विश्वविद्यालय, कोटा	**संकाय विभाग**	**पाठ्य सामग्री उत्पादन एवं वितरण विभाग**

पाठ्यक्रम उत्पादन

योगेन्द्र गोयल
सहायक उत्पादन अधिकारी
वर्धमान महावीर खुला विश्वविद्यालय, कोटा

उत्पादन : नवम्बर 2009 ISBN - 13/978-81-8496-144-7

सर्वाधिकार सुरक्षित : इस सामग्री के किसी भी अंश की वर्धमान महावीर खुला विश्वविद्यालय, कोटा की लिखित अनुमति के बिना किसी भी रूप में 'मिमियाग्राफी' (चक्रमुद्रण) के द्वारा या अन्यथा पुन: प्रस्तुत करने की अनुमति नहीं है।

कुलसचिव, व.म.खु.विश्वविद्यालय, कोटा द्वारा वर्धमान महावीर खुला विश्वविद्यालय, कोटा के लिये मुद्रित एवं प्रकाशित।
दी डायमण्ड प्रिन्टिंग प्रेस, जयपुर द्वारा 500 प्रतियां मुद्रित।

वर्धमान महावीर खुला विश्वविद्यालय, कोटा

अनुक्रमणिका

आधुनिक राजस्थानी पद्य साहित्य

इकाई सं.	इकाई का नाम	पृष्ठ संख्या
1	राजस्थानी काव्य री प्राचीन परम्परा	1
2	मध्यकालीन राजस्थानी काव्य कालगत प्रव्रतियां, काव्य धारावां अर विधावां	21
3	आधुनिक राजस्थानी काव्य : उद्‌भव अर विकास	40
4	राजस्थानी काव्य में रास्ट्रीय अर मानवतावादी चेतना	53
5	आधुनिक राजस्थानी काव्य प्रमुख कवि : चंद्रसिंह	67
6.	प्रमुख कवि – गणेशलाल व्यास 'उस्ताद'	83
7	प्रमुख कवि – सत्यप्रकाश जोशी	98
8	प्रमुख कवि – नारायणसिंह भाटी	117
9	प्रमुख कवि – रेवतदान चारण	159
10	प्रमुख कवि – कन्हैयालाल सेठिया	172
11.	प्रमुख कवि – रघुराजसिंह हाडा	184
12	प्रमुख कवि – मेघराज 'मुकुल'	194

[k.M ifjp; %&

'आधुनिक राजस्थानी पद्य साहित्य' री सांगोपांग जाणकारी करावण सारु 12 इकाईयां में आ विगत मांडी गई।

bdkbZ 1- ईं इकाई में राजस्थानी भासा काव्य री प्राचीन परम्परा नै दरसाई गई है । राजस्थानी भासा में सबसूं पैली काव्य रो सिरजण हुयौ अर पछै गद्य रो विकास हुयौ। ओ जूनो काव्य न्यारी–न्यारी विधावां अर सैलियां में लिखयौड़े मिळै। इण इकाई में राजस्थानी भासा रा प्राचीन ग्रंथां री सार रूप में जाणकारी देवण रै साथै ही बां ग्रंथां रा रचणांकारां रो परिचय भी दियौ गयौ है ।

इकाई 2. आ इकाई मध्यकालीन राजस्थानी भासा रा प्रमुख काव्य, कालगत प्रव्रतियां, काव्य धारावां अर प्रमुख विधावां री जाणकारी करावै। राजस्थानी साहित्य रो मध्यकाल 'डिंगल काव्य' री सम्रद्ध परम्परा खातर ओळखीजै। डिंगल काव्य सैली री भांत पिंगल काव्य सैली भी इण जुग में चावी हुई । ओ कालखण्ड भगती रचनावां रै कारण प्रसिद्ध हुयौ। इण इकाई में मध्यकाल रा प्रमुख कवियां अर उणांरी पोथ्यां री विगत भी मंडी है।

bdkbZ 3- इण इकाई में आधुनिक राजस्थानी काव्य रा उद्भव अर विकास पर चिंतन–मनन हुयौ है। सन् 1850 सूं आधुनिक काल री सरूआत मानीजै । इण जुग में राजस्थानी कविता भावां रो आसरो छोड़ विचार प्रधान लेखन कानी मुड़ी। छंदां अर अलंकारां रा बंधनां सूं आधुनिक काव्य अळगो हुयौ अर भाव, भासा, सैली अर सिल्प रा नया नया प्रयोग हूवण लागा।

bdkbZ 4- ईं इकाई में आधुनिक राजस्थानी काव्य री मूळ चेतना देसभगती अर मानवतावादी है। देस खातर हैत अर बलिदान रै भावां भरी राजस्थानी कविता इण समै खूब लिखीजी। इणरै साथै ही सगळी मानवता रो हरख, उमाव अर पीड़ा राजस्थानी कविता री चेतना सूं जुड़ी। इण कारण उदार मानवी दीठ रो विगसाव हुयौ अर मोकळी कविता लिखीजी।

bdkbZ 5- आ इकाई आधुनिक राजस्थानी काव्य रा प्रमुख कवेसर चंद्रसिंह रा जीवन अर काव्य सिरजण री निरख परख करती दीसै। आज री राजस्थानी कविता नै चंद्रसिंह 'बिरकाळी' नुवै रुप में ढाली है। 'बिरकाळी' चंद्रसिंह जी री जलमभोग ही। चंद्रसिंह री दो पोथ्यां 'बादळी' अर 'लू' प्रकृति अर छायावादी काव्य रै रूप में घणो जस कमायौ । हिन्दी जगत भी चंद्रसिंह जी रा काव्य सिरजण नै मान–सम्मान दियौ।

bdkbZ 6- आधुनिक राजस्थानी काव्य रा नामी कवि हा जनकवि गणेशलाल व्यास 'उस्ताद'– जिणा री जनवाणी लोक चावी हुई। जनकवि 'उस्ताद' जनजागरण रो लूंठो काम कर्‌यौ। बै प्रगतिसील विचारां रा हा–इण खातर गरीब रा हिमायती बण्या, किसान अर मजदूर री वेदना नै कविता रै आसरै जन जन तक पुगाई। आ इकाई गणेशलाल व्यास रा जीवनी अर सिरजण नै सबद रूप देवै।

bdkbZ 7- ई इकाई में आधुनिक राजस्थानी काव्य रा गीतकार सत्यप्रकाश जोशी री लेखनी सूं रूबरू करायौ गयौ है। सत्यप्रकाश जोशी खुद रा काव्य नै गीतां में ढाळ्या अर खुद री ओजस्वी वाणी सूं वां गीतां नै काळजयी बणा दिया। उणारो खण्ड काव्य 'राधा' जुद्ध विरोधी–पैली राजस्थानी कविता मानी जावै। इणी तरै 'बोलभारमली', 'गांगेय' अर 'लस्कर ना थमै'–सत्यप्रकाश जोशी री नामी काव्य पोथ्यां है।

bdkbZ 8- डॉ. नारायणसिंह भाटी खुद री भासा अर काव्य सैली रै पाण आज री राजस्थानी कविता में एक अलग जागां बणाई। 'डिंगळ' री जूनी भासा सैली नै आधार बणा'र आप अमोली पोथ्यां री सिरजणा करी। देस अर स्वामी भगत वीरां री चरित गाथावां आपरै काव्य रो आधार बणी जिणामें– 'दुर्गादास' अर 'सैतानसिंह' कवितावां घणी प्रसिद्ध हुई। इण इकाई में नारायणसिंह भाटी रा योगदान नै भी दरसायौ गयौ है।

bdkbZ 9- आज री राजस्थानी कविता रा मांझी रेवतदान चारण प्रगतिसील कवि हा। उणारी रचयौड़ी 'इन्कलाब री आंधी' अर 'लिछमी' कवितावां–जुग बदलाव री कविता मानीजै। इण इकाई में झुंझारू कवि रेवतदान री जीवण जातरा रै साथै ही उणारै सिरजण अर योगदान पर भी मंथन हुयौ है।

bdkb 10- आधुनिक राजस्थानी काव्य रा आगीवाण कवियां में कन्हैयालाल सेठिया रो नाम घणै आदर सूं लियौ जावै। गाँधीवादी चिंतन में सामी राख'र काव्य लेखन करणवाळा सेठिया जी खुद री कलम सूं मोकळी नामी कवितावां री सिरजणा करी है जिणामें 'कुण जमीन रो धणी? 'पातल अर पीथळ' 'बे कुण गमग्या, बे कुण गमग्या जैड़ी कवितावां गिणावणजोग है। ईं इकाई में कविवर कन्हैयालाल सेठिया रा जीवनवृत्त अर रचना संसार पर समीक्षात्मक अध्ययन हुयौ है।

bdkb 11- रघुराज सिंह आधुनिक राजस्थानी भासा रो सिरमोर कवि है। हाड़ौती गीतां री महक अर गीत छंद रो आधार रघुराजसिंहजी रा गीतिकाव्य नै अलग पिछाण दी है। देसभगती, सिणगार, आज रो जथारथ अर प्रकृति कवेसर रघुराजसिंह हाडा री कविता री विसेसतावां है। ईं इकाई में कवि रा जीवन अर सिरजण री जाणकारी दी गई है।

bdkb 12- ईं इकाई में आधुनिक राजस्थानी काव्य रा चावा कवि मेघराज मुकुल बाबत गहन चिंतन हुयौ है। मेघराज 'मुकुल' राजस्थान रा वीरां अर वीरांगनावां री कीरत कथावां नै खुद रै काव्य रो आधार बणा'र गीतिकाव्य रो रूप दियौ। इण धरा री बलिदानी गौरव गाथावां कवेसर मेघराज 'मुकुल' री ओजस्वी वाणी में कदैई 'हाडी राणी' तो कदैई 'कोडमदे' बण आखै जगत में गुंजायमान हुई। इण कवि रै पाण आज री राजस्थानी कविता जन–जन रै कंठां रो हार बणी।

bdkbZ& 1

jktLFkkuh dkO; jh çkphu ijEijk

bdkbZ jk eMk.k

1.0 उद्देस्य

1.1 प्रस्तावना : राजस्थानी साहित्य रो काल विभाजन : सामान्य परिचै

1.2 प्राचीन राजस्थानी काव्य

(क) अभिप्राय

(ख) प्रेरणा स्रोत

1.3 प्राचीन राजस्थानी काव्य री परम्परा : विगत

(क) प्रमुख कवि अर रचनावां

(ख) प्रमुख काव्य–रूप

(ग) प्रमुख काव्य सैलियां

(घ) प्रमुख प्रव्रत्तियां

1.4 प्राचीन राजस्थानी काव्य : भावी साहित्य–सिरजण री रुपरेखा

1.5 उपसंहार (इकाई रो सार)

1.6 अभ्यास सारू सवाल

1.7 संदर्भ–ग्रंथां री पानड़ी

1-0 míL;

इण इकाई रो उद्देस्य राजस्थानी साहित्य रै विकास री जाणकारी देवता थकां राजस्थानी रै प्राचीन साहित री ओळखांण करावणौ है। इण भांत इण इकाई में विद्यार्थी नीचै लिखी बातां नैं साम्भळण में समरथ हुवैला–

(अ) राजस्थानी रै प्राचीन साहित्य रो अरथ अर विकास रा कारण समझैला ।

(आ) प्राचीन राजस्थानी साहित्य रा खास कवि अर उणां री महताऊ रचनावां री जाणकारी करैला।

(इ) प्राचीन राजस्थानी काव्य सैलियां री ओळखांण हुवैला ।

(ई) प्राचीन राजस्थानी काव्य रा खास–खास काव्य रूप अर इण काव्य री विसेसतावां जाणैला।

1-1 çLrkouk % jktLFkkuh lkfgR; jk dky foHkktu& lkekU; ifjp

राजस्थानी साहित्य री परम्परा घणी जूनी अर लाम्बी है। जैन जतियां रै संघां, चौमासै रै औसर माथै प्रसारित विग्यप्ति–पत्र इण परम्परा रा सरुआती अैहळांण हैं। राजा–महाराजां, सेठ–साहूकारां री लिखाईजी प्रसस्तियां, पट्टां–परवानां रो सिरजण राजस्थानी–साहित्य रै विकास रै आगै रो पाउण्डौ कैईजेला। इणी सामग्री रै पांण विद्वान अध्ययन री सुविधा सारू राजस्थानी–साहित्य रै विकास नैं न्यारै–न्यारै कालां में विभाजित कर्यौ है। कुछ विद्वान डिंगल नैं राजस्थानी भासा मानता थकां उण री

विगत कैयी तौ बीजा विद्वान राजस्थानी भासा रै विकास सागै उणमें रचित साहित्य री स्थिति नैं आधार मान'र राजस्थानी साहित्य रै विकास रो वरगीकरण कर्‌यौ। पैलै वरग में डॉ. अेल.पी. टैसीटॉरी, श्री गजराज ओझा, डॉ. मोतीलाल मेनारिया, डॉ. हीरालाल महेश्वरी, डॉ. जगदीशप्रसाद श्रीवास्तव रा काल–विभाजन आवै अर बीजै वरग में प्रो. नरोत्तमदास स्वामी, डॉ. उदयसिंघ भटनागर, श्री सीताराम लालस, डॉ. पुरुषोत्तमलाल मेनारिया, डॉ. शम्भूसिंघ मनोहर, डॉ. कल्याणसिंघ सेखावत रा वरगीकरण उल्लेख जोग कैया जा सकै। आं में सूं कुछेक वरगीकरणा रो वरणाव अठै करां–

डॉ. अेल.पी. टैसीटरी डिंगल नैं आधार मानता हुया इणरै साहित्य रै विकास नैं दोय हिस्सा में बांटै–

(अ) प्राचीन डिंगल काल (1300 ई. सूं 1600 ई.)

(आ) अर्वाचीन डिंगल (1601 ई. सूं आधुनिक समै तांई)

डॉ. मोतीलाल मेनारिया किणी सींव तांई हिन्दी–साहित्य री विगत नैं निजर में राखता हुया राजस्थानी भासा अर साहित्य री विगत नैं आं च्यार वरगां में बांटै–

(अ) प्रारंभिक काल (वि.सं. 1045–1460)

(आ) पूर्व मध्यकाल (वि.सं. 1460–1700)

(इ) उत्तर मध्यकाल (वि.सं. 1700–1900)

(ई) आधुनिक काल (वि. 1900–2005 तांई)।

प्रो. नरोत्तमदास स्वामी राजस्थानी साहित्य रै विकास री आं विगत नैं तीन चरणां में बतळावै–

(अ) प्राचीनकाल – वि. 1150–1550

(आ) मध्यकाल– वि. 1550–1875

(इ) अर्वाचीन काल– वि. 1875 सूं अजै लग

पदमश्री सीताराम लालस राजस्थानी साहित्य रै विकास नैं आं तीन कालां में बांटै–

(अ) आदिकाल– वि.सं. 800 सूं 1460

(आ) मध्यकाल– वि.सं. 1460 सूं 1900

(इ) आधुनिक काल– वि.सं. 1900 सूं वर्तमान काल तांई।

लगै–टगै इणी समै नैं समेटता प्रो. कल्याणसिंघ सेखावत आपरै वरगीकरण नैं कीं नुवै रूप में यूं प्रस्तुत कर्‌यौ है–

1. आरंभिक काल
   - (अ) अभिलेखीय काल– वि.री 8वीं सदी सूं 12वीं सदी लग,
   - (आ) आदिकाल (वीरगाथाकाल)– वि.सं. 1250 सूं 1450 लग
2. मध्यकाल
   - (अ) पूर्व मध्यकाल (भक्तिकाल)– वि.सं. 1450 सूं 1650 तांई
   - (आ) उत्तर मध्यकाल (रीतिकाल)– वि.सं. 1650 सूं 1850 तांई
3. आधुनिक काल
   - (अ) प्रथम चरण– ई. सन् 1850 सूं 1920 तांई

(ब) द्वितीय चरण– ई. सन् 1920 सूं 1947 तांईं

(स) तृतीय चरण– ई. सन् 1947 सूं अजै लग।

आं काल विभाजनां सूं लखावै के आं विद्वानां रो मूल आधार इतिहास रै काल–विभाजन री प्रव्रत्ति अर हिन्दी साहित्य रै विकास रो काल विभाजन ई रैयौ। आं विद्वानां सूं पैला विदेसी अर भारतीय विद्वान हिन्दी–साहित्य री विगत में चारण काल, वीरगाथा काल में राजस्थानी री रचनावां अर रचनाकारां नैं गिणाय चुक्या है। वस्तुतः हिन्दी रै वीरगाथा काल कै आदिकाल री विसै–वस्तु ई राजस्थानी रचनावां हैं। इण सारी सांच रो वरणाव प्रो. सेखावत आपरी पोथी 'राजस्थानी भाषा एवं साहित्य' में सांतरै रूप में करियो है। इण रै अलावा राजस्थानी साहित्य रै वरगीकरणां माथै हिन्दी–साहित्य रै काल विभाजन री प्रव्रति रै प्रभाव रो बीजौ कारण हुय सकै– राजस्थानी साहित्य रै पठन–पाठन री हिन्दी रै पछै सरुआत।

डॉ. टैसीटरी, डॉ. हीरालाल माहेश्वरी अर डॉ. जगदीश प्रसाद श्रीवास्तव जिण 'डिंगल' नै आपरै वरगीकरण रो आधार बणायौ, वा फगत मध्यकाल रै चारण कवियां री साहित्यिक काव्य सैली ही, भासा रै रूप में तौ मरूभासा कै मरू गूजरी ई प्रचलित रैयी। अतः आं विद्वानां रो वरगीकरण राजस्थानी साहित्य री सगळी प्रव्रतियां रो बखाण करण में असमरथ है। बीजा वरगीकरणां में राजस्थानी साहित्य रै मध्यकाल नैं पूर्व मध्यकाल (भक्तिकाल) कै भक्तिकाल, उत्तर मध्यकाल (रीतिकाल) कै अलंक्रत काल रो उल्लेख मिळै। सांच तौ आ है के राजस्थानी साहित्य रै मध्यकाल में नीं तौ सुद्ध भक्ति साहित्य ई रचीजियौ अर नीं ई हिन्दी रै रीति साहित री भांत सुद्ध लक्षणग्रंथ रचीजिया। इण काल में साहित्य री सगळी ई प्रव्रत्तियां में भरपूर रचनावां लिखीजी। फेर ई प्रो. सेखावत रो वरगीकरण जठै सरुआती अेतिहासिकता रो खुलासौ करै उठै ई प्रो. नरोत्तमदास स्वामी रो वरगीकरण राजस्थानी साहित्य री पुख्ताऊ हालात सूं सरू हुवै। इण भांत साहित्य रै इतियास लेखन रै संदर्भ में आचार्य रामचंद्र सुक्ल री अै औळियां घणी महताऊ ''जनता का परिवर्तनशील चित्तवृत्तियों की परम्परा को परखते हुए साहित्य–परम्परा के साथ उनका सामंजस्य दिखाना ही साहित्य का इतिहास है।''

इण दीठ सूं निःसन्देह विक्रम री नौवी सदी रै छैड़लै बरसां में राजस्थानी री जुदा–जुदा बोलियां में साहित्य सिरजण सरु हुयौ हुवैला। इण साहित्य में उण क्षेत्र री अपभ्रंस पण संभव हुय सकौ। हौळै–हौळै आं रचनावां में साहित्यिक भासा अर अनुभूतियां नैं महत्व मिळतौ गयौ अर वै जनमानस री जुगानुरूप चेतना री अभिव्यक्ति करण में सफल रैयी। इण विकास क्रम नैं ऊपर लिख्यौड़े विद्वानां रै मतां पांण नीचै लिख्योड़ै रूप में प्रस्तुत कर सकां–

1. प्रारंभिक काल (आदिकाल)– वि.सं. 1050 सूं 1550 लग
2. मध्यकाल– वि.सं. 1550 सूं 1900
   - (क) पूर्व मध्यकाल– वि.सं. 1550 सूं 1700
   - (ख) उत्तर मध्यकाल– वि.सं. 1700 सूं 1900
3. आधुनिक काल– वि.सं. 1900 सूं अजै लग
   - (क) स्वतंत्रता रै पैला– वि. 1900 सूं 2004
   - (ख) स्वतंत्रता रै पूठै– वि. 2004 सूं अजै लग।

1-2 çkphu jkt LFkkuh dk0;

¼d½ vfHkçk;

इतियास री दीठ सूं आखी सोच अर विकास दो कालां में बंटीजियौ है– प्राचीन अर अरवाचीन

(आधुनिक)। इण भांत विद्वान इण मत सूं सैहमत लखीजै के साहित्य लेखन री सरुआत सूं मध्यकाल तांई रो साहित्य प्राचीन साहित्य संग्या सूं रूढ़ है अर मध्यकाल रै पछै लिखिजियौ साहित्य आधुनिक साहित्य है। मतळब औ के वि.सं. 1050 सूं वि.सं. 1900 तांई लिखीजी राजस्थानी कविता प्राचीन राजस्थानी काव्य कैईजै। हिन्दी, गुजराती अर राजस्थानी रा विद्वानां रा अलेखूं लेख इण मत नैं पुख्ता करै। प्रो. नरोत्तमदास स्वामी, श्री अगरचंद नाहटा, डॉ कन्हैयालाल सहल, डॉ. मनोहर शर्मा आद विद्वानां रा लेख मिळै, ज्यां री विसै सामग्री फगत राजस्थानी रै प्राचीन कै आदिकाल लग ई सीमित नीं होय'र मध्यकालीन रचनावां तांई पूगी है।

¼[k½ çj.kk Lkkr

प्राचीन राजस्थानी काव्य रै अध्ययन सूं खुलासौ हुवै कै उण जुग री अेतियासिक घटनावां, राजा–महाराजावां, रिसी–मुनियां रो चरित, पौराणिक–लौकिक आख्यान, संस्क्रत– प्राक्रत रा लक्षण ग्रंथ, लोक–प्रचलित मानतावां आद इण काल रै कवियां नैं कविता लिखण सारू प्रेरित कर्‌यौ। रणमल्ल छंद, अचळदास खीची री वचनिका, कान्हड़ दे प्रबन्ध, वीरमायण, हम्मीर रासो, हाळा–झालां रा कुण्डलियां, राव जैतसी रो छंद विरुद छिट्‌तरी आद रो सिरजण उण बखत री अेतियासिक घटनावां रो परिणाम है तो नागदमण, हरिरस, देवियाण, रामरासौ वेलिक्रिसण–रुकमणी री, शिव–पार्वती री वेल, उषाहरण, ढोला–मारू का दूहा, ढोला–मारवणी चौपई, ओखाहरण, माधवानल– काम कंदला चौपई, गोरा बादिल चरित चौपई, नरबद सुप्यार दे री बात, आद पौराणिक– लौकिक आख्यानां सूं प्रेरित रचनावां हैं। सिरिथूळि फागु नेमीनाथ फागु, स्थूलिभद्र–कोशा प्रेम विलास, अगड़दत्त रास, तेजसार रास, नलदमयन्ती रास, विद्या विलास, पुरंदर चौपई, उत्तम कुमार चौपई, कलावती चौपई आद जैन चरितां सूं प्रेरित हुय'र लिखीजी काव्य–रचनावां हैं। नागराज पिंगल, पिंगल शिरोमणि, अनूप रसाल, हरिपिंगल प्रबन्ध, रूपदीपक पिंगल, लखपत–पिंगल, अलंकार आशय, रघुनाथ रूपक गीतां रौ, रघुवरजस प्रकास, कवि मत्तमण्डण आद रचनावां संस्क्रत, प्राक्रत अर अपभ्रंश लक्षण ग्रंथां री परम्परा सूं प्रेरित हुय'र रचीजियां प्राचीन राजस्थानी रा लूंठा लक्षण ग्रंथ हैं।

1-3 çkphu jkt LFkkuh dk0; jh ijEijk % foxr

¼d½ çe[k dfo vj jpukok

प्राचीन राजस्थानी काव्य रै सिरजण रै प्रेरणा स्रोतां सूं प्रभावित हुय'र अलेखूं कवि विविध काव्य रूपां में आपरी रचनावां लिखी। आं में सूं उल्लेख जोग कवि अर उणां री महताऊ रचनावां रो नामोल्लेख अठै करां –

1. जेठवा–ऊजळी रा दूहा (लोक काव्य) 2. जिनदत्त सूरि– उपदेश रसायन रास, 3. वज्रसेन सूरि– भरतेश्वरी बाहुबली घोर 4. शालिभद्र सूरि (भरतेश्वरी बाहुबली रास) 5. जिनधर्म सूरि–स्थूलिभद्ररास 6. नाल्ह नरपति– बीसलदेव रास, 7. सुमति गणि– नेमिनाथ रास, 8. विजयसेन सूरि– रेवंतगिरी रास, 9. आसिगु– जीवदया रास, चंदनबाला रास, 10. पल्हण– आबू रास, नेमिनाथ बारह मासा 11. राजशेखर सूरि– नेमिनाथ फागु, 12. ढोला–मारू रा दूहा (लोक काव्य), 13. शारंगधर– हम्मीर रासो, हम्मीर काव्य, 14. असाइत– हंसाउली, 15. बादर ढाढी– वीरमायण 16. श्रीधर व्यास– रणमल्ल छंद 17. भीम–सदयवत्स–चरित, 18. सिवदास गाडण– अचळदास खीची री वचनिका, 19. पदमनाभ– कान्हड़दे प्रबन्ध, 20. महाकवि चंद– पृथ्वीराज रासो, 21. बीठू सूजा– राव जैतसी रो छंद, 22. छीहल– पंच सहेली रा दूहा, 23. भांडउ व्यास– हम्मीरायण 24. खिड़िया चानण– दूहा राव रिणमल रा, दूहा राव रिणधर रा, दूहा सत्ताभाटी रा, भीमोत रा सोरठा, माताजी रा छंद, स्फूट गीत, 25. मीरां बाई– मीरां पदावली

आद 26. दुरसा आढा– विरुद छिहत्तरी, किरतार बावनी, राउ श्री सुरताण रा कवित्त, झूलणा रावत मेघा रा, दूहा सोलंकी वीरमदेव रा, झूलणा राव श्री अमरसिंघजी रा आद 27. ईसरदास– हरिरस, छोटा हरिरस, बाललीला, गुण भागवंत, गरुड़पुराण, गुणआगम, गुण–निंदा स्तुति, देवियांण, गुण–वैराट, साखिया, हालां–झालां रा कुडलिया, रास कैलास, दाणलीला, गुण सभापर्व, गीतछंद, सामळा रा दूहा, भजनादि, 28. प्रिथीराज राठौड़– वेलिक्रिसण रूकमणी री, दसम भागवत रा दूहा, दसरथरावउत, वसदेवरावउत, गंगालहरी आद। 29. कुशललाभ– माधवानल कामकंदला चौपई, ढोलामारवणी चौपई, तेजसार रास, जिनपालित–जिनरक्षित संधि गाथा, अगड़दत्त रास, गौड़ी पार्श्वनाथ दसभव स्तवन, स्तंभन पार्श्वनाथ स्तवन, भीमसेन हंसराज चौपई, गुणवती चौपई, जगदम्बा छंद कै भवानी छंद पूज्यवाहण गीत, शत्रुंजय यात्रा स्तवन, महामाई दुरगा सतसई पिंगल सिरोमणि फुटकल कवित्त, 30 केसवदास– गुणरूपक, राव अमरसिंघजी रा दूहा, 31. अल्लूजी कविया– फुटकल कवित्त– छप्पय, 32 हेमरतन सूरि– गोरा बादिल चरित चौपई, लीलावती चौपई, महिपाल चौपई, सीलवती कथा, सीता चरित, रामरासो, जगदंबा बावनी, शनिश्वर छंद, 32. समयसुन्दर– सिंहलसुत प्रिय मेलकरास, 33. माधोदास दधिवाड़िया– रामरासो, भासा–दसम स्कंध, गजमोख, 34. नरहरिदास– अवतार चरित, दसमस्कध, रामचरित, अहल्या प्रसंग, अमरसिंघ रा दूहा, 35. दयालदास– राणारासो, 36. गिरधर आसियो– सगतरासो, 37. जोगीदास– हरिपिंगल प्रबन्ध, 38. लब्धोदय– पदमनी–चरित चौपई, मलयसुंदरी चौपई, रतनचंद चौपई, गुणावली चौपई 39. वीरभाण– राजरूपक, 40. करणीदान– बिड़द सिणगार, सूरजप्रकास, 41. वृंद– वृंद सतसई, यमक–सतसई, भाव पंचाशित, सिणगार सिक्षा आद, 42. हमीर रतनू– हम्मीर नाममाला, लखपत पिंगल, पिंगल प्रकास, जदुवेस वंसावली, देसळजी री वचनिका, जोतिस जड़ाव, ब्रह्माण्ड पुराण, भरतरी सतक आद, 43. मंसाराम मंछ– रघुनाथ रूपक गीतां रो 44. किसना आढ़ा– रघुवरजस प्रकास, भीमविलास, 45. महाराजा मानसिंघ– अनुभव मंजरी, तेज मंजरी, जलंधरजी रो चरित, नाथचरित प्रबंध, नाथ पद संग्रह आद 46. बांकीदास– सूर छत्तीसी, धवळ पचीसी, दातार बावनी, नीति मंजरी, वैसक वार्ता, मावड़िया मिज़ाज, क्रपण दर्पण, कुकवि बत्तीसी, भरुजाळ भूषण, झमाल नखसिख, जेहल जस जड़ाव, हमरोट छत्तीसी, कवि मत्तमण्डण आद, 47. गवरीबाई– फुटकल पद, 48. दीनजी (दीन दरवेश)– पद अर साखिया 49. दादू– दादूवाणी, 50 बखनाजी– वाणी, 51. रज्जबजी– वाणी, सर्वगी, 52. सुंदरदास–ज्ञान समुद्र, सर्वांगयोग, स्वप्न प्रबोध, सदगुरु महिमा, गुरु महिमा अष्टक, पीर मुरीद अष्टक, ग्यान झूलणा अष्टक, सहजानंद ग्रंथ, तर्क चितावनी, बारहमासो, सुन्दर विलास आद, 53. बाजिन्दजी– अडिल्ल, गुण–कडियारा नामा, गुण हरिजन नामा, गुण नांवमाला, गुण– बिरह का अंग, गुण छंद, राज कीर्तन आद। 55. चरणदास– अष्टांग योग, भक्तिसागर, दानलीला, ब्रह्मग्यान सागर, भक्ति पदारथ, राममाला, अमरलोक खंडधाम, कुरूक्षेत्र लीला आद, 56. दयाबाई– दयाबोध 57, सहजोबाई– वाणी, पद, 57. रामचरण दास– वाणी, 58. दयालदास– करूणा सागर, करूणाबोध, अद्भुत विलास, निरभैबोध आद, 59. दरियावजी– वाणी, 60. जांभोजी– सबद–वाणी, 61 म. अजीत सिंघ– गुणसागर, गजउद्धार, दुर्गा पाठ भासा, निर्वाण रा दूहा, 62. पाबूजी रा पवाड़ा (लोक काव्य) आद।

¼[k½ çe[k dk0;&:i

राजस्थानी काव्य रो विकास प्राक्रत अर अपभ्रंस–काव्य परम्परा सूं हुयौ। इणी वास्तै प्राचीन राजस्थानी काव्य में प्राक्रत–अपभ्रंस रा घणाई काव्य रूप ज्यूं रा त्यूं लखावै। श्री अगरचंद नाहटा आपरी पोथी में प्राचीन राजस्थानी काव्य रा 117 रूप गिणाया है। श्री मनोहर प्रभाकर (राजस्थानी साहित्य और संस्क्रति) राजस्थानी साहित्य रा च्यार रूप बतळाया है। 1. चारणी–साहित्य 2. ब्राह्मणी साहित्य 3. जैन साहित्य अर 4. संत साहित्य। 16वें सइकै लग मरूगूजरी रो साहित्य

राजस्थानी साहित्य में ई सामिळ हौ। इण दीठ सूं प्रो. एम.आर. मजमुदार पद्य रा निम्नलिखित 21 काव्य रूपां री व्याख्या करी हैं– मुक्तक, सुभाषित, उखाणं, समस्या–प्रहेलिका, रास–रासो, प्रबन्द छंद, पवाडा–श्लोक, आख्यान, पद्यात्मक लोकवार्ता, फागु, षड्रितु, बारमासी, संदेस काव्य, भडली काव्य, विवाहलु–वेलि, रूपक काव्य, गीता काव्य, कक्को–हित सिक्षा, भजन संत वाणी, रास–गरबो–गरबी।

वस्तुतः प्राचीन राजस्थानी काव्य दो रूपां में विकसित हुयौ– 1. मौखिक काव्य परम्परा अर 2. लिखित काव्य–परम्परा। मौखिक काव्य परम्परा में लोककाव्य सिरजित हुयौ तौ लिखित काव्य रूपां में प्रबन्ध अर मुक्तक काव्य रूपां में कवि गण काव्य–रचनावां लिखी। आं परम्परावां में ई जैन–जैनेत्तर कै चारण– चारणेत्तर कवि आपरी काव्य रचनावां रो विविध काव्य रूपां में सिरजण करता रैया। म्हांणै विचार सूं अै काव्य रूप किणी संख्या में नीं बांध्या जा सकै। वै 117 सूं ई बेसी हुय सकै। म्होटै तौर सूं प्राचीन राजस्थानी काव्य निम्नलिखित रूपां में मिळै–

1. रासो 2. रास 3. छंद 4. कवित्त 5. दूहा 6. मंगळ 7. संधि 8. चौपई/चौपाई 9. फागु 10. कुण्डलिया 11. सतक 12. छियोतरी 13. सतसई 14. बावनी 15 छत्तीसी 16. बोहोतरी 17. बत्तीसी 18. चौढ़ालियौ 19. पवाड़ा 20. वेल/वेलि 21. ढाल 22. चांचरी/चर्चरी 23. प्रबन्ध 24. इकीसो 25. चौबीसौ 26. बीसी 27. अष्टक 28. सलोका/सिलोक 29. धवल 30. धमाल/धमार 31. विवाहलौ 32. हरण 33. बारहमासा 34. चौमासौ 35. चरित 36. आख्यान 37. स्तुति 38. स्तोत्र 39. स्तवन 40. वीनती 41. वर्णन 42. सज्झाय 43. हीयाळी 44. लावणी 45. ग़ज़ल 46. गीत 47. नीसांणी 48. नाममाला 49. प्रकास 50. रागमाला 51. पद 52. जोड़ 53 छप्पय 54. होरी 55. तरंग 56. विलास 57. झूलणा 58. कळस 59. हरजस 60. सुभासित 61. रूपक 62. लीला 63. वाणी 64. संवाद 65 वचनिका आद।

आं काव्य रूपां में रासो, रास, मंगळ, चौपई, पवाड़ा, बेल, प्रबन्ध, आख्यान, प्रकास, संधि, आद प्रबन्ध काव्य रूप रा ई रूपान्तर हैं। चांचरी, चर्चरी, धमाल, ब्यावलौ, बारहमासा, होरी, ब्यावळा (विवाहलौ) आद विसै वस्तु री दीठ सूं सरिखा काव्य रूप है। इणी भांत छंद काव्य रूप रा ई रूपान्तर दूहा, कवित्त, कुंडलिया, ढाल, सिलोका, स्तुति, स्तोत्र, स्तवन, बीनती, नीसांणी, पद, कळस, वाणी, वाक्य रूप हैं। संख्या वाची रचनावां ई मुक्तक काव्य में सामिळ है। फेर ई अठै प्राचीन राजस्थानी कविया द्वारा बरतीजिया महताऊ काव्य–रूपां रो परिचै दिरावां–

1- jkl&

राजस्थानी प्राचीन काव्य परम्परा में रास कै रासो नांव वाळी रचनावां रो खासौ महत्व है। अै रचनावां दूहा, चौपई, देसी ढालां कै रागां में लिखिजियौ। आं रचनावां में काव्यत्व री बजाय चरित री अभिव्यक्ति व्ही है। जैन आगम ग्रंथां अथवा पौरागिणक पात्रां रै मारफत भोग री बजाय संजम रो उपदेस देवणौ ई आं 'रास' रचनावां रो उद्देस्य है।

उच्छब विसेस अर तीज–तिवांरां रै औसरां माथै मिन्दरां में भक्ति सूं जुड्योड़ी रचनावां जिका नैं भक्त जन गोल चक्कर में घूमता हुया गावता हा– अैड़ी गीत कै गाईजण वाळी रचनावां रास, रासक अथवा रासो कैईजती ही। इण भांत रास–संग्यक रचनावां गेय अर निरत प्रधान होवती ही। आं रो खास विसै धरमोपदेस अर संजम हुवतौ हौ। रचनावां री सरूआत सिणगार सूं हुवै पण अन्त सान्त रस में करीजै।

रास नांवधारी पैली रचना अबदुरहमान री 'संदेस रासक' कैईजी है। इणरै उपरांठ अपभ्रंस में जैन कविसर अलेखूं रास–काव्य रचिया। इण काल रा रास काव्य छंद, चरचरी, रूपक आद नांवां सूं ई लिखिजिया। अै रचनावां प्रायः प्रबन्ध रूप में ई मिळै।

जदपि राजस्थानी में वीर रसात्मक रचनावां 'रासो' नांव सूं ई लिखीजी, पण प्राचीन राजस्थानी काव्य रूपां में रास कै रासक नांव री रचनावां जैन कविसर ई लिखी। राजस्थानी री खास–खास रास काव्य रचनावां हैं– भरतेश्वर बाहुबलि रास (शालिभद्र सूरि), चंदनबाला रास (आसिगु), रेवन्तगिरी रास (विजयसेन सूरि), महावीर रास (अभयतिलक राणि), जिनप्रबोध सूरि चर्चरी (सोममूर्ति), शालिभद्र रास (मुनि राजतिलक), मयणरेहा रास (हर सेवक), वस्तुपाल तेजपाल रास (हीराचंद सूरि), नलदमयन्ती रास (महर्षि वर्धन सूरि), तेजसार रास, अगड़दत्त रास (कुशललाभ), पुरन्दर चौपई रास, नलदमयन्ती रास (समयसुंदर), लीलावती रास, धरम बुद्धि– पापबुद्धि रास (उपाध्याय लाभवर्धन), माकड़ रास, साधु रास (कीर्ति सुंदर), मृगावती रास आद।

2- jklk&

रासो' सबद वास्तै रास, रासा, रासौ, रायसा, रायसौ रूप ई मिळै। इण सबद री उतपत विद्वान आं छव सबदां सूं कैयीजी है– रहस्य, रसायण, राजादेस, राजयस, रास अर रासक। हिन्दी अर राजस्थानी री अनेकू रचनावां रास, रासक अर रासौ सीर्सक सूं लिखीजी है। 'हिन्दी शब्द सागर' रै मुजब ''किसी राजा का पद्‌ममय जीवन वर्णन हो, विशेषतः वह जीवन चरित्र जिसमें उसके युद्धों और वीरता आदि का वर्णन हो, जैसे– पृथ्वीराज रासो, खुमान रासो, हम्मीर रासो।'' केई विद्वान औ ई मानै क रासौ कै रासा सबद ब्रज अर राजस्थान (मेवाड़ अर मारवाड़) में झगड़ा (राड़–लड़ाई) वास्तै बरतीजै, अतः ज्यां रचनावां में जुद्धां रो वरणाव हुवै वे रचनावां रासौ है। इण व्याख्या सूं जैन रास काव्य, बीसलदेव रास, अब्दुलरहमाण रो 'संदेस रासक' रासौ काव्य नहीं कैया जा सकै क्यूंक आं में जुद्ध री बजाय प्रेम रो वरणाव है। इणी वास्तै डॉ. हरिश्चन्द्र वर्मा अर डॉ. रामनिवास गुप्त रासो काव्य रा च्यार भेद बतळावै अर राजस्थानी रै वीर रसात्मक रासो रचनावां नै अेतियासिक रासो रै वरग में राखै–

1. धार्मिक रासो काव्य
2. पौराणिक रासो काव्य
3. प्रेममूलक रासो काव्य
4. अेतिहासिक रासो काव्य।

वस्तुतः प्राचीन राजस्थानी काव्य रूपा में जैन कै जैनेत्तर कवियां री रास नांव री रचनावां तथा चारण या चारणेत्तर रचेतावां री रासो नांव री रचनावां में सैलीगत फरक है। जैन रास काव्य रचनावां में धार्मिक दीठ री प्रधानता है आं रो प्रधान रस सान्त है, जद क चारण कै चारणेतर कवियां री रासो रचनावां में वीर रस अर जुद्धां री प्रधानता है। यूं रास अर रासो चरित काव्य ई हैं। इण रूप में बीसलदेव रास, संदेस रासक इणी परम्परा री रचना है। रासकाव्य री चरचा आगै करी जावैला। अठै राजस्थानी रै प्राचीन काव्य परम्परा रा खास–खास रासो रचनावां रो उल्लेख कर रैया हा– बीसलदेव रास, हम्मीर रासो, परमाल रासो, पृथ्वीराज रासो, खुम्माण रासो, जयचंद रासो, बुद्धि रासो (कवि जल्ह), राव जइतसी रो रासो, विजय पाल रासो (नल्ह सिंह), रामरासो (माधोदास), राणारासो (दयाल कवि), रतनरासो (कुम्भकर्ण), कायमरासो (न्यामत खां), शत्रुसाल रासो (डूंगर सी), लावारासो (गोपालदान), मांकण रासो (कीर्ति सुंदर), सगतसी रासो (गिरधर आसिया), हम्मीर रासो (जोधराज) आद।

रासो रचनावां में छंदां री विविधता हुवै। आं में अडिल्ला, दूहा, धत्ता, रंका, पद्धड़ी,

छप्पय, कवित्त, सवैया, रसावला, नाराच आद छंद मिळै।

3- Qkx

साहित्य में फागु कै फाग सूं अरथ वसन्त– उच्छब मुजब रितु रै नुवै उल्लास नैं प्रगटण वाळी गेय रचनावां सूं है। राजस्थानी में फागु काव्य री परम्परा अपभ्रंस साहित्य री देन है। श्री अगरचंद नाहटा री मानता है क सुतन्त्र काव्य रूप में फागु नांव री रचना 14वीं सदी रै पैला कोनी मिळै। अजै लग प्राप्त फागु रचनावां में सबसूं जूनी 'जिनचंद सूरि फागु' है। इणरै पूठै री महताऊ फागु रचना खरतरगच्छीय जिनपदमसूरि री 'स्थूलिभद्र फागु' (वि. 1389–1400) है। बीजी उल्लेखजोग फागु रचनावां हैं– नेमिनाथ फागु (राजशेखर सूरि), स्थूळिभद्र फागु (हलराज), जंबू स्वामी फाग (वि. 1430), पार्श्वनाथ फागु (मेरुनंद), देवरत्न सूरि फागु (वि. 1499), वसंत विलास फागु भरतेश्वर चक्रवर्ती फागु (वि. 1497), नेमिनाथ फागु (वि. 1519), पार्श्वनाथ फागु (समय ध्वज), स्थूलिभद्र फागु (मालदेव), स्थूलिभद्र छत्तीसी (उपाध्याय कुशललाभ), मंगलकलश फागु (वाचक कनक सोम), संजम फागु (महानंद), हेमरतन सूरि फाग, स्थूळिभद्र फाग (कमलशेखर), स्थूलिभद्र प्रेम विलास फागु (जयवंत सूरि), नेमिराजुल फाग (महिमा मेरु) आद।

आं जैन फागु रचनावां रै अलावा जैनेत्तर कवियां द्वारा रचियौड़ी फागु रचनावां हैं– नारायण फागु (वि. 1495 रै लगैटगै), मोहिनी फागु (वि. 16वीं सदी), फागु काव्य (चतुर्भज), वाहणगू फाग (वि. 16वीं सदी), विरह देसाउरी फाग (वि. 16वीं सदी), भ्रमर गीता फाग (वि. 1622)।

आचार्य हेमचंद्र 'देसी नाम माला' में फागु रचनावां नैं 'फग्गु' कैयौ है। फागु कै फाग इणी अपभ्रंस 'फग्गु' सबद रो विगसाव है जिकौ राजस्थान, ब्रज, मध्य प्रदेस, भोजपुर अंचल में फागण महीना में खासतौर सूं होळी माथै गाईजै। बसन्त रितु में आं नैं कजरी अर चर्चरी नांव सूं ई गाई जै। अर्द्ध संगीत रचनावां ठुमरी फागु काव्य परम्परा री इज देन है।

4- ckjgekl k

'बारह मासा' पण रास, फागु, धवल जैड़ौ ई राजस्थानी रो प्राचीन काव्य रूप है। मिनख रो प्रक्रति सूं गै'रौ सम्बन्ध है। साहित्य में प्रक्रति रा चित्राम षड्रितु (गरमी, सरद, बरखा, हेमंत, सिसिर अर वसंत) रूप में मिळै। आं छव रितुवां रा बारै महीना हुवै। म्हांणै आं छव रितुवां अर बारै महीनां मुजब लोकगीत मिळै अर सिस्ट साहित्य में ई आं रो वरणांव कर्‌यौ है। अतः छव रितुवां अर बारै महीनावां सूं जुड़्योड़ी गीति रचनावां साहित्य में 'बारहमासा काव्य' सूं ओळखीजै।

बारह मासा काव्य री परम्परा घणी जूनी। अथरवेद रै प्रिथवी सूक्त रै 36वैं सलोक में कैईजियौ है 'हे प्रिथवी थांणी रितुवां ग्रीषम, बरखा, सरद हेमंत, सिसिर, वसंत सूं समरिद्ध होय म्हानैं रात अर दिन सीमित करे।' डॉ. वासुदेवशरण अग्रवाल चौथी सदी री 'अंगविज्जा' नैं पैली रचना मानै। राजस्थानी साहित्य में काव्य रै इण रूप री सरुआत जैन–रचनावां सूं हुयी। जैन रचनावां री विसै वस्तु खासतौर सूं 22वां तीरर्थकर नेमीनाथ अर राजमती तथा स्थूळिभद्र–कोशा जुड़योड़ी हैं।

बारहमासा री सुतंतर रचनावां घणी छोटी हुवै, पण कैई जैन कवि आपरै चरित काव्यां में ई बारहमासा प्रसंग मांडिया हैं। बारहमासा संग्यक राजस्थानी रचनावां सिणगार प्रधान हैं जिणां में संजोग सिणगार रो खुल्यौ वरणांव अर विजोग री अनेकूं दसावां रा

चितराम मंडीजिया है। जैन–बारहमासां में सिणगार रै मारफत वैराग अर भगती रा उपदेस ई दीरिजिया हैं। जैन अर जैनेत्तर दोई बारहमासांवां में उत्क्रस्ट काव्यत्व लखीजै। आं रचनावां में खासतौर सूं लोकगीत– कजरी सैली, देसी ढालां, दूहा, संवैया, कवित्त, सारसी छंदां रो प्रयोग हुयौ है। उल्लेख जोग जैन अर जैनेत्तर बारहमासा कै षडरितु संग्यक रचनावां हैं–

नेमिनाथ बारमास चतुष्पदि (विनयचंद्र सूरि), नेमिनाथ राजमति बारमास (चरित्रकलश), नेमनाथ–बारमास वेल प्रबन्ध (विनयमंडन), थूळिभद्र एकवीसो (लावण्यसमय), थूळिभद्रशील बारमास (वि. 1581), रायचंद्र सूरि गुरु बारमास (जयचंद गणि), माधवानल कामकंदला चौपई, स्थूलिभद्र छत्तीसी, ढोला मारवणी चौपई आद (कुशललाभ), नेमिराजुल बारमास (जसराज), भ्रमरगीत (मुनि जिनविजय), स्थूलिभद्र नवरस (उदयरत्न), ज्ञानमास (अखाभक्त), नेमिनाथ बारमास (विनयचंद्र), राधाक्रष्ण नीं बारमासी (18वीं सदी), षडरितु विरह वर्णन (दयाराम भाई), खटरितु वर्णन (इन्द्रावती), वेलि क्रिसण रूकमणी री (प्रिथीराज राठौड़) आद।

5- ofy&

'वेलि' सबद संस्क्रत रै 'वल्ली' सूं निकळ्यौ है। इण में आखै वांगमय नैं 'उद्यान' मान'र उण री ग्यान–शाखावां– व्याकरण, धरमसास्त्र, काव्य, इतियास, कोस आद नैं वल्लरी कै बेल (लता) मानण री परम्परा रैयी हैं। इणी सनातनी भाव सूं संस्क्रत, अपभ्रंस, ब्रज, हिन्दी में ई वेलि, लता, बेल, वल्ली नांव सूं रचनावां लिखिजी अर आई परम्परा मरु–गूजरी में ई 'वेलि' नांव सूं विकसित व्ही। वेलि–संग्यक रचनावां रा विसै भगती, अेतियासिक कै पौराणिक चरितां री मंगलभाव प्रसंसा, देई–देवतावां री स्तुति हुय सकै।

राजस्थानी साहित्य में वेलि काव्य री परम्परा रोडा रचित 'राउलवेल' (11वीं सदी) सूं मानी जा सकै। श्री अगरचंद नाहटा मुजब जैन वेलि काव्य में सैं सूं जूनी वेलि रचना कवि वाछा (?) रचित 'चिहुभक्ति वेलि' (वि. 1577) है। इण भात जैन अर जैनेत्तर सगळा ई रचेता वेलि–काव्य रो सिरजण करियौ। 16वीं सदी सूं 19वीं सदी लग आ परम्परा लगोलग रैयी। खास–खास जैन–अर जैनेत्तर वेलि रचनावां निम्नलिखित है –

¼v½ tu ofy jpukok&

गुणठाणा वेलि, चंदनवाळा वेलि (अजितदेव सूरि), लघु बाहुबली वेलि (शांतिदास), स्थूलिभद्र मोहन वेलि, नेमिराजुल बारहमासा वेलि प्रबन्ध (जयवंत सूरि), सोमजी निर्वाण वेलि (समय सुंदर), वृहद गर्भ वेलि (रत्नाकर गणि), पंच गति वेलि (हर्षकीर्ति), बारह भावना वेलि (जयसोम वेलि), सुजस वेलि (कांतिविजय), नेमराजुल वेल (चतुर–विजय), शुभवेलि (वीर विजय), नेमिस्वर स्नेह वेलि (उत्तम विजय) आद।

¼vk½ tuÙkj&ofy jpukok

आई माताजी री वेलि (संत सहदेव), रूपादे री वेलि (15–16वीं सदी), किसानजी री वेलि (सांखला करमसी रूणेचा), देईदास जैतावत री वेलि (अखौ भणोत), गुण चाणिक वेलि (चूंडौ दधिवाडियौ), उदैसिंघ री वेलि (रामा सांदू), चांदाजी री वेलि (वीठू मेहों दूसलाणी), वेलि क्रिसण रुकमणी री (राठौड़ प्रिथिराज), रायसिंघ री वेल (सांदू मालो), महादेव पार्वती री वेलि (किसना आढ़ा), राउ रतन री वेल (कल्याणदास मेहड़ू), अनोपसिंघ री वेल (गाडण वीरभांण), राजा

सूरजसिंघ री वेल (गाडण चेलो), डूंगरसिंघ री वेलि (समधा) आद।

¼b½ ykfdd lyh jh ofy jpukok

रामदेवजी री वेल, रूपादे री वेल, तोलादे री वेल, आई माता री वेलि, पीर गुमानसी री वेल, अकल वेल, बाबा गुमान भारती री वेल आद।

जैन वेलियां में जठै दूहा, चौपई, देसी ढालां रो प्रयोग मिळै, उठै इज जैनेत्तर वेलि काव्य में खासतौर सूं वेलियो डिंगल गीत छंद नैं बरतीजियौ है। आं में वैण सगाई रो ई सांतरौ प्रयोग मिळै। जैनेत्तर वेलि रचनावां में चारण कवि है, इण वास्तै आं री सैली चारण कै डिंगल काव्य सैली है।

6- iokMk

सुभटां रै पराक्रम अर विद्वानां रै बुद्धिबळ रो गुणगान पवाड़ा कैईजै। राजस्थानी साहित्य में 'पवाड़ा' सबद रो सबसूं पैलौ प्रयोगा हीरानंद सूरि री रचना 'विद्याविलास चरित' में हुयौ है। अठै वै इणनैं 'पवाड़ौ' ई कैयौ है। रचना में प्रगटीजिया विचारां सूं खुलासौ हुवै कै पवाड़ा में मिनख रो गुणगान हुवै। आ अभिव्यक्ति वीरता घणी ई हुय सकै, ज्यांन– पाबूजी रा परवाड़ा, राउल–कान्हड़ दे पवाडु रास।

खासतौर सूं परवाड़ा रचानवां रो छंद चौपई है। साख सारू प्रसंग मुजब दूहा कै बीजै छंदा रो प्रयोग ई मिळै। रास री दांईं अै रचनावां ई गेय हुवै। खण्डां कै सरगां में ई अै बंटियोड़ा हुय सकै। जैनेत्तर परवाड़ा रचनावां कड़वक बंध में ई रचियोड़ा मिळै। लोकसैली में रचित पवाड़ा ई राजस्थानी में मोकळा ई है। इण सैली में पाबूजी अर रामदेवजी मुजब घणाई पवाड़ा मिळै। 'पवाड़ा' संग्यक बीजी उल्लेखजोग रचनावां हैं– त्रिभुवन दीपक प्रबन्ध अथवा प्रबोध चिंतामणी, वंकचूल पवाड़ो (ग्यानचंद), हंसाउली कै हंसराज चरित पवाड़ो (असाइत), विद्याविलास पवाड़ौ (हीराचंद सूरि), कान्हड़ दे प्रबन्ध (पदमनाम), रावजैतसी रो छंद (वीठू सूजा), नागदमण (सायाजी झूला), सती सदुबाई नो पवाड़ो, रुकमणी रो ब्यावलो (पदमा तेली), निहालदे सुलतान (लोककाव्य) आद।

7- exy dC;koyk dk0;

सोळै संस्कारां में विवाह संस्कार रो लूंठौ महतब है। औ ई कारण है क राजस्थानी रै जूनै काव्य में चरित नायकां रै ब्याव मुजब रचनावां रै सिरजण रो परम्परा ई मिळै। अै रचनावां– धवळ, वेलि, विवाहलो अर मंगल काव्य नांव सूं लिखीजी। राजस्थानी री जैन अर जैनेत्तर मंगल काव्य रो मूल विसै ब्याव रा प्रसंग हैं। ब्याव मुजब (ब्यावलो/विवाहलो) जैन काव्य–रचनावां में औ ब्याव दोय रूपां में मिळै– द्रव्य विवाह अर भाव–विवाह। वर–वधु नैं धणी–लुगाई रूप में थरपण वाळौ ब्याव द्रव्य (बाह्य–सांसारिक) व्याव है जिणरा वरणांव जैनेत्तर काव्य–रचनावां में हुयौ है, पण जैन कविसर अैडा ब्यावला कै मंगल काव्य–रचनावां लिखी हैं, जिणां में धणी–लुगाई रो लौकिक अरथ नीं हुय'र धार्मिक व्रतां (नेमां) नैं स्त्री रो रूपक देय'र व्रतां रो ब्याव संयम रूपी मिनख (संजम श्री दीक्षाकुमारी) सूं कराइजियौ है। जैन परिभाषा मुजब औ ई ब्याव भाव–विवाह (आभ्यन्तरिक=पारलौकिक) है। इण तरिया रा ब्याव री परम्परा कबीर रै 'दुलहिन गावहु मंगलाचार' अर संत काव्य में जोयी जा सकै। आं दीक्षा–रूपक विवाहलां रै अलावा ई जैन कवि तीर्थंकरां अर बीजा सलाका पुरुखां सूं जुड़्योडै विवाहलां री ई रचना करी। कीं उल्लेख जोग रचनावां हैं– श्री जिनेश्वर सूरि वीवाहलउ, सुमति साधु सूरि विवाहलो (लावण्यसमय), आदिनाथ विवाहलो (नींबो), श्री महावीर विवाहलो (हर्षसमय सूरि),

रिषभदेव विवाह धवल (श्री देव), जंबू अन्तरंग विवाहलो (वि. 1572– सहज सुंदर), नेमिनाथ विवाहलो (देपाल), नेमिनाथ विवाहलो धवल, पार्श्वनाथ विवाहलो (ब्रह्मविनय सूरि), मंगल–कलश विवाहलो (धनराज वि. 1490), शांतिनाथ विवाहलउ (हर्षधर्म वि. 16 वीं सदी), शत्रुंजय चैत्य– परिपाटी विवाहलउ (वि. 1568) आद।

tuUkj fookgym@exy@ekoy uko jh jpukok

रुक्मणी मंगल (नवलसिंघ कायस्थ), वेलि क्रिसण रुकमणी री (राठौड़ प्रिथीराज), रुकमणी विवाहलो मंगल (पदमा तेली), महादेव पार्वती री वेल (किसना आढ़ा), रुकमणी मंगल (ऊदो), सिवजी रो बावलो (पं. संभूदत्त) आद।

8- gjtl

हरजस रो अरथ है– ईस्वर रो जस गान (हर+यश)। सूर्यकरण पारीक आं नैं धार्मिक लोक गीत कैवै। भगत–मण्डलियां जिका भगती मय गीत कै भजनां नैं गावै, वे ई हरजस कैईजै। आं नैं म्हां परभातियां ई कैय सकां। इण भांत हरजस प्राचीन राजस्थानी भगती काव्य रो उल्लेख जोग काव्यरूप है।

हरजस अलेखूं हैं, ज्यां में भगती री पावन सुरसरी रो अथाह प्रवाह है। अै भगतां नैं आपोआप में मगन राखता पुण्य लाभ दिरावै। आधुनिक जुग री वैग्यानिक समस्यावां, कुंठावां मानसिक तनावां सूं दुखी मन नैं सांसारिकता अर परिस्थितियां सूं जूझण री सगती दिरावै। कळजुग में संतां रो वास आं हरजसां में ई है। इण भांत हर= सिव कै हरि= ईस्वर रो गुणगान ई हरजस कैईजै।

इण व्याख्या मुजब भक्त कवियां री वाणियां, अर पद ई हरजस काव्य रा ई रूप हैं। 'हरजस' निरगुण अर सगुण दोई भगती–पद्धति सूं संबद्ध हुय सकै। राजस्थानी समाज में अजै ई हरजस काव्य रो इतरौ महत्व है क रातिजागा में आं नैं गाय'र आपरी मनोती नैं पूरी करै।

राजस्थानी रा प्राचीन हरजसां में उल्लेखजोग नांव हैं– श्री गजानंदजी रो हरजस, सत री बात कहूं सतवादी नैं, हंसा निकल गया काया ते, हरिगुण क्यूं नी गावै रे, मनवा केहि विधि तोय समझाऊ, डेडरिया छोड़ छिलरिया री आसा, फकीरी, म्हैं माखण नहीं खायौ, अध बिच अढकी नांव, ओर आसरो छोड़, गुरुदेव कहै सुण चेला, जोगीड़ा नैं जादू कीनो रे, ओढ चूंदड़ मैं गयी रे, घर होती तो स्याम नैं मनाय लेती रै, म्हारै माथै सांवरिया रो हाथ, छबि म्हारै मन भाई है घनस्याम री आद।

9- çcU/k

प्रो. मजमूदार रै मुजब वि.सं. 1000 सूं 1500 लग रच्योड़ी अेतियासिक रचनावां नैं घणी ई जगां प्रबन्ध कैईजै। विद्वानां रै मुजब अै प्रबन्ध गद्य अर पद्य दोई विधावां में लिखिजिया। आं रा नायक जुद्धवीर, धरमवीर, दानवीर, अर दयावीर हुय सकै। प्रबन्ध काव्य रचनावां नैं पण पवाड़ा, सिलोक, छंद ई कैवै। वस्तुतः 'प्रबन्ध' राजस्थानी प्राचीन काव्य रो वौ रूप है जिणमें चरित रो जस गान हुवै। वीर गाथा काल कै आदिकाल में जुद्धां री बोहोळता रै कारण आं में वीररस री प्रधानता रैयी। यूं अै जैन चरितां सूं जुड़यौड़ा ई मिळै, पण वां में ई प्रसंग– मुजब सखरा अेतियासिक घटनावां अर वीर चरितां रो दरसाव हुवै, ज्यांन भरतेश्वरी बहुबली रास (साळिभद्र सूरि), विमल प्रबन्ध (लावण्यसमय) आद।

राजस्थानी रा उल्लेखजोग प्राचीन प्रबन्ध काव्य हैं– रणमल्ल छंद (श्रीधर व्यास), कान्हड़दे प्रबन्ध (पद्मनाभ), विमलप्रबन्ध (लावण्य समय), सदयवत्स वीर प्रबन्ध (भीम), त्रिभुवन दीपक प्रबन्ध (जयशेखर सूरि वि. 1462) आद।

Nnn&

राजस्थानी री प्राचीन काव्य–रचनावां छंद नांव सूं ई रचीजी। वस्तुतः पवाड़ा, सिलोका (श्लोक), कवित्त काव्य रूप छंद काव्य–संग्यक रचनावां ई हैं।

यूं तो छंद वाची रचनावां आकार री दीठ सूं छोटी हुवै अर मुक्तक रूप में लिख्यौड़ी हुवै पण आं रचनावां में प्रबन्धात्मकता ई मिळै। सागै ई, अै रचनावां प्राय अेक इज छंद में रच्योड़ी हुवै। इण वास्तै ई आं रचनावां वास्तै छंद नांव रूढ़ हुयौ। कदैई अेक ई छंद वाळी रचनावां में जुदा–जुदा छंदा रो ई प्रयोग हुयौ हैं। इण दीठ सूं 'रणमल्ल छंद' नैं प्रस्तुत कर्‌यौ जा सकै। वस्तुतः राजसभावां में चारण–भाट द्वारा बोळीजण वाळी विरुदावलियां छंद संग्यक रचनावां हैं। पण स्तुति गान आद रै रूप में ई कैवण री परम्परा रैयी। इण भांत छंद–संग्यक रचनावां रा विसै सौर्य, भगती, स्तुति, वंदना हुय सकै। इण आधार पांण स्तोत्र, चरचरी, प्रसस्तियां आद नांव री रचनावां नैं छंदवाची रचनावां में ई मानणौ चाईजै, क्यूं'क अै रचनावां किणी खास छंद कै छंद सम्मुच्चय में लिखीजी है।

छंद काव्य रूप री उल्लेख जोग रचनावां हैं– रणमल्ल छंद (वि. 1457–श्रीधर व्यास), ईस्वरी छंद कै देवी कवित्त (श्रीधर व्यास), मयण छंद (मयण खंभ?), अंबिका छंद (वि. 1487–कीर्ति मेरु), राव जैतसी रो छंद (वि. 1598 रै लगैटगै– राव जैतसी), जगदंबा छंद कै भवानी छंद (कुशललाभ), पद्मावती छंद (कवि हेम), भारती छंद अथवा भगवती छंद (वि. 1687–संघविजय), शारदा छंद (शान्ति कुशल), अंबिका नौ छंद अथवा अंबिकाष्टक (17–18वीं सदी) आद।

¼x½ çe[k dk0; lfy;k

राजस्थानी रै प्राचीन साहित्य री समरिद्धि में जैन जतियां, मुनियां, चारण–भाटां अर लोक कवियां रो लूंठौ योगदान रैयौ है। जुगीन परिस्थितियां अर कवियां रै व्यक्तित्व रो अंकन आलोच्य काल री रचनावां में मिळै। आं रचनावां रै आधार पांण विद्वान इण काल री तीन काव्य सैलियां– जैन, चारण कै डिंगल अर लोक सैलियां रो वरणांव करै। आजकाल कुछ इतिहास लेखक अेक चौथी सैली 'संत सैली' रो ई विवेचन करण लागा है। आं विद्वानां री मानता है कै राजस्थानी रै प्राचीन काव्य में संतां री भगती–रचनावां रो ई अंजस योगदान रैयौ है। आं री वांणियां अर पदां रो अेक निरवाळौ सिल्प अर काव्यबंध है। इण बाबत आ ई कैय सका कै अै संत–जन सूं जुड्‌यौडा हा। आं री रचनावां में साहित्यिक चमक–दमक री बजाय सहज ईस–भगती अर समाज–सुधार मुजब सुझाव हा। अतः आं संता री बाणियां, साखिया, पद लोक भावना रै बेसी नैड़ै हा। उणा री रचनावां रो सिल्प लोक सैली री थाती है। अतः संतां री रचनावां नैं लोक सैली में ई सामिळ करणौ चाईजै। इण भांत राजस्थानी प्राचीन साहित्य री खास तीन सैलियां ई ही, ज्यांरी विरोळ अठै करां हा–

¼v½ tSu lSyh

राजस्थानी साहित्य लेखन री सरुआत जै जैन जतियां री रचनावां सूं मानां तौ कोई अतिसयोक्ति नीं हुवैला। जदपि औ साहित्य (जैन साहित्य) पूरी तरिया सूं धारमिक है, पण साहित्य रै विकास री दीठ सूं अै रचनावां मील रा भाटा है। आं ई रचनावां रै पांण अेल.पी. टैसीटोरी 'राजस्थानी भासा' रो अध्ययन प्रस्तुत कर्‌यौ।

राजस्थानी प्राचीन साहित्य री जैन सैली रै साहित्य री उतपत प्राक्रत–अपभ्रंस भासावां

री जैन रचनावां सूं व्ही है। इण सैली रै मुजब काव्य रचना में किणी जैन रिखि, मुनि, गुरु कै आगमवर्णित चरित नैं कथा रो आधार बणा'र मंगलाचरण, गुरुवंदना करता हुया संजम रो उपदेस दीरिजै। आपरै लख री पूरति सारु सरू में सिणगार रो खुल'र प्रयोग हुवै, जिण रो समन वैराग भाव सूं करीजैं रचना रै आखर में कवि पुस्पिका जरूर लिखैजै। इणमें कवि आपरै गुरु, रचना रै उद्देस्य, रचना–तिथि अर महताऊ घटनावां रो ब्यौरौ हुवै।

जैन सैली री रचनावां गद्य अर पद्य दोई रूपां में मिळै। पद्यात्मक (काव्य) रचनावां में कथा, रास, भास, चौपई, फागु, चौमासौ, बारहमासा, दूहा, गीत, ढाल, धवळ, ग़ज़ल, स्तवन, सज्झाय, संधि, चरित, प्रबन्ध नावां सूं लिखिजी अर गद्यात्मक रचनावां पट्टावली गुरुबविली, बही, टब्बा, बालाव बोध आद रूपां में मिळै।

वज्रसेन सूरि, सालिभद्र सूरि, धनपाल, जिनवल्लभ, देपाल, संघकळस, खेमराज, वाचक धरम सुन्दर, ब्रह्म जिनदास, मालदेव, कनकसोम, कुसललाभ, हीरकलस, समयसुंदर, हेमरतन सूरि, लखपत, ब्रह्म रायमल, जिनहर्ष, अभयसोम, लाभवर्धन, धर्मवर्धन, राजसोम, जयचंद, मतिलाभ, जयमल्ल, भीखणजी आद जैन सैली रा खास कवि हैं अर जसहर चरिउ, भरतेस्वर बाहुबलि रास, सुदरसन स्रेस्ठी रास, तेजसार रास, अगड़दत्त रास, स्थूलिभद्र छत्तीसी, नलदमयन्ती रास, मयण रेहा रास, नंदन–मणिहार संधि, मृगावती चौपई, पुरन्दर चौपई, जिनपालित जिनरक्षित रास, सीताराम चौपई, पुरन्दर चौपई, हंसराज बच्छराज प्रबन्ध, विद्याविलास रास, अमरसेन–वयरसेन चौपई, गोराबादिल चरित चौपई, शीलवती रास, कलावती चौपई आद इण सैली री उल्लेख जोग काव्य रचनावां हैं।

जैन सैली री काव्य–रचनावां प्रबन्ध अर मुक्तक दोई काव्य रूपां में रचीजी। इण सैली में खासतौर सूं चौपई, चौपाई, दूहा–सोरठा, ढाल, पद्धरी, गाहा (गाथा), वस्तु, कळस आद छंदां रो प्रयोग हुयौ है। साद्रसमूलक अलंकारां, द्रिस्टान्त, उदाहरण, उल्लेख, असंगति, अनुप्रास आद अलंकारां रा सहज प्रयोग इण सैली री काव्य रचनावां री धरोहर है। जैन सैली री काव्य रचनावां रो खास रस सान्त है जिण नैं सिणगार रस पुख्ताऊ बणायौ है। प्रसंग मुजब वीर, भयानक, वीभत्स, करुण, अद्भुत रसां रा ई सांतरा उदाहरण मिळै। ज्यादातर रचनावां गेय है अर सास्त्रीय रागां में बंध्योड़ी हैं।

जैन सैली री रचनावां री भासा सहज अर सरल लौकिक सबदाबली सूं सांवठी है। सामयिक, सामाजिक अर इतियासिक घटनावां रै वरणावां सूं अै रचनावां समाज री महती धरोहर हैं। इण सैली री खासियत रचनावां में नैतिक तत्त्व रो सांतरौ निर्वाह ई है। आं सगळी विसेसतावां पांण अजै ई जैन साहित्य जग चावौ अर प्रासंगिक बण्यौड़ौ है।

¼vk½ pkj.k dh fMxy lSyh

राजस्थान री रियासतां सरू सूं ई कवियां–कलावंतां नैं राज्याश्रय देवती आई हैं। आं राज्याश्रित कवियां में ज्यादातर चारण, भाट, राव, मोतीसर हा। अै कवि आलोच्य काल में आपरी अेक खास काव्य सैली में काव्य–सिरजण करता हा, जिणमें वीर–रस री प्रधानता सागै कल्पना अर अतिसयोक्ति री बोहळता पण हूवती ही। वीर रस नैं औजू ओजस्वी अर प्रभावू बणावण वास्तै अै चारण कवि ट–वरग रै वरणां नैं बरतीजता हा। अै चारण कवि खुद उण वगत रै जुद्धां में सामिळ हूवतां हां। इण सारु उणां रै जुद्ध

वरणावां में अतिसयोक्ति रै रैवता ई स्वाभाविकता रो अभाव कोनी खटकतौ हौ। चारणां री आ कविता डिंगल कविता नांव सूं ई ओळखीजै। इण कविता रो छंद–विधान, सबद–योजना, अलंकार–विधान आद इणां रो निजू हौ। इण वास्तै ई आ कविता चारण सैली कै डिंगल सैली री कविता कैईजै।

डिंगल सैली कै चारण सैली री इण कविता रो विकास मौखिक रूप सूं बैसी हुयौ। इण कविता नैं बांचण री बजाय सुणण में बेसी आणंद आवै। आ बात दूजी क चारण सैली/डिंगल सैली री आ कविता जनचावी कोनी बण सकी, वा फगत वर्ग विसेस सामन्ती कविता ई बण'र रैय गयी। पण राजस्थानी प्राचीन काव्य में इणरी ठावी ठौड़ रैयी। राजस्थानी काव्य परम्परा री आ खास ओळखांण बणी। डिंगल गीत इणी सैली री देन है। डिंगल गीतां री ओप वां रै बांचण में लखावै। औ राजस्थानी काव्यशास्त्र रो खास छंद है जिकौ वर्णिक अर मात्रिक दोई तरिया रो हुय सकै।

चारणां रै अलावा ई चारणेत्तर जातियां रा कवि ई डिंगल सैली में आप री रचनावां लिखी। चारण सैली री पैली रचना कैईजण वाळी पोथी 'रणमल्ल छंद' रो रचेता व्यास जात रो कवि श्रीधर हौ प्रो. नरोत्तम दास स्वामी रै सबदां में ''चारणी शैली की प्रारंभिक रचनाओं में श्री धर का 'रणमल्ल छंद', ढाढी बहादुर की 'वीरमायण' और चारण शिवदास की अचळदास खीची री 'वचनिका' महत्त्वपूर्ण हैं।''

आं रचनावां रै अलावां चारण सैली री बीजी महताऊ रचनावां हैं– हम्मीर रासो, हम्मीर काव्य (सारंगधर), कान्हड़दे प्रबन्ध (पद्मनाभ), राव जैतसी रो छंद (बीठू सूजो), हालाझाला रा कुण्डलिया (ईसरदास बारहठ), देईदास जेतावत री वेल, विरुद छिहत्तरी (दुरसा आढा), महामाई दुर्गा सातसी (कुसललाभ), गुण रूपक बंध (केसोदास गाडण), रतन रासो (कुम्भकरण), लखपत पिंगल (हम्मीरदान रतनू) राजरूपक, सूरज प्रकास, रघुवरजस प्रकास, अनेकू डिंगल गीतं आद।

इण सैली में पद्य (काव्य) रा प्रबन्ध अर मुक्तक दोई काव्य रूप मिळै। रासो, प्रबन्ध, वचनिका, विलास, छंद, नीसाणी, दवावैत, प्रकास, वेलि, आद नांवां सूं अनेकूं सिरै काव्य रचनावां लिखीजी। डिंगल सैली री रचनावां रो प्रमुख रस वीर है, पण जथा–प्रसंग सिणगार, रौद्र, भयानक, वीभत्व रसां रो ई सटीक वरणांव हुयौ है। भाषा में द्वित्व सब्दावली री प्रधानता रै सागै ध्वन्यात्मक सब्दावली बरतीजी है। वैण सगाई रो प्रयोग इण सैली री ज़रूरी सरत है। वैण सगाई रै सागै ई अनुप्रास, अतिसयोक्ति, संदेह, सांगरूपक, उल्लेख, उपमा, उत्प्रेक्षा, विसेसोक्ति, काव्य लिंग अलंकारां रा सांतरां प्रयोग मिळै। नाराच, मोतीदास, कवित्त, छप्पय, रसावळा, पद्धड़ी, दूहा, सोरठां, कुण्डलिया आद छंदां री इधकाई इण सैली री महत्ती विसेसता है।

¼b½ ykfdd lyh

लोक कै लौकिक सैली सूं अरथ उण साहित्य सूं है जिका में अभिव्यक्ति मुक्त अर उद्दाम रूप में हुवै। यूं तौ लोक सैली री रचनावां रो रचेता आखौ जन समुदाय हुवै, फेर ई उण रो कोई सुतंत्र रचेतौ हुवै तौ उण री रचना माथै उणरै व्यक्तित्व री कोई छाप नीं लखावै। वा पूरी तरिया सूं निरवैयक्तिक भाव सम्पन्न रचना हुवै। इण दीठ सूं सैमूतौ संतकाव्य, मीरांबाई रा पद, नरसी मेहता रो मायरौ, हरजस, ढोलामारू रा दूहा, जीण माता रा गीत, हरजी रो ब्यावलौ आद रचनावां लोक सैली री नामचीन रचनावां बण जावै। राजस्थानी लोक गीत, लोक कथावां, लोक नाट्य (ख्याल), वात आद इणी सैली में सामिळ रचनावां हैं।

इण भांत राजस्थानी लोक सैली री रचनावां पद्यात्मक अर गद्यात्मक दोई रूपां में मिळै। पद्यात्मक रचनावां प्रबन्ध अर मुक्तक दोई काव्य रूपा में मिळै। इण सैली री पद्यात्मक रचनावां री सैं सूं मोटी विसेसता उणां री गेयता अर लोककल्याण री भावना है। राजस्थानी लोकजीवन रो जथार्थ अर सहज जीवन इण सैली री काव्य रचनावां में उकेरीजियौ है। राजस्थानी रै प्राचीन काव्य साहित्य अर आगै रै साहित्य रै विकास में इण सैली री रचनावां री लूंठी ठौड़ है। नीति, लोक विस्वास आद रै प्रत आस्था उण जुग रै जनजीवन नैं रूपायित करै।

¼?k½ çe[k çofr;k

¼v½ ohj jlkRed dk0;

राजस्थान री धरती सरू सूं इज जुझारू रैयी है। जुद्धवीर, दानवीर, दयावीर अर धरमवीरां री जस गाथावां सूं अठा रो साहित्य अर इतियास भर्योड़ौ है। जुद्ध मय वातावरण रै कारण अठै रचीजियै साहित्य री ई प्रव्रति वीर रसात्मक रैयी। वीरता रै वरणावां रै कारण ई राजस्थानी साहित्य रै काल रो नांव वीर गाथा काल दीरिजियौ। बारवै सइकै सूं 19 वैं सइकै लग राजस्थान री रियासतां रै आपसी मनमुटाव कै परदेसी ताकतां रै आक्रमणां सूं अठै कोई न कोई वेढ़ हूवती ई रैयी। चारण–भाट अर बीजा कवि परिस्थिति मुजब वां नैं आपरी लेखनी सूं मांडता रैया। राजस्थानी रै इण प्राचीन काव्य में वर्णित वीर रस रा सजीव अर स्वाभाविक चितरामां पांण कवीन्द्र रवीन्द्र, अेल. पी. टैसीटरी, डॉ. सुनीति कुमार चटर्जी, दीवान हरविलास सारदा आद विद्वान राजस्थानी वीर काव्य नैं मुक्त कंठ सूं सरायौ है।

प्राचीन राजस्थानी वीर काव्य रो सिरजण प्रायः राज्याश्रय में ई हुयौ। चारण–भाट अर बीजा राज्याश्रित कवि आप रै आश्रयदाता राजावां रो विरुद गावता हा तौ दुसमियां रो निन्दा गान। इण भांत आलोच्य काल रो वीर काव्य दो रूपां में रचीजियौ– सर (विरुदगान) अर विसर (निंदागान)। अै वीर रसात्मक रचनावां प्रबन्ध अर मुक्तक दोई रूपां में लिखिजी। वीर रसात्मक प्रबन्ध रचनावां रासो, विलास, रूपक, वचनिका, वेल, प्रबन्ध काव्य रूपां में लिखिजी, ज्यांन– हम्मीर रासो (सारंगधर), सगतसिंघ रासो (गिरधर), राजप्रकास (किसोर दास), सूरजप्रकास (करणीदान), राज विलास (कवि मान), गुण रूपक (केसवदास गाडण), राज रूपक (वीरभाण), अचळदास खीची री वचनिका (सिवदास गाडण), रतनसी खींपावत री वेल (दूदो विसराल), कान्हड़ दे प्रबन्ध (पद्मनाम), वीरमायण (ढाढी बादर), रणमल्ल छंद (श्रीधर व्यास), राव जैतसी रो छंद (वीढू सूजो) आद।

वीर मुक्तक काव्य रचनावां कुंडलियां, नीसांणी, झूलणा, गीत, कवित्त, दूहा, छत्तीसी, छिहत्तरी आद नांवां सूं लिख्योड़ी मिळै, ज्यांन– हाला–झालां रा कुंडलिया (बारठ ईसरदास), गोगेजी चहुंवाण री नीसांणी, झूलणा रावत मेघा रा (आढ़ा दुरसो), गीत मानसिंघ रो (लालस नवलजी), राव रणमल्ल रा कवित्त (अल्लूजी चारण), दूहा सोळंकी वीरमदेवजी रा (आढ़ा दुरसो), सिद्धराव छत्तीसी (बांकीदास), विरुद छिहत्तरी (दुरसा आढ़ा) आद।

वीर भावां सारू खास प्रतीकां रो प्रयोग इण वीर काव्य री खासियत है। आं प्रतीकां में सिंघ, सूअर, धवळ, हाथी, नाग अर भाखर सबदां नैं खास तौर सूं बरतीजिया है। सिंघ अर हाथी रै प्रतीक रो सांतरौ प्रयोग 'अचळदास खींची री वचनिका' में जोयौ जा सकै,

जठै कवि सिंघ रै स्वतंत्र भाव नैं दरसायो है अर हाथी नैं बंधन चावौ बतळावता कैयौ है–

xboj xGb xGkfRFk;m] tg [kpb rg tkbA
lhg xGRFk l tkb lgb] rm ng yfD[k fcdkbAA

राजस्थानी रै प्राचीन वीर काव्य में जुद्ध–संदर्भा में लोक विसवास अर जुद्ध वरणाव मुजब रूढ़ियां रो खासौ महत्त्व लखीजै। इण काल री वीर प्रबन्ध रचनावां में अति प्राक्रतिक तत्त्वां री इधकाई है। इणरौ खास कारण नायक नैं वीरोचित बतळावणौ अर जुद्ध रै लायक वातावरण निर्माण करणौ है। 'हाला–झालां री कुंडलिया', 'वचनिका राठौड़ रतनसिंघ जी री', 'सूरज प्रकास' आद रचनावां में आं लोक विसवासां, कथानक रूढियां अर अलौकिक घटनावां सूं रु–ब–रु हुय सकां।

आलोचा काल रै वीर काव्य रचनावां में नारी रो वीर अर प्रेरणादायी रूप मंडिजियौ है। मां, बहन, जोड़ायत, भौजाई, सासू आद सगळा ई रूपां में वा वीर नायक नैं आपरै कर्तव्य री सीख देवती लखावै। जौहर उणरी वीरता री परिणति है–

jkm j.kFkHk r.kkg tmgj tmgj togkA
dh/kk Hkk tk&db dofj o/krk chl x.kkgAA

rb [k= [khph! [kkfM ukfp.k yx yk;h ughA
mfÙke eè;e udBk dh/kk tmgj dkfMAA

¼vpGnkl [khph jh opfudk½

वीर रस रै सागै प्रसंग मुजब अठै सिणगार, करुण, भयनाक अर अद्भुत रसां रा वरणाव ई देख सकां। दूहा, कवित्त, कुंडलिया, गाहा, पाधड़ी, साटक, तोटक, नाराच, भुजंग–प्रयात, रसावळौ, झूलणा, मोतीदास, नीसांणी आद छंदां रै सागै ई डिंगल गीत छंद रो ई आं रचनावां में सांतरौ प्रयोग मिळै। वयण सगाई, अनुप्रास, सांग रूपक अलंकारां रै माध्यम सूं अै कवि जुद्ध प्रसंगां नैं घणौ मनमोवणौ बणायौ है।

¼vk½ Hkxrh dkO;&

लगोलग हुया जुद्धां सूं उकताय'र राजस्थानी जन–समाज पूरी जरियां सूं निरास हुय चुक्यौ हौ। खासतौर सूं खानवा रै जुद्ध पूठै राणा सांगा री मिरत्यु रै उपरांठ राजस्थानी समाज री चिन्ता अर निरासा औजू बधगी। मिनख खुद सूं ई डरपण लागौ। इण वगत उणनैं सिरफ ईस रो ई भरोसौ रैयगौ और वौ ईस्वर भगती में लीन हुयगौ। मनोविग्यान री दीठ सूं ई आ बात स्वाभाविक ही। आचार्य रामचंद्र शुक्ल मुजब ''अपने पौरुष से हताश जाति के लिए भगवान की शक्ति और करुणा की ओर ध्यान ले जाने के अतिरिक्त दूसरा मार्ग लगभग नहीं था।''

भगती रै प्रति इण आकरसण नैं बधापौ देवण में सरुआती जैन भगती, देस में बधता धार्मिक अर भगती आन्दोलनां रो भरपूर सै–योग मिळ्यौ। राजपूत राजां समाज री जरूरत समझ'र जैन 'आचार्य', वैष्णव–धरमाराआचार्य, लोक–भगती सम्प्रदायां नैं संरक्षण दिरायौ, जिणसूं अठै जैन, नाथ, वैष्णव, सूफी भगती मुजब साहित्य रो सिरजण ई सरू हुयौ। वैष्णव भगती री सगुण अर निरगुण भगती रो प्रचार–प्रसार हुयौ। इण मुजब साहित्य रचीजियौ। औ साहित्य राम अर क्रष्ण दोयां सूं सम्बन्धित हौ। इण भांत राजस्थानी रै प्राचीन काव्य में भगती काव्य री लूंठी अर समरिद्ध प्रव्रत्ति निम्नलिखित

रूपां में विकसित व्ही –

1- ^o".ko* Hkxrh dk0;&

नागदमण (सांयाजी झूला), मीरां पदावली (मीरां बाई), हरिरस (ईसरदास), क्रिसण रुकमणी री वेल (प्रिथीराज राठौड़), रामरासो (माधोदास दधिवाडिया), गुण गोविन्द (कल्याणदास लखणोत), अष्टायाम, उपासना बावनी (अग्रदास), अवतार चरित (नरहरिदास), गज उद्धार (महाराजा अजीतसिंघ), भगवत भाव चंद्रायण (सोढी नाथी), हरिपिंगल प्रबन्ध (जोगीदास), पिंगल सिरोमणि (कुसललाभ), दीनजी (फुटकल पद), रघुवरजस प्रकास (किसना आढ़ा), रघुनाथ रूपक गीतां रो (मंसाराम मंछ), गवरी बाई (फुटकल पद) आद।

2- fujx.k Hkxrh dk0; ¼lar dk0;½

दादूवाणी (दादू दयाल), वाणी, सर्वंगी (रज्जबजी), अनभैवाणी (गरीबदास), वाणी (संतदास), सुंदरविलास, वाणी (सुंदर दास), भक्तमाल (राघवदास), गुण नीसांणी (बाजींदजी), भक्तिसागर (चरणदास), दयाबोध, विनय मालिका (दयाबाई), वाणी (सहजोबाई), नीसाणी, साखिया (हरिरामदास) वाणी (दरियावजी), भक्त विरदावली, भरथरी संवाद (हरिदास), वाणी (मावजी) आद।

3- tSu Hkxrh dk0;

भरतेस्वर बाहुबलि रास (सालिभद्र सूरि), नेमिरास (सुमति गणि), स्थूलिभद्र फाग (हलराज), सालिभद्र रास (साधु हंस), नेमिनाथ फागु (राजसेखर सूरि), मयणरेहा रास (मति सेखर), सत्रुंजय आदिस्वर स्तवन (वाचक विनयसमुद्र), पद्मावती रास (मालदेव), अगड़दत्त रास, तेजपाल रास, नवकार छंद, गुड़ी पार्स्वनाथ छंद (कुसललाभ), जगदंबा बावनी (हेमरतन सूरि), गौतम पृछा, सीताराम चौपई (समयसुंदर), जिनप्रतिमा हुंडी रास (जिनहर्ष), मलयसुंदरी कथा, रिसभदेव स्तवन (लब्धोदय), श्रैणिक चौपई (धर्मवर्धन), जयवाणी (जयमल्ल), रिषभ चरित, नर्मदा सती चौपई (रायचंद्र) आद।

4- lQh Hkxrh dk0;

सेख मोइनुद्दीन चिस्ती, सेख हमीदउद्दीन चिस्ती, मौलाना रजीउद्दीन हसन सगानी आद।

5- ukFk Hkxrh dk0;

नाथचरित, नाथ पदावली, 2 नाथ चंद्रोदय आद (म. मानसिंघ), नाथगीत, आयस देवनाथ रा दूहा (बांकीदास), नाथ स्तुति (उदयराम गूंगा), आयस देवनाथजी रो गुणरूपक (सांदू संगराय), अवधूत महिमा अस्अक (पीरचंद भंडारी), जलंधर रूपग (दोलतराम सेवग) आद।

¼b½ fl.kxkj&dk0;

मिनख री रागात्मक व्रत्ति संसार री सास्वत सांच है। इणी वास्तै आदिकाल सूं अजै लग संसार री सगळी भासावां में सिणगारिक कविता लिखिजती रैयी है। वातावरण रै मुजब राजस्थानी में सरू सूं ई वीर काव्य लेखन री परम्परा रै हुवता ई मौकैसर राजस्थानी कवि सिणगारिक काव्य रो सिरजण कर्‌यौ। प्राचीन काल में राजस्थानी कवियां नैं इण कांनी ढुकावण रो काम राज्याश्रय, पिंगल काव्य री मधुरता, जैन चरित काव्य अर

लोककाव्य री सिणगारिकता कर्‌यौ। राजस्थानी रै प्राचीन काव्य री महताऊ सिणगारिक रचनावां हैं– बीसलदेव रास (नरपति नाल्ह), लक्ष्मणायण (आसानंद), ढोला–मारू रा दूहा (लोककाव्य), रूमकणीहरण (सायाजी झूला), माधवानल काम–कंदला, ढोला मारवणी चौपई अर बीजा जैन चरित काव्य (कुसललाभ), वेलि क्रिसण रुकमणी री (राठौड़ प्रिथीराज), मीरां पदावली, प्रेम पत्री रा दूहा (अज्ञात), बुद्धि रासो (जल्ह), मदन विनोद, रसमंजरी, श्रृंगार–तिलक, कंदर्प कल्लोल आद (कविजान), राधा–किसनजी रा दूहा (जोगीदास), झमाल राधिका सिख–नख वर्णन (बांकीदास) आद।

इण भांत आलोच्य काल में स्वतंत्र रूप सूं सिणगारिक काव्य बोहोत कम रचीजियौ। वीर अर भगती मुजब रचनावां में प्रसंगानुरूप सिणगार रै दोई पखां रो वरणाव मिळै, ज्यान हाला–झाला रा कुंडलिया वीर रस प्रधान रचना है, पण उणमें जुद्ध मुजब सांगरूपक सिणगार रस रा ठावा उदाहरण कैया जा सकै। उणी तरिया वेलि–क्रिसण रुकमणी मूलतः भगती रस री रचना है पण वय संधि, रितु वर्णन अर विवाह प्रसंगां में सिणगार रस रो सांतरौ प्रयोग जोया जा सकै, ज्यांन–

vkxfy fir ekr jefr vkxf.k]
dke fojke fNikM.k dktA

yktorh vfx vkg ykt fofèk]
ykt djfr vkob yktAA

राजस्थानी कवि आपरी रचनावां में सिणगार रो प्रभावू वरणाव करण वास्तै अतिस्योक्ति अलंकार रो सबसूं बेसी प्रयोग कर्‌यौ है। पण इण प्रयोग सूं अै वरणाव कठै ई मरजाद री सींव नैं कोनी तोड़ी। नख–सिख वरणाव हुवै क मिलन–प्रसंग सगळी जागां मरजाद री पूरी रक्षा व्ही है। जलाल–बूबना, सोरठ, आभळ दे–खींवजी, जेठवा–ऊजळी, मूमळ–महेन्द्र, बाघो– भारमली जैड़ी लोक गाथावां में ई मर्यादित सिणगार रा वरणांव मिळै।

¼b½ y{k.k dk0; ijEijk ¼jhfr foospd XkaFk½

राजस्थानी रै जूनै काव्य में लक्षण–काव्य रचनावां री ई प्रव्रत्ति मिळै। इण काल में रचीजियां लक्षण काव्य ग्रंथ हैं– नागराज पिंगळ (मोहण), अनूप रसाल (अनूपसिंह), पिंगळ सिरोमणी (कुसललाभ), हरिपिंगल प्रबन्ध (जोगीदास), रसरूप (रूपजी), भाव पंचासिका (वृंद), रूपदीपक– पिंगल (जयक्रष्ण भोजक), हम्मीर नाममाला, लखपत पिंगल (हम्मीर–रतनू), अलंकार रत्नाकर (दलपत बंसीधर), अलंकार आसय (उत्तम चंद भंडारी), रघुनाथ रूपक गीतां रो (मंसाराम मंछ), छंद विभूसण सटीक, साहित्यसार (उदयचंद भंडारी), रणपिंगल (सं. दीवान रणछोड़), पांडव जसचंद्रिका (सरूपदास), रघुवरजस प्रकास (किसना आढ़ा), कवि कुळबोध (उदयराम गूंगा), कवि–मत्तमंडण (बांकीदास), डिंगलकोस (मुरारीदान, बूंदी), दूसण–भूसण प्रबन्ध (बगसीराम लालस), जसवंत पिंगल (चिमनाजी) आद।

आं लक्षण ग्रंथां रो सिरजण उण वगत री सामन्ती परम्परा रो परिणाम है। आं ग्रंथां में छंद सास्त्रीय रचनावां री अधिकता है। कुछेक अलंकारां रो ई मौलिक दीठ सूं विस्लेसण हुयौ है। काव्य रचना में भासा (सबद प्रयोग) री दीठ सूं नाममालावां ई घणी महताऊ सास्त्रीय रचनावां हैं। डिंगल गीत अर उणा रै मुजब विवेचित काव्य दोसां रो विवेचन राजस्थानी काव्यसास्त्र रो मौलिक चिन्तन कैईजैला।

आं रचनावां री सैली संस्क्रत परम्परा सूं हट'र प्राक्रत–अपभ्रंस लक्षण ग्रंथां रै बेसी नैड़ै हैं। अै कवि आपरी विसै वस्तु रो विवेचन सिव–पार्वती, राम कथा रै माध्यम सूं कथात्मक रूप में कर्‌यौ है, जिणां में कठै ई रीति कालीन सिणगार री बोहोळतां आयगी तौ कठै ई भगती काल री मन नैं सान्ति देवण आळी भगती।

¼m½ uhfr dk0;

मिनख जूण में उणरौ आचरण सिरै हुवै। औ आचरण भलै अर भूण्डै रूप में लखावैं। पण भारतीय मनीसा सदीव भलै अर सांच रूप नैं ई सरायो है। म्हांणौ आखौ साहित्य इणी रूप नैं बखाणै। मानखै रो चहुंमुखी विकास उणरै इण आचरण कै नीति रै मारफत इज हुय सकै। नीति ई उण रै करणीय अर अकरणीय रो निरधारण करै। औ ई कारण है क राजस्थानी साहित्य चाहै वौ भगती, वीरता, सिणगार किणी भाव सूं जुड़योड़ौ हुवै नीति–मुजब बातां उणमें मतै इज लिखीजगी है। इण भांत राजस्थानी रै जूनै काव्य री अेक महताऊ प्रव्रत्ति नीति काव्य पण है। बीसल देव रास, हम्मीर रासो, अचलदास खीची री वचनिका, कान्हड़ दे प्रबन्ध, गोरा बादिल चरित चौपाई (हेमरतन), मीरां पदावली, नागदमण हालाझाला रा कुण्डलियां अगड़दत्त रास, (कुसल लाभ), वेलि क्रिसण रुकमणी री आद रचनावां में घणा ई नीति परक छंद जोया जा सकै। उदाहरण सारू हेमरतन री अै औळियां प्रस्तुत हैं–

pr\j r.kh , ugh pkr\jh] v.krfMm vkob fQfj fQjhA
okr xkfB v.k#prh djm] dk<rk b\ ufo uhlj\bAA

fcg\ t.kk fofp =ht\ Fkkb\ vegy ekg\ vk?k\ tkbA
v.k ckyk;\ ckyb ?k.k\ v.knhèk\ ofy Y;b c\l.k\AA

आं रचनावां रै अलावा नीति मुजब स्वतंत्र काव्य रचनावां रो ई सिरजण राजस्थानी प्राचीन काव्य परम्परा में हुयौ। अै रचनावां खासतौर सूं मुक्तक शैली में लिखीजी। कवि आपरी बात कैवण वास्तै खुद नैं कै किणी दूजै पात्र नैं संबोधित कर्‌यौ है। अधिकांश रचनावां दूहा–सोरठा छंद में रचीजी। इण काल री उल्लेखजोग नीति काव्य मुजब रचनावां हैं– ईलै चावडे रा दूहा (लाखणसी), किसनिया रा दूहा (किसनदास), राजिया रा सोरठा (किरपाराम खीडिया), रामला रा दूहा (आयस देवनाथ), मोतिया रा सोरठा (रायसिंघ सांदू), रेखला रा दूहा आद। आ परम्परा अजै ई जीवित है।

1-4 çkphu jktLFkkuh dk0; % Hkkoh lkfgR;&fljt.k jh fçLBHkke

प्राचीन राजस्थानी काव्य राजस्थानी साहित्य री सरुआती धरोहर है। राजस्थानी रो औ साहित्य उण जुग रै समाज री सागी साख है। राजनीति रै उथल–पुथळ सूं भर्‌यौड़े इण काल में ई अठां रा कवि आपरी भावनावां रो खुलासौ विविध साहित्य रूपां में कर्‌यौ। इण वगत रचीजी वीर, भगती, सिणगार, नीति अर रीति मुजब काव्य रचनावां सूं जठै नै उण वगत री इतियासिक, राजनीतिक, सामाजिक वातावरण रो परिचै मिळै, उठै ई तद्‌जुगीन मानखै रै सौंदर्य बोध सूं ई रु–ब–रु हुवा।

प्राचीन राजस्थानी काव्य री भासा अेकसरीखी नहीं ही। कठै इण जुग री भासा में प्राक्रत–अपभ्रंस रो प्रभाव लखीजै तौ कठै ई क्षेत्र री बोली हावी दीखै। आ भासा होळै–होळै आपरो विकास कर्‌यौ अर आगै रै साहित्य री भासा नैं परिमार्जित करण री दिसा दीवी। इणी भांत इण काव्य रा विविध काव्य रूप, प्रव्रत्तियां, सिल्प छंद, अलंकार रै आधार पांण भावी साहित्य री दिसा निरधारित हुवैला। भावी साहित्य आपरै समै री मांग री पूरति पैला रै साहित्य री प्रव्रतियां अर उणरी विपुलता रै आधार पांण ई कर सकै।

इण भांत राजस्थानी रो प्राचीन काव्य समरिद्ध, साहित्यिकता विपुलता, भासा सामरथ सूं सम्पन्न है। अतः वौ आधुनिक राजस्थानी साहित्य री प्रिस्ठ भोम बण्यौ। औ ई कारण है क राजस्थानी आधुनिक काल री सरुआत में ईसवी सन् साठ लग राजस्थानी प्राचीन साहित्य री प्रव्रतियां में ई काव्य रचीजतौ रैयौ। प्राचीन रास्थानी रा दूहा, सोरठा, छप्पय, कवित्त कुंडलियां जैड़ा छंद अजै ई चावा बण्योड़ा हैं।

1-5 mi lgkj

राजस्थानी साहित्य री परम्परा घणी, जूनी अर लांबी है। जैन–जातियां रै चरित काव्य सूं सरू व्ही राजस्थानी काव्य परम्परा आपरै जुदा–जुदा रूपां में विकसीत व्ही। वि.सं. 1150 सूं वि.सं. 1900 लग रें समै नैं प्रायः विद्वान प्राचीनकाल रै रूप में संबोधित करै। इण काल में राजस्थानी काव्य प्रबन्ध अर मुक्तक रूपां रै अलावां प्रचलित काव्य रूपां–चरित काव्य, हरजस, रास, रासौ, संधि, पवाड़ा, सिलोका, स्त्रोत, वाणी, वचनिका आदि रूपां में रचीजतौ रैयो। अै काव्य रूप वीर, भगती, सिणगार, रीति, नीति आद प्रवृत्तियां सूं जुड़्योड़ा हा। प्राचीन राजस्थानी काव्य री तीन सैलियां ही– जैन, चारणी कै डिंगळ अर लौकिक। राजस्थानी रो औ प्राचीन काव्य ई आधुनिक काव्य री प्रिस्ठ भोम बणी। आधुनिक राजस्थानी काव्य रै सरूआती बरसां में जूनी काव्य प्रव्रत्तियां में ई काव्य रचीजियौ।

1-6 vH;kl lk: loky

1. राजस्थानी साहित्य रो ठावो वरगीकरण करता हुया प्राचीन राजस्थानी काव्य रो अरथ समझावो।
2. राजस्थानी साहित्य रै वर्गीकरण बाबत विद्वानां रै मतां रो उल्लेख करता हुया आपरै मत री व्याख्या करै अर बतावौ कै प्राचीन राजस्थानी काव्य रा प्रेरणा स्त्रोत कांई हा ?
3. राजस्थानी रो प्राचीन काव्य पर अेक लेख लिखौ।
4. प्राचीन राजस्थानी कवि अर उणां री रचनावां रो उल्लेख करता हुया किणी दोय कवि या रचनावां माथै टिप्पण लिखौ।
5. प्राचीन राजस्थान काव्य रो उल्लेख करता हुया रास, रासो, फागु, हरजस काव्य रूपां नैं समझावौ।
6. प्राचीन राजस्थानी री प्रमुख रचनावां रो उल्लेख करता हुया प्रमुख काव्य सैलियां नैं समझावौ।
7. प्राचीन राजस्थानी काव्य री खास–खास प्रवृत्तियां रो खुलासौ करो।

1-7 lnHk XkzFkk jh ikuMh

1. आचार्य रामचंद्रशुक्ल– हिन्दी साहित्य का इतिहास
2. सं. नगेन्द्र– हिन्दी साहित्य का इतिहास
3. डॉ. मोतीलाल मेनारिया– राजस्थानी भाषा और साहित्य
4. डॉ. पुरुषोत्तम लाल मेनारिया– राजस्थानी भाषा और साहित्य
5. प्रो. कल्याणसिंह शेखावत– राजस्थानी भाषा एवं साहित्य
6. डॉ. जगदीश प्रसाद श्रीवास्तव– डिंगल साहित्य (पद्य)
7. सं. नरोत्तमदास स्वामी– वेलि क्रिणरूकमणी री
8. अगरचंद नाहटा– प्राचीन राजस्थान काव्य रूप
9. श्री मनोहर प्रभाकर– राजस्थानी साहित्य और संस्कृति
10. प्रो. एम.आर. मजमूदार– मध्यकालीन साहित्य नो स्वरूप
11. डॉ. मनमोहन स्वरूप माथुर– कुशललाभ : व्यक्तित्व और कृतित्व

bdkbl& 2

eè;dkyhu jktLFkkuh dkO; dkyxr iovfr;k] dkO; /kkjkok vj fo/kkok

bdkbl jk eMk.k

2.0 उद्देस्य

2.1 प्रस्तावना – सामान्य परिचै

- (क) अरथ अर नांमकरण
- (ख) काल–निरणै

2.2 मध्यकाल – परिवेस

- (क) राजनीतिक परिवेस
- (ख) सामाजिक सांस्क्रतिक परिवेस
- (ग) धार्मिक परिवेस
- (घ) आर्थिक परिवेस
- (ङ) साहित्यिक परिवेस

2.3 मध्यकाल – प्रमुख रचनावां अर रचनाकार– सामान्य परिचै

2.4 मध्यकाल – अेक अध्ययन

- (क) प्रव्रत्तियां
- (ख) काव्य धारावां
- (ग) काव्य – रूप

2.5 सार

2.6 अभ्यास सारु सवाल

2.7 संदर्भ ग्रंथां री पानड़ी

2-0 míL;

इण इकाई रो उद्देस्य विधार्थियां नैं राजस्थानी साहित्य रै मध्यकालीन साहित्य री जाणकारी दिरावणौ है। इण जाणकारी में सबसूं पैलां विद्यार्थियां नै मध्यकाल रै अरथ रो खुलासौ करता हुया इण रै जामकरण अर काल निर्धारण री जाणकारी देवालां। इणरै उपरांत इण काल री राजनीतिक, सामाजिक, धार्मिक, आर्थिक अर साहित्यिक परिवेस री ओळखांण करावता थकां इण काल री राजस्थानी रचनावां रो खुलासौ करालां। मध्यकालीन परिस्थितियां रै अनुरूप उण जुग री साहित्यिक प्रव्रतियां, काव्य धारावां अर काव्य विधावां री विरोळ प्रस्तुत करालां। इण भांत इकाई में विद्यार्थी नीचे लिखी बातां सूं अवगत हुवैला–

1. राजस्थानी साहित्य रै मध्यकाल रै नांमकरण अर काल निरणै रो ग्यांन
2. मध्यकालीन साहित्य–निर्माण रै परिवेस री ओळखांण।
3. इण काल री खास–खास रचनावां रो परिचै।
4. मध्यकालीन राजस्थानी साहित्य री प्रमुख प्रव्रत्तियां, धारावां अर रूपां री विगतवार जाणकारी।

2-1 çLrkouk % lkekU; ifjp

¼d½ vjFk vj ukedj.k

विद्वानां रै मुजब 'मध्यकाल' अेक परिभासिक सबद है, जिकौ इतियास रै आद, मध्य अर आधुनिक काल खण्डां रै संदर्भ में बरतीजियौ है। विस्व रै इतियास रो मध्यकाल सातवें–आठवें सइकै सूं सरु हुवै। भारतीय इतियास में पण मध्यजुगीन प्रव्रत्तियां हर्षवर्धन रै राज रै पतन पूछै इणी समै सूं सरु हुय जावै। विस्व–इतियास में औ काल सातवीं सदी सूं 17वीं सदी रै आखर लग रैयौ, पण भारत में इणरौ अस्तित्व 19वीं सदी रै आखर लग रैयौ। इण भांत भारत में औ बारह सौ बरसां रो काल–विस्तार मध्यकाल कै मध्य जुग नांव सूं जाणीजै।

इतियासकारां रै मुजब इण काल खण्ड रा फेर दोय हिस्सा करीजै– पूर्व मध्यजुग अर उत्तर मध्यजुग। पूर्व मध्य युग बारवैं सइकै रै आखर लग अर उत्तर मध्य जुग 13वीं सदी सूं 19वीं सदी लग चालै। इतियास में मध्यजुग री आं कल्पना निजू (व्यक्तिगत) अर सामाजिक जीवन री सगळी प्रव्रत्तियां में ह्रास अर पुनरुत्थान, दोई तरियां प्रव्रत्तियां मिळै। ब्रजेश्वर वर्मा रै मुजब 'पूर्व मध्य जुग समस्टीगत दीठ सूं ह्रासोन्मुख है अर उत्तर मध्य जुग पुनरुत्थान री प्रव्रत्तियां सूं भरपूर।'

इतियासकारां री इणी अवधारणां पांण हिन्दी साहित्य रा इतियासकार 14वीं–15वीं सदी सूं 19वीं सदी लग रै कालखण्ड मध्यकाल नांव दिरायौ। हिन्दी साहित्य रा इतियास लेखक इतियास रै पूर्व मध्यकाल नैं आदिकाल कै वीर गाथा काल कैयौ। अै इतियासकार विक्रम री 15वीं सदी सूं 17वीं सदी रै काल नैं पूर्व मध्यकाल कै भगतीकाल नांव दिरायो अर वि. 1700 सूं वि. 1900 रै काल नैं उत्तर मध्यकाल कै रीतिकाल नांव दिरायौ।

राजस्थानी साहित्य रा इतियासकार ई इणी परम्परा नैं अंगैजी। सांच तौ आं है कै राजस्थानी साहित्य रै इण काल में अेक सागै घणकरी प्रव्रत्तियां रो साहित्य लिखिजियौ। भगती आन्दोळण री सरुआत उणरै प्रभाव सूं ई अठै सुद्ध भगती साहित रो सिरजण कोनी हुयौ। 'नागदमण, वेलि क्रिसण रुकमणी' अर घणकरी जैन भगती रचनावां रा नायकां रा वीरत्व सूं भर्‌या वरणांव आं रचनावां रा सिरजक मांड्या है। इण भांत इण काल भगती साहित्य में ई भरपूर वीर रस रा चितराम मिळै तौ वीर रसात्मक रचनावां में उल्लेख जोग सिणगारिक वरणांव मंडीजिया है। हिन्दी साहित्य जैड़ौ रीतिकाव्य वि.सं. 1700–1900 रै काल रै राजस्थानी साहित्य में रचीजियौ ई कोनी। रीतिकाव्य परम्परा में अठै खासतौर सूं छंद ग्रंथां, नाममाळावां री इधकाई रैयी। 19वैं सइकै में कुछ कवि डिंगल गीतां रै संदरभ में काव्य दोसां बाबत बात करी। आं रचनावां रो मुख्य विसय भगती कै वीरत्व रो बखाण है। वस्तुतः अै रचेता संस्क्रत कै हिन्दी रै कवियां री दाईं आचारिज कोनी हां। वै तौ सिरफ कवि हा। अतः इण काल नैं मध्यकाल नांव देवणौ तौ सही है, पण उणरा दोय भाग पूर्व मध्यकाल (भगतीकाल) अर उत्तर मध्य–काल करणौ ठीक नीं कोनी लागै।

¼[k½ dky fuj.k

हिन्दी साहित्य रै इतियास में आचार्य रै रामचंद्र शुक्ल रो काल विभाजन प्रायः मानीतौ है। इण वास्तै उठै मध्यकाल (पूर्व मध्यकाल अर उत्तर मध्यकाल) री समैं सीमा ई प्रायः ठावी है। पण राजस्थानी साहित्य रै इतियास में अजैलग किणी काल विभाजन रै मानता रै अभाव में विद्वान मध्यकाल री समै–सीमा न्यांरी न्यारी निर्धारित करी है। राजस्थानी साहित्य रै इतियास लेखकां री आं समै–सीमा वि.सं. 1460 सूं वि.सं. 1907 लग गयी है। डॉ. मोतीलाल मेनारिया राजस्थानी साहित्य रै पूर्व मध्यकाल री सरुआत वि.सं. 1460 मानता हुया अन्त वि. 1700 मानै अर वि.सं. 1700 सूं वि. 1900 रै काल नैं उत्तर मध्यकाल कैवै अर्थात् डॉ. मेनारिया रै मत सूं मध्यकाल रो

समै वि.सं. 1460 सूं वि.सं. 1900 लग है। इणी तरिया रो काल निर्धारण प्रो. कल्याणसिंह सेखावत कर्‌यौ है। उणा रै मुजब मध्यकाल री समै–सीमां वि.सं. 1450 सूं वि.सं. 1850 (पूर्व मध्यकाल–भक्तिकाल– वि.सं. 1450–1650; उत्तर मध्यकाल–रीतिकाल– वि.सं. 1650–1850 लग)। श्री सीताराम लाल मध्यकाल रो कोई वरगीकरण नहीं करै पण समै–सीमा वि.सं. 1460 सूं वि.सं. 1900 मानै।

प्रो. नरोत्तमदास स्वामी रो काल विभाजन सरुआत में काफी मानीतौ रैयौ। उणा रै मतानुसार इणरी समै सीमा वि.सं. 1550 सूं वि.सं. 1875 है। राजस्थानी साहित्य रै मध्यकाल बाबत विद्वानां री दियोड़ी इण समै–सीमा रै परिपेख में मध्यकाल री सही समै–सीमा वि.सं. 1550 सूं वि.सं. 1900 नै मान सका। इण समै सीमा में मध्यकाल री सियासी उठा–पटक सूं रचीजियो साहित्य री सगळी प्रव्रत्तियां रो समावेस हुय जावै। मीराँ, सांयाजी झूला, कुसललाभ, दुरसा आढा जैड़ा सरुआती कवियां री रचनावां इण समै में लिखीजी। इण समै में मध्यकाल रै छैकड़लै कालखण्ड रै कवियां री रचनावां ई सामिळ हुय जावै।

डॉ. जगदीस प्रसाद श्रीवास्तव मध्यकाल रो समै वि.सं. 1707 सूं वि.सं. 1907 (1650 ई. सूं 1850 ई.) बतावै।

2-2 eè;dky & ifjos'k

¼d½ jktuhfrd ifjos'k

इण काल में इण देस में मुगलां रो राज हौ। मुगल सबसूं पैलां पानीपत में जबरदस्त जीत हासिल करी। इण रै पछै वि.सं. 1584 में मेवाड़ रै महाराणा सांगा रै नेतृत्व में सगळा सासकां रो बाबर सागै लड़ीजियौ खानवा री लड़ाई री घटणा ही। दुरभाग सूं महाराणा सांगा इण लड़ाई में पराजित हुयगा। इणसूं मुगलां रो सामराज औजूं बध्यौ। खानवा रै इण घमसांण रो असर आखी हिन्दू जनता माथै पड़्‌यौ। इणी प्रभाव सूं मुगती दिरावण सारू हिन्दी भगत अर संत भगती साहित्य रचियौ। वि.सं. 1615 में अकबर अजमेर, जैतारण नैं आपरै मातहत कर'र राजस्थान में मुगलकाल री सरुआत करी। आपरी दूरदरसी सियासी दीठ सूं वौ राजस्थान री इग्यारै राजपूत रियासतां सूं सादी–ब्याव रै सम्बन्धां री सरुआत करी। इणी नीति रै तहत मेवाड़ (उदयपुर) नै छोड़'र आखै राजस्थान री रियासतां अकबर री अधीनता अंगेज लीवी। मेवाड़ रा महाराणा प्रताप घणी अबखायां सागै आजादी री रक्षा करता रैया। फेर वि. 1671 लग प्रताप रा सपूत अमरसिंह जहांगीर सागै संर्घस चालू राख्यौ। सहांजहां रै काल में ई औ संबन्ध मधुर कोनी बण सक्यौ। औरंगजेब अर मुराद री भेळी सेना सूं मुकाबलौ करण वास्तै जोधपुर रा महाराजा जसवंतसिंह धरमत (उज्जैन) पूग्या। उठै वि. 1715 में वानै रण खेतर छोड़ण सारू मज़बूर हुवणौ पडयौ।

राजस्थान रै राजावां री आपसी फूट रो फायदौ उठाय'र मराठां अठै आपरी सत्ता जमावण लागा। वै अठै रै राजावां सूं खिराज वसूल्यौ अर प्रजा नैं लूट्‌यौ। आखर जोधपुर, जयपुर, बीकानेर रा राजावां मिळ'र मराठावां नैं अठां सूं भगावण री योजना बणाई। जैपुर सूं 43 मील आगै गांव तूंगा में वि.सं. 1844 में राजपूतां अर सिंधियां में मुठभेड़ व्ही, जिणमें सिंधियां पराजित हुया। पण राजपूतां री आं भेळप घणा दिनां तांईं कोनी चाल सकी। बेगी इज कच्छवावां अर राठौड़ां में फूट पड़गी।

¼[k½ lkekftd vj lkaLÑfrd ifjos'k

आं सियासी विगत आखै भारत पर असर करी पण राजस्थान माथै इण रो बेसी ई असर पड़्‌यौ। इण प्रभाव सूं छोटी–छोटी रियासतां औजूं पराधीन हुयगी। वां में असुरक्षा, अविस्वास अर मतभेद निपजण लागा। आखौ समाज जातियां में बंटीजग्यौ। मिनख रो सोसण हुवण लागौ। विलासितां रो असर देसी रियासतां माथै ई पड्‌यौ जिणसूं लुगायां री हालात बिगड़ी। नतीजौ औ हुयौ कै

बाल विवाह, बहु पत्नी विवाह, दायजौ री प्रथा, सती प्रथा जैड़ी कुटेकां रो बधापौ हुयौ। मिनख रो नैतिक स्तर घणौ नीचै आयगौ।

मुगलां रै असर सूं कलावां रो विकास हुयौ। रजवाड़ां में कलावन्ता, कवियां अर सिल्पकारां नैं आश्रय मिलण लागौ। वै आपरी कलावां रै पांण आश्रय दातावां सूं चौखा पुरस्कार पावण लागा। इण सूं मिनख में पलायनवादी प्रव्रत्ति ई बधी। कलावां माथै विदेसी प्रभाव लखीजण लागौ। जिणसूं देसी कलावां रो विकास रुकगौ।

¼x½ èkkfed ifjosl

राजनीतिक परिस्थितियां रै कारण अठां री प्रजा ईस्वरोन्मुखी हुयगी। वैष्णव भगती आन्दोलण राजस्थान में ई प्रभावित कर्‌यौ जिणसूं अठै सगुण–निरगुण मुजब पुस्टि मारग, निम्बार्क, दादू, विस्नोई, जसनाथी, निरजनी, लालदासी, चारणदासी, रामस्नेही सम्प्रदायां रै सागै ई जैन अर नाथ सम्प्रदायां ई थरपीजियां। आंनै रियासतां रो संरक्षण ई मिळियौ। आं सम्प्रदायां रा मठाधीस घणै ठाठ–बाठ सागै रैवण लागा। आं रो समाज माथै घणौ रुतबौ हौ। समाज–सुधार में निरगुण भगती सम्प्रदायां रो खासौ महतब रैयौ।

¼?k½ vkfFkd ifjosl

राजनीतिक अथिरता अर लगोलग हुवण वाळा घमसाणा सूं इण काल री आर्थिक स्थिति पण प्रभावित व्ही। सैनिक खरचां सूं राज री सारी पूंजी जुद्धा खातर खरचीजती। मुगलां अर सामन्तां री विलासिता रो प्रभाव अठां री साधारण जनता माथै ई पड़्यौ। वै ई उणां री ढाल रैवण री नकल में फिजूल खरची करण ढूक्या, जिण सूं समाज री आर्थिक स्थिति औजूं निबळी हुयगी।

मध्यकाल में मिनख रो खास व्यवसाय खेती ही। जमीदार किसान अर मज़दूर रो सोसण करता हा। भरपूर फसल हुवण पर ई मजदूर नैं पूरी मजदूरी कोनी मिलही ही अर किसान सूं अणूथौ लगान वसूलीजतौ हौ। इण अवस्था में किसान अर मजदूर रो पेट पालणौ घणौ ई दूभर हौ। बाणियौ आं गरीबां नैं मूंघै ब्याज माथै उधार देवतौ जिणनै चुकावता चुकावता ई वो सिधार जावतौ।

समाज रै ऊंचै वरग री आर्थिक हालत चौखी ही। आं रै आर्थिक हालत रा घणाई चित्राम, 'वेलि क्रिसण रुकमणी', 'नागदमण', 'हाला झाला रा कुण्डलियां', कुंवसी सांखलों आद रचनावां में मिळै।

¼3½ lkfgfR;d ifjosl

आं अबखायां सूं दुःखी समाज बुरी तरिया सूं टूटगो। उण रो बिस्वास फगत उण परम सत्ता परब्रह्म माथै इज बच रैयौ हो आं मनोवैग्यानिक सांच पण है कै दौरप में मिनख ईस्वर नैं ई याद करै। अतः समाज भगती कानी ढूक्यौ अर कवि गण उण परम सत्ता जिणरौ असर वैदिक जुग सूं ई रैयौ, रै बाबत साहित्य लिखण लागौ। मध्यकाल में विकसित भगती आन्दोलण अर न्यारां–न्यारां भगती सम्प्रदाय इण प्रव्रति नैं औजूं खिमता दीवी। हिन्दी री देसज भासावां में तौ ओ भगती साहित्य विपुलता सागै लिखीजियौ कै हिन्दी साहित्य रा इतिहासकार मध्यकाल रै सरुआती 325 बरसां रै काल खण्ड रो नांव ई भगती काल राखियौ। इणी परम्परा में राजस्थानी साहित्य रा कुछेक इतियास लेखक ई वि.सं. 1450 सूं 1700 रै काल री पूर्व मध्यकाल कै भगती काल नांव सूं विरोळ करी।

पैला कैय चुक्या हा क मध्यकालीन परिवेस रै मुजब राजस्थानी साहित्य फगत भगती नैं आधार मान'र इज नीं लिखिजियौ भगती साहित्य रै सागै इज वीर, सिणगार, प्रेम, नीति, रीति आद प्रव्रत्तियां री रचनावां पण इण काल में रचीजी। इण रो खास कारण राजस्थान री प्रव्रति मारगी

विचारधारा रैयी। अठां रो रैवासी अर कवि मध्यकालीन वातावरण सूं डरप्यौ जरूर पण वौ आपरै धीजै अर पुरुषारथ नैं सदीव कायम राखण री कोसिस करतौ रैयौ। इणी चिन्तनधारा रै पांण इण जुग में रचीजियौ साहित्य मिनख रै सरीर अर आत्मा रै अग्यांन नैं आघौ कर'र अेक अैड़ै लगौलग जीवन रो संदेस देवै जिकौ अेक कांनी सांसारिक मोह रो नास करै तो दूजी कांनी पुर्नजन्म, सरीर री नस्वरता अर आत्मा री अमरता रो संदेस दिरावै। 'वसुधैव कुटुम्बकम' री भावना सूं भरपूर इण जुग रो साहित्य करम री प्रतिस्ठा करै, मरजाद अर नीति रो संदेस देवै। मध्यकालीन सन्तां री वाणियां, पद आद मिनख री बुद्धि रो विकास करता हुया जीव अर जगत रो वैवारिक ग्यांन देवण वाळौ है। सांसारिकता अर वैराग रो घणौ ई फूटरौ अर सारथक मंडाण मध्यकालीन जैन रचनावां में मिळै।

मुगल दरबारां री देखा–देखी में अठै ई राजा–महाराजा, सामन्त कवियां नै आश्रय देवण लागा। चौखा पुरस्कार ई वांनैं मिळण लागा। इण भांत संरक्षण पाय'र साहित्य री श्री–वृद्धि व्ही। लक्षण ग्रंथ लिखण री ई परम्परा सरू व्ही। सैवट अबखाया सूं भरियोड़ै मध्यकाल में साहित्य सिरजण रो घणौ लूंठौ वातावरण बण्यौ। साहित्य गद्य–पद्य दोई विधावां में लिखीजियौ। विविध धारावां अर प्रव्रत्तियां सूं सम्पन्न राजस्थानी साहित्य रो मध्यकाल साहित्य री दीठ सूं स्वर्णजुग कैळावण जोग है।

2-3 eè;dky & çe[k jpukok vj jpukdkj

lkekU; ifjp

राजस्थानी साहित्य रै मध्यकाल में साहित्य री प्रायः सगळी ई विकसित विधावां, काव्य धारावां अर प्रव्रतियां री रचनावां रचीजी। आं रो विस्तृत विवेचन आगै करालां। अठै इण काल री खास–खास रचनावां–रचनाकार अर उणां में सूं कुछेक रो सामान्य परिचै ई दिरीजेलां। मध्यकाल री उल्लेखजोग रचनावां है –

दूहा राव रिणमल रा, दूहा भाटी सत्ता रा, उमा दे भटियाणी रा कवित्त, राउ चोरसेन रा रूपक, रावळ माला सळखावत रो गुण– आसानंद बारठ (वि. 1563–1660); मीरां पदावली, नरसीजी रो मायरो, राग सोरठ, राग गोविन्द, मीराँबाई (वि. 1561–1610), विरुद छिहत्तरी, किरतारबावनी, राव सुरतांण रा कवित्त, श्रीकुमार आजाजीनी भूचर मौरी नी मतगत, झूलणा राव श्री अमरसिंघजी रा, दूहा सोळंकी वीरमदेव रा– दुरसा आढ़ा (वि. 1592–1712), हरिरस, छोटो हरिरस, गरुड़ पुराण, गुण आगम, देवियाण, गुण–वैराठ, हाला झाला रा कुंडळिया, रास कैलास, दांणलीला, सामला रा दूहा आद– ईसरदास (वि. 1515–1675), वेलिक्रिसण रुकमणी री, दसम भागपत रा दूहा, गंगा लहरी, वसदे रावउत, दसरथ रावउत– प्रिथीराज राठौड़ (वि. 1606); माधवानलकामकंदला चौपई, ढोला मारवखणी चौपई; तेजसार रास, जिनपालित जिन रक्षित संधि गाथा, अगड़दत्त रास, थंभण पार्स्वनाथ स्तवन, गोड़ी पारसनाथ स्तवन, पूजा वाहण गीत, संत्रुंजय यात्रा स्तवन, भीमसेह हंसराज चौपई, पिंगल सिरोमणि, महामाई दुरगा आद– कुसल लाभ (वि. 1595–1655), सिंहलसुत प्रियमेलक रास, चंपक सेठ चौपई, नलदमयन्ती रास, मृगावती रास, वस्तुपाल–तेजपाल रास, सीताराम चौपई, पुण्य सार चौपई, चार बुद्धि रास– समय सुंदर (वि. 1620), वाणी– दादू दयाल (वि. 1601–1660), सबदवाणी, जंभवाणी, जंभगीता– जांभोजी (वि. 1508–1593), वाणी– बखनाजी (वि. 1640–1670), वाणी, सर्वंगी– रज्जब (वि. 1624–1746), सर्वांगयोग, स्वप्न– प्रबोध, उक्ति अनूप, सद्गुरु महिमा, गुरु महिमाष्टक, ज्ञान झूलणा अष्टक, हरिबोल चेतावनी, अडिल्ला छंद ग्रंथ, सुंदर विलास आद– सुंदरदास (वि. 1653–1748), वाणी– लालदास (वि. 1597–1705), अस्टांग योग, नासकेत, संदेह सागर, राममाला, भक्ति पदारथ, दानलीला, ब्रह्मग्यान सागर आदि– चरणदास (वि. 1760–1838), दयाबोध– दयाबाई (वि. 1750–75), करुणा सागर– दयालदास (वि. 1816–1885), वाणी– दरियावजी (वि. 1733–1805), सुमित्र कुमार रास, रात्रिभोज रास, सकुन्तला रास–

धरम समुद्र गणि (वि. 1567–1590), मनभरमा गीत, महावीर पारणा, पुरन्दर चौपई, सील बावनी, राजुल नेमिनाथ धमाल, पद्मावती रास, भोज प्रबन्ध आद– मालदेव, गोरा बादिल पद्मनी चौपई, लीलावती कथा, शीलवती कथा, जगदम्बा बावनी, शनिचर छंद– हेमरतन सूरि, पद्मनी चरित चौपई, मलय सुंदरी चौपई, रतनचंद मुनिचंद चौपई, गुणावली चौपई आद– लब्धोदय, श्रेणिक चौपई (वि. 1719), अमरसेन वयरसेन चौपई (वि. 1724), दशार्णभद्र चौपई (वि. 1757), सुरसुंदरी रास (वि. 1736)। धरमवर्धन, राव जैतसी रो छंद। बीठू सूजो (वि. 1591–1598), बसंत विलास फाग– कायस्थ केशवदास (वि. 1592), पाबूजी रा छंद, गोगाजी रा रसावला। (बीठू मेहो), गुण रूपक, राव अमरसिंघ रा दूहा, विवेक वारता, गज गुण चरित केसवदास गाडण (वि. 1610–97), नागदमण, रुकमणी हरण, अंगद पिष्टि–सांयाजी झूला (वि. 1632–1703), रामरासो, भासा दसमस्कंध माधौदास रधवाड़िया (वि. 1610–15–1690), श्रीराम भजन मंजरी, उपासना बावनी, अस्ययाम, अग्रसार आद अग्रदास (वि. 1632), सगत रासो– कवि गिरधर आसियो (वि. 1720), हरिपिंगल प्रबंध– जोगीदास, लीलावती रासौ (वि. 1728)– कुसलधीर, लीलावती रास (वि. 1733), धरमबुद्धि–पापबुद्धि रास (वि. 1763), नीसांणी महाराज अजीतसिंघ री (वि. 1767), पांडव चरित चौपई (वि. 1770) आद कवि उपाध्याय लाभवर्धन, अणभै वाणी संतदास (वि. 1725–1808), खुम्माण रासो– दौलत विजय (वि. 1725–60), रतन रासो, जयचंद रासो–कुंभकरण (वि. 1723), राजरूपक वीरभांण चारण (वि. 1745–92), वृंद सतसई, यमक सतसई, भाव पंचासिका, सिणगार सिक्षा, वचनिका आद कवेसर वृंद (वि. 1700–1780), राणा रासो कवि दयाल, हम्मीर नाम माला, कवि लखपत–पिंगल, पिंगल प्रकास, जदुवंस वंसावली, देसलजी री वचनिका, भरत री सतक, भागवत दरपण आद हम्मीर रतनू, सूरज प्रकास, बिड़द सिणगार–करणीदान, रघुनाथ रूपक गीतां रौ– मंछाराम सेवग 'मंछ', भीमप्रकास, करणी रूपक– रामदास लालस कवि कुळबोध– उदयराम गूंगा, रघुवर जस प्रकास, भीमविलास– किसना आढ़ा, गुण गोविन्द (वि. 1725)– कल्याणदास, सत्रुसाल रासो (वि. 1710)– डूंगरसी, नाथ चरित, जलंधर चंद्रोदय, नाथ स्तोत्र, नाथ पद संग्रै–महाराजा मानसिंघ (वि. 1839–1900), सूरछत्तीसी, धवळ पचीसी, मावड़िया मिजाज, कुकवि बत्तीसी, भुरजाळ भूसण, झमालनख– सिख, सिद्ध राव छत्तीसी, हमरोट छत्तीसी आद– बांकीदास (वि. 1828–1890) आद।

कतिपय काव्य–रचनावां/कवियां रो सामान्य परिचै–

1- **ehjk inkoyh&** मीराँबाई री खास काव्य–रचना उणां रा भगती पद है। राजस्थानी भगती साहित्य में मीराँ री लूंठी जागां है, पण अजै लग मीराँ बाई रै जीवन बाबत कोई ठावौ निरणै कोनी हुय सकौ। विविध प्रमाणां पांण औ निस्कर्स देय सकां क मीराँ मेड़ता रियासत रै राठौड़ राव दूदा रै चौथै बेटै रतनसिंह री धीवड़ी ही। वां री मां रो नांव कुसब कंवर (कुसुम कुंवर) हौ।

मीराँ रो जळम में ई वि.सं. 1561 में हुयौ। वां रो ब्याव राव दूदा री मिरत्यू पूछै वीरमदेवजी मेवाड़ रै राणा सांगा रै बेटै भोजराज सागै वि. 1573 में कर्‌यौ। महाराणा सागा री मिरत्यु रै पछै क्रिसण भगती में रमियोड़ी विधवा मीराँ विंद्राबन परी गई। किंवदतियां अर ऐतियासिक घटनावां रै पांण अठै भगतीमती मीराँ वि.सं. 1604 में भगवान श्रीकृष्ण में समायगी। आई तिथि मीराँ री मिरत्यु तिथि हुय सकै।

विद्वानां रै मुजब मीराँ री आं रचनावां रो उल्लेख मिळै– गीत गोबिन्द री टीका, राग गोविन्द, सोरठ रा पद, मीराँबाई री मलार, गरबा गीत नरसीजी रो मायरो, राग विहाग, अर पद। आं रचनावां री प्रामाणिकता सिद्ध कोनी हुवै। मीराँ रा फुटकर पद ग्रंथालयां में सुरक्षित है, ज्यां रा अलेखूं सग्रै प्रकासित हुय चुक्या है।

मीराँबाई रा अै पद उणां रै हिवड़ै सूं निकल्यौड़ै प्रेमोच्छवास री सहज अभिव्यक्ति है। आपरै आराध्य गिरधर गोपाल री विलक्षण रूप छटा में उणा री आसक्ति हर पद में बोलै। क्रिसण प्रेम में मतवाळी मीराँ मन माय क्रिसण मिळण री अनुभूतियां नैं अनेकू पदां में मांडी है। पण उणा रै

आं पदा में विजोग ई बेसी रूप में मुखरित हुयौ है। इण विरह री अेक मोटी विसेसता आ लखावै कै उणरी कोई सींव नीं है। विरह रै अलावा सान्त रस री ई व्यंजना आं पदां में मिळै। सान्त रस री इण अभिव्यक्ति में माधुर्य अर दैन्य भाव रळमिळ'र अेक हुयगा है–

ckyk! e ojkx.k gxhA
ftfg&ftfg ejk lkfgc jh>] lkb&lkb Hk[k /k:xh
lhG lrkl èk# ?kj Hkhrj] lerk idM jgxh
çe çhfr l gfj x.k xkÅ] pj.ku fyiV jgxhAA

मीराँबाई रै पदां में घटनावां रा वरणाव घणा ओपतां मंडीजिया है। बंसी वादन, लीलावां, पनघट लीला, फाग लीला, साजन रो घरां पधारणौ, क्रिसण रै प्रत लगन री घटना आद खास घटना–प्रसंग हैं, ज्यां में जीवण री करुण दसा, पछतावां आद रा चित्राम उकेरीजिया है –

^^cgr fnuu i çhre ik;k] fcNMu dk ekfg Mj jA
ehjk dg vfr ug tMk;k e fy;k ijoyk oj jAA**

मीराँ रै आं पदां में भागवत भगती रो परिचै मिळै। कठै–कठै साधु, जोगी, अवधूत सबदां रै प्रयोग सूं उणा री निरगुण अर नाथभगती बाबत पण परिचै मिळै। औ जोगी उणा रो प्रिय आराध्य श्री कृष्ण इज है।

भगती रै माध्यम सूं मीराँ रो विद्रोही रूप ई उजागर हुयौ है। औ विद्रोह उण वगत री सामन्ती परम्परा रै बाबत है। मीरां रो औ विद्रोह, बगावत अर क्रान्ति कुटुम्ब–कबीला, समाजी कांण कायदां अर भगती री संकळाई सूं ले'र भाव अर भासा तांई जा पूगी। इण भांत मीरां वा पैली लुगाई ई जिकी नारी सुतंतरता री बात आज सूं साढ़ी पांच सै बरसां पैलां ई कर दीवी ही। मीरां बाई रा अे पद कालजयी है। वां में भरपूर काव्यत्व है, भगती री स्रोतस्विनी रो निरन्तर प्रवाह है अर है अेक सुतंतरता री हूंक है।

2- ekèkokuy dke dUnyk pkibZ

राजस्थानी साहित्य रै मध्यकाल में अनेकूं कवि 'माधवानल काम कन्दला' रै पौराणिक प्रेमाख्यान माथै घणी ई रचनावां लिखी। आं में सूं ई अेक महताऊ रचना जैन कवि कुसललाभ री लिख्योड़ी 'माधवानल कामकंदला चौपई' है। कवि कुसललाभ जैसलमेर रै महारावळ हरराज रा आश्रित हा। उणां री रचनावां अर हरराज रै सासनकाल रै आधार पांण कवि रो समै वि.सं. 1580–85 सूं वि.सं. 1655 लग सिद्ध हुवै।

राज्याश्रय अर पछै उपासरावां में रैवता हुया कवि कुसललाभ छोटी–मोटी अट्ठारै पोथियां रो सिरजण कर्‌यौ– 1. माधवानल काम कंदला चौपई 2. ढोला–मारवणी चौपई 3. जिन पालित जिनरक्षित संधि गाथा 4. पारसनाथ दसस स्तवन 5. तेजसार रास चौपई 6. अगड़दत्त रास 7. पिंगल–सिरोमणि 8. थंमण पारसनाथ स्तवन 9. भीमसेन–हंसराज चौपई 10. सत्रुंजय यात्रा स्तवन 11. श्री पूज्यवाहण गीत 12. गुणावली सुंदरी चौपई 13. गौड़ी पारसनाथ छंद 14. नवकार छंद 15. स्थूळिभद्र छत्तीसी 16. महामाई दुर्गा सप्रसती 17. जगदम्बा छंद अथवा भवानी छंद अर 18. कवित्त सवैया।

'माधवानल कामकंदला चौपई कवि' रो अेक महताऊ प्रेमाख्यान है। रचना री पुष्पिका रै मुजब कुसललाभ इण रो सिरजण वि.सं. 1616 रै फागण सुदि तेरस आदितवार नैं कर्‌यौ। 'माधवानल काम कंदला री कथा' सार रूप में इण भांत कैयी जा सकै–

इन्दर रै सराप सूं राजनिरत की जयन्ती मिरत्युलोक में सिला रूप में जळमी। अठै उण रो ब्याव अलौकिक रूप सूं जळम्योड़ै बारै संकटहास पुरोहित रै बारै बरस रै बेटै माधव सागै हुयौ। सराप री पूरति पूठै वा पाछी इन्दर रै दरबार में पूगी। माधव पण उठै उणरी कांचळी में भंवरौ बण'र

रैवण लागौ। भेद खुलण पर इन्दर रै सराप सूं जयन्ती मिरत्यु लोक में राजवेस्पा कामा रै घरै जळमैं। उणरौ नांव कामकंदला राखीजियौ।

विरही माधव री वीणा रा सुर अर उण रै मोवणौ उणियारै सूं पुस्पावती नगरी री लुगाया नै काम पीड़ित हुयगी। माधव रै इण व्यवहार री सिकायत सूं माधव कामसेन री नगरी कामावती आयगो। अठै इन्दर मोहोत्सव रै औसर माथै उण नैं तैड़ीजियौ। सभा में माधव अर कंदला अेक दूजै नै औळखग्या। कंदला रै कुच माथै बैठ्योड़ै भंवरै नैं न्यास पवन सूं उड़ावण री कला माथै रीझ'र माधव कामसेन रै इनाम नैं उण माथै न्यौछावर कर दिरा। राजा आपरौ अपमान मान'र उणनै सभा वारै काढ़'र देस निकाळौ दिरायौ।

अेक रात काम कंदला सागै रैय'र माधव उज्जैनी पूगौ। उठै वौ महाकाल मिन्दर में अेक विरह गाथा लिखी, जिण नैं बांच'र विक्रमादित्य घणौ दुखी हुयौ। अन्न–जळ तजण री प्रतिग्या नैं सुण'र भोग विलासिनी वेस्या माधव नै लावण रो बीड़ौ उठायौ। महाकाल मिंदर में माधव माथै भोगविलासिनी रै पग पड़ता ई माधव उण रै पग नै आघो कर'र पीन पयोधरा नैं उणरी छाती माथै रखण रो निवेदन कर्‌यौ।

भोगविलासिनी वेस्या री माधव बाबत जाणकारी लेय'र विक्रमादित्य सेना सागै कामसेन नगरी पूगौ। छद्मवेस में वौ दोयां रै प्रेम री परीक्षा लीवी। माधव अर कंदला आपरै प्रेमी री हित्या रा समाचार सुण'र प्राण तज दिया। दो हत्यावां सूं दुःखी हुयौ विक्रमादित्य आतमघात करण सारु ढूकियौ तद इज वैताल उण नैं रोकियौ। आखी घटना री जाणकारी लेयर वौ पाताल लोक सूं इमरित जळ लायौ अर दोन्यू प्रेमियां नैं सरजीवित कर्‌यौ। विक्रमादित्य रै परोपकार सूं राजी हुय'र कामसेन कामकंदला नैं माधव नैं दिरायी। विक्रमादित्य दोयां सागै उज्जैन पूग्यौ।

थोड़ा'क दिन राजा विक्रमादित सागै रैय'र माधव आपरै मायतां कनै पुस्पावती नगरी गयौ। माधव रै सागै इतौ बड़ौ लवाजमौ देख'र उठा रो राजा घबरायौ। माधव नैं औळख'र सगळा नगरवासी उणरो स्वागत कर्‌यौ। आपरै मावीतां अर च्यार पुत्रां सागै सुखमय जीवण जीवतां मुगती पाई।

काव्यत्व री दीठ सूं आ रचना घणी मार्मिक अर प्रौढ़ है। सिणगार रस रो फूटरौ वरणाव इणरै महतव नैं बधावै। विरहणी नायिका री मानसिक औस्थां रा सूखम चित्राम घणाई मनोवैग्यानिक अर हिरदै स्परसी बण पड़या है। भासा सरल, सुबोध अर लोक प्रचलित राजस्थानी है। उण वगत रा प्रचलित लोक विस्वास अर सांस्क्रतिक वातावरण री इणमें भरपूर जाणकारी मिळै।

4- lcn ok.kh ¼tHkok.kh½

जांभोजी रो जळम वि.सं. 1508 री भादवै बदि 8, सोमकर नै नागोर परगना रै पीपासर गांव में हुयौ। अै जाति सूं पंवार राजपूत हा। अणां रै पिताजी रो नांव लोहटजी अर मां रो नांव हंसा देवी हौ। मायतां री मौत पछै वे बैरागी बण'र समराथल (नोखा–बीकानेर कनै) में सतसंग करण लागा अर अठै ई वै वि.सं. 1542 री कातिक बदि आठम नैं कळस थरप'र विस्नोई संप्रदाय री सरुआत करी।

बिस्नोई सम्प्रदाय री थरपणा सूं जाम्भोजी री मिरत्यु परजात (वि.सं. 1593) उणा रै वचनां रो संग्रै 'सबद वाणी' है। वेद रो अरथ ग्यान है अर वौ सबद परक है। अतः सबद रो अरथ पण ग्यान है। जाम्भोजी गुरु है अर गुरु रो मान ब्रह्म समान हुवै। इण वास्तै गुरु जाम्भोजी री वाणी– 'सबद वाणी' नैं विस्नोई सम्प्रदाय वेद वाणी रूप में अंगैजै। अल्लूजी कविया अर गोकलजी इणनैं पांचवौ वेद मानै। वाणी (सबदवाणी रो निरमाण– काल जाम्भोजी रै सात वैं साल (वि. 1515) सूं सरू हुय'र उणा रै बैकुण्ठवास काल (वि. 1593) लग है।

इण लांबी अवधि में जांभोजी अलेखूं सबद कैया हुवैला, पण अजै लग वांरा 123 सबद अर

कुछेक मंतर इज मिळ सक्या है। जाम्भोजी अै सबद समै–समै अनेखूं लोगां रै साुथें उणां री संकावां रै समाधान वास्तै, जिग्यासावां नैं सान्त करण सारू प्रस्नोत्तर रूप में, प्रतिबोध रूप में, चेतावणी रूप में कैया।

जाम्भोजी री 'सबदवाणी' पूरी तरिया सूं छन्दोबद्ध कोनी। अनेकू पद्यांस जठै तुकां मिळै, उठै मात्रावां री घट–बढ लखावै। 'सबदवाणी' रो मूल उद्देस्य करम–सीळता, आतमग्यान अर लोकमंगल है। वा मिनख नैं जड़ता, कुसंस्कार, अग्यान अर भरम सूं अळगौ कर'र उण नैं ठावी दिसा दिखावण री चेस्टा है। अै सबद आतम सरूप रो बोध करवाय'र विस्वकल्याण कांनी प्रेरित करण वाळा है। इणमें विक्रम रै 16वैं सइकै रै मरु प्रदेस री लोक भासा सुरक्षित है।

5- jko tSrlh jkS Nan

राव जैतसी रो छंद कै छंद राव जैतसी रो वीठू सूजा री रचना है। डॉ. अेल.पी. टैसीटरी रै मुजब इण रो रचना काल वि.सं. 1591–98 रै बिचै है। कवि बीठो सूजो इणमें बाबर रै दूजै बेटै कामरान अर बीकानेर नरेस राव जैतसी रै जुद्ध रो वरणांव मांड्यौ है। कामरान पंजाब अर काबुल रो हाकम हौ अर इण जुद्ध में बो हारग्यौ हौ। राव जैतसी अर कामरान रै इण जुद्ध रै बाबत मुसलमान इतियासकार मूनधारी है, पण कवि बीठू सूजौ आपरी इण रचना में इण जुद्ध रो विगतवार वरणावं कर्‌यौ है। इण वास्तै इण रचना रो अेतियासिक महत्व है।

रचना रो नावकरण नायक राव जैतसी रै नांव माथै है। 401 छंदां में रचीजी इण काव्य रचना में पाघड़ी छंद 385, गाहा 11, दूहा 4 अर कवित्त 1 है। भासा सुद्ध डिंगल है। मूल रस वीर है। रचना रा वरणाव घणाई सजीव अर ओजस्वी है। रचना रो मूल लक्ष्य अेतियासिक सांच रो उद्‌घाटन करता हुया आपरै आश्रयदाता री विरुदगान है। रचना में कीर्ति सुव्यवस्थित सासन, आत्म सम्मान, वंसाभिमान, उन्माद, निडरता, रजपूती आन आद रा घणाई स्वाभाविक चित्राम असर दायक है।

6- gfjjl

प्रस्तुत रचना रा रचेता 'ईसरा–परमेसरा' रै विरुद सूं सुसोभित बारठ ईसरदास है। आपरौ जळम जोधपुर राज रै भाद्रेस गांव में वि. 1595 में हुयौ अर मिरत्यु वि.सं. 1675 में। जीवन रै 80 बरसां में बारहठजी 18 काव्य रचनावां रो सिरजण कर्‌यौं आं में सूं 'हाला–झाला रा कुण्डळिया' रै अलावां सगळी रचनावां सगुण भगती सूं जुड़्यौड़ी है।

अठारै ग्रंथां में हरिरस आपरी खास आध्यात्मिक रचना है जिकी काव्य विधा री दीठ सूं मुक्तक काव्य है। 361 छंदां में रचीजी इण भगती रचना नै संपादक आचार्य बदरी प्रसाद साकरिया तीन काण्डां– कर्म कांड, उपासना काण्ड अर ज्ञान कांड में बांट दीवी है। आं काण्डां में ई संपादकजी छंदां नैं भगती–दरसन मुजब उपखण्डां में सुनियोजित करिया है। औ विभाजन पाठकां नैं घणी सौरम दिरायी है।

रचना रै छैकड़लै नव छंदा में हरिरस री मेहमा रो बखाण करीजियौ है तो पैलड़ै तीन छंद मंगळाचरण रा ई ज्यां में सरस्वती, गणेस अर गुरुवंदना करीजी है। इण भांत रचना रै नाम रै अरथ रो ई अठै सागौ खुलासौ हुय जावै– (अ) हरि री भगती अर (आ) हरि भगती रो आनन्द। अतः 'हरिरस' रो मूल विसै संसार रै सार मात्र हरि री भगती है। उण सूं ई भगत आप रै पाप–करमां सूं मुगत हुय सकै।

हरिरस में कुल पांच छंदां– दूहा, गाथा, मोती दाम, द्विअक्षरी अर छप्पय रो प्रयोग मिळै। अनुप्रास, वयण सगाई, उपमा, रूपक, उत्प्रेक्षा, द्रिस्टान्त अलंकारां रो प्रयोग पण भावानुरूप हुयौ है। इणरी भासा माधुर्यगुण सूं भरपूर मध्यकालीन राजस्थानी है।

7- xkjk&ckfny pfjr pkibl

जैन कवि हेमरतन सूरि री रचना 'गोराबादिल चरि चौपई' अकबर काल री अेक महताऊ रचना है। कवि हेमरतन इण रो सिरजण सादड़ी में वि.सं. 1645 री सावण सुदि पांचम नैं करियौ।

619 दूहा–चौपई, सलोक गाहा, कवित्त, कुंडलीड छंदां में रचीजी इण रचना में कवि इतियास प्रसिद्ध चितौड़ री राणी पदमणी–रतनसेन नैं अल्लाउद्दीन खिलजी द्वारा बंदी बणाय'र गोरा–बादिल री योजना सूं उणारी मुगती अर जोहर री कथा कैईजी है।

कवि हेमरतन इणरी रचना महाराणा प्रताप रा बिस्वासी राजभगत मंत्री भामासाह रै भाई ताराचंद री प्रेरणा सूं करी। इण रै सिरजण काल में अकबर सूं महाराणा प्रताप हल्दी घाटी रै रणखेत में जूझ रैया हा। इण वास्तै इण रचना रो लूंठौ अेतियासिक महत्व है। कवि रै मुजब इण रचना रो खास उद्देस्य वीर चरितां अर उणां री स्वामीभगती रो बखाण करणौ है। इण उद्देस्य पांण ई मुनि जिन विजय इण री समीक्षा रास्ट्रीय संदरभां में करी है।

हेमरतन विरचित 'गोरा बादिल चरित' री बणगत जैन सैली री है, पण उणरौ प्रधान रस वीर है। काव्य रूप री दीठ सूं इण नैं अेक वीर रसात्मक खण्ड काव्य कैय सकां। इण री भासा मध्यकालीन राजस्थानी है, जिणमें मेवाड़ अंचल री बोली री इधकाई लखीजै ज्यूं पोता नै, आपड़ीजै, थिपु, वापरीजै, वीनवई, तपास, रामति आद। अठै सबदालंकारां री बजाय अरथालंकारां रो प्रयोग बेसी रूप में मिळै। इण भांत मध्यकालीन साहित्य में इणरी लूंठी ओळखांण है।

8- ^cfyfØ l.k #def.k jh*

राठौड़ प्रिथीराज री रचना 'वेलि क्रिसण रुकमणी री' री मध्यकालीन राजस्थानी साहित्य में अेक खास जागां है। देस–विदेस रा विद्वान इणरी हिरदै सूं सरावण करी है। डॉ. अेल.पी. टैसीटोरी इणनैं डिंगल रै समरिद्ध साहित्य भण्डार रो जगमगावतौ रतन मानै तौ डॉ. मोतीलाल मेनारिया भाव अर भासा री दीठ सूं मौलिक रचना मानता थका उणरौ वरणाव करै।

राठौड़ पृथ्वीराज बीकानेर नरेस राव कल्याणमल रा बेटा अर राव जैतसी रा पोतरा हा। आं रो जळम वि.सं. 1606 में हुयौं। अै सिरै कवि अर उद्भट्ट वीर हुवण सागै ई लूंठा भगवत भगत ई हा। उणां री भगती रै लूंठे पण रो वरणांव नाभादास आपरी 'भगतमाल' में ई कर्‌यौ है।

पृथ्वीराज राठौड़ सम्राट अकबर रा किरपा पात्र रैया। बादसाह वांनैं गागरोन गढ़ रो किलौ दियौ जिका उणां रै इधकार में घणां ई दिनां तक रैयौ। कवि आपरै जीवन काल में पांच रचनावां 'वेलि क्रिसण रुकमणी री', 'दसम भागवत रा दूहा', 'गंगालहरी', 'बसदेव रावउत', 'दसरथ रावउत' रो सिरजण कर्‌यौ ज्यामें वेलि क्रिसण रुकमणी री महताऊ ठौड़ है। वेलि रै छैकड़लै दूहलै मुजब इण रो रचनाकाल वि. 1637 है। डॉ. मोतीलाल मेनारिया मुजब आ तिथि वेलि रै सरुआत री है। इणरौ समाप्ति काल वि.सं. 1644 वैसाख सुदि तीज, सोमवार है।

वेलि डिंगल साहित्य रै चावै छंद वेलियो गीत में लिखिजी। 305 वेलियो छंदां में लिखीजी आ रचना खण्ड काव्य वरग में आवै। इणमें श्री क्रिसण रुकमणी रै ब्याव री कथा कैयीजी है। कथा रो मूल आधार श्रीमद्भागवत रै दसमै स्कंध री कथा है। कवि खुद इणनै सिणगार रचना मानैं, पण आ रचना भगती–सिणगार अर वीर रस री त्रिवेणी है। भागवत भगती री मिठास सागै सिणगार रस री विविध दसावां रा मार्मिक चित्राम इण में मिळै है। प्रसंग मुजब करुण, वीभत्स रसां रा ई ओपता वरणांव अठै उकेरीजिया है। प्रक्रति रो इत्तौ सूखम वरणाव हुयौ है, कै आ रचना कदै ई बारहमासा काव्य रो अनुमान करावण लागै। सादृस्य मूलक अलंकार अर वैणसगाई अलंकार इण री निजू ओळखांण थरपै।

9- ^gEehj uke ekyk*

इणरा रचेता कच्छ–भुज रा राजा महाराज कुमार लखपतजी रा आश्रित कवि हम्मीर दान रतनू हा। आं री बीजी 'लखपत पिंगल, गुण पिंगल प्रकास, जोतिस जड़ाव, ब्रह्माण्ड–पुराण, भागवत दर्पण' आद बाईस रचनावां है। हम्मीर नाम माला लक्षण–परम्परा में लिखिजण वाळै कोस परक साहित्य री उल्लेख जोग रचना है। इणरी रचना कवि हम्मीर रतनूं वि.सं. 1776 में करी। इण रो दूजौ नांव 'हरिजस नाममाला' पण है। आखी रचना वेलियौ गीत में रचीजी है। इण में च्यार प्रकरण अर 311 छंदां में विविध राजस्थानी नामां (संज्ञावां) रा अनेकूं पर्याय सबदां रै सागै ई वरणिक, मात्रिक छंदां, गाहा अर डिंगल गीतां री जातियां रो विस्तृत विवेचन करीजियौ है। सबदां रै परयाय गिणावण रै लारै कवि कलात्मक तरिकै सूं हरि महिमा गाई है।

10- ^èkoG iPphlh*

कविराजा बांकीदास रचित नीतिकाव्य में इण रो लूंठौ महत्व है। कवि बांकीदास इणरी रचना चैत बिद नम, वि.सं. 1883 नै करी। रचना रै नांव मुजब इण में 25 छंद (दूहा) हुवणा चाइजै, पण इणमें कुछ 34 छंद है। आं दूहा में कवि धोळै बळद रा गुण गान करिया है। कवि धवळ नै प्रतीक रूप में अंगैजियौ है। वौ सदगुणां अर सदगुणालंक्रत मिनखां रो प्रतीक है। इण भांत विसै री दीठ सूं बांकीदास री आ मौलिक कल्पना है।

कवि रचना रै पैलड़ै दोय दूहा में भगवान सिव रै वाहन धवळ री वंदना करता हुया परोख रूप सूं गणेसजी री स्तुति करी है। इण रै पूठै सबसूं बेसी दूहां में धवळ री चरचा है। वो सिव रो वाहन है, कामधेनु रो वंसज है अर खेती सारू जरूरी है। इणरै पछै धवल रै गुणां रो वरणांव करण वाळा दूहा है। धवळ रो अेक मोटो गुण है कै वौ मोटा कांधा सूं गाड़ी नै कादै सूं भर्‌यौड़ै खाडै सूं ई सहज रूप में बारै काढ़ देवै। लारलै दूहां में धवळ री सरावणा री इच्छावां अर उणरै विविध सुभाव बाबत बातां रो वरणांव करीजियौ है।

इण भांत अै दूहा कवि री मौलिक कल्पना है, जिकां में पसु मनोविग्यान रो सांतरौ वरणाव करीजियौ है। काव्य रूप री दीठ सूं आ अेक मुक्तक रचना है। रचना सिक्षाप्रद है।

13-4 eè;dky & vid vè;;u

¼d½ i`oÙk;k

¼v½ **ohj dkO;&** मुगलां रै असर सूं राजस्थान में सामन्ती वातावरण औजू बध्यौ। चारण–भाट अर बीजी गायक जातियां रो राज्याश्रय भी बध्यौ। नतीजौ औ हुयौ कै आं कवियां द्वारा राजावां री प्रसंसां में काव्य सिरजण री गति बधी। विरोधी राजावां री खुल'र निंदा लिखीजी। इण भांत राजस्थानी साहित्य रै मध्यकाल में प्रसंसात्मक (सर) अर निंदात्मक (विसर) काव्य इधकाई में रचीजियौ। डॉ. जगदीस प्रसाद श्रीवास्तव 'सर–विसर काव्य' अर वीर काव्य रो न्यारै–न्यारै रूपां में अध्ययन प्रस्तुत कर्‌यौ, पण दोनुवां में समान रचनावां रा ई दाखलां पेस कर्‌या। वस्तुतः वीर काव्य री विसै वस्तु में ई वीर री निंदा अर स्तुति समाहित हुवै। अठै आं दोयां नैं मध्यकालीन राजस्थानी काव्य री अेक ई प्रवृति मान'र अध्ययन कर रैया हा। मध्यकालीन उल्लेखजोग वीर रसात्मक रचनावां है– राव जैतसी रो छंद (वीठू–सूजा), हाला–झाला रा कुंडळिया (ईसरदास), राउ रतनरी वेल (कल्याण दास मेहडू), देईदास जेतावत री वेल (अखौ भाणोत), चांदाजी री वेल (वीठू मेहा), गुण रूपक, राव अमरसिंघ रा दूहा (केसवदास), गुणभास चित्र (हेम), राजप्रकास (किसोरसिंघ), सगतसिंघ रासो (गिरधर आसिया), सूरज प्रकास, विरुद सिणगार (करणीदान कविया), रतनरासो (कुंभकरण सांदू), वचनिका राठौड़ रतनसिंघजी री (खिड़िया जग्गा), राज रूपक (वीरमांण रतनू), विरुद छिहतरी (दुरसा आढ़ा), सत्रुसाल रासो (डूंगरसी), खुम्माण रासो (दलपत विजय), भीम प्रकास (रामदान लालस),

सुपह छत्तीसी, भुरजान मूसण, सिद्ध राव छत्तीसी, मान जसो मंडण, डिंगल गीत (बांकीदास), भीम विलास (किसना आढ़ा), रतनसी खीवावत री वेल (दूदो विसराल) आद।

मध्यकालीन राजस्थानी वीर काव्य प्रबन्ध अर मुक्तक दोई काव्य रूपां में मिळै। वीर प्रबन्ध काव्य खासतौर सूं निम्नलिखित रूपां में लिखिजिया– सूरज रासो, प्रकास, विलास, रूपक, वचनिका, वेल, छंद आद। वीर मुक्तक काव्य ई केई नावां सूं रचीजिया, ज्यांन– कुंडलिया, नीसांणी, झूलणा, गीत, कवित्त, दूहा, छत्तीसी, छिहतरी आद।

वीर रसात्मक प्रबन्ध काव्य रचनावां री सरुआत मंगळाचरण सूं हुवै। इणरै उपरांत खास देवी–देवतावां नैं सुमरण करतां रचना रै महत्त्व नैं थरपीजै। इण रै पछै राज वंसावली रो बखाण करता हुया स्रिस्टी रचेता बिरमाजी सूं लेय'र ग्रंथ नायक रै सासकां रा नांव गिणाइजै। नायक रा लड़िजियां घमसाणां, उणरी वीरता, आतंक, भुजबळ, खड़गबळ आद रो विगतवार खुलासौ अर नायक री फतैह या गुमैजी मिरत्यु सागै रचना री संपूर्ति हुवै।

जुद्ध–संदरभां में लोक बिस्वासां अर जुद्ध वरणावां मुजब खास रूढ़िया रो बरणावं मध्यकालीन राजस्थानी वीरकाव्य री महताऊ विसेसता है। वीर काव्य अेतियासिक चरितां माथै रचीजिया है। आं रा रचेता कवि संभावनावां माथै बेसी बळ दिरावै। इण वास्तै रचनावां रै कथानक नैं गति अर घुमाव देवण सारू आं नैं बरतीजिया है। हाला–झाला रा कुंडळिया, वचनिका राठौड़ रतनसिंघ री, सूरज प्रकास आद रचनावां में आं लोक विस्वास, कथानक रूढ़ियां अर अलौकिक घटनावां रा अनेखूं चित्राम जोया जा सकै।

राजस्थानी वीर काव्य में नारी रै वीर अर प्रेरणादायी रूप रो मंडाण मिळै। मां, बहन, जोड़ायत, भौजाई, सासू, देराणी, जैठाणी सगळा ई रूपां में वा वीर जुद्ध नायक नै आपरै कर्त्तव्यबोध, देस रक्षा खातर प्रेरित करती दीसै। वीर भावां रै दरसाव सारु आं रचनावां में खास प्रतीक बरतीजिया हैं। अै प्रतीक सिंध, सूर, हाथळ, हाथी, नाग अर भाखर है। उदाहरण सारू माला सांदू री अे औळियां पेस हैं–

tkx.k [klij ekMh; iG jr v?kkb]
ukyk xkGk ijh;k dh lkj l tkbA
lkj iyhrk xMMh;k gFkukG gokb]
èkM iMlkn ijcrk fdj x.k xtkbA
flj p<hrk lhlkfn;k lkfg;k lykjk]
vk>> v=koyh o.kh;k fr.kokjkA

मध्यकालीन वीर काव्य में बरतीजिया खास छंद–दूहा–सोरठा, कवित्त, कुंडळिया, गाहा, पाधड़ी, साटक, तोटक, नाराच, नीसांणी, भुजंग प्रयात, रसावळा, झूलणा, मोतीदाम, डिंगल गीत (वेलियो, सावझड़ौ, अेक अखरौ, अेकम वदणै) आद। अलंकारां में खासतौर सूं वैण सगाईं, अनुप्रास, उपमा, रूपक, अतिसयोक्ति, उत्प्रेक्षा, उदाहरण, संदेह, विरोधाभास, भ्रांतिमान, द्रिस्टान्त आद बरतीजिया है।

¼vk½ Hkxrh dk0;

राजनीतिक उठापटक रै कारण इण वगत रो राजस्थानी समाज ईस भगती कांनी ढूक्यौ। मानखै री इण प्रवृति नैं उण वगत विगसित भगती आन्दोळण ई बधापौ दिरायौ। राजा–महाराजां आं भगती सम्प्रदायां रै आचार्यां नैं संरक्षण दिरायौ। जिणसूं आं री

गद्दीया अठै थरपीजी। आं मठां–मिन्दरा रा मठाधीस, सेवक आपरै सम्प्रदाय मुजब भगती रचनावां लिखण लागा। आं में सूं वैस्णव भगती (सगुण अर निरगुण), जैन भगती, सूफी संत काव्य, नाथ भगती मुजब रचनावां खासतौर सूं लिखीजी। मध्यकालीन राजस्थानी रा उल्लेखजोग भगत, संत, जैन जाति, सूफी अर नाथ कवि है–

Hkxr dfo& मीराँ बाई (मीराँ पदावली), अग्रदास (श्री राम भजन मंजरी, पदावली आद), नाभादास (भगतमाल), ईसरदास (हरिरस, बाललीला, देवीयाण, रास कैलास आद), सायाँजी झूला (नाग–दमण, रुकमणी हरण), राठौड़ प्रिथिराज (वेलिक्रिसण रुकमणी री, दसम भागवत रा दूहा, गंगा लहरी आद), माधोदास (राम रासो, भासा दसमस्कंध), नरहरिदास (अवतारचरित), सुंदर कुंवरि (नेह निधि, राम रहस्य आद), महाराजा अजीतसिंघ (गज उद्धार), सोढ़ी नाथी (भगवत भावचंद्रायण), म. मानसिंघ (कृष्ण विलास), मंसाराम मंछ (रघुनाथ रूपक गीतां रौ), किसना आढा (रघुवर जस प्रकास), गवरी बाई (फुटकल पद) आद।

lr dfo& दादू (दादू वाणी), रज्जवजी (वाणी, सर्वंगी), गरीबदास (अनभेवाणी), संतदास (वाणी), सुंदरदास (सुंदर विलास, साखी), बाजींदजी (गुण–नीसांणी), जांभोजी (सबद वाणी), चरणदास (भगती सागर), दयाबाईं (दयाबोध, विनय मालिका), सहजोबाई (वाणी), रामचरणदास (वाणी), हरिरामदास (नीसांणी, सखिया), दरियावजी (वांणी), हरिदास (भक्त विरदावली), लालदास (वांणी), मावजी (वाणी) आद।

tSu Hkxr dfo& विनय समुद्र (म्रिगावती चौपई, सील रास, नल दमयंती रास, इलापुत्र रास आद), हीरकळस (सोळोस्वप्न सझाय, सम्यकत्व, कौमुदी आद), हेमरतन सूरि (अभयकुमार चौपई, सीलवती कथा, लीलावती कथा आद), कुसललाभ (श्री स्तंभन पारसनाथ स्तवन, गौड़ी पारस नाथ स्तवन, सत्रुंजय यात्रा स्तवन, श्री पूज्य वाहणगीत, जिनपालित जिन रक्षित संधि गाथा, नवकार छंद, जगदम्बा छंद आद), समय सुन्दर (गौतम पृच्छा, सत्रुंजय रास, सीताराम चौपई आद), लब्धोदय (मलय सुंदरी कथा, रिसभ देव स्तवन आद), जिन हर्ष (जिन प्रतिभा हुंडी रास, समेत सिरबर यात्रा स्तवन आद), धरम वर्धन (श्रेणिक चौपई, सैद्धान्तिक विचार स्तवन), लाभवर्धन (लीलावती रास, पाण्डव चरित चौपई आद), अमर विजय (पारसनाथ स्तवन, चरित चौपई आद), अमर विजय (पारसनाथ स्तवन, पूजा बत्तीसी), रायचन्दर (रिसम चरित), जयमल्ल (जय वाणी आद)।

lQh dfo& सेख मोइनुद्दीन चिस्ती, सेख हमीदउद्दीन मौलाना रजीउद्दीन हसन सगानी आद।

ukFk dfo& म. मानसिंघ (नाथ चरित, जलंधर चरित, सिद्ध गंगा आद), बांकीदास (आयस देवनाथ जी रा दूहा– कवित्त), उदयराम गूंगा (नाथ स्तुति), पीरचंद भण्डारी (अवधूत महिमाष्टक, नाथ स्तुति आद), उत्तमचंद भण्डारी (नाथ चंद्रिका), संतोकीराम (जलंधर नाथ रूपक), सेक्क बग्गी राम (जलंधरजस भूसण), सिवदास (सिधराज सतसई), देवनाथ (जलंधर स्तुति) आद।

मध्यकालीन राजस्थानी भगत अर संतां री रचनावां सूं खुलासौ हुवै कै अै प्रबन्ध अर मुक्तक दोई काव्य रूपां में लिखिजी। संत वाणियां जटै सुद्ध मुक्तक काव्य विधा री रचनावां हैं, उठै ई जैन अर जैनेत्तर भगत कवियां री रचनावां प्रबन्ध अर मुक्तक दोई रूपा में मिळै। अै रचनावां वेलि, प्रकास, विलास, फागु, गीत, चरित, रासो, पद, स्तवन, चौढ़ालियौ, ढाल, बाइसमासो, छंद आद सीर्सकां सूं लिखीजी है, ज्यान– वेलि क्रिसण

रुकमणी री, राम रासो, अवतार चरित, रघुनाथ रूपक गीतां रो नाथ चरित, श्री पूज्य पाहण गीत, स्थूलिभद्र फाग, इलापुत्र रास, थंमण पारस नाथ स्तवन, नवकार छंद आद।

राजस्थानी मध्यकालीन भगती मुजब रचनावां में भगती तत्त्व री ई प्रधानता है, फेर ई प्रसंग मुजब इणा रा नायक चाहे वै राम, क्रिसन, जैन, रिसि कै बीजा चरित नायक हुवै– वै वीरोचित सभाव रो परिचै दिरावै। इण रो खास कारण है कवि री राजपूत संस्क्रति (राजस्थानी संस्क्रति)। इणी सांस्क्रतिक प्रभाव पांण वेलि रो नायक क्रिसण पुरुसारथ सागै सिसुपाल सूं जुद्ध करै। नागदमण रो नायक क्रिसण टाबर हुवता ई काली नाग सागै घमसाणा मांडै। इत्तौ ई नीं जैन रचनावां में ई उणां रा नायक प्रसंग मुजब जुद्ध करण में कोई अबखाई मेहसूस कोनी करै। आं प्रमाणां पांण आं में सान्त रस री प्रधानता हुवता ई वीर, रौद्र, भयानक रसा रा सांतरा मंडाण मिळै।

मध्यकालीन राजस्थानी भगती काव्य रो अभिव्यक्ति पख घणौ सबळ है। आपरै इस्ट रै प्रति भावाभिव्यक्ति सारु अै कवि भावानुरूप भासा बरती। गेयता उणां री खासियत है। आपरी भगती नैं औजूं प्रभावी बनावण वास्तै सादृस्य मूलक अलंकारां रो प्रयोग कर्‌यौ। पद, चौपई, दूहा–सोरठा, वेलियो, सावझड़ो, कवित्त–छप्पय आद छंदां में आपरी रचनावां नैं बांध–र उणा री गेयता नैं बधापौ दिरायौ।

¼b½ fl.kxkj dkO;

रागात्मक प्रव्रति मिनख रो सास्वत गुण है। इणी भावना पांण अजै लग विभिन्न भासावां में सिणगारिक काव्य रचनावां लगौलग रो सिरजण हुवतौ रैयौ है। सामन्ती वातावरण अर राजनीतिक अराजकता रै कारण अठां रो कवि सदीव जुद्ध री बात ई सोचतौ हौ, पण मध्यकाल में डिंगल सैली रै सागै ई पिंगल सैली में ई मोकळा साहित्य रो सिरजण हुयौ। पिंगल सैली री मिठास पांण उण में सिणगारिक रचनावां ई रचीजण लागी। पण लोक काव्य धारा में सिणगारिक रचनावां री बोहोळता रैयी। सागै ई मध्यकालीन जैन साहित्य रै चरित काव्य में पण जैन सैली रै अनुरुप सिणगार रस रो प्रभावी वरणांव मिळै। आं रचनावां रै असर सूं ई मध्यकालीन राजस्थानी वीर काव्य में प्रसंग मुजब सांतरा वरणांव मंडीजण लागा। ईस रै प्रति रागानुरक्ति रै कारण भगती–रचनावां में ई सिणगार रा फूटरा अर ओपता विवरण मिळै। कैवण रो मतळब औ क मध्यकालीन राजस्थानी काव्य में सुतंतर सिणगार री प्रवृति लोक प्रेमाख्यानां में निरुपित व्ही है। फेर ई इण काल री उल्लेखजोग सिणगारिक रचनावां है– माधवानल कामकंदला चौपई, ढोला मारवणी चौपई, स्थूलिभद्र छत्तीसी (कुसललाभ), वेलिक्रिसण रुकमणी री (राठौड़ प्रिथिराज)। मीराँ पदावली, जैन रचनावां में सिणगार रा उनमुक्त रूप जोया जा सकै। जैन कवि हेमरतन सूरि रै मुजब गोरा बादिल चरित चौपई अेक वीर रस प्रधान रचना है। पण इण रै छंद 110 सूं 124 तक सिणगार रा दरसाव करावै। अेक उदाहरण पेस है–

ckny efg fte infe.kh] xfy rcky fxyfrA
fujey rfu rcky r] ng ek> nhlfrAA
pnu rjofj fte tMh] ohBg ukxj ofyA
fre r dkfef.k drl] foyfx jgb x.kxfyAA

मध्यकाल में रचीजी सुद्ध सिणगारिक लोक रचनावां है– जलाल बूबना, नागजी नागवंती, रतनराणा, बाघोभारमली, मूमल, बगड़ावत गाथा, रतना हम्मीर, जलाल–गाहणी री वात आद। प्रिय रै विजोग में व्याकुल नायिका री बेबसी, आसंका अर अभिलासा रो

चित्राम जलाल गाहणी री वात सूं प्रस्तुत है–

vk[kj fi; j uko d fy[k dy t ekfgA
Mjrh ik.kh u fiM] er u èkkÅb tkbAA

मध्यकालीन राजस्थानी सिणगारिक काव्य में प्रेम तत्व री बजाय वासना रा चित्राम बेसी रूप सूं मंडिया है, पण आं वरणांवा में कठैई कवि आपरी मरजाद नै तोड़ी नी है। वेलि क्रिसण रुकमणी रो लाज भाव सूं भर्यौड़ी अै ओळियां जोवां–

vkxfy fir ekr jefr vkxf.k]
dke fojke fNikM.k dktA
ykt orh vfx vkg ykt fofèk]
ykt djfr vkib ykjAA18AA

इण काल में रचित सिणगारिक रचनावां प्रबन्ध अर मुक्तक दोई रूपां में लिखिजी। वेलि, रास, रासो, प्रकास, प्रबन्ध, चरित आद नांव सूं रचीजी रचनावां प्रबन्ध हैं, जद कै दूहा, छंद, गीत, सोरठा, नीसांणी नावं सूं रचीजी रचनावां मुक्तक काव्य रचनावां है। आं में गेयता री प्रधानता है।

¼b½ uhfr dk0;

वैदिक काल सूं सरू व्ही नीति काव्य री प्रवृत्ति मध्यकालीन राजस्थानी साहित्य में कीकर सान्त रैय सकती ही? इण काल में राजस्थानी नीति काव्य जैन साहित्य, वीर अर भगती काव्य में प्रसंग मुजब रचीजियौ। आं रचनावां में घणी ई जगा नीति मुजब छंद अर प्रसंग जोया जा सकै। आं रचनावां रै अलावा ई सुतंतर रूप सूं नीति–काव्य रो सिरजण हुयौ। मध्यकालीन राजस्थानी नीति काव्य मुक्तक रूप में कुंडळिया, दूहा–सोरठा, छप्पय, चौपई छंदां में रचीजियौ। इण काल री खास–खास नीति परक रचनावां हैं– ईलै चावड़ै रा दूहा (लाखणसी), किसनिया रा दूहा (किसनदास), दादुवे रा सोरठा (रासाभाई), सोरठा (जसराज), राजिया रा सोरठा (किरपाराम खिडिया), नीति मंजरी, धवळ पचीसी (बांकीदास), संबोध अस्टोत्तरी (नारायण), सिच्छासार (नाथूराम), मोतिया रा सोरठा (रायसिंघ सांदू), ओठियां रा सोरठा, भैरवाबनी (म. बलवंतसिंघ राठौड़) आद।

वेलि क्रिसण रुकमणी री, अगड़दत्त रास, माधवानल कामकन्दला चौपई, ढोला मारवणी चौपई, (कुसललाभ), गोराबादिल चरित चौपई (हेमरतन), आद रचनावां में ई जथा प्रसंग नीति–मुजब प्रसंग उकेरीजिया है।

¼[k½ dk0; èkkjkok&

¼v½ lx.k ¼Hkxrh ekjx h½ dk0; èkkjk

मध्यकाल में राजस्थानी भगती काव्य री प्रवृति घणी व्यापक रैयी। इण काल में राजस्थानी समाज में वैस्णव भगती री सगुण काव्यधारा क्रिसण अर राम भगती री उपासना रूप में प्रचलित ही। राम अर क्रिसण परयाय रूप मानीजता हा। इण वास्तै ई राम भगती मुजब रचनावां में क्रिसण रो वरणांव अर क्रिसण भगती में राम सम्बोधन रा घणाई उल्लेख मिलै। सायाँजी झूला, ईसरदास, मीराँबाई, प्रिथिराज राठौड़, म. अजीतसिंह नाथी सोढ़ी, वृंद, महाराजा मानसिंघ, बांकीदास आद सगुण भगती री क्रिसण काव्य धारा रा महताऊ कवि है। नेमिनाथ राजुलमती रै रूप में जैन कवि ई क्रिसण भगती री रचनावां रची।

सगुण काव्य धारा में राम भगती मुजब साहित्य ई इधकाई सागै रचीजियौ। जोगीदास (हरिपिंगल) माधोदास दधिवाड़िया (राम रासो), प्रिथिराज राठौड़ (दसरथ रावउत), मंसाराम मंछ (रघुनाथ रूपक गीतां रौ), किसना आढ़ा (रघुवरजस प्रकास), रघुनाथ (रुध रास) आद। आं कवियां रै अलावा जैन कवि कुसललाभ (पिंगल सिरोमणि), धरम विजय (रामचंद्राख्यान), समयसुन्दर (सीताराम चौपई) ई रामकाव्य री श्री बधोतरी करी।

मध्यकाल री सगुण भगती काव्य में सक्ति उपासना रो ई लूंठौ महतब रैयौ है। राजस्थान री चारण जात में आवड़जी, करणीजी, तेमड़ाजी आद आठ लोक दवियां व्ही है, ज्यांरी सेवा–पूजा चारणा रै सागै ई रजपूतां में ई प्रचलित रैयी। आं देवियां री चिरजावां (स्तुतियां) राजस्थानी भगती काव्य री अनुपम देन है। इण दीठ सूं ईसरदास (देवियाण), पीरदान (गुण हिंगलाज रासो), म. अजीत सिंघ (दुरगा पाठ भासा), किरपाराम (चाळ कनेची माता), रामदान (करणी रुपक) आद कवियां री रचनावां महताऊ है।

जैन भगती मूलतः सगुण भगती ई है। वै आपरै तीर्थंकारां री पटराणियां री स्तुति देवी (सक्ति)रूप में ई करी है। आं में सूं खासतौर सूं तेईसवां तीर्थंकर पारसनाथ री पटराणी पद्मावली बाबत घणी ई स्तुतियां लिखिजी। इण रै अलावा वैष्णव सक्ति (देवी) री ई स्तुति अै जैन कवि मांडी है। आं में सूं उल्लेखजोग रचनावां हैं– सारदा छंद (विजय कुसल), विधि प्रभा (जिन प्रभ सूरि), रोहिणेय रास (विनयसमुद्र), महामणई दुरगा सप्ततसी, जगदंबा छंक कै भवानी छंद (कुसललाभ), अंबिका कथा (वादिचंद्र), माताजी री वचनिका (जयचंद्र), पद्मावती छंद (हेम), भगवती छंद (संघ विजय) कालिका जी रा दूहा (लखराज), चौथ माताजी रो छंद (कान्ह) आद।

¼vk½ fujx|.k ¼l|rekjxh½ dk0; èkkjk

मध्यकाल में विकसित भगती सम्प्रदायां री दाईं राजस्थान में ई लोक देई–देवतावां रै प्रभाव सूं निरगुण भगती मुजब सम्प्रदायां रो विकास हुयौ। राजा–महाराजावां रै संरक्षण सूं आं सम्प्रदायां नैं औजूं द्रिढ़ता मिळी। आथूणै राजस्थान में जठै बिस्नोई, जसनाथी, रामस्नेही, अलखिया, नाथ, सूफी सम्प्रदायां रो असर रैयौ, उठै इज पूरबी–उत्तरी राजस्थान में दादू, लालदायी, चरणदासी सम्प्रदाय अर उणां मुजब साहित्य रो विगसाव हुयौ।

आं सम्प्रदायां सूं जुड़्यौडा सन्त कवियां माथै नाथ अर कबीर री भगती पद्धति रो प्रभाव लखीजै। जसनाथी सम्प्रदाय नै जै नाथ–पंथ रो परयाय ई कैवा तो अणूथी बात कोनी होसी। इणी भांत दादूपंथ माथै कबीर पंथ रो पूरौ असर लखावै। राजस्थानी संतवाणी में रामदेवजी, मल्लीनाथजी, रूपादे, धारू मेघवाल जैड़ा लोक संतां री री मौखिक वाणियां रो ई लूठौ जोगदान रैयौ। आं सगळा सूं प्रभावित हुय'र अै संत कवि आपरी इस्ट री भगती रा गुणगान साखियां, पदां, रमेनिया, अरिल्ल (अडिल्ल), छंद, छप्पय, हंसाळ, हरजस, चौपाई, दूहा, कवित्त आद बंधां (छंदां) में करिया है। साखियां में अै 'अंग' लिखिया, ज्यान– जीव रो अंग, सुमिरन रो अंग, विरह रो अंग आद।

आं संतां री रचनावां में मध्यकालीन समाज री विसंगतियां रो सांगोपांग खुलासौ हुयौ है। जातपांत, ऊंचनीच रो विरोध, धार्मिक करमकांडां, बाह्याउभ्यरां, अन्धबिस्वासां री भर्तसना करीजी है। संत दरियाजी माळा फैरण अर तिलक लगावण नैं अफण्ड मानता हुया कैवै–

dBh ekyk dkB dh] fryd xkj dk gk;A
tu nfj;k fut uko fcu] ikj u igp dk;AA

¼b½ pfjr dk0; èkkjk

राजस्थानी साहित्य रै मध्यकाल में रासो अर नाम सूं चरित काव्य लिखण री ई लूंठी परम्परा लखीजै। वीर रसात्म अेतियासिक रचनावां इण काल में रासो काव्य धारा रूप में विकसित हुई अर जैन कवि आपरै मानीतै रिसी, गुरु, तीर्थंकर अथवा सलाकां पुरखां रै बाबत जका चरित रचनावां रो सिरजण कर्‌यौ–वे रास कहीजी। अै रचनावां भगती री दीठ सूं सिरै है। कुछ उल्लेखजोग जैन अर जैनेत्तर चरित काव्य रचनावां है–

जैन तर चरित काव्य– सगतसिंघ रासो (गिरधर आसियौ), खुमाण रासो (दलपति विजय), हाला झाला रा कुंडळिया (ईसरदास), रतन रासो (कुंभकरण) आद।

जैन चरित काव्य– अगड़दत्त रास, तेजसार रास (कुसललाभ), गोराबादिल चरित (हेमरतन सूरि), मयण रेहा रास (मति सेखर), गौतम पृच्छा रास, सत्रुंजय रास (समय–सुन्दर), सम्यकत्व कौमुदी रास (हीरकलस), जिन प्रतिमा हुंडी रास (जिन हरस), श्रेणिक चौपई रास (धरम वर्धन) आद।

चरित काव्य धारा खास तौर सूं प्रबन्ध रूप में ई रचीजी। आं रचनावां में उण वगत रा सामाजिक, सांस्क्रतिक अर अेतियासिक घटनावां रा सांतरा चितरांम मिळै।

¼b½ ykd dk0; èkkjk

लोक काव्य रै माध्यम सूं ई सिस्ट साहित्य विगसाव करै। हिन्दी–साहित्य में इणी काव्यधारा सूं सूफी अर सूफीत्तर कवि कथावां नै लेय'र लूंठी प्रेमाख्यान रचनावां रो सिरजण कर्‌यौ। राजस्थान तौ प्रेमकथावां री जळम भोम है। अतः अठै लोकाश्रित कथावां नै अंगैज'र प्रेमाख्यानां रो सिरजण, सहज अर सुभाविक है। अठै प्रेमाख्यान सूं मतळब प्रेम प्रसंगा नैं लेय'र लोक प्रसिद्ध नायक–नायिका री कथा माथै सिरजित रचणा सूं है।

मध्यकालीन राजस्थानी साहित्य में प्रेमाख्यानक काव्य–रचनावां री लूंठी परम्परा रैयी। इण काल में लोक प्रचलित, जैन अर जैनेत्तर कवियां द्वारा रचित घणा ई उल्लेखजोग प्रेमाख्यान देख्या जा सकै, ज्यान– माधवानल काम कंदला प्रबंध (कवि गणपति), माधवानल काम कंदला चौपई, ढोला मारवणी चौपई (कुसललाभ), स्थूलिभद्र कोसा प्रेम विलास (जसवंत सूरि), कुतुब सतक, नलदमवंती रास (महीराज), वेलि क्रिसण रुकमणी री (प्रिथिराज), सिंघलसुत चौपई (समय–सुन्दर), लीलावती रास (हेमरतन), मदन सतद (दाम), चंद्रलेहा चौपई (मति कुसल), बीजा–सोरठ, लाखा–फुलाणी, जेठवा–ऊजळी, निहाल दे सुलतान रा पवाड़ा आद।

अै प्रेमाख्यान लोक कथावां अर पौराणिक आख्यानां माथै आधारित है। जैन अर जैनेत्तर कवि पण अै प्रेमाख्यान लिख्या। रूप विधा री दीठ सूं अै प्रेमाख्यानक रचनावां प्रबन्धातमक है। आं काव्य रचनावां रै नायक–नायिकावां रो प्रेम साव चिस्च्छल, कपटहीण अर साचौ हुवै। इण वास्तै ई विरहावस्था में वे अेक–दूजै सारू मरण नै त्यार हूय जावै। उण वगत कोई जोगी कै सिव–पारवती आय'र उणा री जान बचावै। इण भांत प्रेमारख्यानक रचनावां में कथाक रूढ़ियां रो भरपूर प्रयोग मिळै। अलौकिक पात्र– विद्याधर–विद्याधरियां, कांतरी, सिकोतरियां जैन प्रेमाख्यानां रा खास पात्र हुवै।

¼m½ jhfr foopd dk0; èkkjk

सामन्ती वातावरण रै पांण मध्यकाल में साहित्य अर कलावां नै संरक्षण मिळयौ। संस्क्रत री लक्षण ग्रंथ परम्परा री दाई प्राक्रत–अपभ्रंस में ई लक्षण ग्रंथ या रीति विवेचक

रचनावां लिखिजण लागी। 'प्राकृत पैंगलम' आद ग्रंथ इण रा प्रमाण है। इणी परम्परा में मध्यकाल में रीति विवेचक काव्य रचनावां री सरुआत व्ही। पण अठै आ परम्परा संस्क्रत, ब्रज कै हिन्दी री दाई पाण्डित्य परदरसण सारु कोनी ही। अठै तौ आ अेक अनायास घटना ही, जिकी उण वगत री सामन्ती परम्परा रो परिणाम हौ। इण काव्य धारा री उल्लेख जोग रचनावां है– नागराज पिंगळ (मोहन), अनूप रसाल (अनूपसिंघ), पिंगल सिरोमणि (कुसल लाभ), हरिपिंगल प्रबंध (जोगीदास), रसरूप (रूपजी), भाव पंचासिका (कविवृंद), रूपदीप पिंगल (जयकिसन भोजक), हम्मीर नाम माला (हम्मीर रतनू), अलंकार रत्नाकर (दलपत बसीधर), लखपत पिंगल (हम्मीर रतनू), अलंकार आसय (उत्तमचंद भण्डारी), रघुनाथ रूपक गीतां रो (मंसाराम मंछ), छंद विभूसण सटीक (उदयचंद भण्डारी), रणपिंगल (सं. दीवान रणछोड़), पांडव जस चंद्रिका (सरूपदास), रघुवर जस प्रकास (किसना आढ़ा), साहित्यसार (उदयचंद भंडारी), कवि मत्त मंडण (बांकीदास), कवि कुळबोध (उदयराम गूंगा), डिंगलकोस (मुरारीदान) आद।

मध्यकालीन रीति विवेचक काव्य री विसैवस्तु, छंद, डिंगळ गीत, अलंकार अर नाममालावां, काव्यदोस विवेचन रैया। आं में सबसूं ज्यादा रचनावां छंद विवेचक लिखिजी। इण विसै वस्तु रै विवेचन सारु आं रा रचेता सिव–पारवती अर रामकथा नै आधार बणाया। आं रीति विवेचक काव्य रचनावां सूं खुलासौ हुवै कै राजस्थानी रीति विवेचक भलै ई संस्क्रत लक्षण ग्रंथां रै रचेतावां ज्यांन आचार्य नी हा, पण वांनैं काव्यत्व री सबळी ओळखांण ही।

¼x½ dk; : i

मध्यकालीन राजस्थानी काव्य रा दो रूप रैयी– प्रबन्ध अर मुक्तक। प्रबन्ध काव्य रूप में महाकाव्य अर खण्डकाव्य दोई रूपां रो सिरजण हुयौ। अै रचनावा वीर, भगती, सिणगार सूं सम्बन्धित है। प्रेमाख्यान काव्य प्रायः महाकाव्य वरग री रचनावा है। इण भांत जैन अर जैनेत्तर दोई वरग रा कवि प्रबन्ध काव्य अर जैनेत्तर काव्य रचनावां रो सिरजण कर्‌यौ। मध्यकालीन राजस्थानी काव्य री कुछेक उल्लेखजोग प्रबन्ध रचनावां हैं– महाकाव्य– गुण रूपक (केसवदास), माधवानल– कामकंदला चौपई, अगड़दत्त रास, भीमसेन हंसराज चौपई (कुसललाभ), रामरासो (माधोदास दधिवाड़िया), राणा रासो (दयाल दास), सगत रासो (गिरधर आसिया), खुम्माण रासो (दलपत विजय), जयचंद रासो (कुंभकरण), राजरूपक (वीरभांण), सूरज प्रकास (करणीदान), भीम विलास (किसना आढ़ा), लीलावती रास (लाभवर्धन), रतनपाल–रतनावती रास (मोहन विजय)

[k.M dk;& नागदमण (सायाजी झूला), हाला–झाला री कुंडलिया (ईसरदास), वेलिक्रिसण रुकमणी री (प्रिथिराज राठौड़), गोरा बादिल चरित चौपई (हेमरतन सूरि), स्थूलिभद्र छत्तीसी, जिन पालित जिन रक्षित संधि गाथा (कुसल लाभ), नेमिनाथरास (पुण्य रतन), नरसी मेहता रो मायरो (रतनो खाती), राव जैतसी रो छंद (वीठो सूजा), महादेव पारवती री वेल (किसना आढ़ा), नाथ चरित (म. मानसिंघ) आद।

eDrd dk;& राजस्थानी साहित्य रै मध्यकाल में मुक्तक काव्य री इधकाई रैयी। अै रचनावां सिणगार, भगती, वीरता, नीति आद सूं सम्बन्धित है। ढाल, गीत, हीयाळी, कळस, सिलोका, स्तवन रूपां में जैन कवि ई मोकळी मुक्तक काव्य रचनावां रो सिरजण कर्‌यौ। मध्यकाल री महताऊ मुक्तक काव्य रचनावां हैं–

मीराँ पदावली, पंच सहेली रा दूहा (छीहल), श्री पूज्य वाहण गीत (कुसललाभ), हरिरस (ईसरदास), दादूवाणी, अणभै वाणी (संतदास), नीति मंजरी, धवल पचीसी, कुकवि बत्तीसी

(बांकीदास), नाथ पदावली (म. मानसिंघ), राजिया रा दूहा (किरपाराम) आद।

13-5 lkj

मध्यकाल अेक पारिभासिक सबद है। राजस्थानी साहित्य रै संदर्भ में वि.सं. 1550 सूं 1900 लग इणरौ समै मान्यौ जा सकै। कीं विद्वान इण काल खण्ड रा दोय हिस्सा– पूर्व मध्यकाल (भक्तिकाल) अर उत्तर मध्यकाल (रीतिकाल) कर'र इण रो अध्ययन कर्‌यौ है। इण काल में ई राजनीतिक अराजकता रैयी, जिणसूं मिनख सान्ती सारू ईस्वर भगती कांनी ढूक्यौ। देस में प्रचलित भगती आन्दोलण ई इण में सैयोग कर्‌यौ। मुगलां रै असर सूं सामाजिक अराजकता नैं ई बधापौ मिळयौ पण साहित्य अर कलावां नै संरक्षण मिळण सूं विविध प्रवृतियां वाळै साहित्य रो सिरजण हुयौ साहित्यिक विकास री दीठ सूं इण काल नै 'सोने रो जुग' कैयौ जा सकै। वीर सिणगार, भगती, नीति, मुजब साहित्य री सांवठी परम्परा इण जुग में विकसित व्ही। सगुण, निरगुण, जैन भगती मुजब रचनावां अर रीति विवेचक काव्य धारावां में साहित्य रचीजियौ।

13-6 vH;kl lk: loky

1. मध्यकाल रै अरथ रो खुलासौ करता हुया राजस्थानी साहित्य रै मध्यकाल रो समै निरधारित करौ।
2. राजस्थानी साहित्य रै मध्यकाल रै नांव करण माथै आपरा विचार प्रस्तुत करता हुया इण काल री काव्यधारावां रो परिचै दिरावौ।
3. मध्यकालीन राजस्थानी काव्य रै खास–खास रचनावां रो उल्लेख करता हुया 'वेलि क्रिसण रुकमणी' रो परिचै दिरावौ।
4. मध्यकालीन राजस्थानी काव्य री प्रमुख प्रव्रतियां री जाणकारी करावो।
5. मध्यकालीन राजस्थानी काव्य सिरजण री हालात नैं समझावौ।
6. मध्यकालीन राजस्थानी साहित्य री जैन काव्यधारा (चरित काव्य परम्परा) री विसेसतावां बतावौ।
7. मध्यकालीन राजस्थानी री काव्य विधावां रो परिचै देय'र उणा री अेक–अेक रचना माथै टीप लिखौ।
8. मध्यकालीन राजस्थानी रै सन्त काव्य री विसेसतावां नैं समझावौ।
9. 'प्रेमाख्यान' रै अरथ रो खुलासौ करता हुया मध्यकालीन राजस्थानी प्रेमाख्यानां री विसेसतावां रो खुलासौ करौ।

13-7 lanHkZ&xzUFkk jh ikuMh

1. सं. धीरेन्द्र वर्मा– हिन्दी–साहित्य कोश, भाग 1।
2. सं. डॉ. नगेन्द्र– हिन्दी–साहित्य का इतिहास।
3. डॉ. पुरुषोत्तम लाल मेनारिया– राजस्थानी साहित्य का इतिहास।
4. डॉ. मोतीलाल मेनारिया– राजस्थानी भाषा और साहित्य।
5. प्रो. कल्याणसिंह सेखावत– राजस्थानी भाषा एवं साहित्य।
6. सौभाग्यसिंह शेखावत– राजस्थानी साहित्य संपदा।
8. सं. डॉ. हरिश्चन्द्र वर्मा आद– साहित्यानुशीलन– त्रेमासिक शोध पत्रिका (अप्रेल–जुलाई 1977)– प्रका. हिन्दी–विभाग, रोहतक विश्वविद्यालय, रोहतक।
8. सं. नारायणसिंह भाटी– परम्परा (राजस्थानी साहित्य का मध्यकाल विशेषांक)।
9. सं. डॉ. मनोहर शर्मा– जागती जोत (समीक्षा–अंक), भाग 3, अंक 3, अक्टू.–दिस. 1975।
10. डॉ. जगदीश प्रसाद श्रीवास्तव– डिंगल साहित्य (पद्य)।

bdkbl & 3

vkèkqfud jktLFkkuh dkO; % mn~Hko vj fodkl

bdkbl jh :ij[kk

3.0 उद्देस्य

3.1 प्रस्तावना

3.2 उपयोगिता

3.3 आवश्यकता

3.4 परिस्थितियाँ

- 3.1 सामाजिक परिस्थितियाँ
- 3.2 धार्मिक परिस्थितियाँ
- 3.3 राजनीतिक परिस्थितियाँ

3.5. राजस्थानी काव्य परम्परा

3.6 आधुनिक काव्य : प्रवृत्तियाँ

- 3.1 प्रबन्ध काव्य
- 3.2 प्रकृति काव्य
- 3.3 गीति काव्य
- 3.4 आख्यान काव्य
- 3.5 हास्य व्यंग्य
- 3.6 'प्रगतिशील' कविता
- 3.7 सांस्कृतिक अर 'शैक्षणिक' कविता
- 3.8 नयी कविता
- 3.9 आधुनिक कविता रा सामाजिक सरोकार

3.7 सारांस

3.8 अभ्यास सारू सवाल

3.9 उपयोगी पोथियाँ

3-0 míL;

इण इकाई में आप आधुनिक कविता रो अध्ययन करोला। इण साथै ई ओ भी सवाल है कै राजस्थानी री आधुनिक कविता री सरूआत कद सूं हुवै। राजस्थानी री पुराणै जमानै री कविता में मुख रूप सूं वीर अर सिणगार दो ई रस ज्यादा आया है। इण इकाई में आप ओ भी भणोला कै पुराणी अर आधुनिक कविता में कांई अन्तर है? बीजी भारतीय भासावां री कविता में भांत–भांत रा आन्दोलन हुया। कथ्य अर सिल्प रै स्तर भी कविता में बदळाव आयो। जमानै रै साथै–साथै राजस्थानी कविता इण बदळाव नै कितरो'क अंगेज'र चाली है ओ भी इण इकाई में आप भणोला। आधुनिक राजस्थानी कविता में जैड़ी प्रवृत्तियाँ उभरी, बां मुजब बताणो भी इण इकाई रो उद्देस्य है।

3-1 çLrkouk

नवीं कविता नवैं भाव–बोध री कविता है। वीर गाथा काल या भगती काल री कविता नै जठै आम मिनख सूं सरोकार कोनी हो बठै ई नवीं कविता आम मिनख रै दुःख दरद नै परोट'र उण री भावनावां नै अभिव्यक्ति देवै। बा अब 'स्वान्तः सुखाय' नीं रैय'र 'जन हिताय' ज्यादा है। अैड़ी आधुनिक कविता री सरुआत कद सूं हुई, इण विसय में विद्वानां में कीं मतभेद है। सर्वश्री मोतीलाल मेनारिया, नरोत्तमदास स्वामी, पुरुषोत्तम लाल मेनारिया, शांतिलाल भारद्वाज आद विद्वान राजस्थानी कविता रै आधुनिक काल री सरुआत संवत् 1900 रो लगैटगै मानै। उणां मुजब पैलो भारतीय सुतंतरता संग्राम सन् 1857 में हुयो। इण रो मतलब है कै नवैं विचारां रो प्रवेस इण क्रांति साथै हुयो। हिन्दी साहित्य रा विद्वान डॉ. नगेन्द्र भी हिन्दी साहित्य रै आधुनिक काल री सरुआत सन् 1850 रै लगैटगै ई मानै। इण मतां पर विचार करता डॉ. किरण नाहटा रो कैवणो है राजस्थानी कविता रै आधुनिक जुग री सरुआत सन् 1900 सूं हुई है। बां मुजब, ''यह समय तो राजस्थानी इतिहास में घोर निराशा अकर्मण्यता एवं किंकर्तव्यविमूढ़ता का सम था। अतः हम किसी भी स्थिति में विक्रम संवत् 1900 के आस–पास के काल को राजस्थान साहित्य में आधुनिक चेतना के प्रेरक तत्त्व के रूप में नहीं ले सकते।'' इण भांत डॉ. किरण नाहटा शिवचन्द भरतिया, भगवती प्रसाद दारुका, गंगाराम बी.ए. आद रै नाटकां सूं आधुनिक जुग री शुरुआत मानै जिणां रो प्रकाशन सन् 1900 रै आस–पास ई हुयो। इण काल में रचित नाटकां या कवितावां में समाज सुधार पर जादा जोर दियो गयो है।

3-2 mi;kfxrk

राजस्थानी री आधुनिक कविता रै उद्भव अर विकास रै अध्ययन सूं पाठक नै राजस्थानी कविता परम्परा री पूरी जाणकारी मिलैली। साथै ई ओ भी बेरो चालै लो कै राजस्थानी कविता आप रै समाज रै इतिहास अर उण री संवेदना नै आप नै परोट'र चालै। राजस्थानी कविता रो उद्भव अर विकास जिण परिस्थितियाँ में हुयो बै हिन्दी कविता सूं कीं अळगी ही। कविता री संवेदना नै समझ्यां बिन बखत रै जन मानस नै भली–भांत समझ्यो जा सकै।

3-3 vkoL;drk

साहित्य समाज री धड़कण हुवै। कविता आप रै बखत नै आप रै भीतर संजो'र राखै। किणी देस या जात रो असल अर संवेदनावां रो इतिहास बठै रै साहित्य में मिलै। राजस्थानी कविता भी इण रो अपवाद कोनी। राजस्थानी री सरूआत री कविता दरबारां सूं जुड़ेड़ी ही। चारण कवि कलम अर तलवार दोन्यूं रा धणी हा पण आधुनिक जुग में पैली वाळी जरूरतां बदळगी। इण बदळतै परिवेस में कविता जन जागरण अर अेक हथियार दांईं काम कर्‌यो। आधुनिक काल री बीजी भासावां री कविता में भी आई'ज प्रवृत्ति मिलै। सरू में कविता 'आदर्शवादी' अर 'उपदेशात्मक' ही पण आगै चाल'र जथार्थ रै खुरदरै धरातळ पर उतर'र कविता मिनख रै भीतरी अर बा'रलै संघर्ष नै चित्रित करती लखावै। इण सब नै जाणणै तांईं अर बीजी भासावां रै मुकाबलै राजस्थानी कविता री कांई स्थिति है, जाणणै तांईं आधुनिक राजस्थानी कविता रो उद्भव अर विकास जाणणो जरूरी है।

3-4 ifjfLFkfr;k

किणी देस या काल रै साहित्य नै जाणणै, समझणै अर उण री समालोचना करणै तांईं पैली ओ जरूरी है कै बठै री परिस्थितियाँ रो अध्ययन कर्‌यो जावै। कोई भी साहित्य आप रै देस या काल री स्थितियाँ सूं निरपेख होय'र कोनी लिख्यो जा सकै। साहित्य देस अर काल री सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक आद परिस्थितियाँ रो कलात्मक चित्रण है। राजस्थानी साहित्य रै आधुनिक काल री परिस्थितियाँ इण भांत है–

3-1 lkekftd ifjfLFkfr;k

इण दिनां री सामाजिक परिस्थितियाँ नै देखतां राजस्थानी समाज घणो पिछड़ेड़ो, गरीबी अर अंध विस्वासां सूं घिरेड़ो हो। अठै रै करसां री दसा दयनीय ही। डॉ. किरण नाहटा लिखै, ''यहाँ किसान अकल्पनीय गरीबी और अपमान, प्रताड़ना एवं तिरस्कार की जिस भीषण आग में जलता रहता था, उसके लिए भूमि का भारी लगान, सूदखोर बनियों का जोंक की तरह उन्हें चूसते रहना और बेगारी तथा लाग–बाग की प्रथायें जिम्मेदार थीं। इन पर वह अत्याचार इस सीमा तक बढ़ गया था कि किसान लोग खून पसीना एक कर जिस फसल को उगाते थे, उसका कुल 13 प्रतिशत ही उनके हाथ लगता था, शेष सब राजकोष या जागीरदारों के हाथों में चला जाता था। '' समाज में छूआ–छूत, ऊँच–नीच रै कारण जाति बंधण घणा मजबूत हा। समाज में मृत्युभोज, 'बाल–विवाह', अणमेळ ब्याह बुढ़ापै में ब्याह आद कुरीतियाँ ही। ब्याव अर मरण रै मौकै पर दिखावै तांईं खूब खरचो करणो पड़तो। इणां दिनां ई शिवचन्द भरतिया आद लेखकां अैड़ै नाटकां री रचना करी जिकां में इण कुरीतियां सूं छुटकारो लेणै रा उपाय हा। राजस्थानी समाज पर महर्षि दयानन्द रै आर्य–समाज रो प्रभाव भी इणां दिनां आयो। राजावां री तरफ सूं जनता रै दुःख–दरद नै सुणणै अर दूर करणै री कोसीस लूण जितरीं कैयी जा सकै। राजस्थान में लगोलग पड़ण वाळा काळ तो रैयी–सैयी कसर पूरी कर देंवता। इण भांत आजादी सूं पैली राजस्थान री जनता री हालत घणी दयनीय ही।

3-2 èkkfeZd ifjfLFkfr;k

धार्मिक नजरियै सूं अठै सदीव स्यांती रैयी पण कोई अैड़ो धार्मिक व्यक्तित्व भी इण काल में अठै नीं हुयो जको जनता नै राह दिखा'र जुग रै मुजब बदळाव करतो। इण कारण जनता पुराणी रूढ़ीवादी गळी–सड़ी परम्परावां सूं बंधेड़ी दुःख पावै ही। धर्म री धजा धारण करण आळा असल में पाखण्डी अर ठग हा। भोळी जनता नै ठग'र खाणो उणां रो परम लक्ष्य हो। इण दौरान अठै स्वामी दयानन्द रो आगमन हुयो। बां रै उपदेसां सूं जनता नै कीं राहत मिली। लोग छोटै–छोटै देवी–देवतावां, पित्तर आदनै मानता। डोरा–तावीज करण आळां रो भी जनता पर प्रभाव हो। कैवण रो मतलब है इण बखत कोई अैड़ो संत या सुधारक राजस्थान में नीं हो जिको जनता नै राह दिखा'र अेक सूत्र में बांध देंतो।

3-3 jktuhfrd ifjfLFkfr;k

1857 री क्रान्ति रो राजस्थान रै राजावां, रजवाड़ां पर कोई खास फर्क नीं पड्यो पण जन जागरण री थोड़ी–घणी सुगबुगाट सरू होगी। क्रान्ति री असफलता सूं कवियां नै घणी ठेस पूगी। कविवर बांकीदास हिन्दू–मुसलमान दोनुवां नै ई सम्बोधित करतां कैयो–

आयो अंगरेज मुलक रै ऊपर,
आहंस लीधा खैंच उरां।
धणियां मरै न दीधी धरती,
धणियां ऊभी गयी धरा।

सन् 1903 में कवि बारहठ केसरी सिंह, उदयपुर रै महाराणा फतह सिंह नै 'चेतावणी रा चूंगट्या' सुणा'र दिल्ली दरबार में जाणै सूं रोक लियो। सन् 1900 सूं 1930 रै दौरान अठै दो प्रमुख घटनावां होई जिणां सूं राजस्थान रो जन जीवण प्रभावित हुयो। करसां रो बिजोलिया अर बेगू आन्दोलन। ओ आन्दोलन जागीरदारां रै खिलाफ हो। इण रा नायक हा श्री विजय सिंह पथिक। उणां रै नेतृत्व में करसां री घणखरी मांगां माननै तांई जागीरदार मजबूर होग्या।

इणीज दौरान सन् 1920 रै लगैटगै भारतीय राजनीति में गाँधी जी रो आगमण हुयो अर उणां

री विचार धारा सूं अठै रा लेखक, कवि, चिन्तक प्रभावित हुया।

राजस्थान में 1900 सूं 1930 तक अंगरेजां रै विरुद्ध जन जागरण रो काम कोई खास नीं हुयो। इण मुजब डॉ. किरण नाहटा रो कैवणो है– ''इस अवधि (1900 ई. से 1930 ई. तक) का राजस्थान का राजनैतिक इतिहास ब्रिटिश भारत के हलचलों भरे राजनीतिक इतिहास की अपेक्षा काफी स्थिर रहा है। ब्रिटिश भारत में राजनीतिक दृष्टि से जो जन जागृति अन्यत्र दिखलाई पड़ती है, राजस्थानी जनता में उसका एक सीमा तक अभाव मिलता है।''

3-5 jkt LFkkuh dk0; ijEijk

राजस्थानी काव्य परम्परा घणी जूनी है। इण में समै–समै पर समाज री सोच मुजब बदळाव आंवता रैया है। विक्रम री नौंवी सदी सूं चाली राजस्थानी काव्य री आ परम्परा बिना कठैई रुक्यां आज तक चाली आई है। सरुआती दौर (वीर गाथा काल) में जद व्यक्तिगत वीरता प्रदरसण ई मिनख रो ध्येय हो इण भासा में वीर काव्य री रचना हुई। मरण नै त्यूं हार मान्यो गयो अर जुद्ध में वीरता साथै लड़ता–लड़ता वीरगती प्रापत करणो परम लक्ष्य। उण बखत री सोच ही–

बा'रा बरस लौं कूकर जीवै, और तेरह लौंजिये सियार

बरस अठारा, छत्री जीवै, आगै जीने को धिक्कार।

इण सोच मुजब ई रासो ग्रंथां री रचना हुई। विदेसी हमलावरां सामी असफल होय'र या दुनियां सूं वैराग्य री स्थिति अर अनेक बीजै कारणां सूं इण भासा में कल–कल करती भगती री गंगा बैयी। अेक लम्बै अर्सै तक अठै ज्ञान मार्ग लोगां नै भगती रस में डुबोया। कबीर पंथी, नाथ पंथी, दादू पंथी, रज्जब जी, लालदासी, चरणदासी सम्प्रदाय घणां चावा हुया अर भटक्यै लोगां नै मार्ग दिखायो। आडम्बर विहीन भगती रै कारण लोग इण सम्प्रदायां कानी खूब आकृष्ट हुया। मीराँ री भगती रा पद तो आज भी लोग सुण'र मंत्रमुग्ध हुय जावै। जांभोजी भी भगती काल रा नामी कवि रैया है। इणी कड़ी में 'वेलि क्रिसन रुकमणी री' भगती अर सिणगार रो प्रसिद्ध ग्रंथ है।

संवत् 1700 सूं 1900 तक सिणगार परक रचनावां लिखी गई। दरबारी कविसरां आप–आप रै आश्रयदाता नै राजी राखणै तांई सिणगार री रचना करी। कला री निगै सूं ओ काल श्रेस्ठ कैयो जा सकै। 1857 री क्रांति साथै ई देश में मुगलां री सत्ता खतम हुयगी अर भारत अंग्रेजी सत्ता रो उपनिवेस बणग्यो। अब जनता नै सावचेत करणाळी अर जन जागरण आळी रचनावां री जरूरत ही। जैड़ो काम उण जुग रै कविसरां भली भांत कर्यो। इण बखत विदेसी सत्ता सूं मुगत होवणै तांईं अेक जुट होणै री जरूरत ही। अंधविस्वासां अर सामाजिक कुरीतियाँ नै तज'र मिनख–मिनख री बराबरी रो जुग हो। देस आजाद हुयग्यो पण कविता रो कर्तव्य तो अब भी पूरो कोनी हुयो। जद तांई मिनख समता भाईचारै, आपसी प्रेम, सद्भावना सूं दूर रैवैलो कविता अलख जगांवती रैवैली।

3-6 vkèkqfud dk0; % çofÙk;k¡

राजस्थान में जनतंत्र री थापनां तांईं जैड़ो आन्दोलन चालै हो उण नै आगै बधावणाळै साहित्यकारां में जयनारायण व्यास, गणेशी लाल व्यास 'उस्ताद', माणिक्य लाल वर्मा, हीरा लाल शास्त्री, सुमनेश जोशी हा। आप रै विद्रोही तेवरां रै कारण अै जन–जन में खूब आदरीज्या। आप रै गीतां अर कवितावां रै माध्यम सूं इणां जन–जन में चेतना रो मंत्र फूंक्यो। पण अफसोस री बात आ है कै इण में घणखरा'क गीत आज कोनी मिल सकै, क्यूं कै अै कठै ई छपेड़ा कोनी। प्रचार या उपयोगिता रै नजरियै सूं तो ठीक हा पण साहित्यिक दृस्टि सूं अै गीत कमजोर हा। इण गीतां री अैड़ी कोई उपलब्धी कोनी जिण सूं इण री परम्परा आगै बधती। दरअसल सगळा साहित्यकार राजनीतिक जागृति रो सनेसो देवणियां पैली अर साहित्यकार पछै हा। हाँ! इणां रै गीतां सूं मायड़ भासा मुजब लोगां में प्रेम भी जाग्यो अर राजस्थानी कवि आप री मायड़ भासा में रचना करण लाग्यो। इणी'ज कारण सर्व श्री मुरलीधर व्यास, चन्द्रसिंह,

कन्हैया लाल सेठिया, मेघराज मुकुल जैड़ा सामर्थवान कवि आगै आया। आधुनिक काव्य रो विवेचन बिन्दुआं मुजब इण भांत है–

3-1 çcUèk dk0;

प्रबन्ध काव्य लिखणै री परम्परा राजस्थानी में आदिकाल सूं चाली आवै। इण प्रबन्ध काव्यां रो मूल स्रोत पुराण, इतिहास अर लोक है। आधुनिक काल में अमृत लाल माथुर री 'गीत रामायण' कृति प्रबन्ध रचना है पण इण नै सुद्ध रूप सूं राजस्थानी री रचना नीं कैयी जा सकै क्यूं कै इण री भासा पर खड़ी बोली अर ब्रज रो पूरो प्रभाव है। स्वतंत्रता पछै री प्रबन्ध रचनावां में डॉ. मनोहर शर्मा द्वारा रचित कुरजा, अमर फळ, मरवण, गोपी गीत, पंछी, अन्तरजामी, श्रीमन्त कुमार व्यास रचित 'रामदूत', सत्य प्रकाश जोशी रचित 'राधा', सत्य नारायण 'अमन' प्रभाकर रचित 'सीस दान', कान्ह महर्षि रचित 'मरु मयंक' श्री बनवारी लाल मिश्र सुमन रचित 'देळयां रो दिवलो', गिरधर सिंह पड़िहार रो 'मानखो' श्री विश्वनाथ विमलेश रचित 'रामकथा', करणीदान बारहठ रचित 'शकुन्तला' डॉ. मंगत बादल रचित 'दस मेस', मोहन आलोक रचित 'वनदेवी अमृता', ताऊ शेखावाटी रचित 'हमीर महाकाव्य' आद प्रबन्ध काव्य है। इण री कथा पौराणिक या अेतिहासिक है।

अै प्रबन्ध काव्य चाये पौराणिक कथानक लियां हुवै चाये अेतिहासिक, इण री खास बात आ है कै आप रै जुग री समस्यावां सूं साक्षात्कार कर उणां रो समाधान करणै री कोसीस करै। गिरधारी सिंह परिहार रो 'मानखौ' आज रै मिनख नै मिनख बणणै री सीख देवै तो 'राधा' में कवि जुद्ध री समस्या पर विचार करतां 'फौजां नै पाछी मोड़णै' री सलाह देवै। सत्य प्रकाश जोशी रो ई 'बोल भारमली' प्रबन्ध काव्य पुराणी गळी–सड़ी परम्परावां छोड नवीं अपणाणै री सीख देवै। इणी'ज भांत मंगत बादल रो 'देस मेस' गुरु गोविन्द सिंह रै जीवन पर आधारित महाकाव्य साम्प्रदायिक अेकता अर राष्ट्रीयता रो सनेसो देवै। मोहन आलोक रो 'वनदेवी अमृता' प्रबन्ध काव्य पर्यावरण संरक्षण पर रचित सांतरो काव्य है जैड़ो आज री समस्या सूं रूबरू होय'र पर्यावरण ह्रास सूं होवणाळा खतरांकानी संकेत करै। हमीर महाकाव्य इतिहास पर आधारित कथानक पर रचेड़ी कृति है जिण में हमीर री सरणागत वत्सलता, वीरता, वचनबद्धता साथै–साथै ओ भी बतायो गयो है कै मध्यकाल में जैड़ा जुद्ध हुया बै सत्ता तांईं जुद्ध हा ना कि हिन्दू मुसलमानां रा। इण भांत राजस्थानी में प्रबन्ध काव्यां री परम्परा आज भी जारी है।

3-2 çÑfr dk0;

प्रकृति चित्रण भी राजस्थानी री अेक ससक्त प्रवृत्ति रैयी है। आधुनिक काल री असल सरुआत चन्द्र सिंह जी री 'बादळी' सूं हुवै। भाव बोध री नजर सूं 'बादळी' अेक अभिनव कृति ही जिण री भासा पुराणी भासा सूं अळगी अर जन जीवन रै जादा नेड़ै ही। काव्य जगत में इण कृति रो भरपूर स्वागत हुयो।

प्रकृति मिनख री सहचरी है। प्रकृति अर मिनख रो सम्बन्ध सनातन है। प्रकृति रा अणगिण रूप है। कदे तो बा आप रै सौन्दर्य सूं मिनख नै आप कानी आकर्षित करै तो कदे मिनख में सूती भावनावां नै जगावै। उण रा कारनामा मिनख नै कदे डरावै तो कदे हैरान कर देवै। प्रकृति रै इणी'ज कारनामां नै देख'र समीक्षकां उणरै अळगै–अळगै रूपां नै आलम्बन, उद्दीपन, भयावह रूप, मानवीकरण, अद्‌भुत आद नांव दिया। राजस्थान री धोरांळी धरती रा चित्रांम स्यात रसिकां नै इतरां सोवणा अर मोवणा नीं लागैला जितरा संस्कृत, हिन्दी या बीजी भारतीय भासावां में बठै री प्रकृति रा हुया है। इण रो कारण बतांवता डॉ. किरण नाहटा रो कैवणो है, ''राजस्थान को अपनी सौन्दर्य सुषमा प्रदान करने में प्रकृति ने सर्वाधिक कृपणता का परिचय दिया है। फलतः यहाँ के साहित्य में उसकी उन नानाविध मोहक छवियों का अंकन नहीं हो पाया है, जिनका

अत्यन्त आकर्षक एवं हृदयहारी चित्रण संस्कृत आदि के साहित्य में मिलता है।'' इणी कथन रै आलोक में अगर आपां राजस्थानी साहित्य में प्रकृति चित्रण रो अवलोकन करस्यां तो उचित रैवैलो।

प्रकृति चित्रण री परम्परा में श्री चन्द्र सिंह 'बादळी' पछै 'लू' री रचना करी। नानुराम संस्कर्ता री 'कलायण' 'दस देव' 'प्रकृति सैंकड़ो' आद चावी ठावी रचनावां है। मनोहर शर्मा री 'उषा', 'वन देवी', 'किरण', 'रसधारा', 'अरावळी', 'झरणो' आद रचनावां प्रकृति प्रेम सूं सराबोर है। नारायण सिंह भाटी री 'सांझ' प्रकृति काव्य परम्परा री लूंठी रचना है। इणां रै अलावा प्रबन्ध काव्यां में कवियां नै जठै भी मौको मिल्यो है प्रकृति चित्रण कर्‌यो है। इण चित्रण री अेक आ भी विसेसता है कै अठै प्रकृति री विसम परिस्थितियाँ होणै रै कारण 'सुन्दर' री अपेक्षा 'शिवं' रो बरणाव जादा कर्‌यो है।

प्रकृति चित्रण रा बियां तो थोड़ा–घणा सगळा रूप चित्रित हुया है पण 'काळ चित्रां' में प्रकृति रो जैड़ो भयानक रूप चित्रित हुयो है बो दिल दहलावण वाळो है। श्री उमर दास लालस रो रचेड़ो 'छपना रो छंद' अैड़ो प्रकृति चित्रण है जिण में संवत् 1956 (सन् 1899) रै काळ रो भंयकर बरणाव है। आधुनिक काल में और कवियां भी 'काळ चित्र' लिख्या है जिण में ओम पुरोहित 'कागद' रा 'काळ चित्र' काफी चर्चित हुया पण अब आळै 'काल चित्रां' री आ विसेसता है कै उणां में वर्णनात्मकता तो है पण संवेदना कम है। इण भांत लागै जियां कवि देख'र बरणाव (रनिंग कमेंट्री) करतो हुवै। इण रै अलावा लूआं रै मिस भी चन्द्र सिंह जी प्रकृति रै भयावह रूप रो कितरो सुभाविक बरणाव कर्‌यो है–

पेट भार हिरण्या बहै, रह्‌यो न ओटो कोय।
रूआं–रूआं नीसरै, लूआं धूआं लोय।।
सूकां तगरां सींगटी, लपट पड्‌या ओटाळ।
जी लूआं ले नीसरी, आयो हिरणां काळ।।

प्रकृति रो उद्दीपन रूप में बरणाव श्री विश्वनाथ विमलेश 'सतपकवानी' अर श्री गजानन वर्मा 'सोनो निपजै रेत में' कृति में जग्यां–जग्यां कर्‌यो है। कैवण रो मतलब है कै प्रकृति रा अळगा–अळगा रूपां रो चित्रण अठै रै कवियां कर्‌यो है। प्रकृति रै मानवीकरण रो कितरो सुन्दर चित्रण है–

गोरै दिन रै लारै सिंझ्या बहू सांवळी आई।
माथै बांध्यो चाँद बोरलो
पग पाजेबां तारा
सुपना बाजूबंद जड़ाऊ
सोवै कामण गारा
सागै पेई भर नींदड़ली नैण मोवणी ल्याई।
गोरै दिन रै लारै सिंझ्या बहू सांवळी आई।।
बादळिया दो–च्यार कुंवारा
देवरिया मटबोला
भौजाई कोयल री जाई
करै कितोळां रोळा

पकड़ कानड़ा पून दकाळ्या स्याणी नणदल बाई।

गोरै दिन रै लारै सिंझ्या बहू सांवळी आई।।

इण उद्धरण नै भणतां लागै कवि रो लोक मुजब ज्ञान कितरो गैरो है। इण भांत कैयो जा सकै कै राजस्थान रै विभिन्न क्षेत्रां में रैवणियां कवियां प्रकृति मुजब जरूर कीं न कीं लिख्यो है। हिन्दी री नवीं कविता में जठै प्रकृति रा चितरांम घमलां या पार्कां में सिमट'र रैग्या है बा स्थिति राजस्थानी कविता में कोनी लखावै। इण रो अेक बड़ो कारण तो ओईज हैं कै अै कवि आप भी माटी सूं जुड़ेड़ा है।

3-3 xhfr dk;

राजस्थानी में गीत घणी लोकप्रिय विधा रैयी है। संगीत अर लय रै कारण गीत री 'संप्रेषणीयता' अर प्रभाव बढ़ जावै। राजस्थानी कनै लोकगीतां री अेक लाम्बी अर सिमरद्ध परम्परा है इण कारण साहित्यिक गीत री धारा लोक धारा में मिल'र दोगुणी असरकारक हुयी है। सत्य प्रकाश जोशी, कन्हैयालाल 'सेठिया', कल्याणसिंह राजावत, गजानन वर्मा, किशोर कल्पनाकान्त, मेघराज मुकुल आद अनेक गीतकार हा जिकां गीत रो साहित्यिक पख मजबूत कर्‌यो साथै ई उण नै लोक प्रिय भी बणायो।

राजस्थानी रा सरुआती गीत राजनीतिक प्रेरणा सूं अनुप्राणित हा पण आगै चाल'र इणां री विसय वस्तु बदळगी। मेघराज मुकुल, कन्हैयालाल सेठिया, कल्याण सिंह राजावत आद रा सिणगार प्रधान गीत जग चावा हुया सिणगार में संजोग अर वियोग दोन्यूं ई पखां रो सांगोपांग बरणाव हुयो है। सिणगार रै साथै प्रकृति भी कवियां रो प्रिय विसय रैयी है। 'धोरां री धरती', 'म्हांरो प्यारो मरुधर देस' कैय'र गीतकारां उण धरती रा खूब गीत गाया। इण गीतां मुजब अेक आलोचक री टिप्पणी देखण जोग है, ''अपनी मिट्टी या अपनी मातृ भूमि के प्रति अगाध ममत्व और श्रद्धा का भाव उन गीतों में और भी उत्कटता के साथ प्रकट हुआ है, जहाँ उसने पूर्ण भावावेश में यहाँ के वैभवशाली अतीत का, यहाँ के समृद्ध साहित्य का, यहाँ के अजेय योद्धाओं का, यहाँ की साहसशीला वीरांगनाओं का एवं यहाँ के वैविध्यपूर्ण लोक जीवन का अंकन किया है।''

आगली पीढ़ी में प्रेम जी प्रेम, दुर्गादानसिंह, मुकुटमणि राज, मोहम्मद सदीक, मोहन आलोक, हरीश भादानी, मंगत बादल आद गीतकारां गीतां रै इण काफिलै नै आगै बधायो। हिन्दी में नूंवै गीत (नव गीत) री तर्ज पर राजस्थानी में भी नूवां गीत या आगला गीत कैय'र लिख्या गया। इण नूंवैं गीतां री विसय वस्तु रोजमर्रा री जिनगी, अबखायां आद रो चित्रण हुयो है। उदाहरणार्थ मोहन आलोक रै अेक गीत री ओळयां प्रस्तुत है–

बावड़ां भीड़ सूं

बस करां, आओ!

मिनख री मौत पर हरजस करां

पेट पग अळगा हुवै जठै

सरम रै सांध पर, कियां–

ईं रयोड़ी

लीरड़ी–लीरड़ी चीरड़ी नै/सूई तागै सूं सियां/

3-4 vk[;ku dk;

आख्यान काव्य रो मतलब है बै कवितावां जैड़ी आप रै भीतर कोई अेतिहासिक, पौराणिक या

लोक रो कथानक समेट्यां हुवै। राजस्थानी में वीर पुरखां अर महापुरखां रो बिड़द गाणो कोई नवीं बात कोनी ही पण आधुनिक काल में इण री रचना अेक भांत सूं बखत री मांग ही। देस रै खोयेड़ै गौरव नै जगावणै अर जन–जन में जोस भरणै तांईं अैड़ी काव्य रचना री दरकार ही। बीजै सब्दां में अैड़ी कवितावां नै कथात्मक कवितावां भी कैयो जा सकै।

इण पद्यात्मक कथावां में मेघराज मुकुल री 'सैनाणी' बड़ी प्रसिद्ध हुई। इणी'ज भांत कन्हैयालाल सेठिया री 'पातल अर पीथळ' भी प्रेरणादायी कविता ही। इण दोन्यूं कवितावां री सफलता सूं प्रेरणा लेय'र सैंकड़ूं आख्यान कवितावां लिखी गई। गिरधारी सिंह पड़िहार री 'मेघनाद', 'पुरु' अर 'पातळ, अकबर, मान' करणीदान बारहठ री 'देसूंठो' आद कवितावां नै भी खूब मान मिल्यौ। 'मेघनाद' कविता में मेघनाद रो चरित्र पौराणिक चरित्र सूं हट'र है। इणी'ज भांत 'पातळ, अकबर, मान' में अकबर रो चरित्र राष्ट्रीय सासक रै रूप में चित्रण करणै री कोसीस है। पूरै राष्ट्र नै अेकसूत्र में बांधणै तांईं अकबर, महाराणा प्रताप सूं जुद्ध करै, सत्ता री हवस पूरी करण तांईं नईं। इणीज भांत करणीदान बारहठ री 'देसूंठो' कविता भी प्रभावी बणी है।

आख्यान कविता में 'आख्यान' उण री हुवै जिणनै कुसल कवि आप री बौद्धिकता अर कल्पना सगती सूं अेक नूवैं रूप में प्रस्तुत कर पाठक या श्रोता नै प्रभावित करै पण अैड़ो कीं कवितावां में ई हुयो है। जादातर कवितावां इतिवृत्तात्मक बण'र रैगी है। राजस्थान री प्रसिद्ध कथावां 'जेठवा ऊजळी' 'मूमल' 'पाबूजी' आद नै लेय'र आख्यान कवितावां रची गईं जैड़ी आप रै बखत में चावी भी हुई। आख्यान कवितावां में कीं कवितावां नै छोड'र बाकी आज इतिहास में ई सोभित है।

3-5 gkL; 0;X;

नव रसां में हास्य रस भी है पण भारतीय साहित्यकारां इण रस कानी कम ई ध्यान दियो है। हास्य साथै जद व्यंग्य मिल ज्यावै तो व्यंग्य री धार भी घणी तीखी हो ज्यावै। 'पाश्चात्य साहित्य' में तो हास्य अर व्यंग्य दोनुआं रो खूब प्रयोग हुयो है पण हिन्दी में व्यंग्य रो जादा प्रयोग हुयो। मध्यकाल में कायरां पर चोखा व्यंग्य कर्‌या गया है जिण सूं हास्य री भी स्रिस्टी हुवै–

कंत घरे किम आविया, तेगां री घण त्रास?
लहंगे मूझ लुकीजिये, बैरी रो न बिसास।।
प्रीतम रण चढ़िया इसा, हथ लीधी तरवार।
दाठी तन री छांयली, ऊभा पाड़ै वार।।

आधुनिक काल री सरुआत में कंजूस, मोटै अर थुलथुल लोगां नै भी हास्य रा आधार बणाया गया पण इण रै बावजूद साहित्य में हास्य री कमी बरकरार रैयी। श्री विश्वनाथ विमलेश, बुद्धि प्रकाश पारीक, अन्नाराम सुदामा, नागराज शर्मा आद अैड़ा कवि हुया जिकां सामाजिक बिडरूपां पर चुटकियां लेय'र हास्य री स्रिस्टी करी जदकै सत्यनारायण 'अमन' प्रभाकर सिरखा कवियाँ सीधी–सीधी चोट करणै री नीति अपणाई। आजादी पछै पैदा हुई स्थितियाँ नै देख'र गाँधी जी री कांई हालत होंती। 'अमन' रै सबदां में–

तो खद्दरिया/स्हो कीं बिसरा/ सै भूल भुला,
गुण–गाळ होय नै/पल भर में/कपड़ां स्यूं बारै हो लेता
औरंगजेब बण बापू नै/खल्लै में पाणी प्या देंता/
अै नाकां चिणा चबा देता

मोहन आलोक अंग्रेजी साहित्य सूं प्रभावित होय'र 'लिमरिक' री भांत विसुद्ध हास्य री स्रिस्टी

करण वाळा 'डांखळा' लिख्या जिका 'इतवारी पत्रिका' में पूरै च्यार सालां तक धारावाहिक रूप में छप्या। कवि सम्मेलनां रो भी हास्य रस नै लोकप्रिय बणाणै में चोखो हाथ है। मंचां पर हास्य रस री चोखी मांग है पण इण सूं कदे–कदे हास्य फूहड़ता तक चल्यो जावै। आ चिन्ता री बात है। आज रै माहौल में हास्य रस नै मंच पर लोक प्रिय बणावणाळां में ताऊ शेखावाटी, सम्पत सरल, सुरेन्द्र दुबे, केसर देव प्रजापत सिरै नांव है। इण रै साथै अेक पूरी पीढ़ी चालै। उम्मीद है भविस में राजस्थानी में हास्य री कमी नीं रैवैली।

3-6 çxfr lhy dk0;

'प्रगतिवाद' अर 'प्रगतिशील' सबद आज रुढ़ हो चुक्या है। प्रगतिवाद सूं मतलब मार्क्सवादी विचारधारा रो साहित्य अर प्रगतिसील उण साहित्य नै कैवै जैको आप रै जुग रै विकास साथै आगै बधै। राजस्थानी साहित्य सदीव सूं मिनख अर साहित्य नै प्रेरणा देवतो रैयो है। शंकरदान सामौर जैड़ा जनकवि अंगरेजां री साम्राज्यवादी नीति नै पिछाण'र जनता नै चितारतां कैयो–

महलज लूटण मोकळा, चढ्या सुण्या चिंगेज।
लूटण झूंपा लाळची, आया बस इंगरेज।।

आधुनिक काल रै सरुआती दौर में कविसरां समाज सुधार तांईं अणगिण गीत अर कवितावां लिख'र समाज नै राह दिखायो। ऊमर दान री 'असन्तां री आरसी', 'खोटै संतां रो खुलासो', 'अमल रा औगण' 'दारु रा दोस', 'तमाखू री ताड़ना' आद कवितावां घणी चावी हुई। सुतंतरता सूं पैली आळी रचनावां में समाज सुधार, जातीय उत्थान, सोसण सूं सावचेत होय'र उण रै खिलाफ संघर्स आद भावनावां प्रमुख रैयी। इण में गणेशीलाल व्यास 'उस्ताद', सुमनेश जोशी, गजानन वर्मा, निरंजननाथ आचार्य, मदनगोपाल शर्मा आद अणगिण गीतकार, कवि हा जैड़ा जन सुधार में आगीवाण भूमिका निभाई।

आजादी सूं पैली विकास, निर्माण अर सुराज रा जैड़ा सपना भारतीय जनता देख्या बै आजादी पछै चूर–चूर होंवता देख'र कवियां में आक्रोस फूटणो सुभाविक हो। आजादी पछै लगोलग बधती महंगाई, भ्रष्टाचार आद सूं जनता रै आ बात चोखी तरां समझ आगी कै उण नै खुद रै उद्धार तांईं खुद ई आगै आणो पड़ैलो। साधारण मजदूर, करसा, जितरी मेहनत करता उण सूं परिवार रो पेट ई नीं पळतो जद कै ऊँचै तबकै रा लोग सोसण रै बलबूतै मजा लूटै हा। इण असमानता नै देख'र समकालीन कवियाँ रै रीस री अभिव्यक्ति तत्कालीन कवितावां में हुई है। सत्यनारायण 'अभन' प्रभाकर, रेवत दान चारण, मनुज देपावत, नानूराम संस्कर्ता आद कवियाँ रा विद्रोही तेवर देखतां ई बणै। 'अमन' री 'गाँधी जी चलग्या सुख पाया' कविता घणी प्रसिद्ध हुई–

गाँधी जी चलग्या सुख पाया
आ भ्रष्टाचारी देख–देख
काळा बाजारी देख–देख
तस्कर व्योपारी देख–देख
बा खोड़ पांवती दुख भाया।
गाँधी जी चलग्या सुख पाया।।

इण भांत आजादी पछै री कविता में वैवस्था रै विरुद्ध घोर आक्रोस री अभिव्यक्ति हुई है। भ्रष्टाचारी नेतावां, रिस्वतखोर अफसरां री खूब खबर ली है। कैवण रो मतलब है कै राजस्थानी कवि रूढ़िवादी विचारां, सड़ी गळी भ्रष्ट वैवस्था अर मिनखा चारै नै नुक्साण पुगावणाळी प्रवृत्तियाँ पर जम'र चोट करी है।

3-7 lkLÑfrd vj lkf{kd dfork

'कला, कला खातर' बात कैवण में कितरी ई सोवणी लागै पण जद तांई कला रो कोई उद्देस्य नीं हुवैलो, उण रो कोई मतलब नीं। राजस्थानी कविता सदीव सामाजिक अर सांस्कृतिक सरोकारां सूं जुड़ी रैयी है। चाये वीर रस री कविता हुवै या भगती, नीति री, आप रै पाठकां या स्रोतावां नै बराबर प्रेरित करती रैयी है। राजस्थानी कविता आप री संस्कृति नै भी आप रै साथै परोट'र चाली है साथै ई नीती या सिक्षाप्रद काव्य जन–जन नै पढ़ाई प्रदान करणाळो महताऊ काम भी कर्‌यो है।

राजस्थानी री आधुनिक कविता में भी राजस्थान रो सांस्कृतिक परिवेस पूरी तरां मुखर है। अठै रा त्यूंहार, पर्व, रीति रिवाज, सुगन विचार, रहण–सहण आद, अठै री प्रकृति रा रूंख खेजड़ी, कैर, बोरड़ी, जाळ, खींप, धोरा पूरी ताकता सूं कविता में प्रस्तुत हुया है। कातीसरै में खेत में जाय'र करसो खेत रुखाळै। बठै रो अेक दरसाव गजानन वर्मा री कविता में–

आ कुण ऊँचै धोरै रै
ताई सिट्‌टा मोरै रै
दादी गा गा गीत सुणावै
भोळा बाळकिया बिलमावै
लूंका लूंकड़ी बोलै
बैठी कैर कै ओलै
बा तो काचरा छोलै।

सांस्कृतिक जीवन रै साथै अठै रैवणवाळां री अबखायां, साल दर साल पड़ता काळ, तिसाया मरता मिनख, जानवर आद सगळा आपरी उपस्थिति आधुनिक कविता में करावै। साथै ई आज रो बदळतो परिवेस जिणसूं गाँव रै लोगां री सोच बदळी है, बो भी लखावै।

कविता नीति या उपदेस रो माध्यम भी रैयी है। हालांकि कविता रै माध्यम सूं उपदेस कविता नै हळकी करै पण प्रसंग मुजब कविगण चूकै भी कोनी। सिक्षा या उपदेस देणो भी राजस्थानी कविता री मोटी प्रवृत्ति रैयी है। जिन्दगी री आँच में तप'र कवि जैड़ा अनुभव प्रापत करै बां नै आप रै पाठकां साथै बांटणै सूं उण नै आणंद री अनुभूति हुवै। कवि रा अै अनुभव कदे सीधा ई उपदेस बण'र तो कदे ई नीति री 'सूक्ति' बण पाठक सामी आवै। आधुनिक काल रै सरुआत में समाज सुधार मुजब कवितावां री रचना हुई। बाल विवाह, दहेज आद कुरीतियाँ री बुराई करी गई। दारू पीणो, अम्मल खाणो या बीजो नसो इण, सगळां नै बुरो बता'र इणां सूं बचणे री सलाह दी गई। वैस्या गमन नै बुरो बतांवतां कैयो–

वैस्या प्लालो जहर को,
हाँ रे कोई सहद लपेटी धार।
धन की प्यासी पापणी
(कोई) झूठो करती प्यार।
वैस्या छै पैनी छुरी रे,
(हाँ रै भाई) तीन ठौर सूं खाय।
धन छीजै जोबन हरै,
(कोई) मर्‌या नरक ले जाय।

उपदेस या सिक्षा देणै री प्रवृत्ति कविता में कठै न कठै ई आ ई जावै। पुराणै साहित्य में 'कान्ता सम्मित' उपदेस नै काव्य में ठीक मानता। उपदेस सूं कविता में हळकोपण तो आ ज्यावै पण कवि किणी ब्याज सूं उपदेस देणै सूं चूकै कोनी। पर्यावरण नै लेय'र रचेड़ै काव्य 'वनदेवी : अमृता' में मोहन आलोक कैवे–

चिमक'र खोल आँख,
अरै रै पुहुमी बचाओ।
औचक दियो आदेस,
रूंख लीला नईं घावौ।
जीवदया पालणी,
छिमा नै हिरदै धारो।
अमर रखावो थाट,
मांस मद दूर बिसारो।

इण भांत आधुनिक कविता संस्कृति री संवाहक रै साथै–साथै उपदेस अर सिक्षा रो माध्यम बणी है।

3-8 u;h dfork

हिन्दी में नई कविता आन्दोलण बीसवैं सईकै रै पाँचवैं दसक में सरु हो ज्यावै। नूवों सिल्प, नूवां प्रतीक, छन्द नै तज'र कविता अभिव्यक्ति रो निरवाळो ढंग तो सोध लियो पण जन मानस सूं कटगी। 1962 में चीनी हमलै रै कारण अठै रै बुधी जीवियाँ रो 'सत्य', 'अहिंसा', 'पंचशील' आद सूं मोह भंग होग्यो अर कविता में भांत–भांत रा आन्दोलन सरू होग्या। 'विद्रोही कविता' भूखी पीढ़ी री कविता, 'अकविता' आद कई आन्दोलन चाल्या पण राजस्थानी में 'नयी कविता आन्दोलण हिन्दी सूं घणी देर पछै सरु हुयो। इण रो अेक कारण तो ओई'ज हो कै राजस्थानी रा रचनाकार हिन्दी में भी बराबर रचनाकर्म में लागेड़ा हा। इणी'ज कारण उणां नै इण री जरूरत मै'सूस नीं हुई। बीजो कारण हो राजस्थान में हाल तक बै परिस्थितियाँ इतरी प्रभावसाली कोनी हुई जिण रै कारण नयी कविता उपजी। इण कारण सूं राजस्थानी में नई कविता आंदोलण 1962 रै जुद्ध पछै सरु होंवतो दीसै क्यूं कै चीन रै हमलो असल में भारत री अस्मिता पर चोट हो। इण बदळेड़ै परिवेस नै मै'सूस'र डॉ. मनोहर शर्मा कैयो–

कवि/कल्पना रो हंस/मन भावतो है
तो यथार्थ री/कोचरी भी/कम रूपाळी कोनी।
हंस रै गीतां साथै/अब कोचरी रा भी/गीत गावो

कवि कन्हैयालाल सेठिया, मेघराज मुकुल अर बीजा समकालीन कवि इण बदळाव नै आप री कवितावां में अंगेजणै री कोसीस करी है। हिन्दी रै देखा देखी राजस्थानी में छन्द मुगत कविता तो कवि 1955 में ई लिखण लागग्या पण नूंवो भाव बोध अर नयी कविता जैड़ी तल्खी, बिम्ब योजना आद तो 1965 पछै री कविता में ई दीखण लागै। इण मुजब तेज सिंह जोधा रो कथन कितरो सटीक है, ''सन! 1965 तांईं मुक्त छन्द और छन्द में लिख्योड़ी सगळी कवितावां कथ री निजर सूं 'है जियां ई' परोटो री अधबूढ़ी सामाजिक चेतणा रै अेड़ै–छेड़ै रची अर कथी जण में भी सुमाणस बीनणी ज्यूं चालती आंई मान्यतावां, धारणावां अर आदरसां री बूढ़ी–बडेरी डोरियां रै पगां लागणरी बाण अर लीक आप रै मांय ठौड़ री ठौड़ राखी।''

राजस्थानी नयी कविता आन्दोलन चाये हिन्दी कविता सूं प्रेरित हुयो पण बो उण री नकल

कोनी। हिन्दी री नई कविता में भय, कुंठा, संत्रास, मृत्यु बोध आद जैड़ा 'पाश्चात्या दर्शन' सूं प्रेरित होय'र आया है बै राजस्थानी कविता में कोनी मिलै। 'यौन सुच्छन्दता' रो चित्रण, भद्दैपण आद सूं भी राजस्थानी नवी कविता बचेड़ी है। इण रो अेक कारण तो ओई'ज है कै अठै रै रैवणियां री जीवण अर अठै री संस्कृति में बै बातां कोनी। दिल्ली, मुम्बई महानगरां री अपेक्षा अठै रै महानगरां रो जीवण अपेक्षाकृत साफ सुथरो है। अठै रै कवियां रो भोगेड़ो यथार्थ इतरो भदेस अर विकृत कोनी। राजस्थानी री नयी कविता री बाकी प्रवृत्तियाँ कमोबेस रूप में इण कवितावां में चित्रित हुई है। अै प्रवृत्तियाँ अठै रै कवियाँ सहरी जिनगी री बजाय ग्रामीण जिनगी में ढूंढ़णै री कोसीस करी है। कन्हैया लाल सेठिया अर बां रै समकालीन कावियाँ सूं चाल'र नयी कविता रो काफिलो तेज सिंह जोधा, हरमन चौहान, मणि मधुकर, नंद भारद्वाज, चेतन स्वामी, शिवराज छंगाणी, दलपत परिहार जुगल परिहार, पारस अरोड़ा, मोहन आलोक, मंगत बादल, मीठेश निर्मोही आद कवियाँ नै साथ लिया आगै बधतो जावै। आ सरावण जोग बात है कै राजस्थानी कविता आप रै पाठक सूं उतरीं दूर कोनी हुई जितरीं हिन्दी कविता।

3-9 vkèkfud dfork jk lkekftd ljkdkj

आधुनिक राजस्थानी कविता सरुआत सूं ई आप रै सामाजिक सरोकारां मुजब सावचेत रैयी है। प्रथम सुतंतरता संग्राम पछै अठै रै कविसरां ओ मै'सूस कर लियो कै अंगरेज अठै सिर्फ राज करण नीं आया अै अठै रै लोगां नै लूट–लूट ओ धन आप रै देस ले ज्यावै। सूर्यमल मीसण सोई रजपूती नै ललकारी तो कविवर बांकीदास हिन्दू–मुसलमान री अेकता रो देय'र दोन्यूं कौमां नै जगावणै री कोसीस करी। केसरीसिंह जी बारहठ मेवाड़ रै राणां नै चेतावणी रा चूंगट्या सुणा'र अंग्रेजां री बैठक में भाग लेणै सूं रोक लिया। कवि श्री जयनारायण व्यास, हीरालाल शास्त्री, माणिक्य लाल वर्मा, सुमनेश जोशी, गणेशीलाल उस्ताद व्यास आद कवियाँ आप रै मुधरै गीतां रै माध्यम सूं जन जागरण रो काम कर्‌यो।

समाज में व्याप्त कुरीतियाँ जियाँ बाल विवाह, विधवा रो ब्याव नीं करणो, दहेज प्रथा, पर्दा प्रथा, मृत्युभोज, छुआ छूत आद पर कविता रै माध्यम सूं खूब चोट करीजी है। रूस में जद समाजवाद आयो तो भारत रा चिन्तक, कविगण भी बिण सूं प्रभावित हुया। राजस्थानी कविता में भी सोसण रै खिलाफ खूब लिख्यो गयो। इण रै साथै–साथै गाँधीवादी विचारधारा रो प्रभाव भी राजस्थानी पर देख्यो जा सकै। श्री सत्यप्रकाश जोशी सिरखा कवियाँ 'राधा' रै माध्यम सूं जुद्ध री भयावहता अर विनास नै चित्रित कर धरती पर जुद्ध नै मानवता खातर अभिसाप बतायो।

आजादी पछै जद सपनां पूरी नीं हुया तो कवियां में हतासा जागणी सुभाविक ही। कीं लोग है जैका प्रजातंतर रै नांव पर देस नै लूट्यां जावै। अैड़ै भ्रष्ट नेतावां अर अफसरां रै खिलाफ कविता आप रो मोर्चो खोल्यो। लालफीतासाही, न्यायिक प्रक्रिया में देर होणो, गरीब रो ओर गरीब हों व तो जाणो अर देस, आजादी सारू उदासीन होणो अैड़ी बातां ही जिकी कवि री अन्तर्चेतना नै मथै ही। कविसरां आप रै आक्रोश री अभिव्यक्ति इण कवितावां रै माध्यम सूं करी है। कैयो जा सकै कै कविता समाज री चेतना जगावणै तांईं आपरी सार्थक भूमिका निभाई है।

3-7 lkjk l

इण इकाई में आधुनिक राजस्थानी कविता रो आकलन करणै सूं पैली राजनीतिक, सामाजिक अर धार्मिक परिस्थितियाँ रो आकलन कर्‌यौ जिणसूं आधुनिक कविता प्रेरणा ली है। आधुनिक कविता रो मतलब ओ कोनी कै बा आप री जड़ां सूं कट्योड़ी है। आधुनिक कविता आप री परंपरां सूं फूटेड़ी अेक कूंपळ है जैड़ी आज अेक विसाळरूंख रो रूप धर्‌यां जावै। आधुनिक कविता री अळगी–अळगी प्रवृत्तियाँ रो अध्ययन करतां थकां आपां आ देखणै री भी कोसीस करी कै राजस्थानी री कविता हिन्दी कविता सूं प्रभावित तो है पण बा बीं री नकल कोनी। सामाजिक सरोकारां सूं जुड़ेड़ी आज री कविता आम मिनख

री भावनावां अर सोच रो प्रतिनिधित्व करती लखावै। बा अेकान्त रो कवि प्रलाप कोनी जन–जन सूं जुड़ेड़ी उणां री भावनावां री अभिव्यक्ति है।

3.8 vH;kl lk: loky

1. आधुनिक राजस्थानी कविता रै प्रारम्भिक दौर में राजनीतिक, सामाजिक, धार्मिक परिस्थितियाँ किण भांत री ही? विस्तार सूं लिखो।
2. आधुनिक राजस्थानी कविता री प्रवृत्तियाँ पर अेक निबन्ध लिखो।
3. राजस्थानी नयी कविता पर अेक निबन्ध लिखो।
4. आधुनिक राजस्थानी कविता रा सामाजिक सरोकार कांई है? समझावो।

3.9 mi;kxh ikfFk;k

1. राजस्थानी भाषा एवं साहित्य– डॉ. कल्याणसिंह शेखावत
2. नई कविता का स्वरूप विकास– प्रो. श्याम सुन्दर घोष
3. नई कविता स्वरूप और समस्यायें– डॉ. जगदीश गुप्त
5. सोनो निपजै रेत में– श्री गजानन वर्मा
6. ग–गीत– श्री मोहन आलोक
7. हिन्दी साहित्य का इतिहास– डॉ. नगेन्द्र
8. राजस्थानी भाषा – एक परिचय – नरोत्तम स्वामी
9. राजस्थानी भाषा और साहित्य – डॉ. मोतीलाल मेनारिया

bdkbZ & 4

jktLFkkuh dkO; esa jkLVªh; vj ekuorkoknh psruk

bdkbZ jh :ijs[kk

4.0 उद्देस्य

4.1 प्रस्तावना

4.2 महतब

4.3 जरूरत

4.4 रास्ट्रीय चेतना

- 4.1 रास्ट्र रो सरूप
  - 1. धरती 2. जन 3. संस्क्रति
- 4.2 रास्ट्रीय चेतना रो सरूप
  - 4.2.1 देस री धरती मुजब अनुराग
  - 4.2.2 देस रै जन मुजब प्रेम
  - 4.2.3 देस री संस्क्रति सूं लगाव

4.5 मानवतावादी चेतना

- 4.1 सोसण रै खिलाफ आवाज
- 4.2 जुद्ध रो बहिस्कार
- 4.3 धारमिक सहिस्णुता अर सद्भावना
- 4.4 समानता री भावना
- 4.5 सत्याग्रह, अहिंसा, सांच आद जीवन मूल्य

4.6 इकाई रौ सार

4.7 अभ्यास रा सवाल

4.8 संदर्भ पोथियां

4-0 mís';

आजादी रै संघर्स रै दौरान भारतीय भासावां में रास्ट्रीय चेतना नै जगावखातर कवितावां लिखीजती रैयी। ओ सिलसिलो आजादी पछै भी चालतो रैयो। राजस्थानी भी अठै अपवाद कोनी। राजस्थानी में रास्ट्रीय चेतनावाळी कवितावां री सरुआत कविवर सूर्यमल्ल मीसण, बांकीदास अर उणां रै समकालीन कवियां सूं सरु हुय'र आजादी रै पछै तांई अर किणी रूप में आज तक चाली आवै। आज रास्ट्रवादी कवितावां रो सुर बदळेड़ो लखावै क्यूं कै ज्यूं–ज्यूं लोक री सोच में बदळाव आवै कविता रो मुहावरो भी बदळ जावै। इण इकाई में आपनै राजस्थानी री रास्ट्रीय चेतना री कवितावां सूं परिचै करवाय'र ओ बतायो जावैलो कै इण धारा में भी राजस्थानी कविता पिछड़ेड़ी कोनी। आज री आपाधापी अर भागदौड़ में रास्ट्र मुजब सोचणै तांई किणी कनै बखत कोनी। कविता चूंकि मिनख रै हिवड़ै माथै सीधो–सीधो असर करै इण कारण रास्ट्रीय चेतना री कवितावां सूं आपनै परिचै करवाणो जरूरी है।

आज कट्टर रास्ट्रवाद रो जमानो नीं रैयो। वैज्ञानिक आविस्कारां रै कारण दुनिया छोटी–सी लागै। संचार रा साधनां रै कारण अेक देस री घटनां सूं बीजो देस निरपेख कोनी रै सकै। यूरोप लगोलग दो विस्व जुद्ध

झेल्या अर भारत में गाँधी जी रो प्रभाव आद अैड़ा कारण हा जैका दुनियां भर रै बुद्धिजीवियाँ नै आप कानी आकरसित कर्‌या। आजादी सूं पैली अर बाद में सगळा भारतीय भासावां पर गाँधी जी रै विच्यारां रो असर देख्यो जा सकै। राजस्थानी कविता इण सूं किण भांत अछूती रैंवती। आजादी पछै री राजस्थानी कविता में मानवतावाद री विचारधारा उभरी है। इण इकाई नै भण्यां पछै आप जाण सकोला–

1. राजस्थानी कविता में रास्ट्रीय चेतना रो बिगसाव किण भांत हुयो है?
2. आजादी पछै री रास्ट्रीय चेतना अर आजादी सूं पैली री रास्ट्रीय चेतना में कांई अन्तर है?
3. राजस्थानी कविता में मानवीय मूल्यां रो बिगसाव किण भांत हुयो है?
4. आजादी पछै री कविता जुद्ध रो विरोध किण सीमा तक करै?

4-1 çLrkouk

आजादी सूं पैली विदेसी सत्ता सूं संघर्स रै रूप में राजस्थानी कविता में रास्ट्रीय चेतना परगट हुई है। देस री आजादी तांईं संघर्स करण वाळां रो अेक सपनो हो कै देस आजाद हुयां पछै अठै 'सुराज' आवैलो। सपना धर्‌या रैग्या। देस में आजादी पछै जैड़ो भ्रस्टाचार, भाई–भतीजावाद, राजनैतिक बेईमानी, मगरमच्छी आँसू ढ़ळकावणियाँ नेतावां रो जितरों फैलाव हुयो, इण सूं आजादी रो उछाव मांदो पड़ग्यो। छठै दसक तक पूगतां–पूगतां आम मिनख रो आजादी सूं मोह भंग हुयग्यो। उण खातर 'सुराज' आभै रो फूल बण'र रैग्यो। भ्रस्टाचार रै कारण देस री प्रगति रो रथ दळदळ में कळीजग्यो। इण सब कारणां सूं उद्वेलित होय'र कवि आप रो जेड़ौ आक्रोस प्रकट करै उण में रास्ट्रीय चेतना परगट व्है। इण रै अलावा सन् 1962 में देस पर चीन रो हमलो, 1965 अर 1971 में पाकिस्तान सूं संघर्स, 1999 में करगिल अैड़ा मौका भी आया जिण बखत कवियाँ खुल'र रास्ट्रीय चेतना सूं सरोबार कवितावां री रचना करी।

राष्ट्रीय चेतना साथै आजादी पछै मानवतावादी चेतना भी उभरी है। अठै कवि जात, धर्म, सम्प्रदाय, रंगभेद आद सूं ऊपर उठ'र अेक विस्व मानव री बात करतो लखावै। कवि री मानवीय चेतना विस्व मानवता सूं जुड़'र अेक अैड़ै संसार री रचना करी चावै जिण में कोई मिनख ऊँचो–नीचों नीं होय'र, सगळा बरोबर हुवै।

4-2 egRo

साहित्य मिनख री लगोलग छीजती संवेदना री रुखाळी करै। मिनख में संवेदना जगा'र उण रै मिनखपणै नै अरथ देवै। आज जद मिनख री संवेदना पर संकट है तो उण सूं रास्ट्र किण भांत अछूतो रै सकै। रास्ट्रीय चेतना रै विस्लेसण सूं पाठक में साहित्य रै बाबत समझ बधैली अर बीं में भी आप रै रास्ट्र खातर चेतना जागैली। बीजी बात आ भी है कै साहित्य समाज रो दरपण हुवै। लेखक समाज में जैड़ो कीं देखै अर मैं'सूस करै उण नैं आप री रचना में दरसावै। इण सूं बो पाठक भी जिको रास्ट्रीय अर मानवतावादी चेतना सूं जुड़ेड़ो नीं हो, जुड़ेड़ो मै'सूस करैलो। साहित्य में जठै आप रै जुग री धड़कण हुवै बठै ई आवणाळै जुग री पदचाप भी सुणी जा सकै। इण रै अध्ययन सूं छात्रां नै रास्ट्रीय चेतना अर मानवतावादी चेतना मुजब सोचणै–समझणै तांईं अेक दिसा मिळैली।

4-3 t : j r

आप री निजू पिछाण बचायां राखणै तांईं आप री भासा, साहित्य अर संस्क्रति नै जाणणो जरूरी है। आज जद दुनियां एक 'ग्लोबल विलेज' बणती जावै जद ओ ओर भी जरूरी है क्यूंकै कोई अैड़ी संस्क्रति या भासा आपां नै चमत्क्रत कर आपणी भासा संस्क्रति नै हासियै पर नीं कर देवै। ओ खतरो लगोलग बधतो जावै। केई अज्ञानता या ना समझी रै कारण भी अैड़ो हो ज्यावै इण कारण आपणै तांईं ओ जरूरी है कै आपां आपरै साहित्य में बां तत्त्वां री तलास करां जैका विस्व री उन्नत भासावां में है। राजस्थानी भी घणी जूनी भासा है अर इण रो इतिहास भी घणो जूनो है। इण कारण भी आजादी पछै री कविता में रास्ट्रीय

चेतना अर मानवतावादी चेतना री सोध करणो जरूरी है।

4-4 jkLVªh; psruk

रास्ट्रीय चेतना यानी रास्ट्र खातर चेतना, इण विसय में ओ जाणबो जरूरी है कै 'रास्ट्र' किण नै कैवै? रास्ट्र री परिभासा कांई है? इण पछै विच्यार कर्‌यो जा सकै कै बे कैड़ा कारक है जैका राष्ट्रीय चेतना सूं जुड़ेड़ा है? जद ई रास्ट्रीय चेतना रो सरूप आपणै सांमीं प्रकट हो सकै।

4-1- jkLVª jk l : i

रास्ट्र रै सरूप नै परिभासित करता डॉ. वासुदेव शरण अग्रवाल रो कैवणो है, ''भूमि, भूमि पर बसने वाला जन और जन की संस्कृति, इन तीनों के सम्मिलन से राष्ट्र का स्वरूप बनता है।'' इणी भांत रै भावां रो खुलासो करता डॉ. कल्याण सिंह सेखावत रो कैणो है, ''रास्ट्र या देस रो मतलब है अेक इकाई रै रूप में किणी देस री पिछांण। इतिहास साहित्य अर संस्कृति किणी देस री रास्ट्रीयता रौ आधार थंम गिणीजै।'' इण परिभासावां माथै विच्यार करता आपां कैय सकां कै किणी रास्ट्र रै निर्माण में जैका तत्त्व काम करै उणां री पुस्टि, संवर्धन अर रखवाळी करणै सूं रास्ट्रीय चेतना मजबूत हुवै। किणी रास्ट्र रै निर्माण तांई अै ईज तीन तत्त्व हैं, जिणां मुजब विच्यार करणो है–

1. धरती 2. जन 3. संस्क्रति

1- èkjrh& अेक तै 'भू भाग' किणी रास्ट्र रो अनिवार्य तत्त्व हुवै। हालांकि बखत–बखत पर इण री सींव घटती–बढ़ती रैवै पण बिना भू भाग रै रास्ट्र री कल्पना कोनी करी जा सकै। इण धरती माथै (रास्ट्र) अणगिणत डूंगर, नदियाँ, दरखत, झील पसु–पक्षी हुवै। बै सगळा इण रास्ट्र री धरोहर हुवै।

2- tu& रास्ट्र रो दूजो तत्त्व उण धरती पर रैवणियां जन हुवै। अगर जन नीं हुवै तो भी रास्ट्र री कल्पना कोनी करी जा सकै। जन अर धरती दोनुवां रै कारण ई रास्ट्र रो सरूप बणै। जन रै कारण ई धरती नै मातृभोम कैयो जावै। जन अर धरती रो आपसी सम्बन्ध जद ई सांचै अरथां में उभर'र सामी आवै– ''माता भूमि पुत्रोऽहम् पृथिव्या''

जन अर धरती रो ओ माँ–बेटै रो भाव ई किणी रास्ट्र री मजबूत नींव हुवै।

3- lLØfr& रास्ट्र रो तीजो तत्त्व बठै री जन संस्क्रति हुवै। जुगां–जुगां सूं उण धरती पर रैवणियाँ मिनखां जैड़ी सभ्यता रो विकास कर्‌यो है बा बां रै खून में रमेड़ी है। बिना संस्कृति रै जन बिना सिर रै कबन्ध सिरखो हुवै। जन अर धरती सूं अगर संस्क्रति अळगी कर दी जावै तो रास्ट्र रो सरूप भी खतम हुय जावैलो। ज्यूं–ज्यूं किणी रास्ट्र री संस्क्रति रो विकास हुवै, उण देस रो भी भौतिक रूप में विकास हुवै। पीढ़ियाँ सूं मिनख जैड़ो ज्ञान–विज्ञान प्राप्त कर्‌यो है उण में आप रो योगदान जोड़'र आगली पीढ़ी नै सूंपद्‌यै। इण भांत रास्ट्र री संस्कृति रोज आगै बंधती रैवै।

इण तीन बिन्दुआं रै आधार पर आपां नै पड़ताल करणी है कै रास्ट्रीय चेतना कांई हुवै अर आजादी पछै आळी राजस्थानी कविता में कितरीक सांस्क्रतिक चेतना है।

4-2 jkLVªh; psruk jk l : i

रास्ट्र री जमीन, जन अर संस्क्रति खातर चेतना राखणवाळो भाव ई रास्ट्रीय चेतना है। इण बाबत विद्वानां रा न्यारा–न्यारा विचार है। डॉ. कल्याणसिंह शेखावत रो कैणो है, ''रास्ट्रीयता रो भाव घणो उदार अर विसाल हुया करै। वो जात धर्म, लिंग री संकळाई सूं परै हुवै। घणखरी जातियाँ, धर्मा, मत–मतान्तरां, अर लिंग भेदां भरी जनता महान 'रास्ट्र' रा भगती भावां सूं सरोबार

हुय'र साची रास्ट्रीयता नै जलम देवै।''

आगै चाल'र रास्ट्र रै इण तीनूं तत्त्वां अर परिभासा रै च्यानणै में आलोच्य विसय नै समझणै री कोसीस करांला।

आजादी मिलणै सूं पैली नेतावां, बुद्धिजीवियाँ, कवियाँ आद सगळां रो उद्देस्य अेक ई हो। बो हो– विदेसी सत्ता नै देस सूं बारै काढ़णी। इण कारण बां कवियाँ रो आक्रोस विदेसी सत्ता सूं टक्कर लेण में परगट हुयो। आजादी पछै सत्ताधीस तो बदळग्या पण जद सत्ता रो चरित्र नीं बदळ्यो तो मोह भंग होणो सुभाविक हो। कैवण रो मतलब है कै आजादी पछै री रास्ट्रवादी चेतना री कवितावां मोहभंग री कवितावां है। बधतै सहरीकरण, संवादहीनता, संवेदनहीनता री चपेट में आय'र आम आदमी सैतरो–बैतरो होग्यो। नेतावां री आचारणहीनता, धन कमावणै री लालसा, अफसरसाही री लूट–खसूट रै बिचाळै पिसती जनता नै देख'र कवि घणा आन्दोलित हुया। कैवण रो मतलब है कै सत्ता रो चरित्र नीं बदळणै रै कारण आजादी बेमतलब हुवैला। आजादी पछै री घणखरी कवितावां में नौकरसाही, राजनीति रै दो पाटां में पिसती जनता री दीन–हीनता अर आक्रोस री अभिव्यक्ति है। इण रो बिन्दुवार विवेचन इण भांत है।

4-2-1 n:l jh èkjrh [kkrj vuqjkx

जमीन खातर जन रो अनुराग रास्ट्रीयता री पैली सर्त है। डॉ. वासुदेव सरण अग्रवाल रो कैवणो है, ''भूमि के पार्थिव स्वरूप के प्रति हम जितने अधिक जाग्रत होंगे उतनी हमारी राष्ट्रीयता बलवती हो सकेगी। यह पृथ्वी सच्चे अर्थों में समस्त राष्ट्रीय विचारधाराओं की जननी है। जो राष्ट्रीयता पृथ्वी के साथ नहीं जुड़ी वह निर्मूल होती है। राष्ट्रीयता की जड़ें पृथ्वी में जितनी गहरी होंगी उतना ही राष्ट्रीय–भावों का अंकूर पल्लवित होगा। इसीलिए पृथ्वी के भौतिक स्वरूप की आद्योपान्त जानकारी प्राप्त करना, उसकी सुन्दरता, उपयोगिता और महिमा को पहचानना आवश्यक धर्म है।'' इण नजर सूं राजस्थानी री पुराणी अर नवीं दोन्यूं भांत री कवितावां में आप री धरती मुजब घणै प्रेम रो बरणाव हुयो है। अठै तो मां टाबर नै हींडा देती बखत ई आप री मात भोम या जमीन री रुखाळी करणै री घूंटी पाय देंवती–

इळा न देणी आपणी, हालरिये हुलराय।
पूत सिखावै पालणै, मरण बडाई माय।।

इण धरती री रुखाळी तांईं सूरवीर प्राण लेणै अर देणै में हिचकता कोनी। 'मरण' नै अठै त्यूंहार कैंवता।

इण धरती कानी सूरवीरां रै जींवतै थकां ई नहीं कांई सिर कट्यां पछै भी कोई टेढ़ी नजर सूं कोनी देख सकै–

धरती म्हांरी म्हूँ धणी, ढाळू नेजां ढल्ल।
कुण उतारै ठाकरां, उभां सीहां खल्ल।।
केसर नह निपजै अठै, नह हीरा निपजंत।
सिर कटियां खग सांमणा, इण धरती उपजंत।।
हेला मारै खेजड़ी, सुण पंथी संदेस।
बिण माथा अरि बाढणा, निपजै म्हारै देस।।

इण भांत आप री धरती सूं प्रेम राजस्थानी कविता री परम्परा अर संस्कारां में है पण आ बात जरूर है कै आधुनिक जुग में आय'र इण रो सरूप बदळेड़ो लखावै। आजादी

सूं पैली वीरां रै विरुद रै बहानै 'वीर काव्य' री रचना करी जांवती जिणसूं बीजै वीरां नै रास्ट्र सेवा री प्रेरणा मिलती। इण बाबत डॉ. किरण नाहटा कैवै, ''स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात् यहाँ के अहिंसावादी दृष्टिकोण ने युद्ध को नकारते हुए सदैव शान्ति का पक्ष लिया।'' आ बात ठीक है कै आजादी पछै राजस्थानी काव्य में 'जमीन' खातर संघर्स करता वीर कोनी दीसै पण धरती रै सौन्दर्य रा अणगिणत चितरांम इण कविता में है। अठै आ बात भी ध्यान राखणै जोग है कै राजस्थानी रै कवियाँ नै आप री मरुधरा सूं इतरों प्रेम है कै स्यात ई कोई अैड़ो कवि हुवै जिण मरुधरा री माटी रो बिड़द नीं गायो हुवै। कन्हैयालाल सेठिया कितरो सोवणो बरणाव कर्‌यो है–

धरती धोरां री
आ तो सुरगां नै सरमावै
ईं पर देव रमण नै आवै
ईं रो जस नर–नारी गावै
धरती धोरां री–
सूरज कण–कण नै चमकावै
चंदो इमरत रस बरसावै
तारा निछरावळ कर ज्यावै
धरती धोरां री–

श्री सौभाग्यसिंह सेखावत इण देस नै दुनियां सूं अळगो अर नखराळो बतांवता कैवै–

ओ भू मंडळ पर नखराळो देस
दीन दुनी री जोत आँख रो तारो
धण मोलो मोत्यां मूंघो लाडेसर प्यारो

इणी कड़ी में श्री कानदान कल्पित री कविता कितरी असरदार अर भाव जगावणवाळी ह देखीजै–

मखमल बेळू रेत रमै नित राम जठै
मुरधर म्हांरो देस, झोरड़ो गाँव जठै
सोनै जैड़ी रेत मसळता हाथां में
राजी हुंतां नाख दो मुठ्ठी माथां में
रमता कान्ह गुवाळ बण्योड़ा खेतां में
जीवण रा चित्राम मंड्योड़ा खेतां में
मुळकै मूक सजीव पड्या सैनाण जठै।
मुरधर म्हांरो देस झोरड़ो गाँव जठै।

आगै चाल'र इण 'माटी' री वन्दना में बदळाव आयौ। बा जमीन, जिण रा धणी बे ई होंवता जैड़ा सीस रो मोल चुकावंता पण आजादी पछै इण में भी बदळाव देखो–

हाड मांस चाम गाळ
खेत में पसेव सींच
लू लपट ठंड मेह, सै सेव दांत भींच

फाड़ चीर कर करै जोतणी'र बोवणी

बो जमीन रो घणी'क ओ जमीन रो धणी।

जमींदारी प्रथा कानूनी रूप सूं खतम हुयां पछै भी जबरा लोग गरीबां नै कद बसण देंवता। इण कारण संत विनोबा भावे 'भू दान' आन्दोलन चलायो अर अेक नारो दियो हो– 'जमीन किसकी? जो बोयेगा उसकी!' इण सूं राजस्थान भी अछूतो कोनी रैयो। आजादी नै लेय'र जिको उछाव लोगां रै मन में हो अब बो कम पड़ण लागग्यो। मातभोम री जोस खरोस सूं वन्दना करणियां अब कितरा हतास हुयग्या; सुमनेश जोसी री इण ओळ्यां में देख्यो जा सकै–

ओ रे म्हारा अभागा देस!

आज थारी आरती उतारतां

म्हांरा हाथ धूज रैया है,

अर थारो आचरण अभिनंदण करतां

म्हांरी वाणी कांप रैयी है।

बदळतै परिवेस साथै रास्ट्रीय चेतना रा सुर भी बदळता दीसै। पैली तो दुस्मण रो ठाह हो पण अब तो दुस्मण देस में बैठ'र ई घात करै। सम्प्रदाय, मजहब, जात–पांत रै नांव पर रोजीना कठै न कठैई दंगा हो ज्यावै। जात, धरम, सम्प्रदाय वाद सूं ऊपर उठतो कवि अखण्ड भारत रो नारो बुलन्द करै अर बतावै कै अठै रैवणियां सिर्फ भारतीय है। दुस्मण नै ललकारतो कवि कानदान कल्पित कैवै–

आपणै हित स्वार्थ रै खातर,

जे कोई मिनख मरावैला।

सुख स्यांती अर खुसियाळी में,

जे कोई टांग अड़ावैला।

भारत अखण्ड अेकता माथै,

पर कोई आँख उठावैला।

चीर फेंकदां काढ़ काळज्यो,

आँख फोड़ दी जावैला।

सीधी सणक देख मत लाडी, धार तेज दुधार में,

जात–पांत रो विस मत घोळो, जीवण री रसधार में।

इण भांत रास्ट्रीय चेतना रो सरुप जैड़ो जुध रै बखत सामी आंवतो बो अब बदळ'र सद्भावना, भाई चारै अर रास्ट्रीय अखंडता में दीसै।

4-2-2 nl j tu [kkrj çe

धरती अर जन रो आपस में माँ–बेटै दांईं प्रेम रास्ट्रीयता नै जलम देवै। बेटै में जद माँ खातर आदर भाव पैदा होवै तो इण में औजूं मजबूती आवै–

नमो मात्रै पृथिव्यै। नमो मात्रै पृथिव्यै।

इण प्रणाम भाव नै ई मरजादा मान'र मिनखां रा कर्तव्य भाव नै ई मरजादा मान'र मिनखां रा कर्तव्य अर अधिकारां रो जलम हुवै। माँ रै चाये कितरां ई बेटा हुवै बा सगळां

नै चावै। इण भांत मातृ भोम पर रैवणियाँ लोग चाये किणी जात, धर्म सम्प्रदाय रा हुवै, कैड़ी ई बोली बोलै उणां में कोई भेद भाव कोनी हुवै। सगळा ई रास्ट्र रा अंग हुवै। अगर कोई कमजोर होसी तो रास्ट्र रो बो अंग कमजोर मान्यो जावैलो।

इण नजरियै सूं देखां तो राजस्थानी में, साम्प्रदायिक सौहार्द अर समभाव दिखावणाळी अणगिण कवितावां है। न्यारा–न्यारा धरमां अर सम्प्रदायां में आपसी विस्वास पैदा करणवाळी अर पिछड़यै, अन्त्यज् रै मुजब चिन्ता प्रगट करण वाळी कवितावां नै रास्ट्रीय चेतना सूं जुड़ेडी कवितावां कै सकां। आ बात तो पैली ई साफ करी जा चुकी है कै आजादी पछै री रास्ट्रीय चेतना रो रूप आपनै बदळयौड़ी लखावैलो। आपणै देस में भी न्यारी जातां अर धरमां रा लोग रैवै। उणां में अेकता री थापनां करणो ई रास्ट्रीय चेतना हुवै। 'दसमेस' (डॉ. मंगल बादल) में गुरु गोविन्दसिंह कैवै– एक बानगी–

मुसलमान'र हिन्दू रो, बो कांई छेड़ै है रगड़ो?
अमीर, गरीब जात बस दोई बाकी झूठो झगड़ो।
मिनख–मिनख नै जोड़ सकै बस बो ई अेक धर्म है।
बाकी कोई करै जिका बै, सगळा कूड़ कर्म है।।
छूआछूत करै आपस में, कै वै मिनख नै हीण।
इस्या कुमाणस घणां फिरै है, इण रो कांई दीन।।

भारत दुनियां में सै सूं बड़ो जनतंतर है। इण बात रो सनेसो देंवता कवि मोहम्मद सदीक कैवै–

समता रा सिरमौर जगत में, जनतंतर रा हामी हां।
मिजमानी मिनखाचारै में, आखै जग में नामी हां।
धन–धन म्हा रै संस्कार नै, सगळा धरम सरीसा है।

आधुनिक कविता री बात करता डॉ. पुरुषोत्तम आसोपा कैवै, ''आधुनिक राजस्थानी साहित्य मांय सांचै अरथां में नूंवोड़ै बोध रा संस्कार आजादी रै पाछला साहित्य मांय घणै मान अर गरिमा रै सागै सामी आया... राजस्थानी रा कवि उपस्थित जथारथ रा आपसी अन्तर्विरोधं नै खास तौर सूं राजनैतिक, सामाजिक भ्रस्टाचारां नै कविता रै माध्यम सूं सांतरै भावां सागै सामी राख्या।'' कैवण रो मतलब है कै देस में लगोलग बधतै भ्रस्टाचार अर बिडरूपता नै मिटावणै तांईं अै कवितावां रास्ट्र चेतना नै झिंझोड़णै में अगुवाई करै। भ्रस्टाचार, राजनीतिक उखाड़–पछाड़ या नौकरसाही में बधती लालफीतासाही रै खिलाफ अै कवितावां आक्रोस रो वातावरण त्यार करै। हरेक कवि री कवितावां में जन अर जनतंतर में मिनख रा मूल्य (मानव मूल्य) गिरतै जावणै री चिंता है। देस री आजादी पछै प्रगति तांईं योजनावां बणी। देस री तरक्की में करसां अर मजूरां री जरूरत समझी गई। उणां नै सावचेत करण तांईं कवियाँ रचनावां करी। कवि रेवतदान चारण कैवै–

खेत खड़ण नै हळले हाली
जद करसां री आ टोळी
कितरा दिन तक सबर करैला,
माटी हंस नै बोली

'रे बंदा चेत मानखा चेत, जमानो चेतण रो आयौ'। कवि इण बात नै भली भांत जाणै

कै जद तांई देस रा करसा अर मजूर नीं जागैला, देस आर्थिक तरक्की नीं करैलो। आर्थिक तरक्की बिनां जनतन्तर रा मायना अधूरा है। मेहनत रो सोसण करणियां रै खिलाफ इणां नै सावचेत करता कवि गजानन वर्मा कैवै–

काळी पीळी आँधी आई, खंख चढ़ी असमान रे।
धरती अब पसवाड़ा फेरै, जाग मजूर किसान रे।
चेत बावळा चोर लुटेरा, लूटै है धन धान रे।
धरती अब पसवाड़ा फेरे, जाग मजूर किसान रे।

जन चेतना जगावणै तांईं मेघराज मुकुल, गणेसीलाल व्यास 'उस्ताद', कन्हैयालाल सेठिया, रेंवतदान चारण, नारायण सिंह भाटी, कल्याणसिंह राजावत, चन्द्रसिंह, गिरधारीसिंह 'पड़िहार', सुमनेश जोसी आद कवियाँ आप री लेखनी साधी। इण रै अलावा आजादी पछै हास्य–व्यंग्य रै माध्यम सूं भी समाज री विडम्बनावां पर चोट कर जन जागरण रो काम कवियां कर्‌यो।

4-2-3 n:l j:h l:LØfr l: yxko

रास्ट्र रो तीसरो तत्त्व संस्क्रति है। मिनख समाज जैड़ी सभ्यता रो निर्माण कर्‌यो है जुगां–जुगां सूं, बा उण रै रहन–सहन, बातचीत में झळकती दीसै। बिना संस्कृति रै मिनख पसु भाँत है। अगर किणी रास्ट्र री संस्क्रति नै खतम कर दी जावै तो धीरै–धीरै बो रास्ट्र आपी आप खतम हो जावैलो। कोई रास्ट्र जद सांस्कृति रूप सूं प्रगति करैलो तो भौतिक प्रगति भी करैलो। कैवणै रो सार है कै संस्क्रति किणी रास्ट्र रूपी सरीर री धड़कण है। किणी रास्ट्र में रैवणियाँ जन साहित्य, कला, नाच, संगीत आद रै माध्यम सूं आप रा भाव परगट करै।

इण भांत आतमा रो आनन्द भाव प्रगट रूप में दरसावण संस्क्रति रो घणो हाथ व्है है। आपणै देस में न्यारी न्यारी जातां, धरमां रा लोग रैवै। उणां रो पहनाओ अर खान–पान भी न्यारो है पण इण रै बावजूद भीतरी रूप सूं सगळा अेक है। अनेकता में अेकता भारतीय संस्कृति री खासियत है। आजादी पछै चाये कदै जुद्ध रा मौका आया या किणी बीजै रास्ट्रीय संकट रा। उण बखत इण देस री अेकता देखतां ई बणै। संस्कृति रा अै न्यारा–न्यारा रूप राजस्थानी कविता में भी घणै सोवणै रूप सूं चित्रित हुया है। भारत री सांस्कृतिक महानता अर सौन्दर्य नै लेय'र कवियाँ आप री कवितावां री रचना करी है। अठै री गंगा–जमनी संस्कृति में सगळा धरम, सम्प्रदाय, जातियां उण भांत ई फळै–फूलै जिण भांत फुलवाड़ी में रंग–बिरंगा फूल। त्याग, संजम, तपस्या, आपसी सद्‌भावना, प्रेम आद भारतीय संस्क्रति में सदा सूं पूजीजता रैया है। आजादी पछै इण गुणां नै कीं छीजता देख कवितावां रची गई। कन्हैयालाल सेठिया री 'पातल अर पीथल', मेघराज मुकुल री 'सैनाणी', रेंवतदान चारण री इन्कलाब री आंधी, श्रीमंत कुमार व्यास री 'माटी रो मोल', मनुज देपावत री 'रे धोरां वाळा देस जाग' आद कवितावां घणी धूम मचाई। अै कवितावां आखै भारत में सुणी जांवती अर आदरीजती। रास्ट्र री संस्क्रति नै जोड़णै अर जन जागृति ल्याणै में राजस्थानी कविता रो महताऊं योगदान है। 'पातल अर पीथळ' री अै ओळ्या कितरीं जोस सूं भरेड़ी अर राणा प्रताप रै चरित्र नै दरसावै–

म्हूँ भूख मरूं, म्हूँ प्यास मरूं,
मेवाड़ धरा आजाद रेवै।

म्हूँ घोर अंधेरा में भटकूं,
पण मन में मां री याद रवै।
म्हूँ रजपूतण रो जायो हूँ,
रजपूती करज चुकाऊँला।
ओ सीस पड़ै पण पाघ नहीं,
दिल्ली रो मान झुकाऊँला।

मेघराज मुकुल री 'सैनाणी' भी नारी री वीरता, त्याग अर बलिदान री कहाणी कैवै। हाडी राणी जद देखै कै उण रो पति बीं रै रूप–सौन्दर्य में उळझ'र जुद्ध में जाणै सूं कतरावै। तो बा कीं आगो–पीछो नीं देख'र सैनाणी सरूप आप रो सीस काट'र पति नै भिजवा देवै। वीरांगनावां रा अैड़ा अनूठा उदाहरण आज भी म्हारै रगत में उबाळ पैदा करै। सूरवीरां रै कारनामां सूं भरेड़ो अठै रो इतिहास, अठै रो जन अर संस्कृति, धोरांळी धरती राजस्थानी कविता रा प्रेरणा स्रोत रैया है। आ बात भी ध्यान राखण जोग है कै जद हिन्दी कविता प्रयोगवाद, नई कविता, अकविता आद रै दौर सूं गुजर'र बौद्धिक होय'र जन सूं कटगी बठै ही तद राजस्थानी कविता बरोबर आप रै जन अर जन संस्क्रति सूं जुड़ी रैयी है।

इण भांत आजादी पछै जैड़ी राजस्थानी कविता रची गई उण में रास्ट्रीय चेतना भरपूर है। बा व्यक्ति वादी नीं होय'र समाजोन्मुख कविता है जैड़ी आप री आंच सूं जन रै हियै नै तपावंती रैयी है अर रैवैली।

4-5- ekuorkoknh psruk &

मिनख री गरिमा री दुबारा थापना, मिनख री प्रतिस्ठा अर बहुमुखी विकास मुजब चिंतन, उण री सामाजिक जिन्दगी तांईं अनुकूल परिस्थितियाँ रो निर्माण करणो आद मानवतावादी चेतना है। भारतीय संस्कृति तो सदीव सूं 'सर्व जन हिताय, सर्व जन सुखाय' री रैयी है। अठै रो साहित्य 'मानव मूल्यां' रो साहित्य है। राजस्थानी रो जूनो साहित्य चाये जुद्धां सूं भरेड़ो है पण बठै भी आपसी प्रेम, सरण में आयेड़ै री रक्षा, सांच पर मर मिटणो, माफी मांग लेणै पर प्राण न लेणो आद मानव मूल्य भरपूर है। आजादी पछै रै साहित्य में जैड़ा मानवतावादी मूल्य उभर'र आया है उणां पर नीचै लिख्यै बिन्दुआं मुजब विच्यार करणो है–

4-1 lksl.k j! f[kykQ vkokt

मानवतावादी चेतना मिनख रै सोसण रै खिलाफ है। जात, धरम, रंग या सम्प्रदाय नै लेय'र मिनख–मिनख में कोई फरक कोनी। चालाक मिनख पण गरीब अर कमजोर नै कदे धरम रो, कदे सरग–नरक रो डर दिखा' र उण रो सोसण करतो रैवै। आजादी पछै कविता में सोसण रै खिलाफ कवियाँ री तीखी टिप्पणी है। मनुज देपावत कैवै–

रे देख मिनख मुरझाय रैयो, मरणै सूं मुस्किल है जीणो।
अै खड़ी हेवल्यां हँसै आज, पण झूंपड़ियाँ रो दुख दूणो।
अै धन आळा थारी काया रा, भक्षक बणता जावै है।
रे जाग खेत रा रखवाळा, आ बाड़ खेत नै खावै है।
अै जका उजाड़ै झूंपड़ियां, उण म्हैलां रै तूं लगा आग।
छाती पर पीणा पड्या नाग रे, धोरां आळा देस जाग।

कवि गजानन वर्मा होळी रै बहानै दुस्मण नै ढूंढ़णै तांई कैवै, ''बाड़ जद खेत नै खावण लागज्यै तो रुखाळा कांई करै?'' दुस्मण तो आज आपणै बिचाळै बैठ्यो है। बां नै बस पिछाणणै री देर है। मिनखां में अर समाज में फूट गेर राज करणवाळा अै कुण है?

कुण धरती पर बाड़ बणावै
कुण अै खोदै खाई रै
कुण अै मोल लड़ाई लेवै
कर लेवै मन चाई रै
बेगा आज पिछाणो मरदां
कुण अन्याई रै।
होळी आई रै।

जुगां–जुगां सूं सोसित मिनखां रै मन में धरम रो डर बिठाय'र, गरीबी नै बां री तकदीर अर करमां रो फळ बताय'र चालाक लोग अजै तक लूटता आया है। अब उणां रै नै भरम नींद सूं जाग'र सोसण सूं मुगत होवणै रो बखत आ चुक्यो है। कवि मोहन आलोक कैवै–

छींट–छींट'र/बीं रा सगळा विकार/धो नाखै/
बीं में रमियोड़ा अर जमियोड़ा/संस्कार धो नाखै/
धो नाखै/कै भूख/मिनख रै भाग में हुवै है/
धो नाखै/कै धरम/विराग में हुवै है/
धो नाखै/कै अेक मिनख/जणां दूसरै रो गुलाम हुवै है/तो कसूर न वींरो हुवै है/न वीं रो फकत बेमाता रो काम हुवै है।

परम्परा सूं चालती आई इण मानतावां पर चोट कर कवि मिनख नै सिरै मानै। भीम पांडिया भी पौराणिक मिथकां रै माध्यम सूं इण पर चोट करै–

बण्या मकौड़ा सै धन वाळा, निरधन गुड़ भेली आ घेरी।
च्यारां कानीं सूं चूसै है, अबै निवड़नै में नहिं देरी।
ज्यूं बुध राहू केतुड़ै सूं करै रुखाळी चाँदड़लै री
जदी थारै में कला हुवै तो अबै रुखाळी करती रई'जै।
अे दिवलै री जोत! अबै तूं अेक सरीसी जगती रई'जै।

इण भांत मिनख नै सोसण सूं मुगत कर, समानता री थापनां करणै री कोसीस आजादी पछै आळी कविता में घणीई मिळै।

4-2 t|) jk cfgLdkj

सन् 1914–19 अर 1939–44 रै दौरान दो विस्व जुद्ध हुया। अै जुद्ध चाये यूरोप री धरती पर लड़्या गया पण इणसूं एसिया अर बाकी द्वीपां रा देस अछूता कोनी रैया। दुनियां रै साहित्य पर भी इण जुद्धां रो असर पड़्यो। दुनियां रा लोग अब भली भांत समझग्या कै जुद्धां रै माध्यम सूं किणी बात रो निपटारो नीं हो सकै। हिरोसिमा अर नागासाकी जापानी सहरां रै विनास सूं दुनियां ओ देख्यो कै अब जुद्ध रो मतलब पैली सिरखो कोनी। सांति री थापनां तांईं संयुक्त रास्ट्र संघ रो निर्माण, नेहरुजी रो दुनियां नै दियो पंचसील रो सिद्धान्त आद अैड़ा पांवडा हा जिणसूं सांति री आस बंधी। कवियां, लेखकां आप–आप री रचनावां में जुद्ध रो विरोध कर्यो।

राजस्थानी में 'राधा', श्री सत्यप्रकाश जोसी री अैड़ी ई रचना है। राजस्थानी में आज तांईं तलवारां री झणकार अर रणभेरी सुणता आया पण आ क्राति जुद्ध रै विरोध में अर समय री मांग मुजब ही, इण कारण इण रो भरपूत स्वागत हुयौ।

जुद्ध में मिनख तो मरै ई मरै साथै ई कला–कौसल, तकनीक, साहित्य, संस्क्रति भी खतम हो ज्यावै। इणी'ज कारण गोपियाँ श्री क्रस्ण सूं फौजां नै पाछी मोड़णै रो निवेदन करै–

मन रा मीत कान्हा रे
जग में जे मंडग्यो घमसाण, तो
भाई पर भाई करसी वार
आपस में लड़सी, मरसी मान खौ
चुड़ला फोड़ैला काळा ओढ़
अमर सुहागण थारी गोपियां
कामणियाँ बिकसी बीच बाजार
कुण तो उघड़ी बैनां नै ढाकसी
टाबर कहासी बिन बाप रा
कुण तो करसी धीवड़ियाँ रो ब्याव
कुण तो कड़ूबो वां रो पाळसी
अणगिण मावड़ियाँ देसी हाय
मुड़जा, फौजां नै पाछी मोड़ले।

कवि मोहन आलोक रो कैवणो है जे हथियारां री होड़ इण भांत ई चालती रैयी तो विणास रो दिन दूर कोनी अर धरती पर अै मंजर दीसैला–

बमां रै भोम हलांवतै धमीड़ां सूं
फाटग्यो बीं रो ममताळु हियो
बारूद रै बिचलै धुअैं मांय
घुटग्यो सांस
अर हमास्त
आप रै नास नै जांवती पगडांड्यां बगता
मालिक रै वरदान दांईं मिल्योड़ै
अेक काळ खंड री हत्या कर
बीं नै, बीं री ही बेथाग ल्हासां रै
ढ़िगलै ऊपर बगा'र सूग्या,
आवण वाळै सुवागत रा
जावण वाळै तांईं–
जाबक नचीत हूग्या।

4-3 èkkjfed lfgL.kqrk vj lnHkkouk

हिन्दू अर मुसलमान दोन्यूं ई भारत भौम पर रैवै। देस री तरक्की तांईं दोनुवां में आपसी

तालमेल, प्रेम अर सद्भावना जरूरी है। आजादी पछै लिख्यै गयै साहित्य में अलग–अलग धरमां में आपसी सद्भावना दिखाई गई है जिणसूं रास्ट्रीय अेकता नै मजबूती मिलै। सांवर दइया कैवै–

मन–कळी/जावै खिल–खिल
जठै–कठै/बैठां मिल
सुण बात/देवो हुंकारो
ओप उजास/मिलै आँख
आभो देख/खुलै पाँख
जठै दीसै/काँटा बुहारो

आ कैवणै में कोई अतिसयोक्ति कोनी कै कविता सांप्रदायिक कांटां नै बुहारणै रो काम बड़ी सफाई सूं कर्‌यो है। बै मानवीय गुण जैड़ा म्हांरी संस्क्रति रा अटूट अंग रैया है जिकां तांईं सूरवीरां आप रो राजपाट अर प्राण तज दिया म्हांनै आज भी प्रभावित करै। ताऊ शेखावाटी रै 'हम्मीर महाकाव्य' में हिन्दु–मुस्लिम अेकता अर सद्भावना रा अै सुर बड़ा मुधरा अर गरब करणै लायक है–

जो हिन्दू होतां सेती भी,
इक मुसलमान रै तांईं यूं।
निरलोभ लुटादी 'जां' अपणी,
झेल तो राड़ पराई यूं।
उँठ्ठी नै हो के मुसलमान,
मोमदस्या कुण सो कम निकळ्यो।
खिलजी सूं लड़तै–लड़तै रो,
हिन्दू राजा हित दम निकळ्यो।

इणीज भाँत 'दसमेस' में (मंगत बादल) गुरु गोविन्दसिंह आप री सरण में आयेड़ै पाँच पठानां नै अभैदान देंवता कैवै। अब थां नै किणी सूं डरणै री जरूरत कोनी। उणां नै समझाय'र कैवै–

नमाज पढ़ो, रोजा राखो, पूरो निज धर्म निभाओ।
कोई पड़ै जरूरत, सीधा म्हनै आ'र बताओ।।
अठै रैणो है मरजाद में, ओ गुरु रो घर है।
कूड़ कपट काढ़द्यो मन सूं, ओ मालक रो दर है।।

आजादी पछै री चाये फुटकर कविता हुवै या प्रबन्ध काव्य सब में मौको मिलतां ई आपसी सद्भावना अर साम्प्रदायिक अेकता रो बरणाव हुयो है।

4-4 lekurk jh Hkkouk

कबीर कदे 'जे तू बाम्हन बाम्हनी जाया' अर 'जे तू तुर्क तुर्कनी जाया' कैय'र, किणी धर्म में जलम लेणै सूं कोई मिनख बड़ो नीं हुवै री सीख दी। सगळा मिनख अेक ई अल्ला या ईस्वर रा बणायेड़ा है। बां कैयो, ''इक्को अल्ला नूर उपाया, कुदरत के सब बंदे, अेक नूर ते सब जग उपजिया, कौण भले, कौण मन्दे।' कोई मिनख अगर बड़ो–छोटो है तो आप रै करमां सूं है ना कै किणी जात या धरम विसेस में जलम लेणैसूं। सगळा मिनख अठै बरोबर है। समानता री आ

भावना आजादी पछै री राजस्थानी कविता में बखूबी चित्रित हुयी है। समाज में सगळा मिनख बरोबर हुवै। समाज अेक सरीर दांईं है, कवि मोहनआलोक कैवै–

छोटी सूं छोटी चिंटली रै बी कीं लाग्यां,
सा पीड़ मिनख रै मस्तक नैई तड़पावै
दुनियां रो कोई देस, देस रो हिस्सो हो
मिनखापत जठै'र जणा–जणा बेजार हुवै
मन रोण ढुकै कवि रो जद अत्याचार हुवै

जात–पाँत, धरम–मजहब या सम्प्रदाय सूं ऊपर उठ, सै सूं पैली आपां भारतीय हाँ, इण बात नै भूलणी नीं चायजै।

कवि कानदान कल्पित रै सबदां में–

एक गगन री छाया नीचै, धरती सब की माता है
भेद भाव रंग छोड़ चन्दरमा, सब पर रस बरसाता है।
बारी–बारी सब पर मौसम, इक–सा रंग जमाता है।
पवन पवित्र ठंड–हिलोरा, सब का मन हरसाता है।
जीव मात्र की सेवा करता
रती नीं भेद विचार में
जात–पांत का विस मत घोळो,
जीवन की रस धार में।

4-5 lR;kXkg] vfgalk] lkp vkn thou eY;

आजादी सूं पैली अर पाँचवैं–छठै दसक रै कवियाँ पर गाँधी जी रो साफ असर देख्यो जा सकै। इण बखत री राजस्थानी कविता में सत्याग्रह, अहिंसा, सांच आद जीवन मूल्य जैड़ा सास्वत है, रा चितरांम अठै–बठै खूब मिलै। कैवण रो मतलब है राजस्थानी कविता, भारतीय समकालीन कविता साथै कदम ताल मिलाय'र चालै। हाँ! अेक बात अठै री कविता में अळगी देखी जा सकै, बा है अठै रो प्रकृति चित्रण! राजस्थान री धोरांळी धरती री प्रकृति सै सूं अळगी है। अठै कठै ई 'रेत राग' सुर गूंजै तो कठै ई जळ री उपासना करता धोरां रा चितरांम है। इण सै सूं ऊपर काळज्यै नै दहलावण वाळा काळ रा चितरांम भी है। इण सब सूं उठै अेक मानवीय संवेदना री लोर जैड़ी अेक हियै नै दूसरै सूं जोड़ै। अठै री माटी चाये रुखी है पण हिया नेह रै जळ सूं लबालब भरेड़ा है।

4-6 bdkbZ jk lkj

सार रूप में कैयो जा सकै कै आजादी पाछली राजस्थानी कविता में भरपूर रास्ट्रीय चेतना है। आ रास्ट्रीय चेतना मानवतावाद सूं जुड़'र मिनख में अैड़ै भावां रो विकास करै जिकां सूं मिनख खुद नै विस्व परिवार रो सदस्य समझै। आ रास्ट्रीयता ना तो मिनख पणै रो विरोध करै अर ना ही अंध भगती पैदा कर उण नै कट्टर बणावै। आ रास्ट्रीयता अर मानवता उण रै संस्कारां सूं निपजै जैड़ी बीं नै कीं बेहतर मिनख बणाणै री कोसीस करै।

4-7 vH;kl jk loky

1. आजादी पछै री रास्ट्रीय चेतना री कविता पर अेक निबन्ध लिखो।

2. आज जद दुनियां सिकुड़'र छोटी होंवती जावै, अैड़ै बखत में रास्ट्रीय चेतना री कांई जरुरत है?

3. रास्ट्र निर्माण में कैड़ा तत्त्व महताऊ हुवै समझावो ?

4. आजादी पछै री राजस्थानी कविता में मानवतावादी चेतना पर अेक निबंध लिखो।

4-8 lnHk ikfFk;k

1. 'जिण हाथां आ रेत रचीजै'– हरीश भादानी
2. 'ऊजळा आखर'– शिवराज छंगाणी
3. 'ग–गीत'– मोहन आलोक
4. 'चित मारो दुःख नै'– मोहन आलोक
5. 'सोनो निपजै रेत में'– गजानन वर्मा
6. 'हमीर महाकाव्य'– ताऊ शेखावाटी
7. 'दसमेस'– डॉ. मंगत बादल
8. 'सौ सॉनेट'– मोहन आलोक
9. 'हुवै रंग हजार'– सांवर दइया

4-9 i=&if=dkok

1. जागती जोत– गत कई बरसां रा अंक
2. माणक– गत कई बरसां रा अंक
3. राजस्थली– गत कई बरसां रा अंक
4. राजस्थानी गंगा– गत कई बरसां रा अंक

bdkbZ& 5

vk/kqfud jktLFkkuh dkO; çeq[k dfo % pUnzflag

bdkbZ jk eMk.k

4.0 उद्देस्य

4.1 प्रस्तावना : आधुनिक राजस्थानी साहित्य री सरुआत री जाणकारी

4.2 जीवनव्रत

- (क) जनम अर वंस
- (ख) सिक्षा–दीक्षा अर संगी–साथी
- (ग) मिरत्यु

4.3 चंद्रसिंघ : साहित्य–सिरजण

- (क) काव्य–सिरजण री सीख
- (ख) रचनावां : परिचै

4.4 कवि री चावी रचनावां री ओळखांण : बादली अर लू री विरोळ

4.5 चंद्रसिंघजी रै कवित्व रो मूल्यांकन

- (क) काव्यत्व री विसेसतावां
- (ख) समकालीन कवियां में ठौड़

4.6 सार

4.7 अभ्यास सारू सवाल

4.8 संदर्भ ग्रंथ सूची

4-0 mís';

इण इकाई री प्रस्तुति रो खास उद्देस्य आधुनिक राजस्थानी रै सिरै कवि चन्द्रसिंघ, बिरकाळी रै व्यक्तित्व अर क्रतित्व री ओळखांण करावणौ है। किण परिस्थितियां में चन्द्रसिंघजी रो लेखण काम सरू हुयौ अर किण भांत री कविता वै लिखण लागा, आं सगळी जाणकारियां रो अठै खुलासौ हुवैला। प्रक्रति काव्य रै परिचै रै सागै उणा री बादळी, लू आद प्रक्रति मुजब रचनावां रो अठै खुलासौ करीजैला।

4-1 çLrkouk

राजस्थानी साहित्य रो समै वि.सं. 1900 सूं अजैलग मानीजै। इण काल रै साहित्य री खासियत आ रैयी के मझकालीन साहित्यिक प्रव्रत्तियां आद री बणगत अर कथ्य इण सूं कठै ई को मेळ खावै नीं। सिल्प अर कथ्य दोई दीठ सूं औ साहित्य (पद्य अर गद्य) आपरी परम्परा सूं अेकदम न्यारौ लखावै। इण रा मूळ कारण निम्नलिखित रैया–

1. 1857 ई रो स्वतंत्रता संगराम
2. दो महाजुद्ध
3. महात्मा गांधी रो सक्रीय राजनीति में पदारपण
4. प्रजामण्डल आद राजनीतिक संस्थावां री गतिविधियां
5. 15 अगस्त 1947 नैं भारत री आजादी

6. ब्रिहत्तर राजस्थान रो निरमाण
7. राजस्थान नहर (गंग नहर सूं इंदिरा गांधी नहर) लग री योजना
8. भारत–चीनी अर भारत–पाकिस्तानी जुद्ध
9. साइबर क्रान्ति
10. भूमण्डलीकरण अर बाज़ारवाद
11. राजस्थानी भासा–साहित्य रै अध्यापन री सरूआत आद।

अध्ययन री दीठ सूं इण काल रै साहित्य नैं दो भागां में बांट सकां

(क) स्वतंत्रता पैली रो काल (वि.सं. 1900–2004) अर

(ख) स्वतंत्रता रै उपरांठ (विसं. 2004 सूं अजै लग)

स्वतंत्रता पैली रै साहित्य में काव्य अणूतौ लिखिजियौ। अंग्रेजां रै दावपेचां सूं भारतीय जनता उकतायगी ही। अतः इण वगत रा कवि अर आजादी रा सिपाई जन–जागरण री कविता लिखी। आं रचनावां सूं जन–चेतना आई, सामाजिक सुधार पण हुया, पण आज़ादी री लड़ाई में म्हांणी असफलता रै कारण आखै देस में अेक निरासा रो वातावरण पसरगौ। इणरै परिणाम सरूप हिन्दी में छायावाद रो विकास (1920–1936 ई.) हुयौ। इण धारा रा उठै जयशंकर प्रसाद, सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला', महादेवी वर्मा अर सुमित्रानंदन पंत सिरै कवि हुया। राजस्थानी में आ काव्यधारा चन्द्रसिंघ बिरकाळी सूं सरू व्ही। अठै रा साहित्यकार इण नैं छायावादी काव्य रै सागै ई प्रक्रति काव्य री संग्या ई दिरायी। चंद्रसिंघ जी रै सागै ई इण जुग में इण लय री कविता मेघराज 'मुकुल', कन्हैयालाल सेठिया ई लिखी। आज़ादी रै पूठै राजस्थानी काव्य में इण काव्यधारा रो सैंठौ विकास हुयौ।

4-2 thouoÙk

¼d½ **tGe vj oa l&** कवि चन्द्रसिंघ रो जळम बीकानेर राज रै गांव बिरकाळी रै श्रंगोत घराणै में वि.सं. 1969 में हुयौ। अै ठाकुर खूमसिंघ रा बेटा अर ठाकुर हरिसिंघ रा खोलायती पुत्र हा। जागीरदारी परिवेस में पाळण–पोसण हुवण पूठै ई वां रो सामन्तवाद में कतई को विस्वास नीं हौ। वै आपरै अध्ययनकाल में सामंतसाही विरोध करयौ अर 1932 ई. में पैली बार बीकानेर में स्टूडेंट यूनियन कायम करी। इण बाबत 'परम्परा' रै हेमांणी अंक में डॉ. किरण नाहटा सूं बात करतां वै खुलासौ कर्‌यौ– ''इसकूल रो अैक न्यारौ होस्टल हौ, जिणमें 20–25 बड़ा ठिकाणैदार रईसां रा छोरा रैवता हा अर वां रो इसकूल में खासा दबदबौ हौ। कारण कै इसकूल में आयी साल अेक सेक्रेटरी रो चुणाव व्हिया करतौ अर इण चुणाव नै हरमेस अै रईस छोरा जीत जावता। 'सैक्रेटरी' रो रुतबौ इण वास्तै ज्यादा हौ कै इसकूल में जद–कद भी वायसराय रो पधारणौ व्हेतौं वां री अगवाई करण रो हकदार बौ ई व्हिया करतौ। जद कै इसकूल में म्हैं बारला लड़का गिणती में सौ सूं भी ऊपर हा। म्हारै मगज में पैली दफै आं रईसां री खिलाफत रो ख्याल उपज्यौ। उण बरस म्हैं चुणाव में खड़ौ व्हियौ अर बारलां लड़कां नै म्हैं अेकठ कर्‌या। चुणाव रो तरिकौ बदळवायौ। पैली हाथ खड़ा करवायर चुणाव करायौ जावतौ। म्हैं इणरौ विरोध कियौ अर 'बैलेट–पेपर' रो रिवाज सरू करवायौ। सात दिन तांईं जोरदार परचार रै बाद जद चुणाव व्हियौ तौ म्हारी भारी बहुमत सूं जीत हुई।''

¼[k½ **fl{kk&nh{kk vj lkxh lkFkh&**

चंद्रसिंघ जी री भणाई–लिखाई बीकानेर स्हैर में व्ही। वै आपरी इसकूली सिक्षा नोबल इसकूल, बीकानेर सूं पूरी करी अर डूँगर कॉलेज, बीकानेर सूं बी.ए. री भणाई करी। विद्यार्थी जीवन में उणां रै साथी संगळया में सूरजकरणजी पारीक, मुरलीधरजी व्यास, विद्याधरजी, रामसिंघजी अर

नरोत्तमदासजी खास हा। रावत सारस्वत सूं उणा रो परिचै 1941–42 ई. में डूँगर कॉलेज, बीकानेर में हुयौ। आं रै अलावा हरिसिंघजी चौधरी सूं ई उणारौ चोखौ मेळ हौ, पण राजनीतिक विचारधारा री दीठ सूं चौधरीजी री धारणा न्यांरी ही। चंद्रसिंघजी प्रो. नरोत्तमदासजी रा छात्र ई रैया पण लिखण–पढण रै मामलै में वै साथी समान ई हा। आं संगी–साथियां री सीख सूं वै काव्य सिरजण सारु सैंजोर ढूकिया। जयपुर में रैवण पूठै उठै रा मौजिस मिनखां सूं ई उणारौ भाइपौ बध्यौ। सुभाव सूं वै म्रिदुभासी अर सामाजिक हा। पण आपरै उसूलां अर नेमां री पालना उणां री जीवन चर्या ही। इण बाबत वै किणी सूं कोई समझौता वास्तै तैयार कोनी रैवता। गंभीरता अर विद्वता उणां रै चेहरै सूं झांकती ही। आं गुणां पांण ई वै अेक'र विद्वान ब्राउन साहब सामै पुलिस आई.जी. नैं राजस्थानी बाबत मौळा सबद बोलण माथै डांटी दिरायी। देस रा मानीता विद्वान अर ओहदेदार सर गंगानाथ झा रै उड़िया चपड़ासी साथै भूंडै व्यवहार पर उणां सूं मांफी मंगवाई।

(ग) पसंद (रुचिया) अर मानतावा

लिखणौ–पढ़णौ चंद्रसिंघजी रो सुभाव हौ। सरुपोत वांरी रुचि ट्रैडीसनल कविता में रैयी पण इण रो असर उणां माथै ज्यादा दिन कोनी रैयौ। वै प्रक्रति कांनी बध्या। उणरै कण–कण सूं रु–ब–रु हुणौ उणा री चावी इच्छा बणगी। इण रुचि रै कारण 15 बरस री उमर में जद वै मुम्बई इस्काउट रै केम्प में गया तौ लगौलग छह–छह घंटा बैठ्या समन्दर री लै'रा नैं झकोळा लेवता देखता रैवता।

कॉलेज में भणतां वां री रुचि अखबार पढ़ण कांनी बधी। वै उण वगत रा खास छापा लीडर, क्रॉनिकल, माडर्न रिव्यू नियमित रूप सूं पढ़ण लागा। आंई दिनां में उणां री पसन्द अंग्रेजी कविता अर साहित्य नैं पढ़ण वास्तै ई जागी। इण रूचि सूं वै बर्न्स, कीट्स, वर्ड्सवर्थ, सैलै, टैनीसन आद री खूब सारी कवितावां बांची पण उणा रो मन खास तौर सूं कीट्स अर वर्ड्सवर्थ री रचनावां में ई रम्यौ। हिन्दी कवियां में पन्तजी री प्रक्रति मुजब कवितावां वानै घणी भायी। बीकानेर रै नोबल इसकूल में पढ़ाई करती वगत वां री खास रूचि पोलिटिकल साइंस अर इसकूल पोलिटिक्स में ई बधी। पण राजनीति में उणां री सोच स्वतंत्रता री हिमायती ही। सामन्तवाद रा वै घोर विरोधी हा, जिणरा दाखला म्हां लारै पेस कर्‌या है। अंग्रेजी हकूमत रै अधीन रैवता थकां ई वै पक्का रास्ट्रीय विचार रै प्रति समरपित रैया। पण रास्ट्रीय कांग्रेस अर उणरै आन्दोलणां में वां रो कतई कोई विस्वास कोनी हौ।

कविता में बुद्धि तत्त्व री बोहळता नैं भी वै नीं अंगैजता हा। कविता रै जुदा–जुदा आन्दोलणा री अथिरता री जिम्मेदार वै बौद्धिकता री बोहोळता नैं मानै। वै कविता री भासा रै रूप में सदीव भाव भासा नैं महत्व दिरायौ। उणा रै मुजब ''हिन्दी गद्य री भासा तौ बण सकै पण कविता री भासा रै रूप में खड़ी बोली नै अंगीकारणी म्हनै कदेई कोनी रुचि, क्यूंक हिन्दी कदेई कोई री मातभासा कोनी रयी जद कै कविता सिरफ मातभासा में ई व्है सकै। म्हैं खुद हिन्दी अर अंगरेजी जाणतां थकां भी कविता हरमेस राजस्थानी में ई लिखी।''

चंद्रसिंघजी कविता नैं कदैई किणीं भांत रै विचार प्रचार रो ज़रियौ कोनी मान्यौ। मतळब के कविता नैं मन री भासा रै रूप में मंजूरी। सागै ई बे कविता नै सदीप मायली निजर सूं जीवै। उणां री रचनावां में अेक आन्तरिक संवेदना लखावै। इण तरिया चंद्रसिंघ रो राजस्थानी कविता में प्रवेस अर पछै रो काम राजस्थानी साहित्य रै खास आंदोलण रो हिस्सौ बणियौ। राजस्थानी कविता रै माध्यम सूं वै राजस्थानी भासा रै आन्दोलण सूं जुड़गा। भासा रै प्रचार–प्रसार सारू वै कदैई कविता नैं मंच सूं कोनी जोड़ी अर न ई खुद मंचीय कवि री पानड़ी में जुड़्या। उणा रै मुजब मंच सूं सुणण वाळा स्रोतावां अर सुणावण वाळा कवियां री ठावी मरजाद ज़रूरी है। इण

रै अभाव में 'मंच री कविता सारौ–संवळौ जोम कै व्यंग री उक्ति व्हेय'र रैय जावै।'

¼?k½ **fejr&** चंद्रसिंघजी आपरौ ज़्यादा समै जयपुर में बितायौ। जयपुर री सुथरी कॉलोनी बनीपार्क में चन्द्रसिंघजी रो घणौ लूंठो बंगलौ। उठै ई वे आपरी साहित्यिक चरचा साथियां सागै करता हा। इणी बंगले में उणा री मिरत्यु 1996 ई. में व्ही। राजस्थानी रो अेक चावौ कवि राजस्थानी साहित्य जगत सूं सदीव वास्तै आंख्या मूंद लीधी।

4-3 pæfl?k % lkfgR; flj t.k

¼d½ dk0;&flj t.k jh lh[k

बकौल चंद्रसिंघजी मौलिक कवितावां रो सिरजण 1932–33 ई. सूं सरू कर्‌यौ। इण सिरजण री प्रिस्ठभौम में उण बगत रै बीकानेर रै महाराज गंगासिंघजी री रास्ट्रीय विचारधारा री अहम् भोमका रैयी। सरुपोत वै परम्परावादी कविता चाव सूं भणता हा अर लिखता ई हा। परम्परावादी काव्य सिरजण री प्रेरणा वानै प्रो. नरोत्तमदास स्वामी सूं पण मिळी। चन्दरसिंघजी नैं आ दीठ सूं स्सै सूं वाल्हौ छंद दूहौ लागौ। उण वगत री अंग्रेजी अनीत अर देस विरोधी जागीरदारां रै खिलाफ ई इण परम्परावादी कविता में उणां रा सुर मुखरित हुया। पण तत्कालीन हालात वस वै आपरी कविता सारू प्रक्रति नैं ई अंगैजी। इण कांनी ढूकण रा कारण हा–

1. वै कविता अर जीवण दोनां में ई हरमेस अेकलपै री मनगत सूं जुड़्या रैया। पढ़ाई–लिखाई रै सौक सूं वै हॉस्टल में आपरी मरजी–माफक रैया। इण ओकलपै सूं उणां री मनगत औजूं ऊंडी अर पक्की हुवती रैयी अर प्रक्रति रै सूखम निरीक्षण सूं उण माथै ई कविता सिरजण लागा।
2. राजपूत व्हेण रै कारण परम्परावादी वीर काव्य पढण–सुनण रो तौ चाव रैयौ पण उण रै दमखम माथै वै कदैई भरोसौ कोनी कर्‌यौ। इण वास्तै ई 'बालसाद' रै कुछ छंदां रै अलावा वै बादळी, लू जैड़ी प्रक्रति मुजब रचनावां ई लिखी।
3. राजस्थान काळ प्रभावी प्रदेस है। इण सूं किसान री खसता हालत किणी भावुक मन नैं रुला सकै। इण दुख री अभिव्यक्ति सारू ई कवि चन्द्रसिंघ बिरखा, उन्हाळौ, सियाळौ अर बसन्त बाबत रचनावां लिखी। कवि रै अेकलपै रो चिन्तन आ रितु मुजब रचनावां– बादळी, लू, बसन्त आद में जोयौ जा सकै।
4. इस्काउट केम्प में मुम्बई रै समुन्दर री लैरां रो अेक कांनी सूं दूजी कांनी आवण रा दरसाव गांव रै कुदरती फूटरापै नैं औजू बधायौ। कवि री रचनावां में समन्दर री गेराई, आभै रो पसराव, अर धोरा–धरती री उदारता जोई जा सकै।

चन्द्रसिंघजी राजस्थान अर खासतौर सूं बीकानेर राज रा जाया–जळमियोड़ा हा। इण खातर राजस्थानी रै प्रत वांरौ प्रेम अणूतौं ई हौ। इण मायड़ भासा रै प्रेम रै कारण ई वै हिन्दी–अंग्रेजी नैं चोखी तरिया सूं जाणता थकां ई मुख सूं राजस्थानी नैं ई वै आपरी काव्य भासा बणाई। यूं वै हिन्दी में ई घणी चावी रचनावां सिरजी। हिन्दी आं री लूंठी काव्य रचनावां में वै 'मुझे अकेला ही लड़ने दो?' अर 'मेरा तो दम सा घुटता है' नैं उल्लेख जोग मानै।

चन्द्रसिंघजी कविता सिरजण सारू आपरी मायड़–भासा नैं महताऊ मानै। इण वास्तै हिन्दी में वै बेसी रचनावां कोनी लिख सक्या। कवि री इण मानता नैं 1944 ई. में आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी सान्ति निकेतन में 'बादळी' नैं सुण'र औजू ठावी कर दीवी। आपरै मायड़ भासा रै साथै अकूट नेह सारू वै तरक करण नै तैयार रैवता हा। इण बाबत वै अंग्रेजी रै मानीतै विद्वान ब्राउन साम्ही अेक पुलिस आई.जी. नै बुरी तरिया बकार्‌या। इण घटना रो वे आं सबदां में वरणाव कर्‌यौ है– ''...अेकर अंग्रेजी रा मानीता विद्वान ब्राउन अनूप संस्क्रत लाईब्रेरी पधार्‌या। वां रै साथै

पुलिस रा आई.जी. साब हा। म्हैं भी वां रै साथै लाइब्रेरी गयौ। कोई बात माथै आई.जी. साब राजस्थानी बाबत कीं हळका सबद इस्तेमाल किया। म्हैं फौरन वा रै सांमी अड़्ग्यौ अर वां नै जरकौ देय'र बकार्‌या कै आज तांईं कोई राजस्थानी री दो–चार पोथी पढ़ी नी है? कीं और भी जांणकार लोग साथै हा। आई.जी. साब नै पाछौ बोल कोनी उकल्यौ अर बगलां झांकण लाग्या। सैवट वांनै आपरा कैयोड़ा सबद पाछा लेवणा पड़्या।''

कवि चंद्रसिंघजी मुजब कविता हिरदै सूं उपज्योड़ी भावां री गैरी अर सारथक अभिव्यक्ति हुवै। इण वास्तै ई वै नुवी कविता नैं रस हीण मानै, क्यूं क उण में ज़रूरत सूं ज्यादा बुद्धि–परधानता आयगी है। इण बाबत उणा री आ मानता ई रैयी क हिरदै पख रै अभाव अर बुद्धि तत्त्व री इधकाई रै कारण ई हिन्दी अर राजस्थानी कविता में बदळाव आवता रैया पण वै टिकाऊ कोनी रैया, उणा रो कोई लाम्बौ असर कोनी लखायौ।

¼[k½ jpukok % ifjp

आं सगळी सीखा अर मानतावां रै पांण चंद्रसिंघजी निम्नलिखित काव्य रचनावां रो सिरजण कर्‌यौ– 1. बालसाद 2. कह मुकरणी 3. सांझ 4. बादळी 5. लू 6. मरु महिमा 7. डांफर आद। कवि रै मुजब वै आं रचनावां रो सिरजण 1932 सूं 1943–44 लग कर्‌यौ। वै इण नैं ई आपरौ रचनाकाल मानै (परम्परा–हेमाणी अंक, पृ. 129)। अठै आं रचनावां रो संक्षिप्त परिचै देवालां–

1- cky lkn

कवि चंद्रसिंघ इण नैं आपरी पैली काव्य पोथी मानैं। इणमें कवि द्वारा रच्योड़ा वीर रस रा दूहा अर छुटपुट रचनावां रो संकलण करीजियौ है। कवि रै मुजब आ रचना उणा री पैली पोथी ज़रूर है, पण इणमें संकलित रचनावां रो भाव उणा री कविता रै मूळ सुर नीं बण सक्यौ।

2- edfj;k

इण रचना रो सिरजण चंद्रसिंघजी मुरलीधरजी व्यास री प्रेरणा सूं करी। मुरलीधरजी रै अमीर खुसरौ री मुकरियां रै राजस्थानी उळथै (1935 ई.) माथै 130 राजस्थानी मुकरिया लिखी। आं रै सिरजण में वां नैं च्यार–पांच दिन लागा। नागरी भंडार रै सुधी सदस्यां नैं अै मुकरियां घणी पसन्द आई। प्रो. नरोत्तमदास स्वामी उणी दिन आं नैं चंद्रसिंघजी सूं लेय'र वां रो संपादन करयौ अर कुल 90 मुकरियां छापण खातर टाळी, जकी बाद में 'कै मुकरणी' पोथी रै रूप मं छप'र बारै आयी।

3- cknGh

'बादळी' चंद्रसिंघजी री पैली अर महताऊ प्रक्रति परक रचना है। यूं तौ कवि री चावी रचना 'लू' है, पण इण रचना (बादळी) रै पांण पैली बार चन्द्रसिंघजी लारली कविता री ज़मीन नैं चुनौती दीवी अर राजस्थानी कविता –जात्रा नैं नुवौं मोड़ अर मिज़ाज दिरायौ। इण रचना रै माध्यम सूं राजस्थानी काव्य में प्रक्रति रो अलबंण रूप में चितराम सरू हुयौ। आं सगळी विसेसतावां पांण बादळी नैं रत्नाकर पुरस्कार अर बलदेवदास रजत पदक मिळ्या। हिन्दी काव्य जगत में ई इणरी सरावणा करीजी। 1944 ई. में सान्ति निकेतन में 'बादळी' नैं कवि री वांणी में सुण'र नंदलाल बोस, क्षिति बाबू, हजारी प्रसाद द्विवेदी आद मानीता साहित्यकार सांतरौ महतब दिरायौ। 1942–43 ई. में पुस्कर तीरथ माथै आयोजित सम्मेलण में उदयराज ऊजळ पण 'बादळी' री खूब तारीफां करी।

130 दूहां में रचीजी इण रचना में कवि चन्द्रसिंघ मारवाड़ भोम में बादळी रै अरवूट, महतव रो न्यांरै–न्यांरै रूपां में वरणाव कर्‌यौ है। 'बादळी' मुरधर रो आधार है। इणी री

न्यांरी–न्यांरी ओपमावां सागै घणौ ई सांतरौ, बिम्बात्मक मंडाण करणौ अठै कवि रो लक्ष्य रैयौ है। मुरधर री तिरसी धरती में मेह बरस्या अेक नुवौ ई उमाव जाग जावै। टाबरिया री टोळ गुवाड़ में नाचण लागै। मूमळ गावती गोरड़्या रो हिवड़ौ उछाळ खावै, क्यू क–

Ikje vko Ikx.kh] fefG;k èkj Ir egA
Mxi IkIk tx fi;] fgoM Hkhrj ugAA

cky gfj;k IoVk] mM&mM fcjNk MkGA
Mjj&Mjj jo MMjk] ik[kfj;k jh ikGAA

बादळी मुरधर देस में आवै जद अठै री धरती री रंगत ई बदळ जावै। चेतन जगत तौ चंचळ हुवै ई, जड़–जगत पण जाग जावै। बादळी री मुरधर देस रै वासियां नैं घणी उड़ीक रेवै, क्यूं क अठै अेकांतरै काळ पड़ता रैवै। जोग–संजोग सूं इण बरस बरसगी तौ आछौ जमानौ होय जासी पण आगा सूं बेळासर पाछी सुध लेवण री भळावण अर बादळी नैं सीख देवणी कवि नीं बिसर्‌यौ–

fIèkk fIèkk vi cknGh] cI Iqjxk jI okIA
ojIkG er Hkyt] ri gh ejèkj vkIA

इण भांत कवि चन्द्रसिंघजी री आ रचना नुवी सोच अर भावभूमि नैं पेस करण वाळी है। सत्यं–सिवम्–सुन्दरम रो पड़बिम्ब है।

4- yw

अेक सौ च्यार दूहां–सोरठा छंदां में लिखिजी इण रचना में कवि चन्द्रसिंघ आथूणै राजस्थान (मरुधरा) में बाजण वाळी लूवां रो धणौ लूंठौ अर प्रभावू चितरांम मांड्यौ है। किण भांत लूवां आपरी तेज़ झाळा अर वेग सूं धोरा री धरती रै जीवां रो विनास करै है, रो मरमीळौ अर सजीव वरणाव अठै मंडीजियौ है। कवि आपरी वरणात्मक अर संबोधन सैली सूं इणनैं इतौ मरमीळौ बणाय दियौ है क रचना री हर औळी पाठक रै हिरदै रो हार बण गयी है।

लूवां मरुधरा में च्यारू कांनी विनास रो तांडव मांड मेळ्यौ है, फेर भी कवि आपरी संस्क्रति मुजब वी नैं शिवम् रूप में ई अंगैजै। वसन्त रितु नैं वां री अगुवाई सारू निछावर करतौ थकौ कैवै–

IkHkk IdG olr jh] Iki ejèkj vkiA
yvk Fk Qyk&QGk] ikok I[k v.keki AA

इण भांत लूं में कवि मरुधरा रै ऊनाळै रै भूगोल नैं अठै री सांस्क्रतिक मानतावां अर मिनखा पै पांण मांड्यौ है। विध्वंस रै माध्यम सूं निर्माण री बात कैयी है। मरुधरा रै भौगोलिक करड़ैपण रै सागै ई अठां रै मिनखां रो मन घणौ कंवळौ है। इण वास्तै ई कवि लूवां रै विनासकारी आचरण सूं दुखी कोनी है, क्यूं कं मरुधरा नैं बादळी सूं नुवौ जीवण देवण वाळी अै लूवां इज है। इणी भाव सागै कवि इण रचना रो समापन आं औळियां में करै–

tho.knkrk cknG;k Fkk Ir tho.k ik;A
Hky yvk cktk fdrh ejèkj Iglh yk;AA

इण भांत लू में मानव अर मानवेत्तर प्रक्रति रै लूंठै अर मरमीळै चितरामां रो मंडाण हुयौ है। इणमें छायावाद री सगळी प्रव्रत्तियां जोई जा सकै। मानवीकरण, नाटकीय, संवाद

सैली सूं सम्पन्न इण रचना में कवि भावानुरूप भासा रो प्रयोग कर'र इणनैं घणी फूटरी बणाय दीवी है। आ रचना पूरी तरियां सूं सत्यम्–सिवम्–सुन्दरम री खरी व्याख्या है।

5- dfo jh pkoh jpukok jh vkG[kk.k

बकौळ कवि चंद्रसिंघ उणा रो रचनाकाळ 1932–33 सूं 1943–44 ई. तांईं रैयौ (हेमाणी, पृ. 129)। इण अलप समै में कवि जिकौ काव्य सिरजण कर्‌यौ उणा में बादळी अर लू लूंठी अर निरवाळी काव्य–रचनावां मानीजी। आं दोई रचनावां रो आधुनिक राजस्थानी काव्य में घणी महताऊ जागां है। अै रचनावां आज़ादी पूठै री कविता री प्रस्टभोम अर राजस्थानी कविता जात्रा रो नुवौ मोड़ है। तात्पर्य चन्द्रसिंघजी री अै काव्य पोथियां घणी दमदार अर राजस्थानी प्रक्रति काव्य री सदीव सिरै कैयी जावण वाळी काव्य–पोथियां है। आं पोथियां में मंडीजिया चितराम राजस्थानी प्रक्रति काव्य तौ कांई हिन्दी अर अंगरेजी साहित्य री प्रक्रति–रचनावां में ई सोध्या को मिळै नीं। आं दोई सिरै रचनावां री अठै विरोळ प्रस्तुत करां हा–

¼d½ cknGh

इणरी विसै–वस्तु री चरचा म्हां ऊपर कर दीवी है। कवि इण रो सिरजण बीकानेर में सरू करियौ, पण हाथ में फ्रेक्चर हुवण सूं गांव बिरकाळी में इण नैं पूरी करी। अठै वै आपरी बात कैवण वास्तै प्रक्रति नैं घणैई सूखम रूप में जोई। बादळ अर बिरखा रै बाबत लोगां रै चाव अर उड़ीक नैं औजूं नैड़ै सूं समझण री कोसीस करी। बिरखां हुवण रै पछै धरती अर लोगां रै उणियारां माथै आयोड़ै असर नैं पण देख्यो अर समझ्यौ। कवि री इण सूखम अवलोकन प्रक्रिया सूं आ इत्ती फूटरी रचना वणी क साहित समाज में इणरी सैंजोर सरावणा व्ही।

मरुधरा री ऊबड़–खाबड़ भौगोलिक थिति रै कारण अठै प्रक्रति–चित्रण मुजब रचनावां में सुंदरम् री बजाय सिव (कल्याण) भावना रा ओपता चितराम मंड्‌या है। प्रक्रति रो औ सिव रूप बरखा सूं हुवण वाळा फायदां रै रूप में ऊजळ्‌यौ है। 'बादळी' में कवि घणी विनंती करता 'बादळी' रै बरसण री मनवार आं औळियां में करै–

tho.k u lg rjfl ;k] cltM&>[kM okA
cjl] HkkGh cknGh] vk;k vkt vlk<AA
vkl yxk;k ejèkjk] n[k jgh fnu jkrA
Hkkxh vk r] cknGh] vk;h #r cjlkrAA

अर जद बादळी इण वीनंती नैं सुण'र मरुधरा में आवै तौ अठै री धरती री रंगत ई बदळ जावै। चेतन जगत तौ चंचळ हुवै ई जड़ जगत पण जाग जावै। कारण, अठै अेकातरै काळ पड़ता रैवै। जोग–संजोग सूं इण बरस तौ बरसगी। आछौ जमानौ हुय जासी पण आगा सूं बेळा सरधा पाछी सुध लेवण री भोळावण देवता कवि कैवै के तू ही मरुधरा री आस है–

flèkk&flèk v cknGh cl ljxk oklA
ojlkG er Hky t] r gh ejèkj vklAA

कवि बादळी रो आखौ वरणाव लोक धरातल माथै कर्‌यौ है। ओई कारण है क जगां–जगां कवि प्रचलित लोक विस्वासां अर रुढ़ मानतावां नैं घणै मान सागै मांड्‌या है। बरखा नै लेय'र जिका विस्वास कवि रै मन में है वां रो वरणाव

करता वौ लिखै—

pkoì dPpk vkljk] iMoì dhp vikjA
y! ekVh uj ifx;k] Nkrk ij m.k okjAA

vxr uk[;k ekNGk] fNirk uk[kh ekxA
lqjt&rdMk rkfi;k] dj fcj[kk l!tkxAA

तीतर पंखी बादळी, चिड़कलां रो रेत में असनान करणौ अर उमस रै उनमान बरसण री पूरी उम्मीद। आं सगळी लोकभावनां अर सुकनां रो चितराम कवि आं ओळियां में मांड्यौ है—

tG gj Åpk vkfo;k] cky j;k tG dkxA
n!.k oèkkbì eg jh] j;k dul;k HkkxAA
okt! èkheki ok;jk] vkHkk ykjk ykjA
fN.k e.k fN.k e.k NkVMh] fgoM! mBì fgykjAA

कवि चन्द्रसिंघ प्रक्रति रै इण मंडाण नैं आलम्बण, उद्दीपण अर मानवीकरण रूप में कर्‌यौ है। आलम्बण रूप रो अेक दाखलौ पेस है—

f[k.k nd[k.k f[k.k mÙkj fnl] f[k.k pkxjnh pVVA
dq.k tk.kì fd.k [kkt e! cht >ik>i HkVVAA

बादळी रा तरै—तरै रा रूप—रंग सूरज—साजन नैं रिझावण सारू न्यारी—न्यारी ओप में करयौ है, जिणनै कवि मानवीकरण सैली में यूं पेस करै—

jx&fcjxh cknGh] dj&dj eu e! pkoA
lqjt j! eu Hkkork] pViV dj! c.kkoAA

lqjt&lktu vkolh] cBh ibì [kkyA
cnG&cnG èk.k cnG;k] iqj! ol veky AA

flj ij ?kei lkdMh] dj dj uoyk olA
lkd fl[kkbì oknGh b.k e! yko u y!lAA

जद बादळी रै वरसण री पूरी आस लखायी तौ करसा आपरै हलां नै संभाळ्या। वां रै चित्त में चेतना पसरगी। आनन्द मगन हुय'र वै आपरै खेता में पूग गया—

fdjlk.kk gG lkfHk;k] fpÙk e! vk;k pqrA
gj[k Hkj;k l! ifx;k vi.k&vi.k [krAA

सेवट, बादळी अेक प्रक्रति प्रधान रचना है, जिणमें बिम्वात्मकता, नाटकीयता अर सबद विन्यास रो सांतरौ रूप जोयौ जा सकै। अनुप्रास अर वैण सगाई अलंकारां रै सागै ई ओपती उपमावां रा ई सैंठा दरसाव हुवै। अनुरणात्मक अर ध्वन्यात्मक सब्दावली सूं इणमें सरसता, मारमिकता अर संगीत तत्त्व नैं पूरी ठौड़ मिळी है।

¼[k½ y!

चन्द्रसिंघजी आपरी इण रचना में आथूणै राजस्थान रो भौगोलिक अर सांस्क्रतिक जन—जीवन रो चितराम मांड्यौ है। मरुधरा रै प्राक्रतिक संसाधन अर अठै रै मिनख रै सुभाव रो घणी बारीकी सागै कियोड़ौ मंडाण इण रचना नैं सिरै

थरपै। राजस्थान री आथूणी भोम दूर लग बाळू रेत रै टीबां सूं ढ़क्योड़ी निर्जळ है। अैड़ा भौगोलिक भूभाग माथै मिनख ई नीं सामान्य जीव री लूवां री लपटां सूं कितरी हालत खराब हुय रैयी है, रो घणौ सजीव अर करूणा सूं सन्यौड़ौ चितराम कवि हिरणियां, हिरण अर बाखोटियां रै मिस मांड्यौ है। लूवां रै असर सूं बचण खातर हिरण्या दुपेर हुवण सूं पेलां ई बेरां जोहड़ा रै कनै पूग जावै पण पूगण सूं पेला ई लूवां रो पैसारौ इत्तौ बध जावै क धरती रो आलौपण ई सूख जावै। आली माटी री ठौड़ तिरसी–व्याकुल हिरण्यां री ठौड़ियां बेबस हुय'र टिक जावै अर पाळ सूं टिक जावै वां रा थाक्योड़ा गोडा। इण स्थिति में वै अबै दूजी जागां ई पांणी री सोध में जावण में असमरथ है–

BkMh vkyh BkM e] xkMh lkeh ikGA
vc fd.k fcèk ikNk fQj] fd.k fcèk lkèk NkGAA

लूवां री प्रचण्डता किण सींव तांई मरुधरा में दोरी हुय जावै, इणरौ मरमीळौ चित्र कवि हेठै लिखियोड़ी औळियां में मांडै। दोई आतुर प्रेमी संजोग सारूं आमे–साम्हे आवै पण लूवां री लपटां रै ताप सूं वै रातै भी अेक–दूजै नैं नीं परस सकै। मिळण वास्तै वै तरस जावै–

nk vkrj eu fey.k u vkek&lkek vk;A
HkV;k igyk èkd èkd yvk tho tGk;AA

इणी वास्तै मरुधरा री प्रक्रति में ऊनाळै री रुत में आखातीज रै अलावा दूजा कोई तैंवार नीं आवै–

ckGi.k jerk Fkdk vko vk[kk rhtA
ckdh Fkkj jkt e R;gkjk jh [khtAA

'लू' काव्य में कवि रो खास उद्देस्य विध्वसं रै माध्यम सूं निर्माण रो दरसाव करावणौ है। इण भावना रै माध्यम सूं कवि मरुधरा रै रैवासियां री कल्याणकारी (शिवम्) प्रव्रति री ओळखांण करायी है। लू रै करड़ै अर रीसाळू रूप नैं उजाळण री कोसिस करी है। मांवां आपरै टाबरां नैं धपावणौ चावै पण वै आपरै हांचळ नैं इण वास्तै उघाड़णौ नीं चावै क कठै लूवां रो ताप टाबरां नैं बाळ नीं देवै। वात्सल्यवस मांवां टाबरां नैं हांचळ देवै भी तौ टाबर लूवां रै ताव़ नैं सै'हन नहीं कर पावै। वै तुरन्त बिळखबा लागै–

ekok Vkcj eGo] yvk vx cpk;A
Nkrh feGrk NV iVh fcy[k&fcy[k jg tk;AA

मरुधरा रै ऊबड़–खाबड़ टीबां नैं जोय'र कोई भी अणजांण मिनख अठां रै समाज नैं उज्जड़, गंवार, रूखौ अर करड़ौ मानैला। पण राजस्थानी समाज कितरी विविधता अर संवेदनसीलता लिया थका है, रो बैरौ तद लागै जद अठै रो मिनख किणी सूं बतळावै। वौ आं अणूथी लूवां रै ताप सूं बळ'र ई इत्ती सांपत्त पायी है। कवि मरुवासी री इण प्रव्रत्ति री ओळखांण आं ओळियां में करावै। तेज लूवां रै प्रभाव सूं टीबा खिण्डग्या है। उणां सूं जिकी लपटां निसर रैयी है, वै अैड़ी लागै ज्यांन वां टीबां सूं किणी विरही री निस्वासां निसर रैयी हुवै–

Vhck QkVh VhcM;k] yvk gGdkjkA

rkrh >G uk uhlj] flld flldkjkAA

अैड़ी ई मारमिकता सूं सराबोर मानवेत्तर प्रक्रति रो अेक चितरांम औजू पेस है, जठै खाली तागरां में हिरण्यां आपरां सींग लगाया थका है। तिरस रै कारण वां रा पग उळट गिया है। वां णां प्राण सोस'र लूआं हिरण्यां रो सरवनास कर दिरायौ है–

lidk rxjk lhxVh yiV iM;k vkVkGA
th yivk y uhljh vk;k fgj.kk dkGAA

लूआं री इण भीसणता रै कारण इज मरुधरा में पांणी रो काळ है। इणी वास्तै अठै सिनान सारू खारौ पांणी, पीवण वास्तै मीठौ पांणी अर पसु धन खात्तर नमकीन पांणी काम आवै। इण बेबसी रो चितरांम कवि आं ओळियां में मांडै–

Ugko.k ik.kh vkj g feu[kk iho.k vkjA
èkke.k èku u nljk yivk ejèkj tkjAA

आलम्बण रूप में प्रक्रति रो मंडाण करता हुया कवि उण री मानवीयकरण रूप में प्रस्तुति दीवी है। प्रक्रति रै कामकाजां माथै मानवीय भावां रो आरोप कर'र चन्द्रसिंघजी अठै प्रक्रति री नुवै रूप में ओळखांण करायी है। परकीया नायिका 'लू' सगळै दिन सूरज सागै रमण कर'र उण री लाली नैं लूट लीधी। इणीज कारण बिचारै सूरज रो चे'रो आथमती दांण पीळीजगौ–

jfe;k jfo lkj fnol eVh dG jh dk.kA
ykyh yivk yVyh vkFk.k ihGk Hkk.kAA

'लू' में भांण री लाली रै खीण पड़ण रै मुजब दूहा (86 सूं 90 तांई) मानवीय संवदेना सूं जुड़्योड़ा है। अै सैं दूहा कवि रै अंतरमन री सूझ नैं दरसावै। इण मानवीयकरण सैली सूं पोथी में जिका बिम्ब ऊपड़्या है, वै इणरै प्रक्रति–चित्रण नैं अणूथो मरमीलैपण अर फूटरापौ बकसियौ है। आ बिम्बात्मकता रचना में सरू सूं आखिर लग जोयी जा सकै। लूआ रै तेज प्रवाह में तिरसा म्रिगजूथ रो जिकौ करुण चितरांम लू में मंडीजियौ है वौ राजस्थानी प्रक्रति काव्य तौ कांई हिन्दी साहित्य कै अंगरेजी–साहित्य में ई सोध्या को मिळै नीं। 'लू' रै आं इज दरसावां सूं प्रेरित हुय'र प्रक्रति रा चितेरा चित्रकार आचार्य नंदलाल बोस जिकौ चित्र इण रचना रै मुख प्रिस्ठ माथै मांड्यौ है, वौ इण कथन रो प्रमाण कैयौ जा सकै।

कविता में बिम्ब नैं मांडण वास्तै भाव सर सबदां री दरकार हुवै। 'लू' में सटीक सब्दावली रै मार्फत अेड़ा अनेकूं चित्र मंडीजिया है, जिका सै'ज ई भणणिया अर सुनणियां नैं आप कांनी खींचै। लू री लपटां सूं हिरणां घणी दौरप सैय रैयी है। इण पीड़ सूं दुखी हिरण्यां रो बिम्ब कवि आं सबदां में मांडै–

vk[kfM;k ik.kh Hkj;k uhph ukM ilkjA
flld flld lklk Hkj fgj.;k dj idkjAA

सबद–कौसल सूं चंद्रसिंघजी मरुधरा री अभावग्रस्त धरती री वनस्पतियां, बेरां, जोहड़ां, रहण–सहण आद रो घणौ ओपतौ वरणांब मांडियौ है। अठै ऊनाळै में लूआं रै बाजण सूं ठांडा दूध कोनी देवै। दूध सांरू धणी वां नैं लूआं सूं बचावण खातर घणै जतनां सागै राखै। कवि इण रो आं ओळियां में वरणांव करै–

dj dj iGk&Nkg e] dj dj iGk vkVA
?k.kh txr jk[k èk.kh] yvk u pdk pkVAA

सेवट 'लू' राजस्थानी री भौगोलिक, मानवीय अर मानवेत्तर प्रक्रति मुजब अेक सफल रचना है, जिणमें भासा अर भाव रै सामरस सूं कवि मरुधरा में ऊनाळै री खास प्रव्रत्ति लू रा सांतरां चितरांम मांड्या है। इण रचना में कवि री सबसू म्होटी विसेसता आ रैयी के वौ लू जैड़ी विनासक प्रव्रति नैं ई घणी कंवळैपण सूं मांडी है। ओ दरसाव ई कवि रो सिव अर निर्माण है।

4-5 pUæfl?k th j dfoÙo jk eY;kdu

¼d½ dk0;Ro jh folsl rkok&

काव्य अर प्रक्रति रो सम्बन्ध घणौ नैड़ै रो है। मानखै रै जीवन रो आधार ई प्रक्रति हुवै। इणी री खोळा बैठ'र मिनख आपरी जूण जीवै तौ कदास उणरौ हिवड़ौ प्रक्रति रै रौद्र रूप नैं देख'र डरप जावै। कैवण रो मतळब औ क मिनख रै सुख–दुख, हरख–बिखै सैं री सहचरी प्रक्रति रैयी है। चन्द्रसिंघजी री रचनावां प्रक्रति रै आं रूपां रो ई खुलासौ करै। कवि प्रक्रति रो सागौ चितेरौ रैयौ है, जिणरौ खुलासौ म्हां ऊपर कर चुक्या हा।

प्रक्रति रै मोवणै अर मरमीळै रूपां नैं कवि बादळी, लू, डांफर रचनावां में घणै सांतरै रूप में मांड्या है। घाम सूं आखी मरुधरा तवै़ ज्यूं तप रैयी है। टाबर बिळख रैया है तौ नवोड़ावां आपरै पीतम सूं संजोग करण में असमरथ है। अैड़ै मौकै कवि बादळी री प्रक्रति रो फूटरौ चितरांम आं ओळियां में प्रगटै–

vxr uk[;k ekNyk] fNirk uk[kh ekxA
ljt&rdMk rkfi;k] dj fcj[kk ltkxAA

pkok dPpk vklj] iMk dhp vikjA
yk ekVh uj ifx;k] Nkrk ij m.k okjAA

[kk er tho.k ckoGh Mxj&[kkgk tk;A
fey.k idkj ejèkjk] je&je èkkjk vk;AA

प्रक्रति रा अै चितराम 'लू' में औजू ओपतै रूप में मिळै। आपरी फूटरी भावाभिव्यक्ति रै कारण ई कवि 'लू' नैं बादळी री तुलना में श्रेष्ठ रचना घोसित करै। इण श्रेष्ठता रो खास कारण 'लू' री चित्रात्मकता, नाटकीयता, प्रक्रति रो आलम्बण रूप आद है। साच तौ आई है क चंद्रसिंघजी री रचनावां में प्रक्रति रै विविध रूपां रो मंडाण हुयौ है, पण प्रमुखता उण रै आलंबण रूप री ई है। इण भांत कवि रै काव्यत्व री सबसूं म्होटी विसेसता प्रक्रति चित्रण री बोहोळता है। आं वरणांवां रै कारण अै रचनावां रितु काव्य री सिरमौर है।

प्रक्रति रै आलंबण रूप रै अनुरूप ई वांणी रचनावां री महताऊ विसेसता है– मानवीयकरण। छायावाद री मानता मुजब कवि चंद्रसिंघ प्रक्रति रो सचेतन रूप में वरणाव कर्यौ। वौ प्रक्रति रै कण–कण में चेतना रो अनुभव कर्यौ है। औ ई कारण है क बादळी, प्रक्रति, लू, हिरण्यां आद नैं वौ सागी नारी भावनावां सागै प्रस्तुत करी है। प्रक्रति नैं इण रूप में मांडण रै कारण ई आं वरणावां में मरमीळौपण बेसी ऊजळ्यौ है। नारी रूपी बादळयां रै सिणगार रै चाव नैं कवि आं ओळियां में प्रस्तुत करै–

jx&fcjxh cknGh dj&dj eu ek pkoA
ljt&jk eu Hkkork pV iV djk o.kkoAA

igjk cnGk oknGh cnG igj cnGkoA

lijt lktu vkolh cBh iVh [kkyA
cnG&cnG ?k.k cknG;k igj ol veyAA

इणी भांत 'लू' काव्य में मां हिरण्या अर बाखोटियां रो मानवीयकरण आं ओळियां में जोय सकां–

ukji.k j vhld Hky vx Hktk vk;A
erh ytk;k eki.kk] y;k yky cpk;AA

ft.k fnl n[kk lorh] iy ce fgj.;kgA
BMh futjk tk;Ttk] dj Åph fdj.;kgAA

चंद्रसिंघजी रै काव्य नैं म्हां सत्यम्–सिवम्–सुन्दरम् रो पड़बिम्ब कैय सकां। सांच (सत्य) सदीव सिव (विकास–कल्याण) हुवै। कल्याण करण वाळी भावना ई सुन्दर बाजै। कवि आपरी रचनावां में मरुधरा री प्रक्रति रो घणौ सूखम वरणाव मांड्यौ है। अठा री भौम विकराल, ऊबड़–खाबड़, काळ वाळी है। दूर–दूर लग पीवण नैं पांणी नीं मिळै तौ विस्राम सारू छिंया नीं मिळै। आ मरुधरा री सांच है। कवि इण नैं सिवम् अर्थात् विकास कै कल्याण रै रूप में प्रस्तुत कर्‌यौ है। कवि री आई भावना रैयी है क दौरप में ई मिनख कसौटी माथै खरौ उतरै। कवि री इण सोच रो ई परिणाम है क लूवां वसन्त री सारी सोभा खिण्डाय दीवी, फेर ई वौ वसन्त नैं लूवां रै स्वागत वास्तै निछावर कर दिरावै–

lkHkk ldG olr jh] lki ejèkj vkiA
yvk Fk Qyk&QGk] ikok l[k v.kekiA

tho.knkrk cknG;k] Fkk l tho.k ik;A
Hky yvk cktk fdÙkh] ejèkj lglh yk;AA

इणी समरपण भाव सूं म्हांणी ओळखांण 'बादळी' काव्य में पण हुवै। उठै वौ आखी धरा माथै बरस'र उण नै हरी–भरी कर देवै–

o.k&B.k vkbl cknGh jkph èkj jx&jkxA
piru vr ppG g;k tM tx mfB;k tkxAA

ekB dVkjk tkM e ekph ekph oyA
Qyk Hkkj&ynh iMh fop&fop ph;k eyAA

कवि आपरै इण सोच (सिवम् = कल्याण = विकास = निरमाण) री थरपणा सारू ई लूवां रै करड़ैपण अर मरुधरा री अबखायां रो वरणाव कर्‌यौ है। इणी रूप में वौ मरुधरा रै सौंदर्य रै ओपतै रूप नैं प्रस्तुत कर्‌यौ है।

आचार्य रामचन्द्र सुक्ल रै मुजब कविता वास्तै बिम्ब ज़रूरी है। बिम्ब योजना रै माध्यम सूं ई काव्य रो पाठक सागै साधारणीकरण संभव है। अै च्यार तरिया रा हुय सकै– भावबिम्ब, गतिबिम्ब सबद बिम्ब अर ध्वनि बिम्ब।

कविता में बिम्बा नै मांडण वास्तै भावानुरूप सबदावली री ज़रूर हुवै। चन्द्रसिंघजी री कविता में घणाई बिम्ब ऊपड़्या है। अै बिम्ब कठै भावां रै मारफत मंड्या है तौ कठै उणरी गति अर वरणन सैली रै मारफत। अै चित्र कवि री रचनावां रै भणणियां अर सुणाणियां नैं आप कांनी खींचै। लू री लपटां सूं हिरण्या घणी दोरप सैय रैयी है। इण पीड़ रो भाव बिम्ब कवि आपरी रचनां 'लू' में आं सबदां सूं मांडै–

ldk rxjk lhxVh yiV iM;k vkVkGA
th yvk y uhljh vk;k fgj.kk dkGAA

अेडौ ई बिम्ब कवि बादळी में उकेरै, जठै टाबर–टोळी बरखां नैं उडीक रैयी है–

dkGh dkGh dkBGh ÅtGh dkj.k tk;A
mÙkj fnl e: mfð;k tk.k fgokGk gk;AA

अेड़ौ ई ध्वनि बिम्ब कवि अनुरणात्मक सबदावळी रै पांण उकेरियौ हैं–

iMM&iMM cnk iM xMM&xMM ?k.k xktA
dMM&dMM ohtG dj èkMM èkMM èkj vktAA

कवि वरणात्मकता में कमाल हासिल कर मेल्यौ है। कठै वौ देसी सबदां रै बरताव सूं ध्वन्यात्मकता रो निर्माण कर'र आपरै वरणावां नै मधुर बणावै तौ कठै ई भावानुरूप सबद प्रयोग सूं 'लू' अर 'बादळी' रै प्रभाव नैं दरसावै–

rt ?kedrk rkoMk] ped tk.k Ik.kA
y y jxMd vkork yvk yo çk.kAA

सबदां रै ठावां प्रयोग सूं कवि वातावरण रो निरमाण पण कर्‌यौ है। मरुधरा री भीसणता रै वरणाव वास्तै वौ अेकदम बोलचाल री राजस्थानी सब्दावली रो प्रयोग करै। लजावती, भुरडीजिया, बैरण, चटका, चौगिरद, डिडाय–डिडाय सबदां रै मारफत कवि लूआं री भीसणता अर करड़ैपण नैं दरसायौ है–

loj.k cj.k ytkorh] fgj.kk ihBk tgA
ri yvk j rko e rkck cj.kh ngAA

Hkjk : HkjMhft;k] yvk cj.k yk;A
pVdk ykx pkfxjn] iM fMMk; fMMk;AA

ठावा सबद–प्रयोग सूं कवि चंद्रसिंघ मरुधरा री वनस्पतियां, कूआं, बेरा, जोहड़ा, रहण–सहण, आद रो ई बोहोत मनमोवणा वरणाव मांड़्या है। लूवां रै तेज ताप सूं पींजू किण भांत पीळा पड़गा है, रो मंडाण कवि पीळीजिया, लाल अर बेहाल सबदा रै माध्यम सूं कर्‌यौ है–

yvk ykx fiGhft;k] vkek gky cgkyA
iht ejèkj ikfd;k] y ykyh T;ª ykyAA

वरणाव सैली रै अलावां कवि आपरी रचनावां–बादळी, लू– में संबोधन सैली रो ई प्रयोग कर्‌यौ है। संबोधन सैली सूं रचनावां में जठै नाटकीयता बधी है उठै ई वरणावां में मिठास अर मौलिकता रो ई निरवाह हुयौ है। दोई रचनावां में कवि इण भांत बतळावै क कोई दो मिनख आम्है–साम्है संवाद (बातचीत) करै है। अै ओळियां प्रस्तुत है–

ek ckjk ck[kkfV;k] fFkx&fFkx idM pkyA
yvk uMh vkork] f[k.kd jk[;k [;kyAA

चंद्रसिंघजी रो काव्यत्व उणा रै बरतीजिया दूहा छंद में समयोड़ौ है। 48 मात्रावां रै छोटै सीक छंद में कवि आपरी भावनावां अर कल्पनावां रो समाहार कर्‌यौ है। आधुनिक राजस्थानी कविता में इण तरिया रो मंडाण चन्द्रसिंघजी ई कर सक्या है। कवि आपरी बादळी, लू, डांफर अर कह मुकरणी में दूहा अर उणरै भेद सोरठा छंद रो ई प्रयोग कर्‌यौ है। दूहौ उणां रो वाल्हौ छंद है। इण रो म्होटौ कारण इण री सहज प्रस्तुति अर स्मृति हुय सकै। आं दूहा–सोरठां री अेक विसेसता औजू लखावै के मात्रा अर तुक री दीठ सूं अै ठावा है।

चंद्रसिंघजी री रचनावां सादृस्य मूलक अंलकारां सूं भरपूर है। ओपती उपमावां, रूपक, उत्प्रेक्षावां सूं कवि आपरै काव्य री विसै–वस्तु नैं घणी चावी बणायी है। सादृश्य मूलक अलांकारां रै अलावा

बीजा अर्थालांकार– प्रतीप, परिकर आद रा ई सांतरा प्रयोग मिळै। कवि अनुप्रास अलंकार रै सागै ई राजस्थानी रो चावै अलंकार वैणसगाई ई बरतीजियौ है। आं बरतीजिया अलंकारां रा उदाहरण प्रस्तुत है–

o;.k lxkbZ&

वाजै धीमो वायरो, आभो लोरा लोर।
छिणमण–छिणमण छांटड़ी, हिवड़ै उठै हिलोर।।

(बादळी)

सूकां ताल तळाइयां, फिर फिर भटका खाय।
पड़ै उठै उठ उठ पड़ै, अेढो किण बिध आय।।

(लू)

vuçkl&

बोझा बांठ सुकाविया, अड्या दड़ाळा कैर।
दड़ी पड़ी हिरण्यां जठै, लू बाळै किण बैर।।

(लू)

छोड़ मरोड़ छिपा मती, धण रो देख हवाल।
वता वता अे बादळी, साजन रा सै हाल।।

(बादळी)

mRçf{kk

नभ सूं उतरी वादळी ज्यूं वेर्यां पणिहार।
साजन सामा आविया, उळझ पड़ी उण वार।।

(बादळी)

सीधो सिर अूपर थम्यो टूट्यो सागी जोस।
जाणै लूआं ताव़ सूं सूरज भूल्यो होस।।

(लू)

miek&

तेज घमकतो ताव़डो चमकै जाणै साण।
ले ले रगड़क आंवतां, लूआं लेवै प्राण।।

(लू)

बूंदी लाल ममोलिया, हरियो आंगण खोड।
ओढ़ी धरती चूनड़ी तीजणियां री होड।।

(बादळी)

:id&

देख तपंती ताव़ सूं मुरधर ब्रख रै भाण।
हियो हिमाचळ अूझळयो, बह चाल्यो बरफांण।।

vuqo;&

अंबर झूलै बादळी धण झूलै झूलांह।

वेलां विरछां– डाळियां हिवड़ हिवड़ै मांह।।

(बादळी)

çrhi&

सुवरण बरण लजावती, हिरणां पीठां जेह।
तप लूआं रै ताव़ में तांबा–बरणी तेह।।

Hkkfreku&

अूगण चांदो अूगियो, मुरधा भरम धर्‌यो।
धरती लूआ धक धकै पाछो भाण फिर्‌यौ।।

viUgrh&

लुआं फिर–फिर रोहियो, रळकाया सै राह।
पथ मेटण मिस मारिया, पंथी दारूण दाह।।

¼[k½ ledkyhu dfo;k e BkM

चंद्रसिंघजी री काव्य जात्रा री सरुआत सुतंतरता संग्राम में म्हांणी हार सूं उफतायोड़ै वातावरण सूं व्ही। इण वगत देस में च्यारु कांनी पलायनवाद री थिति ही। हिन्दी साहित्य में आं परिस्थितियां वस छायावाद री सरूआत हुय चुकी ही। जयसंकर प्रसाद, महादेवी, निराला अर पन्त इण काव्य धारा में कवि रूप में थरपीजगा हा। चंद्रसिंघजी नैं मौकेसर आ काव्यधारा घणी चावी लागी अर वै इणी सुर में आपरी काव्य रचनावां लिखण लागा। चंद्रसिंघजी रै समकालीन कवियां में कन्हैयालाल सेठिया, नारायणसिंघ भाटी, गणेसीलाल व्यास उस्ताद, सतप्रकासा जोसी आद कवि हा। आं कवियां सूं तुलना करतां चन्द्रसिंघजी श्री किरण नाहटां नैं बतळायौ क ''इण काल में अेक भी अैड़ो लिखारौ कोनी हौ जकौ कवी रै रूप में आपरी कोई ढंग री इमेज बणा सक्यौ व्है। हां म्हारै बाद रा कवियां में नारायणसिंघ भाटी अेक दमदार कवी रै रूप में म्हनैं हरमेस पसन्द आयौ। सत्य प्रकास जोसी आपरी सांतरी भासा रै कारण म्हनैं अपील करतौ अर आज भी करै। जनकवी गणेसीलाल व्यास उस्ताद कुल मिला'र आदमी जीवट अर पांण आळौ हौ जद कै कविता वां रै वास्तै आपरी विचारधारा नैं लोगां तांईं पुगावण रो ज़रियौ ही। कविता रो इण रूप में इस्तेमाल म्हनैं कमती रूचै। इण भांत परम्परा रै हेमाणी अंक में चंद्रसिंघजी आपरै काव्य सिरजण नैं सिरै मान्यौ है।

कोमल कोठारी हेमाणी अंक (परम्परा) में आठ कवियां री कवितां री खतावणी करता हुया मानै क चाहै चंद्रसिंघजी राजनीतिक आन्दोळण सूं न्यारी कविता लिखी पण वै राजनीति में सदीव भाग लेवता रैया। वां री कविता थूळ प्रक्रति सूं सूखम प्रक्रति रै चित्रण री है। वां री कविता में पैली बार प्रक्रति नैं अेक मानवी मनोभोम माथै दरसाव करायौ। लू अर बादली जैड़ी प्राक्रतिक ओस्थावां रै ज़रियै सूं राजस्थानी कविता विसै गत मोड़ लियौ। जथारथ रो वरणाव भूंडणौ–बिड़दावणौ के मध्य जुगी उपदेसां री वांणी छोड़'र राजस्थानी कविता आपरै मन री मनोरम भोम माथै आवण नै खपी। प्रक्रति काव्य री दीठ सूं ई डॉ. किरण नाहटा चंद्रसिंघजी की कविता में उकेरीजियां प्रक्रति चितरामां नैं विसुद्ध प्रक्रति चित्रण री संग्या देवै। कैवण रो मतळब चंद्रसिंघजी आधुनिक राजस्थानी में अेक नुवी दीठ वाळा कवि हा। वै आधुनिक राजस्थानी कविता में विसै वस्तु अर प्रक्रति मंडाण नैं अेक नुवी दिसा दीवी।

4-6 mi lgkj

सैवट, चंद्रसिंघजी आधुनिक राजस्थानी काव्य रा सिरै कवि हा, जिका राजस्थानी काव्य में अेक नुवी काव्यधारा रो विगसाव कर्‌यौ। परम्परावादी सामन्ती परिवार सूं सम्बन्ध राखता हुया ई उणां री सोच

समाजवादी अर नुवा विचारां सूं भरयोड़ी ही। कवि आपरी रचनावां में मरुधरा री प्रक्रति रै मंडाण में पूरी तरिया सूं सफल रैयौ है।

राजस्थानी कविता नैं नुवौ मोड़ दियौ। इणनैं विद्वान मरुप्रदेस रो मेघदूत मानै। लू अर बादळ अेक दूजै रा पूरक है। इण वास्तै मिरत्यु रूपी सिव (लू) आ जीवन रूपिणी सक्ति (बादळी) रा प्रतीक मानीजिया है।

4-7 vH;kl lk: çLu

1. चन्द्रसिंघजी रै समै री परिस्थितियां रो परिचै दिरावता हुया उणां रै जीवनव्रत्त रो खुलासौ करौ।
2. चंद्रसिंघजी रै क्रतित्व रो उल्लेख करता थका 'लू' काव्य री सांगोपांग विरोळ करौ।
3. 'बादळी' री विसै वस्तु रो उल्लेख करता हुया, उण रै काव्य सौंदर्य री विरोळ करौ।
4. चंद्रसिंघजी रै प्रक्रति रै प्रति लगाव रै कारणां नैं बतळावता थका 'लू' रै प्रक्रति चित्रण माथै आपरा विचार–प्रगट करौ।
5. आधुनिक राजस्थानी काव्य में चंद्रसिंघजी री ठौड़ थरपौ।
6. चंद्रसिंघजी रै काव्यत्त्व री ओळखांण करावौ।

4-8 l nHk XkFk l ph

1. डॉ. किरण नाहटा – आधुनिक राजस्थानी साहित्य : प्रेरणा स्रोत एवं प्रवृत्तियां
2. परम्परा– हेमाणी अंक
3. परम्परा– आधुनिक राजस्थानी काव्य अंक

bdkbZ & 6

iqe[k dfo & x.ks'kyky O;kl ^mLrkn*

bdkbZ jk eMk.k

6.1 उद्देस्य

6.2 प्रस्तावना

6.3 विसय वस्तु : जानकवि उस्ताद : व्यक्तित्व

- 6.3.1 जनम
- 6.3.2 भणाई
- 6.3.3 कामकाज
- 6.3.4 पारिवारिक जीवण
- 6.3.5 सार्वजनिक जीवण अर सुतंतरता आन्दोलण मांय योगदान

6.4 जनकवि उस्ताद रो सिरजण

उस्ताद री प्रतिनिधि रचनावां

6.5 उस्ताद रौ काव्य : विस्लेसण

- 6.5.1 सामाजिक दीठ
  - 6.5.1.1 समाज रौ सोच
  - 6.5.1.2 उस्ताद रै काव्य मायं नारी
  - 6.5.1.3 उस्ताद री आध्यात्मिक अवधारणा
  - 6.5.1.4 धरम, वरग अर वरण विहीन समाज री थरपणा
- 6.5.2 राजनीतिक दीठ
- 6.5.3 रूजगार अर धन री दीठ
- 6.5.4 जनकवि रूप में 'उस्ताद'
- 6.5.5 राजस्थानी काव्य परम्परा मांय गणेशलाल व्यास 'उस्ताद' री भूमिका

6.6 इकाई रौ सार

6.7 अभ्यास सारू सवाल

6.8 उपयोगी पोथ्यां

6-1 mís';

हरक रचनाकार रा केई महताऊ उद्देस्य हुया करै। वो आपरी रचनावां सूं उण उद्देस्यां नै पूरण करण री सारथक कोसीस करै। जनकवि गणेसलाल व्यास 'उस्ताद' सूं संबंध राखणवाळी इण इकाई रा खास–खास उद्देस्य नीचै मुजब है–

(1) विद्यार्थी जनकवि री जीवण जातरा रौ परिचै प्राप्त करैला।

(2) जनकवि रै साहित्य संसार अर रचनावां रौ ग्यांन करैला।

(3) आधुनिक राजस्थानी काव्य में जनकवि री ठौड़ समझैला।

(4) समाज री जथारथी अबखायां नै समझ सकैला।

(5) समाज सुधार सारू सीख मिलैला।

6-2 iLrkouk

गणेशलाल व्यास 'उस्ताद' नै साहित्य परम्परा मांय 'जनकवि' री उपाधि दिरीजी है। 'जनकवि' सूं अभिप्राय हुवै 'जनता रौ कवि'। इण उपाधि री दीठ सूं देखां तो जनकवि रौ अरथ हुवै 'जनता रौ कवि' जिकौ जनता री बात लिखै, बोलै, इणरै साथै–साथै जनता नै आपरी रचनावां सूं नूंवी सीख देवै।

जनकवि उस्ताद रै काव्य नै इण दीठ सूं देखां तो लखावै के उस्ताद आपरी काव्य साधना सूं समाज रै मंगळ री साधना करी। वो आपरै उद्देस्य मांय सफल रह्यौ जनकवि री उपाधि इणरौ सबसूं मोटौ साक्ष्य कह्यौ जा सकै। सुंततरता संग्राम मांय आपरी महताऊ भूमिका निभावतां 'उस्ताद' समाज नै जगायौ–चेतायौ सोसण अंधविस्वास अर रुढियां रै खिलाफ संघर्स करण रौ पाठ पढायौ।वो आ बात समझायी'क भुजबळ अर मैनत रै पाण इज विकास हुय सकै।

'उस्ताद' इण बात नै समझायी कै समाज रौ विकास किणी अेक मिनख सूं इज नीं हुवै सगळा साथ हुयां विकास हुवै। इणी कारण उस्ताद समाज नै भी चेतावण रौ काम कर्‌यौ, उणरौ मानणौ हो कै नारी चेतना रै अभाव में समाज रौ विकास सम्भव नीं है।

गणेश लाल व्यास 'उस्ताद' रै व्यक्तित्व अर कृतित्व रौ विगतवार मोल कर राजस्थानी साहित्य अर राजस्थानी जनमानस मांय उणरी भूमिका री निरख–परख इण इकाई मांय करीजै ला। इणरै साथै–साथै जीवण रा न्यारा–न्यारा पखां सूं जुड़िया उणारा विचार किण भांत रैया वांरी ओळखाण भी अठै कराई जाय रैयी है।

6-3 fol ; oLr| & tudfo mLrkn 0;fDrRo

6-3-1 tue

गणेश लाल व्यास 'उस्ताद' रौ जनम 21 मार्च, 1907 (संवत् 1964 री चैत सूदी सातम) नै जोधपुर में हुयौ। आपरा पिता श्री चन्द्रभाण जी (गुडोळ जी) हो। जिका खुद भी घणा स्वाभीमानी हा। इण स्वाभीमान रै पांण वे राज री गुलामी नीं कर सक्या अर नौकरी छोड दी। गुडोल जी भी कविता करता हा जनकवि उस्ताद रै जीवण माथै वांरै व्यक्तित्व री ग्हैरी छाप पडी।

6-3-2 Hk.kkb|

जनकवि उस्ताद औपचारिक भणाई की घणी नीं लेय सक्या पण जीवण संघरस अर अनुभव वांनै घणौ आगै लेयग्यौ। वांरै खातर आ बात कैयी जा सकै *"He was well read though not having any educational qualification".* (बिना किताबी ग्यान वे घणा ग्यानी हुयग्या)। जीवण रौ अध्ययन वे घणौ ग्हैराई सूं कर्‌यौ अर ओ अध्ययन ई वांनै मोटौ कवि अर विचारक बणाय दियौ।

6-3-3 dkedkt

वे आपरै जीवण री सरुआत राज रै कामदार रै सरुप में करी। पण ठिकाणां में जीवण री अबखायां नै देख वांनै लागौ इण नौकरी सूं वे सोसण अर अत्याचार रा भागीदार अर साक्षी बण रया हा इण वास्तै वे आ नौकरी छोड दी। वे सोच्यौ जे समाज रा सेवा करणी है तो आ नौकरी छोडणी पडैला। वे नौकरी छोड दी।

मारवाड़ री नौकरी छोड्यां पछै वे बंबई पूग्या अर रेसकोर्स में 'जॉकी बॉय' रौ काम कर्‌यौ। अेक अंग्रेज रै सम्पर्क में आयां, आप पत्रकारिता कानीं झुकग्या अर 'बी.सी. हार्निमेन' कनै ''बम्बई क्रानिकल'' में काम कर्‌यौ। अठै काम करतां उस्ताद पत्रकारिता, अंग्रेजी भासा अर साहित्य रौ ग्हैरौ ग्यांन कर्‌यौ। इणरै पछै आप पाछा मारवाड़ आयग्या अर समाज सेवा कानीं झुकग्या।

6-3-4 ikfjokfjd thou

'उस्ताद' रौ व्यक्तित्व किणी सीवं में बंध्यौ नीं। सामाजिक रीति रिवाज वांनै नीं बांध सक्या। अेक कट्टरपंथी पुस्करणा परिवार में जनम्या पछै भी ब्याव आप अेक राजपूत डावड़ी सूं कर्‌यौ। 'रंगूबा वांरै जीवण री इज नीं वांरै' संघर्स री भी सहभागी बणी। उण जुग में अन्तरजातिय विवाह री हिम्मत अपणै आप में अेक खास बात कैयी जा सकै।

6-3-5 lkoltfud tho.k vj lrrjrk vkUnkyu ek; ;kxnku

'उस्ताद' आपरौ जीवण इस समाज अर रास्ट्र नै सूंप दियौ। उस्ताद आपरी भूमिका समाज अर रास्ट्र दोन्यां वास्तै घणी ईमानदारी सूं निभायी अर आपरै कर्त्तव्य नै कदी नीं छोड़्यौ। आजादी नीं मिळी जठै तांई आजादी रै वास्तै संघर्स कर्‌यौ अर ओ संघर्स वारै जीवण रै छैलै सांस तांई चालतौ रह्‌यौ।

सुतंतरता रै पुजारी अर सैनाणी रै सरुप में उस्ताद रौ जीवण बाळपणौ सूं इज सरु हुयग्यौ हो। ठिकाणै री नौकरी में जद कामदार बण्या ठीक उण इज दिन सूं उस्ताद रै रास्ट्र प्रेमी रै जीवण रौ श्रीगणेस हुयौ। कामदारी करतां थकां वे ग्रामीण जन–जीवण नै अन्तस री दीठ सूं परख्यौ अर देख्यौ। ठाकरां रा अत्याचार, सासकां रौ सोसण, करसां री माली हालत, लुगायां अर टाबरां री दुरदसा उस्ताद रै मन नै बदळ दियौ। 'उस्ताद' कामदार सूं बणग्यौ एक विद्रोही, सुतंतरता रौ पुजारी अर जनता रौ सांचौ सेवक।

कामदारी छोड्यां पछै उस्ताद बम्बई आया। 'जॉकीबॉय' री नौकरी पेट पालण सारु करी। अठै इज आप हार्निमेन सूं मिळ्या जिकौ उस्ताद नै सुतंतरता रौ पाठ पढायौ, राजनीति री सीख दी अर बात नै सांचै सरुप में प्रस्तुत करण री कला सिखाई।

उस्ताद इण बात नै जाण भी ली ही'कै जनता नै आपरा अधिकार अर कर्त्तव्य सारू सावचेत करण री जरूरत है अर जाग्रति–सन्देस–अखबार सूं जनता तांई पुगाया जा सकै तो वे अखबार नवीसी सरू करी। पत्रकारिता सूं तो उस्ताद पूरै जीवण जुड़्योड़ा रह्या। जनता नै वे आपरी विचारधारा री जाणकारी आपरै लेखां सूं दी अर सुतंतरता री भावना रौ प्रचार कर्‌यौ। तत्कालीन समाज रौ एक सांचौ चितराम जनता रै सामीं राख्यौ अर जनता नै मजबूर कर दियौ'क वे आपरै अधिकारां अर कर्तव्य वास्तै लड़ै। उस्ताद री कलम रै तीखेपणै अर कैवण री खिमता नै कदी भुलायौ नीं जां सकै।

सन् 1930 में जद उस्ताद रौ ब्यांव हुयां नै थोड़ाक दिन ईज हुया कै गांधीजी देस में एक आन्दोलन छेड़्यौ अर मोट्यारां रौ आव्हान कर्‌यौ'कै देस री सेवा रै वास्तै आगै आवौ। गांधी रै हेलै नै उस्ताद अंगैज'र आन्दोलन में कूदग्या। नूवीं बींदणी रै मोह नै छोड़ राजस्थानी संस्क्रति रा आदरसां नै निभावता वे जेळ गया। नवयौवना रै बाहुपास री ठौड़ बेड़ियां अर हथकड़ियां रै बाहुपास में बंधग्या। पण उस्ताद रौ क्रान्तिकारी व्यक्तित्व इण हथकड़ियां नै राजी हुयनै स्वीकार करी। करसां रै ज्यूं मजदूरां री हालात नै वे खुद इन्दौर में भोगी अर मजदूरां रा हिमायती बण्या। मजदूर संघटनां नै चेतौ करायौ कै असली क्रान्ति तो मजदूर इज ला सकै इण साम्यवादी चिंतन रौ तो वै घणो प्रचार प्रसार कर्‌यौ।

आजादी री लड़ाई में केई परिसदां रा गठन हुया जिकी आपरै बळबूतै माथै आखै भारत में आजादी री जोत जगावती। जोधपुर में भी इण तरै रौ एक संगठण बण्यौ जिको जनता री आवाज सासकां तांई पूगावण रौ काम कर्‌यौ। सन् 1938 में 'मारवाड़ लोक परिसद्' रै नांव सूं मोटयारां रै इण संगठन रा उस्ताद, जयनारायणजी व्यास रै साथै सदस्य बण्या।

'मारवाड़ लोक परिसद' रै कामकाज सूं सरकार घणी बैराजी हुयी। उणनै लखायौ कै इणसूं म्हारै अस्तित्त्व नै आंच आ सकै, इण वास्तै जद दूजै महायुद्ध री सरूआत हुयी तो रियासत री

सरकार इण नै गैर कानूनी संगठण करार दियो, इणरा पदाधिकारियां अर सदस्यां रै साथै उस्ताद जेळ में बंद हुया पण पछै सरकारा वां सगळां नै छौड़ दिया।

मई 1942 सत्याग्रह आन्दोलन में फेर सैंग नेतावां रै सागै उस्ताद नै जेळ जाणौ पड़्यौ। इण बार हालत घणी खराब करीजी, जेळ में घणी मैनत मजूरी करणी पड़ी अर केई दुःख देखणा पड्या। इण बिखै में ''गुडौलजी'' (पिता) भी रामसरण हुयग्या। अठै तक री यात्रा में उस्ताद आपरी कवितावां सूं घणा जग चावा हुयग्या हा। गीतां, निरत रूपकां नै सुणण में लोक मैळो माण्ड देवता। उस्ताद री कवितावां रो केई संकलण छप्या हा। घणकरी पोथ्यां तो सरकार जब्त कर ली ही।

राजस्थान में साम्यवाद अर समाजवाद रै दरसण अर चिन्तण रौ प्रचार–प्रसार, साम्यवाद रौ उजास जनता तांई पूगावणवाळौ एक उस्ताद इज हो। खरी कलम रौ धणी उस्ताद आपरी आवाज कदैई किणी रै दबाव में आय बन्द नीं करी। कित्ती बार आपरै काव्य माथै रोक लागी, केई पोथ्यां जिणमें 'गरीबों की आवाज' अर 'बेकसों की आवाज' जिसी तो सरकार जब्त कर ली पण इण सूं भी जनकवि री कलम कदैई नी रूकी, वा तो आपरै कर्त्तव्य री पालणा आखरी दम तक करती रैयी।

1946 में अंतरिम सरकार बणी अर 1947 में देस में स्वराज्य री थरपणा हुई। व्यासजी राजस्थान रा मुख्यमन्त्री बण्या। इण समै तक उस्ताद थोड़ा हर दीठ सूं थाकण लाग्या तो व्यासजी आपनै नौकरी करण री अरदास करी अर घणौ कैवण सूं सेवट सूचना और जनसम्पर्क विभाग में आप सेवा करणी सुरू कर दीवी।

देस री आजादी पछै ई कवि री कलम विराम नीं लियौ क्यूं'कै स्वराज आयौ पण सुराज नीं आयौ। नेता, सरकार, अफसर सगळा स्वार्थ सिद्धी अर बेईमानी में लिप्त हुयग्या। उस्ताद नै ओ रंग ढंग दाय नीं आयौ, वे इण रै खिलाफ आवाज उठायी जिकी उणां रै काव्य में दीसै। वे कदैई किणी सूं दब्या कोनीं। वां रौ ओ दबंग व्यवहार अर स्पस्टवादिता केई लोगां नै खारी लागती अर इण रौ परिणाम ओ हुयौ'कै नौकरी में वांनै केई फोड़ा पड़्या। वे अफसरसाही सूं दबग्या। अफसरसाही रै अत्याचार नै 'उस्ताद' रौ स्वाभीमानी व्यक्तित्व सहन नीं कर सक्यौ अर वे थाकग्या। वो मिनख जिकौ आखी उमर संघर्स कर्‌यौ, समाज रै खिलाफ, विदेसी सत्ता रै खिलाफ, अरथ व्यवस्था रै खिलाफ, वो इज व्यक्ति आपरै बखत में खुद रै राज रै आगै अर अफसरसाही सूं हारग्यौ अर वांनै एक तरै रौ सदमौ लाग्यौ। ओ सदमौ इण कठोर हियै नै झकझोर दियौ।

परिस्थितियां सूं झूझणौ तो उस्ताद रै जीवण में लिख्यौ हो। आखी उमर तांई वे झूझया अर आखिर सैं सूं झूंझता इज इण महान व्यक्तित्व रै जीवण रौ अन्त 29 अक्टूबर, 1965 रै दिन जयपुर में हुयौ।

भौतिक रूप सूं भलां ईं 'उस्ताद' आज नीं पण उस्ताद रौ काव्य, उस्ताद रौ दरसण उण रा सिद्धान्त अर उस्ताद रै जीवण री प्रेरणा आज तांई समाज में लोगां नै सीख दी, देय रैयी है, दैवती रैवैला अर जठै तांई वरग भेद, वरण भेद, जाति भेद आद खत्म नीं हुवैला उस्ताद रा स्वर लोगां रै कानां में गूंजता रैवैला।

6-4 tudfo mLrkn jk fljt.k

जनकवि उस्ताद री कलम सूं निकळयोड़ौ अेक – अेक सबद वांरै कृतित्व री ओळखांण करावै। राजस्थानी हिन्दी, उर्दू में लिख्योड़ी वांरी रचनावां जन में घणी चावी हुई।

'आग' 'बेकसों की आवाज', 'गरीबों की आवाज' वांरी उर्दू हिन्दी रचनावां अर राजस्थानी कवितावां तो

न्यारै–न्यारै सरूप में सामीं आवती रैयी जिकी पाछै केई ग्रंथावलियां रै रूप में छपी।

इण इकाई में उस्ताद री ग्रंथावलियां रौ नीं वांरी खास–खास कवितावां री ओळखाण करायीजै है जिणसूं वांरी सिजण ताकत रौ परिचय मिळ जावै।

dfork jh ckuxh

^^Eg vk;k vdy crkck u**

म्है आया अकल बताबां नै, जनता रो राज जमाबा नैं
राजा देख समझली, सारी रीतभांत रजवाड़ां री
सैंग ढोल में पोल भरी है, धूम मची है धाड़ां री
धाड़ैत्यां नैं धमकाबा नैं
बड़ा ठिकाणा जोर जतावै, करै होड़ रजवाड़ां री
माडांणी महाराजा बणग्या, चाल ढाल सब भांडां री
बड़पण रौ बैम मिटाबा नैं।
मोटा अफसर लिवी मोटरां, अधबिचला घोड़ा राखै
छोटां रै आटै रो घाटो, रिसवत खाय धान चाखै
भवसागर भेद मिटाबा नैं।
कामेती, कणवास्या, भांबी, राखै ठाठ नबाबां रा
चवड़ै चालै, चाल मुसद्दी, पड़दै किरतब काबां रा
पड़दां नैं परा हटाबा नैं।
सूम सेठिया बण्या सयाणा, लोही चूस मजूरां रो
एक–एक रा कर इक्यावन, सार सूत ले सूरां रो
बोहराजी नैं भिड़काबा नैं।
जोसी, पंडा और पुजारी, पीर पादरी साध जती
नित–नेमा रा नखरा राखै, फूट–झूठ सूं फिरी मती
अणभणियां अकल उपाबा नैं
खेड़ा सै खड़बा वाळां रा, सम्पत सैंग मजूरां री
राज हथोड़ै दांतड़ली रो बीती बात हजूरां री
सूतोड़ा सेर जगाबा नैं।।''

dfork jk lkj & इण कविता में कवि आपरै काव्य उद्देस्य नै एकदम साफ रूप सूं दरसावै, जनता नै उण री हालत रौ ग्यांन कराणो, सासक वरग री पोल बताणी कवि आपरौ कर्त्तव्य समझै। उण रौ कहणौ है'क सासक वरग आपरै बडपणै रौ कूड़ो प्रचार करै। म्है इणरै बडपणै रै बैम नै मिटा दूंला। अफसर अर केई बिचोलिया जिका खुद नै जनता रा हेताळू मानै वे इज जनता रा सबसूं मोटा दुस्मण है अर जिका सबसूं मोटा रिस्वतखोर है। कवि चावै'क जनता अर सासक रै बिचाळै सम्बन्धां में जिका आडा आया है उण समन्दां नै पाटणौ घणौ जरूरी है।

अे साधु–सन्त जिका नित नेम रै नांव माथै जनता नै दबा राखी है उण जनता नै अबै चेतो कराणौ कवि रौ कर्त्तव्य है अर वो इज कवि रौ उद्देस्य है। कवि री विचारधारा रौ दिग्दरसण कविता रै आखिर में हुवै जठै वो मजदूरां रै राज री बात केवै। उण रौ केवणौ है के खड़ै जिण रौ खेत अर उत्पादन करै उण

री सम्पत्ति, इण रै अलावा वो चावै कै राज तो हथोड़ै अर दातंड़ली रौ हुवणौ चाइजै। अर्थात् वो साम्यवाद री थरपणा करणी चावै। कवि री धारणा है'क सारी सगती तो मजूरां में इज है। अे सूत्या सिंघ है, अे जिण दिन जाग जावैला उणी दिन राज में चौंफर सांति अर सम्पन्नता रा दरसण हुवैला। इण दिन री थरपणा रै वास्तै कवि आपरी कविता प्रस्तुत करै।

eur jh t cky

''आ जमीं सिरां रै मोल साथी, इण रौ भारी तोल
बंद मैनत री जै बोल।
धर मजलां परदेसी आया, किवी चाकरी चोखी
सूतोड़ां री गरदन काटी, सरम पगांत्यै नांखी
ओ रजवाड़ा रौ डोळ साथी, कोरी छोरारोळ
बंदा मैनत री जै बोल!
पाळी ऊपर एक डोकरो, सौजुग पैलां मरगो
पूत मोल में धरती दाबी, नवो रावळो बणगो
आ जागीरां री पोल साथी, निरभै हुय नै खोल''।
बंदा मैनत री जै बोल।

dfork jk lkj & उस्ताद इण कविता में मजदूरां नै अेकजुट करण री कोसिस करी है, वौ कैवै कै रास्ट्र री ताकत मिनख इज है। थे मैनत रै पाण इण रास्ट्र अर समाज माथै जीत हासिल कर सकौ हो इण वास्तै मैनत करौ, जिका लोग थां माथै सासन कर रह्या है वे गिणती में किताक है? थे वांनै खतम करौ, वांरो अस्तित्व इज मिटा दो, थांरो राज आ जावैला।

इण कविता रै पांण जठै कवि एक कानीं मजूरां नै संगठित करणौ चावै तो दूजी कानीं परतंत भारत रा वासियों ने जगावण रौ भी सन्देस देवै'क थे कीं बलिदान दैवौ अर आपरौ कर्त्तव्य पूरौ करौ। हरेक आपरी खिमता मुजब देस रै वास्तै काम करैला तो करोड़ सपूतां री आ जननी भारत मां कदैई गुलाम नीं रैवेला, आ सुतंतर हुय जावैला।

^lkfFk;k tkx.k jk fnu vk;k**

जागण रा दिन आयो बेलियां जागण रो दिन आयो
ओ ढळतो दिन आयो, जुग जगत पलटियो आयो
दिन बीत गया, जद बै मतवाळा बांरा सिर कटवां देता
धाड़वियां सूं ढोक भराता, बैहता धन पटका लेता
जद कमतरिया रोता रह जाता बै करता मनचायो
यां सगळो जगत नचायो।
बै कमधज कांदा रोटी खा मुरधर नै माथा देता
कटकां में लड़ता, लाड्यां सूं जुग – जुग भर अळगा रहता
बामण, राज, सेठ, करसां नै, जुगां–जुगां सूं पीस रया
हड़बड़ाय हळवाणी वाळा, रण रो संख बजायो
यां जबरो जग मचायो।
बराबरी रो आज जमानो, अब कुण छोटो नै कुण मोटो
दो हाथां री खाय मजूरी, बो निकमां सूं नित मोटो
अै गिणती में गहरा कमतरिया, बै हथियार उठाओ
हिम्मत सूं कदम बढायो।

dfork jk lkj & वे दिन गया परा जद स्वामी भक्त लोग आपरै धणी रै खातर माथौ हाजर कर देवता। धन, धरती, धरम अर तिरिया री लाज राखण रै वास्तै खुद मिट जावता। वे आपरै धरम रौ पालण करता, अबै उण तरै रा लोग नीं रैया है, सिंघ स्याळया बणग्या हैं, वीरां रै तलवारां री धार भोटी हुयगी है। ओ सामंत वरग अबै सुरा– सुन्दरी में डूबग्यो है, वांनै अबै धन, धरती अर प्रजा रौ कीं ध्यान नी रह्यौ अर जिण कारण वे चेत्या नीं है इण वास्ते अबै साथीड़ां थे जागौ।

djek jh ydhjk u dk;j lhl fuokl h

करमां री लकीरां नैं कायर सीस निंवासी
पण सुळझया सबळां नैं, सुभ मारग मिळ जासी
रीत–भांत रो डर करियां सूं जनम अकारथ जावै छै
खूंटै बंधिया ढोरां री ज्यूं निकमां चक्कर खावोला
कूवै पड़िया हीरां नै, कुण मूरख परखासी
बाबोसा री भोळावण सूं पूंछ पकड़ली पाडां री
मारग काटण आस राखली, पूटी टूटा गाडा री
हाथ बिखरिया हीरां नै, दूजा कुण सिरकासी
पंडितजी रा पोथी–पौथा, ठग बिद्या रा ठागा है
साधु, मुल्ला जग गाडै में, जुतिया माठा ढागा है
अै ओझा अक्कल री सीरां नै खांडै खड़कासी
महल माळिया मोटर वाळा बिना काम रा ठागा है
कमतरियां री छाती ऊपर अै चुणियौड़ा भाठा है
मत यां खीरा नै, धूआं आग लखासी
उण जुनै मारग क्यूं जावो जो लै डूबै खाडै में
कूदयां तिरस बुझैला कींकर कादै भरियै नाडै में
चोकी देवी अमीरां नैं, सूतोड़ा नैं खासी।।

dfork jk lkj & करमवाद अर भाग्यवाद रै भरोसे जिका मिनख आपरै मारग जोवै तो कवि गणेशलाल ओ मांनै के वो मिनख कायर है। जिका मिनख सुळझ्योड़ै विचारां रा हैं वांनै सबळ सफलता मार्ग में मिळती जावै। जे थे पुराणा सिद्धान्तां री जड़ां सूं बंध्योड़ा रह्या तो थांरौ जीवण एक ढ़ोर सूं इधकौ नीं रेवैला जिकौ खुद रै मालिक री इच्छा मुजब आंख्यां रै पाटा बांध्योड़ौ चाबुक रै जोर सूं चालै अर खुद री जूण पूरी करै।

खुद रै परवार अर समाज रा पुराणां मूल्यां नै पकड़ लियौ तो थारौ विकास रूक जावैला। पंडित, मुल्ला, मौलवी, साधु अर सन्तां रौ जे थे विस्वास कर्‌यौ तो थारै वास्ते आगे खाडौ त्यार है। अंधविस्वास रा बैरा में पड्यां पछै थांनै विकास कानी जावण में घणौ बखत लागैला। साधु संत, जोगी–जत्ती अर वांरा थोथा विश्वास सगळा ठगपण है, वे विकास रै मारग रा बाधक है। पूजीपति वरग थांरी छाती माथै नाच र्‌या है। वे मजूरां रै भुजबळ सूं आगै बधिया है, इण रौ भी थांनै चेतौ राखणौ है, इण वास्ते थे जूनै मारग मत जावौ क्यूं के वो काळौ भूतकाल थारै भविस में कदी उजाळो नीं कर सकैला।

ukjh u txko.k okGh dforkok

ij.;k Mj erh

तूं भीड़ां सूं भय खाय, परण्या डरै मती
अै डरियोड़ा मर जाय, साजन डरै मती
बै जगत उबारै सूरमा, ज्यांरा लड़तां रा सिर जाय।

अै लांठा भिड़ बाजै घणा
अै दोरा दिन व्है देस रा, जद आळाणो कर जाय
तूं उण गैलै मत जाय, परण्या डरै मती

बा निपट निपूती मावड़ी
जठै पूत कपूता नीवड़ै, कोई रण छोडै घर जाय–साजन
नर सूरां कद फिर जाय–परण्या डरै मती

बा साव सवागण सोवणी
जिण रणबंका भरतार सूं, सगळी सांधा सर जाय–साजन
भल नाक रैवै नर जाय–परण्या डरै मती।

आ धिक मिनखां देह आपणी
जद मूछाळा मिग्गा बणै, कोई धूंसो सुण डर जाय साजन
ज्यूं पाका फळ खिर जाय–परणय डरै मता ।

अै धन, टाबर नै कामणी ओ देसड़लो डूबां थकां,
सै जीवतड़ा मर जाय–साजन
अै देस तिस्यां तिर जाय, परण्या डरै मती।

इण कविता में मिनख नै उणरौ करतव्य बोध करावती तिरिया आपरै धणी नै कैवै के तूं वीरां सूं टक्कर ले पण डर मत। जीवण सूं हार मत मान क्यूं'क जे डर'र हारग्यौ तो थारी मौत पक्की है, डर मत, तूं अग्यांन अर अंधकार री गैल मत जा।

स्त्री आपरै भरतार नै कैवे तूं हार मान पाछौ घरै आयग्यौ तो थारी मौत है डरण वाळा कपूतां नै जनम देवण वाळी मां तौ बांझड़ी इज ठीक है। अैड़ा धणी रै धणियाणी रो सवाग अमर है जिका आपरै करतव्य माथै निडर हुय नै आगे बढ़ै। करतव्य सूं पाछौ डिग्यां जीवतौ तो तूं रैय सकै पण थारौ वो जीवणौ तो मरणे सूं ई खराब है।

थां जिस्या वीरां रै रैवतां थकां देस अंधकार में डूबै तो थारी मरदानगी में तो धूड़ है पण डस्यौड़े मिनख रौ धन, धरती अर तिरिया सैंग मस्यौड़ा रै उनमान ई है, उण अेक री हिम्मत सूं सब उज्जवळ है इण वास्तै, हे भरतार, तूं डरनै पाछौ मती आव।

आ नारी, मिनख नै स्वाभिमान पूर्ण जीवण री सीख देवै अर कैवे पइसै रै वास्तै किणी रै आगै मत झुक।

[kkrk ckgjk l er ?kkyk

थांनै समझाऊ सिरदार, खातो बोहरां सूं मत घालो
ऊभी अरज करू 'भरतार, खातो बोहरा सूं मत घालो
घण खातां म्हे थोड़ो खासां, दस बीघां थोड़ा ई बासां
हांजी, हांजी, घर में, रहसी कीणो–चार
फाटा कपड़ा म्है सी लेसां, सीयाळै तप सूं जी लेसां
हांजी, हांजी, लाटां नवा लूगड़ा त्यार
अै निवता चालै, मीठा भाखै और पेट में छुरियां राखै
हांजी, हांजी, लाटां नवा लूगड़ा त्यार

बीज बाजरी सड़िया देसी, उपर दुगणा पइसा लेसी
हांजी, हांजी, जासी सो घर काळी धार.................

मिनख मरस्यां अे आसी, माडाणी मोसर करवासी
हांजी, हांजी, बातां सांची कैवै घरनार

अेक ऊंचै आदर्स नै आगै करतां वा केवै म्है म्हारी जरूरतां नै कम कर दैस्यां पण उधार नीं खावां। ज्यूं त्यूं गरीब गुजराण कर लेस्यां पण थे उधार मत लावो।

वा इण बोहरा री नीत सूं अणजाण कोनी, क्यूं के बोहरा थोड़ा पईसा देर घणौ ब्याज लेवै अर उण ब्याज नै चुकातां–चुकांतो मिनखजूण पुरी हुय जावै। इण ब्याज साटै घर, जमीं, ढोर डांगर सैंग बिक जावै अर मिनख रै कन्है रैवै उणरौ दुःख अर कै रैवै दिवाळौ। रुढिगत परम्परावां नै निभातां थका अर पइसै री मार सूं मरता कैई पीढियां बीत जावै, मिनख खत्म हुय जावै, जिनगाणी खत्म हुय जावै पण ब्याज अर दिवाळा तो नितरा दुगणा–चोगणा हुवता जावै। अै बोहरा तो सांप है, आं नै दूध पार क्यूं विस उगळवावो, यां सूं दूरी भली। एक साची अर्द्धांगिनी रै रूप में आ आपरै धणी नै सीख देवै।

vkt knh j! iN! jh dforkok

जिण आजादी रै वास्तै अेक लम्बौ संघर्स कर्‍यौ, केई बलिदान दिया, कितरा ई सपूत आपरा प्राण गंवा दिया, उण आजदी रै आयां पछै इण देस रा जिका हालात हुया, उण हालात नै देख जनकवि री आत्मा घणी कळपी अर जीव घणौ दुख पायौ उण रौ खुलौ रूप 'उस्ताद' रै काव्य में दीसै–

आछौ आयो बापजी, आजादी रो जोर
लोक खजानो लूटबा, चोड़ै चढ़ग्या चोर
चोड़ै चढ़ग्या चोर, ढोर जनता नै जाणै
गादयां पर भाड़ैत, सैंत में मूंछा ताणै
उस्तादां री आण, सेठिया चरै ठाण है
डर सूं देवै डाण, लोक रो किचरघाण है
घर सायब री सायबी, जनसेवा रो नांव।

सोदे बिकगी सायबी, चढ़ग्या फुट्या ठांव
चढग्या फूट्या ठाव, नाव रो कियो नगारो
कूट–कूट ने चूंट चूंट करग्या चटकारो
उस्तादां री आण, गधां री किस्मत जागी
बिना हिलायां कान, पूठ पर हूकमत आगी।

आजादी मिळ्यां पछै जिका नेता गादियां रै चिपग्या, वांरी पोल बतावता कवि लिखै– वे राजनीति सै धंधो बणाय लियौ है। रिसवत अर भ्रस्टाचार तो सिस्टाचार में बदळ्या है। वे आपरी मौज मस्ती में जनता रौ धन लूट रह्या हे। विकास रै नाम माथै वे देस नै डूबावण रौ इज काम कर रह्या है।

जिणां रै हाथां में सत्ता, जनता री सेवा सारू सूंपीजी, वे जनता रा रक्षक नीं भक्षक बणग्या। पैलां तो सोसण अर जनता री लूट छांनै–छांनै हुवती, अबै जनता रा सेवक जनता रा हेताळू बण'र खुद रो थैलियां भरण में लागौड़ा है–

नेहरू रहग्यो अेकलो, मरग्या सै दिगपाळ
लांरै बचग्या भूखणा, के गंडक के स्याळ.............

मैणत भूखै पेट, सेठिया पूठ भरै है
उस्तादां री आण, चीचंड़ा चिपग्या गादी
धन हकुमत रै लोभ, कपूतां स्यान गमादी।

भलो डुबोयो देस नै, कायम कर जनराज
पूजा परिमिट पंथ री, रिसवत रै सिर ताज
रिसवत रै सिर ताज, दाझगी जनता सारी
घर–घर मांडी हाट, दलाली ठेकेदारी
उस्तादां री आण, काण रा प्राण सिकै है
पड्या अडाणा राछ, नकद में काछ बिकै है।

साचा देस भगत तो कोई सा रह्या है क्यूं कै सब आदरसवादी नेता तो मरग्या है, अबे तो जिका भी नेता रह्या है वे जनता रा सेवक नीं, खुद रा सेवक है। वे हरेक काम खुद री स्वार्थ पूरौ करै, मिनखपणै नै वे बिसार दियौ है। खुद रै पेट अर पूठ भराई आलावा दूजौ काम नीं सूझै। वे जनता री लोहीं चींचड़ा रै ज्यूं चूस रह्या है।

vj c>kxM

अरे बुझागड़
थारां जंतर जोतस अणुबम
कोरी फाड़–उधेड़–बैंतणी, कम सीणा है
जन लखग्यो पिंडताई री परघै पोची पींदै तीणो है

अरे मानखा
इण जुग जीवण री गत लेणी
पिण क्यूं डिगमिग थारा पगल्या, मन हीणो है
डरप मती, दो हाथ मजूरी–काम घणो, धरती धीणो है

अरे सूरमा
जुग–झाटक री धमक सुणी जद
घर क्यूं न्हाटै, कमर खुली क्यूं रंग खीणो है
भिचक मती, जीवण सारू पग–पग लड़णो–मरणो–जीणो है

अरे जवानी
नर–नारी री नस क्यूं निंवगी
लाल रगत री गरमी निठगी, सुर झीणो है
भूल मती इमरत पैली सागर मथणो है, विस पीणो है

अरे सुगायक
नवै मिनख रै सादै सुर में
जन–मैनत री कथा सुणा जद परवीणो है
उळझ मति, जन–जुग–जागण में साचो धन कपड़ो–कीणो है

विग्यांन री विनासक सगती रौ कवि हामीं नीं है, उणरौ मानणौ है कै जिका लोग विकास रै नाम माथै मिनखा जूण सारू मौत रौ इंतजाम कर रह्या है वे मिनख रा हेताळू नीं है। अणुबम बणावणौ प्रगति रौ सूचक नीं है क्यूंकै इणरौ दुरुपयोग मिनखां सारू घातक है। इण वास्तै जीवण रै मोल माथै विकास करणौ आछी बात नीं है। इण धरतीं सूं विकास करां उणरी दूजी कोई होड नीं है।

समै आया जिका रूकै वे खुद इज सैं सूं मौटा दुस्मीं है। जवानी में जिका देस, रास्ट्र सारू बलिदान नीं करै वा रौ जीवणौ बिरथा है। जे जीवण रौ आणंद उठावणौ है, सुख रूपी इमी रा प्याला पीवणा है तो पैली मैनत मजदूरी रै विस रा प्याला पीवणा पड़ैला। विस बिनां इमरत रौ महतब कीं नी है।

jkt cnGX;k Egku dkb\

इण दिस सुख री पड़ी न झांई, राज बदळग्यो, म्हांनै कांई?
नेताअ'ब राज आपणो अंगरेजां सूं लैर छूटगी
साधक धोकै निमो नारायण, खुद दाळद री नाड़ टूटगी
बाण्यां रै पौबारा पड़गी, पौरायत री आंख फूटगी
गोबरिया भांबी रै घर सूं, भर्‌यां पेट री याद रूठगी
साधक जीमै दूध–मळाई, गोबर कूकै म्हानै कांई।।
भण्या–गुण्या भगतां में मिळग्या, बड़ो हुकूम खादी में बड़ग्यो।
नेता री निबळाई लारै मुजराखोर मुसायब पड़ग्यो
देस भगत चीराय आंगळी, बण जूझार सिरां पर चढग्यो
हळ–धण खड़तो आडो बेली, बोझो झेल जमीं में गडग्यो
नवा साब नैं खीर निवाई, बढियो झीकै म्हांनै कांई
गांधीजी री फोज बिखरगी, तेरा तीन हुया भायेला
चन्दा–चोर चढ्‌या सिर ऊपर, फन्दाखोर हुया सब भैळा
धन्धाखोर धाड़वी बणग्या, सूदखोर नित करै झमेला
रणबंका नर कियो किनारो, आगीवाण हुया मदगैला
नैताजी रै मोटर आई, नूर्‌यौ बांगै महांनै कांई।.........

'उस्ताद' री लड़ाई पैली विदेसी सासन सूं हुयी, उणरी कलम विदेसी सत्ता अंगरेजी हुकुमत रै खिलाफ आग उगळती रैयी अर आजादी आयां पछैई वो उस्ताद सांत नीं हुयौ। उणरी कलम सुराज री थरपणा रै प्रयास में लागगी। उणरौ मानणौ हो कै स्वराज तो आयग्यौ पण सुराज नीं, आयो इण वास्तै वो जनता री हालात रौ चितराम मांडतौ कैवै, जूनां भैरू हटग्या अर नूवा भैरू थरपीजग्या, इण सूं जनता नै कीं नीं मिळ्‌यौ, अंगरेजां री ठौड़ नेता आयग्या गोरी चमड़ी वाळां री ठौड़ टोपी वाळा आयग्या, ''राज बदळग्यौ म्हांनै कांई''? इण कविता में जनकवि आ इज बात दरसायी है।

6-5 mLrkn jk dk0; % ey foLy l.k

6-5-1 lkekftd nhB

6-5-1-1 lekt jk lkp

यूं तो समाज सूं न्यारी दीठ लियां साहित्य री कल्पना करणी घणी ओपती बात कोनी पण कवि रै काव्य में सामाजिक तत्त्व जिका समाज सूं एकदम जुड़्यौड़ा है वारौ ग्यांन एक विसेसता री बात है। इण में ओ ग्यांन हुवै'कै वो दुख रै काव्य सूं समाज नै कांई देणौ चावै अर पाछी कांई आस राखै।

इण दीठ सूं 'उस्ताद' रौ काव्य समाज सूं जुड़्यौड़ो है। उस्ताद समाज सूं कदैई आगौ हुयौ आ बात पण सोचणी उण रै काव्य रै सागै अन्याय है। क्यूं'कै उण रै काव्य में मानखौ इण तरै सूं इज रम्योड़ौ है ज्यूं तुलसी रै काव्य में राम अर मीरां रै पदां में किसण।

उस्ताद रै काव्य–उद्देस्य रौ ग्यांन कर्‌यौ जावै तो ओ लखावै कै कवि समाज रै हरेक वरग रौ सामाजिक, राजनैतिक, आरथिक अर धारमिक क्षेत्र में विकास करणी चावै। कमतरियां, मोट्यारां नै जगाणौ कवि रौ एकज उद्देस्य रह्यौ है। उस्ताद अेक तरै रौ जुगद्रस्टा है। उण री दीठ में एक नुवौ जुग छिप्योड़ौ है।

जीणो व्है तो जाग सयाणा, जीणौ व्है तो जाग,
पग धरती पर रोप मती, इण जुग री गत अणथाग रे।
जीणौ व्है तो जाग।

समाज रौ निरन्तर विकास हुवै तो समाज कदी रूकै नी इणी वास्तै गति रौ सन्देस देवै उस्ताद रौ काव्य। गति अर प्रगति रौ मूळ मंत्र लियां मिनखाजूण सूं जुड़्यौडो उस्ताद रौ काव्य समाज रै हरैक तबकै नै विकास रा पावंडा कानी प्रसस्त करै। आ बात नीं है कै उणरौ सरूप हरमेस प्रेरणा रौ स्रोत इज बण्योड़ौ रह्यौ। कठैई–कठैई कवि जिकी खुद तकलीफां देखी अर भुगती उणां रौ दरसण करण में ई कवि लारै नीं रह्यौ। केई कवियां रा उद्देस्य तो कोरा खुद रै आश्ररयदाता रौ मनोरंजन ई रह्या या वे वांरै दुःख–दरद अर हरख–उल्लास सूं जुड़्या रह्या पण उस्ताद रै काव्य में इण भांत रौ बंध ाण निजर नीं आवै। उण रौ काव्य तो खुलौ–पण लियां आरपार है, उणमें कठैई गांठां नीं है।

6-5-1-2 mLrkn j\ dk0; ek; ukjh

उस्ताद रै काव्य मांय नारी नै घणी ऊंची अर मंहताऊ ठौड़ दिरीजी है। आ नारी कोई अबला वरग रौ प्रतिनिधित्व नीं करै, वा तो वीरांगना है, वा अबला नीं है। परदै अर घूंघटां नै छोड आपरै विकास रै वास्ते खुद आगै आय मरद रै सागै काम करै।

6-5-1-3 mLrkn jh vk/;kfRed vo/kkj.kk

अध्यात्म भारतीय संस्कृति रौ एक ठावौ अंग रह्यौ है। भारतीय जीवण में अध्यात्म सूं न्यारै जीवण री कल्पना करणी फाबै कोनी। मिनख रै दिन भर रै हर काम में धरम री व्याख्या इज हुवती रैवै। धर्म गुरु, आचार्य, गुसांई, अर केई साधु महात्मा परजा रा पूजनीक पैलां भी हा अर अजै तांई है। वे धरम री धजा बणियोड़ा धरम रौ बखाण करै। जे सही रूप सूं देख्यौ जावै तो उस्ताद कैवै के–

''अे ठग विद्या रा ठागा है''– आपरै पेट रै वास्तै पाखंड़ी महात्मा भोळी जनता रै पईसै सूं मौज करै अर मोह नै भगवान री सीख देवतां खुद ही मोह फंस जावै।

6-5-1-4 /kje] ojx vj oj.k foghu lekt jh Fkji.kk

उस्ताद आपरै काव्य में सगळा भेद–भाव मिट्योड़ी अर सामाजिक बंधणां सूं अळगी अेक खुली व्यवस्था रौ समर्थन करै। वो अेड़ै समाज री थरपणा करणी चावै जिणमें मिनख, मिनख ई रैवै, नीं तो वो हरिजन बणै नीं वो बामण, नीं वो सोसक बणै नी वो सोसित, नीं कोई ऊचौं हुवै नीं कोई नीचौ, न गोरौ न कोई काळौ, न तौ अठै मालिक रैवै अर नीं चाकर–सगळा कमतर बण जावै जिणां रौ धरम हुवै सरजण। वे सगळा आपस में भाई बंद इज हुवै। हरेक नै आपरी सगती मुजब काम अर मजूरी मिळै।

6-5-2 jktuhfrd nhB

गणेशलाल व्यास रै व्यक्तित्व अेक बहुमुखी प्रतिभा रै रूप में सामीं आवै। जठै वे अेक कवि अर अेक समाज सुधारक हा या वां रौ कीं भी रूप रह्यौ हुवै पण राजनीतिज्ञ रै रूप में वांनै नीं भुलायौ जा सकै। वै आपरै सिद्धान्तां में कठैई राजनीतिक विचार नीं देवै पण वांरौ काव्य एक राजनीतिक विचारधारा रौ दरसण करावै। केई ठौड़ वांरौ काव्य, काव्य रै सागै वांरी विचारधारा रौ प्रचार अर प्रसार करण्यौ बण जावै।

जनकवि आजादी री लड़ाई में जद जेळ गया अर उठै जद वे 'मार्क्स' अर 'अेंजिल' रै विचारां रौ गैरौ ग्यांन कर्‌यौ तो आ बात वांरै अंतस में उतरगी कै इण भारत रै समाज रौ भलो सिर्फ

अेक समाजवाद सूं हुय सकै अर जिण रौ वे प्रचार प्रसार कस्यौ।

करसां अर मजदूरां रा हालात कवि नै विद्रोही बणा देवै, वो अत्याचार अर सोसण करण वाळा सेठां, साहूकांरा नै समूळ खतम करणौ चावै अर वो भी क्रान्ति सूं। मजूरां रै राज्य की कल्पना करता थका कवि कम्यूनिस्ट हुय जावै। रूस अर चीन में जिकी क्रान्ति हुई उण सूं प्रभावित कवि अठै वां री इज सीख देवै।

'उस्ताद' री राजनीतिक विचारधारा सूं स्पस्ट है'कै चाहे वे किणी दळ सूं सम्बन्धित रह्या अर चाहे नौकरी में रह्या या जेळ में, वांरो जीवण तो समर्पित रह्यौ एक गरीब करसा अर मजूर नै, जिणरा वे गीत गाया है। आ बात घणी साची है'कै राजस्थान में तो साम्यवादी विचारधारा रौ जिकौ प्रचार व प्रसार हुयौ वो उस्ताद रै पाण इज हुयो। आ बात खरी है, इणरौ दूजौ कोई दावेदार नीं बण सकै।

6-5-3 vkjfFkd nhB

उस्ताद विचारक हा, वे आपरी विचारधारा सूं समाज रै हरेक क्षेत्र में अेक नुवीं दीठ दी। जठै समाज में वेअ समानता, असमरसता, ऊंच–नीच रो भेद–भाव मिटावणी चावै, अमीर गरीब री खाई पाटणी चावै अर राजनीति में साम्यवाद रा विचार देवै। समाजवादी आ साम्यवादी राज में पूंजी रौ अेकीकरण नीं हुया करै तो उस्ताद रा विचार भी कीं इणी तरै रा है। वो पूंजी रा धणी अर अधपतियां–पूंजीपतियां रै विनास सूं समाजवाद रौ निर्माण करणी चावै।

कवि रै खुद रै जीवण में घणी वार पईसां रा फोड़ा पड़्या हा। उणरै व्यक्तित्व में गरीबी रौ अनुभव जुड़ियोड़ौ हो। आपरी नौकरी कामदारी करता थकां गावां रै निचला तबकां नै घणौ नेड़ै सूं जोयौ अर इन्दोर में मिल रा नौकरी में मजूरां री खस्ता हालत नै देखी जठै वो पूंजीपतियां अर जमींदारां, जागीरदारां रै अत्याचार अर अनाचार सूं वाकिफ हुयौ उण सूं उस्ताद रै मन में ओ निस्चै हुयग्यौ कै समाज रा सच्चा दुस्मी अे लिछमी रा लाडला इज है–

''महल माळिया मोटर वाळा बिना काम रा ठागा है
कमतरिया री छाती ऊपर अै चुणियोड़ा भाटा है।''

आरथिक दीठ सूं उस्ताद आज रै समाज में एक नूंवौ प्रयोग करणी चावै, जिणमें सब हिळ–मिळ आपरै धन नै अेक ढ़ौड लगाय अेक मन सूं काम करै अर जितरौ फायदो हुवै उण में आपरी पांती लेवै। ''बधाऊड़ो'' गीत निरत रूपक में उस्ताद में इण सहकारिता रा दरसण करावै।

जनकवि रौ आरथिक दीठ समाजवादी व्यवस्था सूं प्रेरित है'कै पूंजी रौ एक हाथ में रैवणौ समाज रै वास्तै अर मजूर रै वास्तै खतरै सूं खाली नीं है अर दूजी कानीं सहकारिता रौ प्रतिपादन ओ सिद्ध करै'कै इण व्यवस्था सूं इज इण मानखै रौ भलौ हुय सकै वो साचै रूप में 'मिनख बण'र' आपरी ओळखाण समाज में बणायी राख सकै।

6-5-4 tudfo :i esa mLrkn

'जन' रो अरथ हुवै लोगां या मिनखां रौ समूह। 'जन' सब्द जुड़्योड़ौ हुवण सूं अरथ हुवै 'जनता रौ' लोगां रौ'। ओ 'जन' सबद रौ तुकमौ लागौ कवि गणेशलाल व्यास 'उस्ताद' रै नांव रै सागै। इण रौ मतलब ओ हुयौ कै उस्ताद किणी जात, धरम, वरण, अर देस री सींव सूं कोनी जुड़्योड़ौ हो, वो तो जुड़योड़ौ हो जनता जनार्दन सूं, वारै दुख दरद सूं। ओ इज अेक अेड़ौ कवि हुयौ जिकौ खुद रै दीठ नै सीमित दायरै सूं बारै काढ़'र जन जन रै हियै तांई पूगायो। पाछी जन री आवाज सुणी अर उण नै सरकार तांई पूगायी।

उस्ताद रौ काव्य प्रयोजन 'स्वांतः सुखायः' नीं हो, उण रै काव्य रौ नायक या नायिका कोई अेतिहासिक महान चरित्र कोनी हा। वो आपरी कविता किणी खास व्यक्तितव नै राजी करण

सारू लिखी हुवै तो आ बात भी कठैई निजर आवै कोनी। उस्ताद री कविता में उच्च कुळ री बात कोनी, उण रै हित री बात कोनी, पण हां विरोध री बात तो जरूर दीसै।

जनता री पीड़, कसक, कुण्ठा अर दुःख दरद सूं गु'थ्यौडौ काव्य, गणेशलाल नै जनकवि बणायौ। उणरी नायिका सिणगार अर आभूसणां रै भार सूं दबण वाळी नीं है, वा तो खुद आगै आवै, आपरै धणी सूं आगै बधै अर बधण री प्रेरणा देवै। उणरी नायिका सिणगार नी श्रम प्रिय है। उणरै कविता री नारी भोग री जीनस नीं है, वा तो श्रम री देवी है। जिकी श्रम सूं इज राजी रैवै अर दूजा नै ई प्रेरणा में नीं हुयौ है। कला रा दांव पेज अर अलंकारां सूं दब्योड़ा भाव उस्ताद रै काव्य में कोनी दीसै। एक सरल सहज भासा में कैयोड़ी कविता उस्ताद री जन कविता है।

6-5-5 jktLFkkuh dk0; ijEijk ek; ^mLrkn* jh Hkfedk

जनकवि उस्ताद राजस्थानी काव्य परम्परा मांय अेक महताऊ कवि मातीजै जिकौ आपरै विचारां अर भावां नै आगै बधावण सारू आपरी कविता नै साधन बणायौ। सरल भाव अर भासा लियां उस्ताद रौ काव्य राजस्थानी काव्य परम्परा मांय आपरी निरवाळी ठौड़ बणायी।

उस्ताद रै कविता री आ खासियत रैयी'कै लोग उण कविता नै आपरै हियै सूं स्वीकारी इणी वास्तै उस्ताद नै जनकवि री उपाधि सूं अलंकृत कर्‌यौ। दूजा किणीं कवि नै इण भांत री उपाधि ा नीं मिळी। उस्ताद री जनप्रियता री इण सूं मोटै परमांण री जरूरत कोनीं।

6-6 bdkbZ jk lkj

जनकवि उस्ताद रै जुड्यै ग्यांन सूं आ बात सामी आवै कै उस्ताद री कलम सूं जन जन री भावना जुड़ी रैयी है। राजस्थान रै अेक खुणै जोधपुर में जन्म्योड़ै इण कवि रौ व्यक्तित्व कठैई रुळतौं नी रह्यौ वो तो जन जन रै हिवड़ै री पीड़ अर कसक नै परखतौ रह्यौ अर उण कसक नै सबद रूप देवतौ रह्यौ। जिणसूं वो जन रौ नायक, गायक, चितेरौ, हेताळू, पथ परदसक अर सैं सूं महताऊ जनकवि बणग्यौ। किणी साध ाारण व्यक्तित्व रै आ बात बस री नीं हुवै कै वो साहित्य अर राजनीति री अेक साथै सेवा करै अर वा ई नाम नीं व्यापक रूप में, पण उस्ताद रौ व्यक्तित्व सीमितता री सींव नै उलांघी।

केई वार लोग समाज मांय काव्य री प्रासंगिकता री बात करै पण समाज मांय काव्य री प्रासंगिकता कदैई खतम नीं हुवै अर नी खतम हुवै कवि रा बोल। जठै तांई सामाजिक असमानता नीं मिटै कविता रौ मोल खतम नीं हुवै कवि रौ गहेरो अनुभव समाज रै साच नै समझै अर जनता नै समझावै अर इण रूप में कवि रौ संदेस हुय जावै–

आ जनकवि री जुग वाणी, आ कदै न चुप रह जाणी।
कोई लाख जतन कर हारै, आ समझै साच सुणाणी।

गायक तो इक दिन मिट जासी, पिण अैड़ा गीत बणासी।
जन जन रै कंठा रमसी, पीढ़ी दर पीढ़ी गासी।
आ काया तो कवि री है, पण जनता री जुगवाणी।।

6-7 vH;kl lk: loky

1. जनकवि गणेशलाल व्यास रै व्यक्तित्व अर कृतित्व सूं जुड्यौ लेख लिखौ।
2. जनकवि 'उस्ताद' रै किणी अेक कविता रै भाव सौन्दर्य नै समझावौ।
3. जनकवि 'उस्ताद' री राजस्थानी साहित्य मांय कांई भूमिका रैयी? समझावौ।
4. गणेश लाल व्यास 'उस्ताद' रा राजनीतिक अर सामाजिक विचारां नै उदारहण देवतां समझावौ।
5. ''गणेश लाल व्यास 'उस्ताद' सांचै सरूप में जनकवि हा।'' इण कथन नैं साबित करौ।

1. जनकवि उस्ताद : रावत सारस्वत, रामेश्वर दयाल श्रीमाली राजस्थानी भासा प्रचार सभा, जयपुर।
2. कलम रौ उस्ताद : विजयदान देथा साहित्य अकादमी, नई दिल्ली।
3. जनकवि गणेशलाल व्यास 'उस्ताद' व्यक्तित्व : कृतित्व – डॉ. लक्ष्मीकान्त व्यास, जैन ब्रदर्स, उदयपुर।
4. हमारा उस्ताद : विजयदान देथ, राजस्थान साहित्य अकादमी, उदयपुर।
5. राजस्थानी भाषा एवं साहित्य – डॉ. कल्याण सिंह शेखावत, आनंद प्रकाशन, जोधपुर।
6. राजस्थानी भाषा और साहित्य – डॉ. मोतीलाल मेनारिया।

bdkbZ & 7

lR;izdk'k tks'kh 0;fäRo vj dfrRo

bdkbZ jk eMk.k

1. उद्देस्य
2. प्रस्तावना
3. विसय वस्तु :
   (अ) व्यक्तित्व
      (1) जनम परिवार
      (2) पढ़ाई
      (3) पारिवारिक जीवन
      (4) काव्य रा प्रेरणा स्रोत
   (ब) कृतित्व – खास रचनावां अर वांरी निरख चरख
      (1) राधा – (सन् 1960)
      (2) दीवा कांपै क्यूं (सन् 1962)
      (3) बोल भारमली (सन् 1974)
      (4) गांगेय (सन् 1985)
      (5) सोनमिरगला (सन् 2000)
4. सत्यप्रकाश जोशी री रचनावा री विचार दीठ
   (अ) प्रेम अर सिणगार
   (ब) मिथकीय दीठ
   (स) जुग रौ संदेस
5. भासा अर सिल्प
6. राजस्थानी काव्य परम्परा मांय सत्यप्रकाश जोशी रो योगदान
7. इकाई रौ सार
8. अभ्यास सारू सवाल
9. उपयोगी अर महताऊ संदर्भ ग्रंथ

1- mís;

राजस्थानी काव्य खातर सगळा लोगां रौ औ मानणौ रह्यौ'क राजस्थानी काव्य मांय कोरौ वीर काव्य रौ सिरजण हुयौ अर उणरौ सिरजण चारण–भाट कवि कर्‌यौ। लोगां री आ धारणा अेकांगी रैयी है। अर सगळी काव्य धारा रौ जे अध्ययन कर्‌यौ जावै तो आ विचारधारा कीं न्यारै सरूप में इज सामीं आवै। वीर काव्य सूं अर हर जुग में न्यारा–न्यारा कवि उणरा सिरजक रह्या जिणमें कोई जाति या वरग रौ बंधण नीं हो। किणी काव्य नै इण भांत अेक विचार में बोध लेवण सूं नीं तो काव्य अर नीं कवियां साथै न्याय हुय सकै।

काव्य इतिहास रै हर जुग में न्यारी–न्यारी काव्य विधावां, सैलियां अर धारावां में काव्य सिरजण हुयौ

जिकौ वीरता, भक्ति, नीति, सिणगार, जैड़ा विसयां सूं जुड्यौ रह्यौ अर आधुनिक काल में तो औ मिथक निरमूळ सिद्ध हुवै। दूजी भारतीय भासावां रै जोड़ राजस्थानी काव्य रो सिरजण हुयौ है जिणरौ श्रेय संगळा कवियां ने दियौ जावै। राजस्थानी काव्य री न्यारी–न्यारी धारावां नै अेक कवि आपरी खिमता सूं किण भांत सामीं लावै अर जन जन रै सामीं काव्य, भासा अर खुद री प्रतिभा रौ उद्घाटन किण भांत कर सकै इणरौ अध्ययन करणौ इण इकाई रौ उद्देस्य रह्यौ है। इण इकाई में आधुनिक राजस्थानी काव्य रा खास कवि सत्यप्रकाश जोशी री काव्य साधना री ओळखांण करायी जावै है।

2- iLrkouk

कोई भी कवि आपरै सिरजण क्रम मांय खुद री प्रतिभा रै अलावा सैंजोड़ जुग परिस्थितियां, परिवेस अर केई वार परम्परा सूं प्रेरणा लेय काव्य सिरजण करै। सैंजोड़ जुग, परिस्थितियां, परिवेस उणनै काव्य री सामग्री या उपादान देवै, भासा उणरी काव्य खिमता नै उगैरै, प्रतिभा उण खिमता नै निखारै अर परम्परा रौ निर्वाह उण प्रतिभा नै पुस्ट करण मांय महताऊ भूमिका निभावै।

राजस्थानी कवियां री कड़ी मांय कोई भी कवि इण भांत रौ नीं रह्यौ जिकौ आपरी परिस्थितियां या परिवेस कानीं निरपेक्ष भाव राखतां काव्य सिरजण कर्‌यो पण इण मांय वे कवि घणा चावा हुया जिका परिवेस अर परिस्थितियां नै परखी अर परम्परा रौ निभाव कर्‌यौ। राजस्थानी काव्य री अेक खासियत उणरी लयात्मकता री रैयी। लयात्मकता अर संगीतात्मकता या किणी खास ध्वनि रौ प्रयोग लोक साहित्य सूं अभिजात्य साहित्य मांय आयो है, इणरै कारण कानीं देखां तो लखावै'क संगीततत्व सूं लोक साहित्य रौ प्रभाव घणी ग्हैराई लियां इणी वास्तै केई कवि इण तथ्य ने काव्य मांय अंगेज्यौ'क काव्य नै लयबद्धता देवणी उणनै संगीत रै नैड़ौ ले जावणौ। राजस्थानी काव्य मांय इण भांत रौ प्रयोग कवि सत्य प्रकाश जोशी भी कर्‌यौ जिवांरी घणखरी कवितावां मांय आ लयात्मकता खासतौर सूं देखी जा सकै।

कवि सत्यप्रकाश जोशी रै काव्य मांय मिथकीय दीठ, ऐतिहासिक पात्रां रौ खुलासौ, प्रेम री निकेवळी दीठ, सैंजौड़ जुग री परिस्थितियां अर परिवेश री ओळखाणं जुग रौ सन्देस, किसानां अर मजूरां नै मैनत री भुलावण है तो फूटरी गोरड़ी रै मन रा भाव अर सुपनां री यादां भी है। कवि रा बोले राधा, क्रिसन नै आपरै प्रेम री बातां बतावै, प्रीत रा अेहनाणं बतावै अर साथै–साथै मानवतावादी संदेस देवतां उणनै जुद्ध नै मेटण री प्रेरणा भी देवै।

आधुनिक राजस्थानी काव्य परम्परा रै इण महताऊ कवि री काव्य साधना रौ ग्हैराई सूं अध्ययन करणौ इण इकाई रौ उद्देस्य रह्यौ है। जिणमें उणरै व्यक्तित्व री ओळखाणं रै साथै साथै खास–खास पोथ्यां रौ अध्ययन भी करीजै है।

इण इकाई रै मांय खास–खास रचनावां रा अंस परिसिस्ट में जोड़्या जाय गया है जिणसूं कवि रै भाव अर भासा री ओळखांण सगळां नै हुय सकै।

3- fol ; oLr|

¼v½ 0;fäRo

¼1½ tue

कवि सत्यप्रकाश जोशी रौ जनम 20 मार्च 1926 नै जोधपुर में हुयौ। जोधपुर री राजस्थानी काव्य परम्परा में मार्च महीना री 20 अर 21 तारीखां इण वास्तै खास रैयी'क 21 मार्च 1907 नै जनकवि 'उस्ताद' रौ जनम हुयौ अर उणरै उगणीस बरसां पछै सत्यप्रकाश जोशी रौ जनम 20 मार्च 1926 नै हुयौ। अे दोन्यूं कवि राजस्थानी कविता रा कीरत थंभ कह्या जा सकै। आपरी प्रतिभा अर भासा खिमता सूं राजस्थानी भासा री खूब सेवा करी अर राजस्थानी काव्य नै नूंवौ आयाम दियौ।

ifjokj vj ifjo'k

परिवार अर परिवेश रौ प्रभाव कवि सत्यप्रकाश जोशी रै व्यक्तित्व अर कृतित्व माथै ग्हरौ रयौ। आपरै परिवार रौ वातावरण सात्विक अर साहित्यिक रह्यौ। आपरा पिताश्री वैद्य पंडित मोहनलाल जोशी जिका खुद मां सुरसत रा पुजारी, नामीं वैद्य, साहित्य अर संगीत रा साधक हा इणारै व्यक्तित्व रौ प्रभाव कवि सत्यप्रकाश जोशी माथै घणौ पड्यौ जिणनै आप खुद भी केई वार स्वीकार कर्यौ।

¼2½ i<kb

सत्यप्रकाश जोशी री शिक्षा जोधपुर में इज हुई। प्रारम्भिक पढाई उम्मेद स्कूल, माध्यमिक शिक्षा दरबार हाई स्कूल अर बी.ए. पछै एम.ए. हिन्दी जसवन्त कालेज जोधपुर सूं करी। अे सगळी 'शिक्षण' संस्थावां आपरै जुग री नामीं संस्थावां रैयीं। सत्यप्रकाश जी आपरै छात्र जीवण सूं इज संगीत, काव्य अर नाटक सूं गहेरी लगन सूं जुड़िया रया।

¼3½ dkedkt

अेक कवि, साहित्यकार साहित्य सेवा सूं आळगौ किस्यौ कामकाज चुण सकै? इणी वास्तै आप अध्यापन रौ कामकाज चुण्यौ मुंबई जाय लगौलग हिन्दी साहित्य रौ अध्यापन करावता रैया इतरै अलावा साहित्यजीवी हुवणरै कारण आप कैई संस्थावां सूं जुड्या।

काव्य सिरजण अर साहित्य सेवा इज आपरै जीवण रौ उद्देस्य कह्यौ जा सकै, जिणरी सेवा में आप आखी ऊमर लाग्योड़ा रह्या।

¼4½ dk0 ; lk/kuk jk Jh x.kl

कवि सत्यप्रकाश जोशी सोलह–सत्रह बरस री उमर में इण काव्य साधना रौ श्रीगणेस कर्यौ जिण बखत कवि आठवीं क्लास रा विद्यार्थी हा। उण बखत हिन्दी में कविता लिखी। इण ऊमर मे कविता किसी भासा में लिखीजी आ बात महताऊ नीं ही, महताऊ बात ही कविता लिखणी अर उणरौ असर दिखणौ।

'हेमाणी' रा सम्पादक तेजसिंह जोधा नै आपरै साक्षात्कार में कवि सत्यप्रकाश जोशी पैली कविता रै प्रकासन अर उणरै प्रभाव नै इण भांत बतायौ है[1]–

'स्यात' वो बरस 1943 रौ हो, म्हैं जोधपुर में आठवीं में पढ़तौ हौ। 'सैकिंड वर्ड वार' री खबरां अर घटनावां में खासा रूचि ही म्हारी। हिटलर री फौजां अबै कठैई–कठैई फेंट खावण लागगी हो। रूस महाजुद्ध में सामिल हो चुकौ हौ अर घर में पिताजी रूस रा हामी हा अर बांरी बातचीत रै कारण म्हारौ रौ भी रूस री तरफ रूझाण की ज्यादा हौ। लड़ाई जोरां माथै चाल रैयी हीं। रूस री फोजां री दिलेरी रौ च्यांरूमेर हाकौ सौ फुट रैयौ हो, म्हे बड़ौ खुस हो अर वांईदिनां म्है पैली दफै अेक कविता लिखी ''जय होगी उनकी ही रण में।''

अेक राजस्थानी कवि री काव्य जातरा हिन्दी सूं सरू हुई इण खातर वे कयौ [2]– ''हां हिन्दी में ई क्यूं कै पढ़ाई भी हिन्दी में ई कराई जावती हो। दूजौ अंगरेजी रौ जोर हो–राजस्थानी घर–बार अर साथी संगळ्यां री भासा हो। खेर तौ वा म्हारी पैली कविता हीं जीं पर जोधपुर सरकार पैलौ पुरस्कार दियौ। म्हारी कवितावां नैभी

---

1. हेमाणी सम्पादक : तेज सिंह जोधा पृ. 111
2. हेमाणी सम्पादक : तेज सिंह जोधा पृ. 112

सुणण–समझण रौ चावरयौ अरसै तांई कवितावां पढ़ण सुणण अर लिखणरौ सिलसिलौ चालतौ रैयौ। सरू–सरू में लोकगीत अर भजन सुणण रौ भी बेजा चाव हौ अर वांनै सुणतां सुणतां ई राजस्थानी में लिखण रौ साबकौ पड़्यौ।

खुद रै काव्य भासा माथै दूजा कवियां रै असर नै कवि सत्यप्रकाश जोशी इण भांत स्वीकार कर्‌यौ [3] – सरू–सरू में मुकुल रेवतदान री कवितावां सुण–सुण'र म्हारो भी अ राजस्थानी में कविता लिखण रौ रुझाण बध्यौ।''

इण काव्य साधन साथै आप 'हरावळ पत्रिका रै सम्पादन रौ महताऊ काम भी कर्‌यौ।

tho.k jh igyh ?kMh & प्राध्यापक री नौकरी आप मुंबई में करी पण राजस्थानी परिवेस, भासा अर साहित्य सूं आप कदी अळगा नीं हुय सक्या। राजस्थानी भासा अर साहित्य नै आप जिकी सेवा दी वा अमिट है।

जीवण रै आखरी दिनां में आप अमरीका गया (बेटै रौ मोह वांनै उठै लेयग्यौ) तद आप कयौ मैं स्यात् पाछौ नीं आंवूला, पण भारत भूमि अर राजस्थान रौ मोह आपनै पाछौ अठै लेय आयौ।

थौडा'क दिन जोधपुर अर, जयपुर रया पण' 'किडनी'रै ठीक ढंग सूं काम नीं करण सूं बेमार हुयग्या अर जयुपर में इज 26 अप्रेल 1990 नै कवि आपरी काया नै छोड़ परम तत्व में मिळग्यौ। आज कवि सत्यप्रकाश जोशी नीं है पण वांरी रचनावां, वांरी मीठी वाणी, वांरौ हेताळु व्यवहार वांरै हुताळुवां नै भूलायां नीं भूलै।

¼c½ dfrRo

कवि सत्यप्रकाश जोशी री छः पोथियां तो सीधे रूप सूं काव्य री है। अलावा गद्य अनुवाद अर संपादित पोथियां विगत री न्यारी मांडी जा सकै है। आंरी काव्य रचनावां इण भांत रैयी–

(1) राधा सन् 1960

(2) दीवा कांपै क्यूं 1962

(3) बोल भारमली 1974

(4) गांगेय 1985

(5) सोन मिरगला 2000

(6) सहस्रधरा (हिन्दी अर राजस्थानी काव्य संग्रह 1956)

गद्य अनुवाद

(1) बांबी अर कालै आदमी री डायरी

dfo lR;izdk'k tks'kh jh dkO; lk/kuk

कवि सत्यप्रकाश जोशी आपरी कविता रै किणी अेक विचारधारा नै इज आगै बधायी या वो कवि किणी अेक काव्य धारा सूं जुड़्यौ रह्यौ आ बात कठैई नीं दीसै। मिनखा जूण रा जिणभांत न्यारा–न्यारा रंग, विचार अर जीवण दरसण रा न्यारा–न्यारा मूल्य हुवै उणी भांत कविता नै कवि जोशी न्यारै–न्यारै ढंग सूं ढाली।

कठैई प्रेम रौ विकसाव अर दरसाव है कठै हिवड़ै री खुलती परतां सामीं आवै तो कठैई प्रेम मांय सीख है इण कविता में कठैई ऊहा–पोह नीं दीसै घणै नैठाव अर थिरता सूं कवि आगै बधतौ लागै। भाषा कविरै भावां रौ अनुगमन करती लखावै। मुधरता अर लय जोशी री कविता रौ खास

---

3. हेमाणी सम्पादक : तेज सिंह जोधा पृ. 113

गुण कह्यौ जा सकै। काल क्रमरी दीठ सूं वारी रचनावां रौ अध्ययन इण भांत कर्‌यौ जा सकै। कालक्रम री दीठ सूं सहस्रधारा वांरी पैली पोथी ही जिकी सन् 1956 में छपी पण इण मांय हिन्दी रै साथै राजस्थानी कवितावां आयी ही इण वास्तै अठै उणरौ काव्य रचनावां रौ इज वर्णन अठै करीजै है–

¼1½ jk/kk 1960

भारतीय समाज रै दार्सनिक, आध्यात्मिक, सांस्कृतिक पक्ष अर लोक मानस रै ग्हैराई तांई अेक तत्त्व समायौड़ौ रह्यौ है अर वो तत्त्व भगवान् श्री कृष्ण रै नांम रौ है। लीला पुरुसोत्तम रै नाम सूं ओळखीजण वाळौ औ व्यक्तित्व समाज रौ आदर्श आस्था रौ केन्द्र अर प्रतीक रह्यौ है। भगवान् श्रीकृष्ण रौ व्यक्तित्व केई लीलावां सूं जुड्‌यौ रहयौ है। अै लीलावां श्री कृष्ण नै लोक मानस में घणी महताऊ ठौड़ दिरायी है।

भगवान् श्रीकृष्ण प्रेम रौ प्रतीक भी बण्यौ है अर उण प्रेम रै साथै अेक नाम फैरूं जुड्‌यौ वो नाम 'राधा' रौ है। विद्वान आपरी दीठ सूं राधा अर कृष्ण नै न्यारा–न्यारा नाम, सरूप दिया वांरी न्यारी–न्यारी व्याख्या करी है। पण लोक रौ मानणौ रह्यौ जठै राधा है उठै कृष्ण है अर जठै कृष्ण है उठै राधा। कृष्ण रौ अस्तित्व राधा बिना अधूरौ मानीज्यौ है।

कवि सत्यप्रकाश जोशी 'राधा' काव्य मांय राधा अर कृष्ण नै अेक जीव रा दो रूप मानतां लिख्यौ है वे न्यारा नी हैं, वे अेक है वांनै छांनै–छानै मिळण री जरूरत नीं है–

''कुण नीं मानै?
कुण नी जांणै?
तो छांनै क्यूं मिळूं
म्हारा कान्ह छानै क्यूं मिळूं?
नगरी–नगरी हाट हाट गळी गळी
लोग म्हनै जाणै,
थारी म्हारी सूरत पिछाणैं
अेक जीव रा अै इदका रूप
कुण राधा, कुण गोपाल।

रूखां रा सगळा पांन थनै जाणै
म्हनै हर फूल हर कळी पिछांणै,
तो छांनै क्यूं मिळूं
म्हारा कान्ह छांने क्यूं मिळूं।।''

राधा अर कृष्ण रै जीवण रौ आधार प्रेम अधूरो है राधा अर कृष्ण रै जीवण में जे इण प्रेम नै हटाय दियौ जावै तो बांरौ जीवण अधूरो हुय जावै। कवि राधा रै सबदां मांय इण अमर प्रीत री ओखांण करावै। इण संसार में जठै भी प्रेम, संयोग अर मिलण हुवै कवि मानै ओ प्रेम राधा अर कृष्ण रै प्रेम रौ बधापौ है अर रूप है–

''वो आभो धरती नै चूमै
वे जमना री लैरां सागर सूं लूमै
वो पून कदंन रा कानां में
प्रीत रा मीठा बोल सुणावै
वो पुहुप सौरभ रै समचै
आपरा आलीजा भंवरां नै

छणै घणै मांन सूं बुलावै
वे भंवरा फूलो रै कांनां में
आपरी प्रीतरा गीत गुणगुणाबै
अे सगळा थारै म्हारै ईज हेत रा रूप अनेक
थारी म्हारी प्रीत री रीत रा भाव अनेक
थारी प्रीत म्हनै अमर करै।
थारी प्रीत म्हनै पूरण करै।''

'राधा' कृष्ण सूं प्रेम तो करै पण इण प्रेम रै पाछै वा सामाजिक मर्यादा नै भंग नीं करणी चावै अर नीं वा कृष्ण सूं ब्याव रचावणी चावै। वा मानै ब्याव हुयां प्रेम खतम हुय जावै। वा खुद नै कृष्ण सूं न्यारी नीं मानै इण वास्तै इज ब्याव नीं करणी चावै अर इण रूप में आपरै प्रेम नै नूवौं सरूप देवै–

''थारी म्हारी बात ई न्यारी,
म्हारी थारै प्रेम री जात ई न्यारी
आपां अेक दूजां सूं अणजान कठै?
स्रिस्टी रै पैलै दिन सूं
अेक दूजा नै ओळखां
आपां रौ ब्याव किंया होवै?

यो तो थारौ थारा सूं
नै म्हारो म्हारा सूं ब्याव हो जासी।''

जिण बखत कृष्ण मथुरा जावै तो राधा रोवै कोनी अर नीं वा कृष्ण नै रोकै, क्यूं'क उणनै विश्वास है कृष्ण म्हनै कदैई नीं भुलावैला। राधा चावै कृष्ण कठैई भी रैवै वो प्रेम बिरखा करतौ जणै–जणै आणंद देवतौ रैवै।

''बरस्यां जाघनस्यांम।
म्हारी प्रीतड़ली रास्यांम!
जणा–जणा री तिरस मेट,
ताप मेट,
उमस मेट,
आणंद री झड़ी बरसातौ जा!
सूखी धरती नै सरसातौ जा!
म्हारै हिवड़ा में बिलमाय
सकल प्राणां रौ बणजा स्यांम।''

'राधा' खण्डकाव्य री चावी विसेसता इणरौ प्रेम निरूपण, भावां अर सबदां रौ सुमेळ तो अठै है ही साथै ही साथै राधा रौ मानवतावादी संदेस भी खास उल्लेख जोग है। इण संदेस नै राधा काव्य रौ केन्द्र कह्यौ जा सकै। इण संदेस सूं राधा रौ अेक नूवौ सरूप सामी औवे आज तक राधा ने लोग कृष्ण री प्रेमिका रै रूप में जावौ पण राधा अठै मानवता री रक्षक बण कृष्ण नै युद्ध सूं विरत हुवण री सीख देवै। उणरौ मानणौ रह्यौ'क युद्ध मानवता नै खतम कर देवैला, जुद्ध सूं सृस्टि में कला, साहित्य, सिल्प, ज्ञान, विज्ञान अर संगीत मिट जावैला च्यारू कानीं अंधारौ अर मौत दिसैला। जुद्ध सूं त्रस्त हुयोड़ा लोग अर परिवार थनै ओळम देवैला इण वास्तै तूं जुद्ध मत कर–

''मन रा मीत कान्हा रे

जग में जे मंडग्यौ घमसांण तो
कुण तो बणासी सतखण्ड मै'ल
कुण तो चिणासी मैड़ी माळिया!
कुण तो उगेरै मीठा गीत,
कुण तो बांचैला पोथी पानड़ा।
कुण करसी गोखड़ियां में जोत
कुण तौ मांडैला आंगण मांडणा!

बस्ती में घावां रिसता सूट,
लूला लंगड़ा बण थनै भूंडसी

क्यूं मेटै रखवाळां रौ नांम।''

कवि सत्यप्रकाश जोशी री काव्यकृति 'राधा' खण्डकाव्य जुद्धां सूं जूंझता मानखै री पीड़ नै दरसावै अर जुद्ध रा परिणामां नै समझावता जुद्ध नीं करण री प्रेरणा देवै। पैलै दूजै विस्वयुद्ध अर उणरै पछै लगौलग हुवण वालै जुद्धां री विभिसिका रौ बरणाव अर प्रेम रै संदेस नै कवि राधा रै भावां रै जरियै सांतरै ढंग सूं मांड्यौ है। 'राधा' कवि सत्यप्रकाश जोशी री सांतरी रचना कैयी जा सकै।

¼2½ nhok dkai D;w ¼1962½

'दीवा कांपै क्यूं' कवि सत्यप्रकाश जोशी रौ कविता संग्रह है जिणमें न्यारा–न्यारा भावां नै लेय कविता लिखीजी है। भक्ति, सिणगार अर प्रगतिसील चेतना नै लियां कैई कवितावां इण कृति में भेळी है। दीवौ क्रियासील अर सिरजणसील मानखै रौ प्रतीक है जिणनै कर्त्तव्य पथ माथै आगे बढण री प्रेरणा देवण रौ काम कवि करै जे ओ मानखौ कर्त्तव्य कानीं आगै तो सगळा उणरौ साथ देवै इण वास्तै उणनै डरणौ नीं चाहजै–

बीजळ थारै साथ, दीवा कांपै क्यूं

औ माटी रौ रूप दियौ, मन ढाळ्यौ
थारै प्राणां कियौ जोत उजियाळौ,
बुझणौ उणरै हाय, दीवा कांपै क्यूं?
बळणौ सारी रात दीवा कांपै क्यूं?

इणी संग्रह में कवि मां सुरसत री स्तुति करतां उणनै नमन करै अर उणसूं वरदान मांगै। कवि मां सुरसत सूं अभिव्यक्ति री खिमता मांगै। वो मां सारदार सूं सबद मांगै जिणसूं वो जग री पीड़ा नै परख अर परस सकै अर उणनै वाचा देय सकै। कवि सबद री दुनिया में इज जीवणौ मरणौ चावै अर मर्‌यां पछै आगोत्तर में भी सबदां सूं रमणौ चावै।

सारद माता सीस निवाऊँ, औ वर दीजै।
मन री बातां सैज सुणाऊं, आखर दीजै।।
प्राणां सूं सबदां नै सिरजूं,
सबदां सूं जग पीड़ा परसूं।

सबदां में जीऊं, मर जाऊं।
सबदां रो आगोतर दीजै।।

कवि आगै मानखै रै जीवण में गीतां रै महत्त्व नै थापित करतां जीवण में काव्य रै महत्त्व नै सिद्ध करै'क जीवण गीतां बिनां सुनौ है गीतां बिना जीवण री गति रूक जावै।

मिनखा जूण गीतां सूं सरू हुवै अर जीवण रै छेलै छेड़े तांई गीत मानखै रौ साथ नीं छोड़ै। कवि सत्यप्रकाश जोशी री विसेसता है'क वो इण गीतां रै साथै नूंवा सबद, नूवां भाव जोड़णा चावै जिणसूं मिनख रै जीवण में नूवै जीवण रौ संचार हुवै।

''गीतां में जलमै जीवै मानखा, गीतां में जागै सबळ समाज रै।
गीतां में आखा जुग नै जीवणौ
पग–पग तौ जीवण मांगै गीतड़ा।
आवौ रे कवियां म्हारै साथ रै,
जुग रै नूंवै गीतां सूं घेरल्यो।।''

इण भांत दीवा कांपै क्यूं, काव्य संग्रह में न्यारा–न्यारा विसयां नै मांडीज्यौ है। नूवै सिरजण में निर्माण अर समाज हित री भावना नै कवि महत्त्व देवै। कवि जोशी अैरण अर घण बीर नै इण भाव सूं समझावै जठै अैरण घणबीर नै कैवै–

''क्यूं तो घड़ देवां अपो तीर नै,
अैरण बूझै रे घण बीर नै।
घड़णौ व्है धर रे बीरा, कसिया कुदाळी।
अन घन निपजावै कमधज, हाथा हळबांणी
टाबर ने हाथां मांही बाजै खुणखुणिया रे।
क्यूं नी पूंछां नैणा रा नीर नै
क्यूं नी बदळै जुग री तसवीर नै
अैरण बुझै रे घण बीर नै।''

न्यारी–न्यारी ऋतुआं रा गीता, नारी मन रै भावां रा गीत ओळूं झूलां रा गीत ओळूं होडों रा गीत, देसरा गीतां सूं ओ काव्य संग्रह सत्यप्रकाश जोशी री कविता अर गीतारै साथै राजस्थानी जीवण दर्शण री ओळखांण करावै।

¼3½ cky Hkkjeyh ¼1974½

'बोल भारमळी' सत्यप्रकाश जोशी री घणी लोक चावीकृति रैयी। इण पोथी नै केन्द्रीय साहित्य अकादमी रौ पुरस्कार मिळयौ। 'भारमळी' मध्यकालीन समाज री अैड़ी नारी रैयी जिका जीवण रा केई रंग देख्या। भारमली, राव लूणकरण जिका जैसलमेर रा राजा हा वांरी पालित कन्या ही जिणरौ टाबरपणौ राजकुमारी उमादे साथे बीत्यौ। जद उमादे रौ ब्याव राव मालदेव साधे हुयौ सुहागरात री बखत राजकुमारी नै थोड़ा मोड़ों हुयग्यौ राजकुमारी री बात बतावण नै आ डावड़ी सरूप में राजा कन्ने गयी राजा उणनै राणी समझ आपरै कन्नै राखली। जद उमादे ने आखबर हुयी तो वा घणी बेराजी हुई अर राव मालदेव जी सूं रूठगी अर रूठी राणी रै सरूप में जाणीजी। केई बरसां तक वा राव मालदेव साथै रैयी पण पाछै वा कोटड़ा रा बाघोजी साथै गयी परी।

केई बरसां पैली घटित हुई घटना में इतिहास रौ सांच कितरौ रह्यौ आ बात तो कोई नीं बताय सकै पण साहित्यकार इणनै किण भांत रची लोक में आ बात किण भांत चावी हुई उणरी ओळखांण कवि करावै। अठै भारमली इतिहास री नारी नीं बण आजरै बरजणाहीन समाज री नारी रै सरूप में सामीं आय उणबरवत रै सांच नै सगळां रै सामीं उगैरे –

''इतिहास न आपरौ नजरियौ बदळै न कैयोड़ी बात सूं ज्यादा बात बताय सकै। आ इतिहास री मोटी अबखाई है। भारमली जद इतिहास सूं बारै निकळ साहित में चरण धर दिया वो चार सौ बरसां पुराणौ अेक मन भी वरतमान में जीवण नै आपरी कांचळी

उतार फैंकी, म्हनैं तो लागे के वरतमान रा वरजणाहीण समाज री अेक लुगाई, चार सौ बरसां पुराणा इतिहास रौ जीवण भोगण नै आ कथा बोल रैयी है।'' (बोल भारमली)

इण कृति में कवि नारी रौ वो सरूप दरसावै जठै वा अेक राजा सूं मिळ्यां पछै भी आपरी मनसा पूरी नीं कर सकै अर वा बाधोजी साथै जाय इज मन री रळी पूरी कर सकै। इणी सायै इण समाज में नारी री ठौड रैयी अरठी अह इण बखत इण बाबत भी वा सवाल उठावै, उण रौ अरथ देखणी चावै वा कैवै –

Eg d.kg \
lj hjk vlj hjh \
uke tkr dG fcg.kh
Økp ik[kh vkfn dfo jh \
p<kGh \
[kMkGh \
:i jh c.ktkj.k
cMkj.k tkc.k jk \

वा घणी फूटरी ही पण समाज में उठारा संबंध अर भूमिका किण भांत रैयी इणरी ओळखांण खुद करावै जठै सगळा उणनै बासना री दीठ सूं देख्यों डणरै जीवण री कांई गति रैयी ?

fcuk gkFk gFktkMk \
xkB fcuk xBktkMk \
fcuk lkok ij.;kMh \
tueh dB] ikGh d.k
fd.kjk Eg ?kj ekM;k !
xkyh c.k Hkkou jph HkkfV;k jh
jk.kh c.k jx fn;k jkBkMk
>kjkok xk;k dkVfM;k jk
lei j.k ukjh T;q \
/;ko ljlr u] flej x.kir tn]
ekMkyk Nnk vNnk
lcnk e cka/kkyk] ihr jh d;k dkb
oj.kkyk ukjh u
Fk b crkokyk ihf<;k u
d.k g Eg
Hkklk jk Hkkoh dohljkA

यूं वा आपरै दासी पणै नै ओळखै पण उणरै रुप नै देख वा उणसूं सवाल पूछै तूं म्हारै डील में क्यूं आयौ ? इण समाज में ऊँच नीच रौ घणौ महत्व रह्यौ, केई लोग इण असमानता सूं पीड़ित रह्या, वा इण पीड़ा नै भोगी पण वा इणनै भूलाय नीं सकी । वा उडीकै उणनै कुण न्याय देवैला –

vd b x< e iGrh]\
nk Nkfj;k j lekt fcpkG
ÅHkk vkMkoGk

tye yo.k j dlj jk
Nkyk mNkGrk lkr leUn
#i jk U;kjk&U;kjk Hkkj tkGk chp
lk tktu dkdM v.kle
i.k Egs dkuh Hkyk
v.klerk j gkde jk fn;kMk U;ko A
mMhdk dkbZ ikj[kh
ftdk xokgh nos
ukjh eu j vkFkM.k jh
gkj thr jhA

इण कविता रै 'पाप' खण्ड में कवि ओ भाव दरसावै'क इण समाज में दासी री कांई ठौड ही जठै कोरी वा भोग्या इज ही। उठै दासी इज नीं हरेक नारी भी दासी अर पगरखी इज हुय जावै।

नारी मन रा न्यारा–न्यारा गोखां नै खोलती कृति् 'बोल भारमली' सामंती व्यवस्था, नारी री ठौड, जीवण में काम अर वासना री भावना साथै जीवण री केई अवखाइयो नै सामीं लावै बांनै सुलझावण रा मारग दरसावै। भाव पक्ष री दीठ सूं राजस्थानी काव्य परंपरा में सत्यप्रकाश जोशी इण कृति सूं नूंवौ प्रयोग करयौ है।

xkxs; ¼1988½ % महाभारत की कथा अर उणरा पात्र कैई कवियाँ नै काव्य सिरजण सारु प्रेरित कर्‌यौ है राजस्थानी काव्य परंपरा में भी इण कथा सूं जुड्‌या केई काव्य लिखीज्या है सत्यप्रकाश जोशी इण परंपर रा में भीष्म रै चरित्र नै लेय अेक काव्य 'गांगेय' लिख्यौ। इण काव्य सूं कवि उण जुग री परिस्थितियां, जुग धरम अर पांत्रा रै विचारां री नुंवी व्याख्या अर उणनै नूंवै ढंग सूं समझावण रौ प्रयास कर्‌यौ है। इण प्रयास में स्त्री–पुरुस रै सबंधां, बांरी, मनोदसावां, सामाजिक वर्णनावां बांरै सिद्धान्त अर व्यवहार रौ भेद नै भी समझायौ है।

भीष्म नै केई नामां सूं जाणीजै है जिणमें देवव्रत अर गांगेय खास है। भीष्म रौ नाम तो देवव्रत इण हो पण भीष्म प्रतिज्ञा करण सूं वांरौ नाम भीष्म पड़्‌यौ। भीस्म गंगापुत्र हुवण सूं 'गांगेय' नाम सूं ओळखीज्यौ इण पोथी में इणी नामसूं काव्य सिरजण हुयौ है ओ काव्य अेक विचार प्रधानकाव्य है जिणमें कवि कीं समस्यावां सूं जुड्‌या विचार सामीं लायौ है अे समस्यावां ब्यावरी परम्परा, स्त्री पुरुसां रा संबंध, परिवार रौ विस्तार, राजसत्ता री राजनीति रौ वरणाव कर्‌यौ है।

गांगेय में राजा सांतनू जद आपरै वचन नै भूल गंगा सूं कीं सवाल करै तो उण समै गंगा रा भाव यूं सामीं आवै –

^^HkkyX;k Hkkir ! fn;kMk ug okpk \
foxr jk l/kku dj.kk vd ntk jk eukg
vkdjl.k fu;e l A
uku rkb tk.k.kk fojFkkA
ifjp u lkekftd yxkok jk vjFkjk[k
feu[kj Hkkx e
nl tkr lekt /kjek*jk vnhBk c/k.kk l
?k.kh Åph Åj tk 0g]
dje jk dke.k vuGjh A**

भीस्म रै जीवण रौ सै सूं मजबूत पक्ष उणरी वा प्रतिज्ञा रैयी जिणमें वो सत्यवती रै पिता नै और वचन

देवै'क वो ब्यांव नीं करैला नीं राज करैला सत्यवती री संतान इज राज करैला वो कैवै –

^ek euk ldkp NkMk
ir Fkkjkbl djlyk jkt] Egl nl opu lkpk
D;l dl Egl tke.k fcn.kk gl v/kjkA**

काशीराराजा रा तीन बेटियां रौ जद हरण कर भीष्म लावै तो उण मांय अम्बा भीष्म सूं ब्यांव करण री अरज करै जद वो नट जावै तो वा घणी री बेराजी हुवै अर आपरै अपमान रौ बदळौ लेवण री अरज करै, पछै वा परसुराम कन्नै जावै वां रो युद्ध हुवै अठै परसुराम री हूंकार इण भांत गूजै –

Fk fd;k vieku ukjh jk v|e ykxk !
vkt Fkkjk lcG lBk gk;X;k ifjokj
rk Fk uV jl;k gk
vd ukjh jk gdk uA

कवि सत्यप्रकाश जोशी इणी क्रम में आगै नियोग प्रथा माथै विचार करतां केई सवाल उठावै। इणरै साथै इण कृति में नारी री भावना सूं जुड़्यौ ग्हैरौ विचार करीज्यौ है वो मानै पुरुस री सत्ता रै सामीं उणरौ कीं अस्तित्व नीं है वा फेर भी सिरजण करै –

^b.k gou e vkgfr ukjh c.kh
ok Hkkx fu;kx Lo;oj gj.k djok
cV ?k.kk e
c.k xbl vj/kkx.kk pkFkkx.kk
nklh c.kh
vkik xok;k
i.k fd;k fljt.k txr e
i#l cgy lekt jkA**

महाभारत युद्ध रै अंत में वो भीष्म आपरें मृत्यु रौ रहस्य बतावै कवि मानै वो आपरै वचनां सूं आत्महत्या कर लैवै –

HkhLe ;l djyh opu&eu vkRefgR;k
t) e /kj;k ugh
i.k gkjX;k tho.k lej e
vkij bl gr l grkGok lA

जिकौ भीष्म आखी ऊमर मां री गोद अर उणरै सनेव सूं वंचित रैवै पण जीवण रै आखरी पड़ाव में मां गंगा उणनै आपरी गोद में समेट लैवै –

vkijk tk;k vej xkx; u]
[kknkfG; ipdkj]
FkiMrh] djk iikGrh
Vjxh mBk l] uhj xfr l
dj.k u cVk foljftr egkn/k eA

इण भांत भारतीय साहित्य परंपरा रै अेक ठावै चरित्र नै नूवै सरुप में सामीं लावळा रौ कवि प्रयास सफल कह्यौ जा सकै जठै सामाजिक विचारधारा नै भी कवि नूंवै सरुप में ढाळी है ।

lku fejxyk ¼lu 2000½ & 'सोनमिरगला' काव्य कृति सत्यप्रकाश जोशी री छैली पोथी कैयी जा

सकै जिकी बारै सुरगवास रै पछै प्रकाशित हुई। इण कृति में पच्चीस कवितावां संकलित करोजी है। अे सगळी कवितावां लोक सूं हट्योडा विचारां सूं जुड़ी रैयी है। कवि इण जगत रै व्यवहार अर उठै रा संस्कारां नै नूंवा ढंग सूं समझावणी चावै अर खुद नी समझणी चावै संस्कृति रो सिरजण, रक्षण अर व्यवहार किण भांत हुवै उण रीति रिवाजों रौ अरथ कांई है वांरी सता कांई है कवि इणांनै समझणौ अर समझावणौ चावै इण बाबत खुदरा विचार लिखै – पण म्हैं कविता री मारफत संस्कृति नै समझणौ चावूं। म्हनै जाणणौ है, संस्कृति किणरी है ? अेक देस री, अेक जात री, अेक वरग री, अेक धरम री, अेक गांव री, अेक काल री, अणत काल री, मरदां री, लुगायां री, टाबरां री कै आखी मिनख जात री ? सासती बिगसती कै थिर बौवार री ? संस्कृतियां रौ आधार कांई है ? कण सिरजै, कण रूखालै ? सभ्यता आ संस्कृति रै बिचालै जिण भांत मिरग आपरी सुगंध नै सगळी दौड़ हेरतौ मटकतौ रैवे उणी भांत कवि रौ मन कवितावां रै मिस केई सवालां रा जवाब इण असीम रेगिस्तानी रूपी जगत मांय खोजबी चावै, इण मिनखा जूण नै समझणी चावै। कवि संस्कृति नै परखणौ अर पिछाणणौ चावै, लोक नै समझणी चावै। लोक रौ सरूप बदळतै समै रै साथै बदळतौ जा रह्यौ लोक रौ विकास तो हुय रहयौ है पण वे मिनखपणै ने भूलता जाय रह्या है, कवि उण लोक नै सोधतां

dB x;k vk dB x;k
o lkpk] HkkGk] Hkjk lcUn ykx
dB x;k o v.k Hkf.k;kMk] xf.k;kMk l[kh ykx\

आपणै देस में लोक आपरी आस्थां रै बळ माथै संस्कृति अर देस रै मूळ सूं जुड्योडा है भलां ई वे लोक आस्या रै मूल रहस्य नै नीं पिछाणै पण फेर भी आपरै धरम नै निभावता संस्कृति नै पोखता आय रह्या हैं –

cjr jk[k.kk] tkx.k dj.kk]
vj vkLFkk l fuork b tko.kk]
vk b lLÑfr g
ftdh tkM b.k nl jk fdjkMk ykxk u
vd vnhB j leh rkj l A

भारत री वर्ण व्यवस्था सूं जुड्या आपरा विचार कवि यूं लिखै –

^^cj.k jk fopkj tye l 0g d dje l \
nl fnuk jk Vkcj jk
dkb rk 0g dje u dkb 0g x.k \
b dkj.k vd okj rk
tye l dj.kk iM cj.k jk fu/kkj.k**

पण कवि संस्कारां नै वर्ण अर संस्कृति रौ आधार मानतां मानै –

^^v rk lLdkj g ftdk fljt oj.k
vj v lLdkj b c.kko lLÑfrA**

कवि सत्यप्रकाश जोशी इण कविता संग्रह में जीवण रा न्यारा–न्यारा चितराम सामी लाया है –

जीवण रा केई पखां सूं जूडँया विचार कर्यौ है। इण कविता संग्रह में मानखै में मिनखी चारै साथै प्रकृति सूं सहभागिता भी बणायी राखै । आज बाजारवाद संगळां पर हावी हुय रह्यौ है ओ बाजारवाद मिनख नै बीं बेच देवौ कवि नै ओ डर है, सिखपणौ बिकै उवसूं पैली वो प्रकृति नै उणदौ फूटरापौ सूंप देवणो

चावै–

इण पैला के ओ बजार बेच दै मिनख नै
बेच दै मिनख रो आपांत
बेच दै वैंरी जोड़ायत टाबर
बेच दै इतिहास अर अपलायत
आवौ आपां पाखा सूंप दां
धरती नै उणरा सबद
जळ नै संगीत
कुदरत नै फूटरापौ
अर सूरज नै उणरी रोसनी।''

कवि सगळै परिवेस रै साथै भासा रै महत्व नै भूल्यौ नीं है वो राजस्थानी भासा नै मान्यता नीं देवण री मंसा नै ठीक नीं मानै वो कैवै –

^^vk[kk jktLFkku jh Hkkl k u uVX;k gk A
Fk lkftl djh g
Egkul xxk jk[k.k jh
ijEijk l rkM.k jhA

पण कवि नै विस्वास है राजस्थानी भासा रै संघर्स नै अठै रां लोग जीतैला –

Hkkl k jk t) Eg thrkyk
vj vd fnu fBjM Fkku
cxk; nkUuk bfrgkl jh mdjMh ekFkA**

इण भांत न्यारा–न्यारा विसयां नै देखतां ओ कह्यौ जा सकै ओ कविता संग्रह कवि जोशी री काव्य जातरा रौ छैलो अर महताऊ संग्रह है।

इण काव्य कृतियां रै अलावा भी केई कवितावां कवि सत्यप्रकाश जोशी री सामीं आवै। आ कवि हुवण रै साथै सफल संपादक भी रह्या 'हरावळ' पत्रिका बांरो संपादन कला री साख भरै।

4- fopkj nhB

किणी भी कवि री विचार दीठ उणरी कविताबां सूं इज समझी जा सकै क्यूं'कै कवि खुलै रूप में वो आपरा विचार सामीं नीं राखै वो जिकौ भी विचार सामीं लावणी चावै, कविता नै उणरौ माध्यम बणावै। कवि सत्यप्रकाश री कविता दीठ भी केई आयाम लियां रैयी । 'दीवा कांपे क्यूं' काव्य कृति में प्रेम, सिणगार रा गीत गावै, कठैई–कठैई मानखै में चेतना जगावण री कविता भी लिखै तो कठैई–कठैई नारी हिरदै री कोमलता नै भी दरसावै।

'राधा' काव्य कृति सूं प्रेम रै मारग मानवता रौ पाठ पठावतां कृष्ण रै माध्यम सूं सगळां नै जुद्ध सूं बिरत हुवण रौ संदेस देवै। 'बोल भारमली' में नारी हिवड़ै री परतां खोलै अर नारी जीवण में प्रेम री महत्ता नै थापित करै। भीष्म रै चरित्र नै उठावतां 'गांगेय' में समाज री केई व्यवस्था सूं जुड्या सवाल उठावै । 'सोनमिरगला' में न्यारा–न्यारा विचार सूत्रां ने अेक सार्थे पिरोवै।

कवि सत्यप्रकाश री मिथकीय दीठ खास उल्लेखजोग रैयी जठै वो कृष्ण, राधा, भीष्म नै नूंवां सन्दर्भ में देखै अर वांनै चित्रित करै । कवि री विचार दीठ नै इण भांत देख सकां –

¼1½ izse vj fl.kxkj & कवि सत्यप्रकाश जोशी री कविता में सीधै रूप सूं प्रेम या सिणगार रा चितराम सामीं नीं आवै या वो प्रेम काव्य री रचना नीं करी पण उणरौ काव्य प्रेम या सिणगार सूं अळगौ भी नीं रैय सक्यौ 'राधा', बोल भारमलीं, 'गांगेय' में स्त्री–पुरुस रै प्रेम रा केई रूप देखी जै 'सोन मिरगला' में तो मिनख सूं मिनख रै प्रेम नै समझावै।

'राधा' में इण जगत रौ विस्तार प्रेम सूं इण हुवै कवि आ बात समझावै अर साथै अर बात भी कैवै कै इण संसार में प्रेम सूं अळगौ कीं नीं है –

^^o Hkojk Qyk j dkuk e
vkijh ihr jk xhr x.kx.kko
v lxGk Fkkj Egkj bt grjk :i vud
Fkkjh Egkjh ihr jh jhr jk Hkko vud
Fkkjh ihr Egu vej dj
Fkkjh ihr Egu ij.k dj A
vk rk Qxr Egkjk Hkkx
v rk Qxr Egkjk y[k
vk Egkjh ihr jk ijlkn
lxGh /kjrh uA**

'राधा' रै प्रेम में वासना रौ अंस कोनी, इण वास्तै वा ब्यांव रै बंधण में नही बधणी चावै वा मानै सांचा प्रेमी–प्रेमिका रौ हो अेक रूप अेक आत्मा हुवै, अेक दूजा सूं न्यारा नीं हुवै इण वास्तै लैकिक बा ब्याव रा बंधण में बधणो नीं चावै।

ub dkUg ! ub
Fkkjk Egkjk C;ko dkuh gk lk!
vk rk Fkkjk Fkkjk l
u Egkjk Egkjk l C;ko gk tklhA

इण कृति रै अलावा 'दीवा कांपै क्यूं' में भी प्रेम रा भाव सामी आया है जठै मछुवारै नै उणरी धाणियाणी रौकै'कै तूं म्हनै छोड़ मत जा –

ikNh rk ckoM Fkkjh >iMh j eNok]
Fkkjh FkkGh e pku.k pkd
rMQk rkM j lkou ekNGhA
/kk;k /kk;k FkkGk ijl vk/kh j veyk eNok]
vy/k f>jk[k tkÅ ckV
vx rk ejkM lkou ekNGhA

प्रेम रै मारग में जद दरार आय जावै तो पछै कोई साधन उण प्रेम नै नीं जोड़ सकै। प्रेम नै प्रेम रै अलावा किणी साधन सूं नीं जोड्यौ जा सकै –

nk ife;k j fcpkG
gr jk eu b tn jpn]
lk lk f=dVc/k
vj vd vd lcn jk mPpkj.k
c.k tko] lipkMk] lko>Mk] enkØkUrk
iN gr j flok; fdlh dfork
Hkkx :l.kk vd ekur.k jkA

¼cky Hkkjeyh½

कवि कोरै वासना री भूख नै इज प्रेम नीं मानै वो मानै प्रेम बिना मिनख अधूरो है प्रेम में पूरणता व्है तो पछै वासना भी पूरी हुय जावै पण उण दोन्यूं प्रेमी–प्रेमिका में अेक दूजै खातर समरपण रौ भाव हुवणौ चाइजै नींतर प्रेम में पवित्रता नीं रैवै अर समरपण हुयां पछै पाछो नीं हटणौ चाइजै। इणसूं पैली प्रेम री परीक्षा हुवणी चाइजै'कै प्रेमी खरौ है'कै नीं

yktk er Fkkjk i|: l u lk/k.k e
y|xk;k Fkkdk erA
vd okj] nk ckj] lk ckj !
d lk Hkkx e [kkVk [kjk
vj loV djk ft.kjk oj.k
m.ku djnk lii|j.k A

इण भांत प्रेम रै महत्व नै कवि आपरा भावां रै साथै–साथै केई पात्रां रै माध्यम सूं सामीं लावण में सफल रह्यौ है अर समझायौ है'क प्रेम मिनखाजूण रौ आधारथंम है।

सिणगार – प्रेमरै साथै सिणगार रा रचनावां मांय देह सिणगार वर्णन रै साथै–साथै सिणगार रै संयोग अर वियोग पक्ष रौ वरणाव भी कर्‌यौ है। सिणगार वरणन में कठैई अश्लीलता रा भाव या चितराम सामीं नीं आया है पण प्रेम निष्ठता रा दृश्य सामीं लावण मे कवि को कसर भी नीं राखी है। कवि सत्यप्रकाश जोशी प्रकृति रा सोवणा चितराम भी आपरी रचनावां में मांड्या है जिका खास उल्लेख जोग है

अेक मुग्धा नायिका आपरै रूप रौ वरणाव इण भांत करै –

MkGh T;k Egkjk vx y|G j
tkcfu;k j Hkkj
iydk >|d&>|d /kjrh tko
xkyk ykyh Nk;
xtxr Egkjh B|Ed&B|Ed
fgoMk Hkj&Hkj vk;A

प्रकृति रा फूटरा चितराम मांडण में कवि कीं कसर नीं छोड़ी है कवि बादळां नै बरसण री प्रार्थना करतां जिकौ बिम्ब मांड्यो है वो अपणौ आप में खास है –

xkjh cg jk oj lkoGk] iko.kk A
vkok vlk< jk cknGkA
pkrd fprkj ekj xhr xko
/kjrh c/kko u exy euko
NkMk u pkn jk jkoyk] iko.kk]
vkok vlk< jk cknGkA

बसंत रौ वरणाव इण भांत करीज्यौ है –

jxk jk ykHkh vk;k clUr j
: ik jk jfl;k xkjh jk dFk j]
ukp&ukp g l|[k n|[k Hky j A
ok;jk e/kjk yHk u >eA
>e vkxf.k; Qkx.k jk Q|y A

वियोग सिणगार री बात करतां विरहण रा सैं भावां नै कवि सांतरै ढंग सूं मांड्यों है –

ydhjk ekMu fx.k fnu fojg jk]
fy[k gkFk ifr;k] u;.k /kk; tko]
>:: jkr fnu] l fl.kxkj NV;k
fn;k iFk tk:] v lklk c>koA

कवि सत्यप्रकाश जोशी मनड़ै रा भावां इकैरण में किणी भांत री कसर नीं राखी पण कठैई मर्यादा नै भंग नीं करी आ सैं सूं मोटी बात है।

¼2½ feFkdh; nhB & मिथक काव्यां मे रचनाकार प्राचीन कथानकां, पात्रां नै लेवै, आपरी नूवीं कल्पनां अर विचार शक्ति रै जरियै बानै नूवै सरूप में व्याख्यायित करै उण कथानकां नै दूजै सरूप में ढाळतां दूजौ संदेश देवै । वे पात्र नूंवै संदेश दै साथै सामीं आवै।

कवि सत्यप्रकाश जोशी दो काव्यां में मिथकीय दीठ सामीं आयी है। पैलो काव्य 'राधा' अर दूजौ 'गांगेय' इण भांत रा काव्य है जिणमें पात्र पौराणिक है पण वांरी व्याख्या दूजै ढंग सूं करीजी है अर कवि दूजा ढंग सूं वांरौ संदेश दियौ है। पौराणिक सरूप सूं हट'र वांरी भूमिका नै इण काव्यां में दरसायीजी है।

'राधा' खण्डकाव्य में कवि आपरी दीठ नै सामीं लावै जठै राधा पैली तो प्रेम रा गीत गावै, कृष्ण0 सूं ब्यांव नीं करण री बात करै अर कवैक म्हैं दोनूं अेक हो इण वास्ते ब्यांव री जरूरत कोनीं । प्रेम री पूतळी आ राधा आगै कृष्ण री मार्गदर्शिका बण उणनै जुद्ध नीं करण री प्रेरणा देवै । राधा अर कृष्ण रै प्रेम प्रसंग में इण भांत री कोई बात नीं आयी ही पण कवि आपरी कल्पना सूं जुद्ध रौ चितराम सामीं लावै, जुद्ध रै अभिशाय नै समझावै अर कृष्ण नै जुद्ध नीं करण री प्रेरणा देवै।

कवि सत्यप्रकाश जोशी री आ परिकल्पना 'राधा' नै अेक नूंवै सरूप में सामीं लावै जठै वा प्रेमिका भी रैय उणनै सद्मारग लावण वाली नायिका बण जावै । कवि मानवतावादी संदेश राधा रै भावां सूं सामीं लावण में पूरौ सफळ रह्यौ है अर ओ संदेस इण काव्य री आत्मा सिद्ध हुयौ है।

इणी भांत 'गांगेय' में भी पुराणा विचारां अर कथासूत्रां सूं न्यारौ हुवतां कवि कैई परिकल्पनावां करी है। कल्पनावां भीस्म रै न्यारै चरित्र नै सामीं लावण में सफल रैयी है। 'नियोग प्रथा' नै कवि ठीक नीं मानै जद'क महाभारत में इणनै महत्व दिरीज्यौ है कवि लिखै –

t i#l grjt g;k rk]
Fk fu;kxk l djh lrku
nok] cke.kk u cyk Egyk ekfG;k e A

कवि गांगेय नै द्रोपदी रौ पक्ष नीं लेवण रै कारण मानै'कै उणरी संवेदना भोंटी हुयगी ही। संवेदना खतम हुयगी इण वास्तै किणी स्त्री रा 'वस्त्र खींचिजता देख उणनै लाज नीं' आयी –

foxr jh o lx ?kVukok fQj gh vk[k vkx
?kerk fprjke T;
vj HkhLe jh lonuk
lpruk HkkVh ?k.kh g;xh A

Û Û Û Û Û

ok ukfj;k u n[kyh
vj u] dh vpjt j;k m.kj euk

fl.kxkjrh d m?kM+rh ukjh] futj njlko e

इणरै अळावां भी कोई भाव इणी भांत रा सत्यप्रकाश जोशी री कवितांवां में देख्या जा सकै।

¼3½ tx jk lnl & कोई भी कवि आपरै सैंजोड़ जुग, उणरी परिस्थितियां अर परिवेस नै अळगौ कर आपरौ काव्य सरिजण नीं कर सकै अर जे कोई इण भांत रौ सिरजण करै भी है तो उणरी सार्थकता खतम हुय जावै। इण दीठ सूं देखां तो कवि सत्यप्रकाश जोशी आपरै जुग सूं कदी अळगा नीं रैय सक्या अर नीं वे आपरी कविता नै समाज सूं न्यारी करी । वांरी कविता जणै–जणै नै आपरै कर्तव्य रो बोध करावती रैयी है।

कवि आपरी भावना सीधै रुप में, आपरा पात्रां रै माध्यम सूं सामी लायौ है। ज्यूं अेक कविता में सार्थक सिरजण अर निर्माण रै महत्व नै 'अैरण' अर घणवीर रै संवाद रै रूप में इण भांत व्यक्त कर्‌यौ है –

Vkdh ?kM] tho.k jh t efM;k fp.kko
tho.k j jFk jh xr u /kjkb c/kko
lb lho tho.k jk QkV;kMk xnMk j
D;k uh cnG tx jh rlohj u]
vj.k c>j ?k.k ohj uA

इणरै साथै साथै आज रै जुग में सैं सूं मोटौ डर जुद्ध सूं है। अै जुद्ध मानवतां नै अर मानव सभ्यता नै खतम कर दैवैला। इण समाज सूं कला, ज्ञान, साहित्य, निर्माण, सिरजण सगळा मिट जावैला। जुद्ध सूं मानखौ मरेला, पछै मिनखां बिना पृथ्वीं किणभांत सोभा पावैला ? इण वास्तै कवि राधा रै जरियै कृष्ण नै अर सगळां नै जुद्ध सूं विरत हुवण रौ संदेस दैवै।

मन रा मीत कान्हां रे
जग में जे मंडग्यौ घमसांण तो
कुण तो बणासी सतखण्ड मै'ल
कुण तो चिणासी मैड़ी माळिया।

Û Û Û Û Û

मिटता जीवण री थनै आंण
मुड़जा फोजां नै पाछी मोडलौ
क्यूं मैटै रखवाळां रौ नांव।
मूड़जा फौजां नै पाछी मोड़ लै।

कवि सत्यप्रकाश जोशी री हरेक काव्य कृति या कविता बिना किणी उद्देस्य रै नीं लिखीजी है। कवि आपरै भावां नै आज रै समाज अर मानखै नै किणी न किणी रूप में संदेस दियौ है, वो संदेस किणी अेक मिनख, समाज राज्य या रास्ट्र रै वास्तै नीं हुय पूरै जगत् अर सगळी मानवता वास्तै। उपयोगी अर सार्थक है। आ सार्थकता इज कवि नै सांचौ अर सजग कवि सिद्ध करै।

7-5 Hkkk lk vj flYi

भासा अर सिल्प री दीठ सूं कवि सत्यप्रकाश जोशी रौ काव्य आधुनिक राजस्थानी भासा री खरी खिमता री ओळखांण करावै। कवि काव्य रौ सिरजण तो कर्‌यौ ही है पण साथै–साथै राजस्थानी भासा नै माणकरूप देवण रौ काम भी कर्‌यौ है।

कवि कठैई वो सबदां नै घड़ै पण कठै–कठै तो सबद भावां रा अनुगामी बणै उणरै साथै–साथै भासा रौ सहज प्रवाह कवि जोशी री खासियत कैयी जा सकै, जठै बणावटी–पण घणी अळगी है।

राजस्थानी लोकगीतां में भासा री जिकी सरसता अर सहजता देखी जावै, उणी भांत री सरसता अठै काव्य में देखीजै। कवि सत्यप्रकाश जोशी खुद केई बार इण बात नै स्वीकार करी है'कै लोकगीतां अर हरजसां रो वांरै काव्य मायै गहैरौ असर रयौ है।

सत्यप्रकाश जोशी री काव्य जातरा वांरै गीत 'दीवा कांपै क्यूं' सुं मान सकां जिकी 'सोनमिरगला' तांई गतिमान रैयी पण कठैई भी भासारी दीठ सूं कैई बदळाव कविता में देख सकां। सगळी ठौड़ वो ई लोच गंभीरत, सरलता अर सहजता दीसै। कवि री भासा सूं जका चित्राम सामीं आवै यूं लागै जाणै पात्र आपां रै सामीं इण संवाद बोल रह्या हुवै –

थारै नैणा रौ नेह
जणा जणा में छिळकै
पण नेह उझळकै कोनी,
थारी ओप ऊतरै कोनी,
थारा प्राण रीतै कोनीं
कान्हूड़ा !
यूं ई लांख–लाख प्राणां री ओकां में
थूं नेह री अखूट धार कूढ़ियां जा
कुण कितरौ तिरसौ है
बैरो पड़ जासी ।

राजस्थानी भासा रै अलावा दूजी भासावां रा सबंदा रौ कवि प्रयोग कर्यौ पण वांनै राजस्थानी रंग सूं रंग दियौ है ज्यूं इण कविता में दीसै –

बड़ी साजिस है बजार

सबद नै, संगीत नै, सुंदरता अर रोसणी नै बरतलै मिनख री भूख अर कामना जणावण में भोग अर उपभोगां रौ लोभ

कुचरै मन में।

कवि राजस्थानी भासा रै महत्व नै स्वीकार करतां उणनै ग्यान रै विकास सारू सहायक मान्यौ है पण अठै तो कवि आपरै काव्य सगती रौ परिचय आपरी लूंठी अर सगतीवन भासासूं कर्यौ है।

cnGrh nfu;k jk*gj iGdk c.k Egkjk fopkj
Egkjs fodkl jk lk/ku gs lcn !
lcn&lcn tkM+ Egs c.kkbZ Hkk"kk
ijEijk Egus lkSih ftdh fojklr
ok b.k Hkk"kk eSa
b.k Hkk"kk js ekjQr gq;k Egkjs X;ku jk fodkl AA

7-6 jktLFkkuh dk0; ijEijk ek; lR;izdk'k tks'kh jk ;ksxnku

सन् 1850 रै लगैटगै राजस्थानी काव्य रौ आधुनिक जुग सरू हुवै, इण डेढ सदी री अवधि मांय घाणा कवि आपरी महताऊ भूमिका निभायी है। घणकरा कवि आपरी कविता सूं लोक नै जागृत कर्यौ जिणसूं आ बात सिद्ध हुयी'कै समाज में चेतना जगावण अर समाज विकास मांय साहित्यकार री भी महताऊ भूमिका हुय सकै। समाज मांय आपरी महताऊ भूमिका निभावतां कैई सपूत साहित्य सिरजण कर्यौ, राजनीति री सेवा करी आजादी री लड़ाई लड़ी, जनता नै खुदरै अधिकारां सारू जागृत कर्यौ आजादी आयां सुराज सारू संघर्स भी कर्यौ अर नूंवी चेतना रा भाव भर्या।

आधुनिक राजस्थानी कवियां रीं कड़ी में अेक खास नाम सत्यप्रकाश जोशी रौ है। राजस्थानी भासा

ओळखांण करावणवाळा चावा रचनाकारां में सत्यप्रकाश जोशी रौ नाम चावो है। बांरी कृति 'राधा' साहित्य जगत् मांय अेक नूंवी लहर लैर आयी जिणसूं लोग राजस्थानी भासा रो खिमता नै पिछाणी। आपरै समकालीन साहित्यकारां रै साथै कवि सत्यप्रकाश जोशी लगोलग प्रयास करता रह्या'कै राजस्थानी नै उणरौ मान–सम्मान मिळै। उणांरी काव्य साधना साथै–साथै 'हरावळ' पत्रिका रो संपादन अर प्रकासन राजस्थानी भासा रै विकास सारु महताऊ योगदान कयौ जा सकै।

कवि सत्यप्रकाश जोशी 'राधा' रै जरियै मानवतावाद रौ पाठ पढायौ, 'बोल भारमली' सूं नारी मन री परतां खोली 'गांगेय' में सामाजिक अव्यवस्था माथै सवाल खड़ा करिया। 'दीवा कांपै क्यूं?' अर 'सोनमिरगला' री न्यारी–न्यारी कवितावां सूं कैई भाव सामी लाया। वांरी काव्य सैली लोकगीतां सूं जुड्योड़ी अर संगीतात्मकता री विसेसतावां नै लियौड़ी है।

भाव अर विचार री दीठ सूं राजस्थानी काव्य मांय नूंवा प्रयोग करण में कवि जोशी सफल रिया है। वांरा प्रयोग लोक रै चिंतन नै नूंवौ आधार दियौ, नुवां विचार रौ मारग खोल्यौ। इण नूंवी विचार सम्पदां सूं राजस्थानी काव्य घणौ सिमरध हुयौ जिणरौ श्रेय सत्यप्रकाश जोशी नै दियौ जा सकै।

7-7 bdkbi jk lkj

जोधुपर रा जाया जनम्या कवि सत्यप्रकाश जोशी आपरी रचना 'राधा', 'दीवा कांपै क्यूं?' 'बोल भारमली ''गांगेय' अर 'सोन निगरळा' रै साथै दूजी कवितावां सूं राजस्थानी काव्य री नूंवी भाव सामग्री, मिथकीय दीठ, सरल अर सहज राजस्थानी रौ प्रयोग बांनै अेक लूंठा सपूत सिद्ध करै है। कवि सत्यप्रकाश जोशी री रचनावां अर काव्य दीठ राजस्थानी साहित्य जगत् में अमर रैवैला।

7-8 vH;kl lk# loky

(i) कवि सत्यप्रकाश जोशी रै व्यक्तित्व अर कृतित्व सूं जुड्यौ अेक सांतरौ आलेख लिखौ।

(ii) ''सत्यप्रकाश जोशी राजस्थानी काव्य परंपरा रा लूंठा कवि है।'' इण कथन री नै समझावो।

(iii) 'राधा' काव्य रै जुग–संदेस नै समझावौ।

(iv) कवि सत्यप्रकाश जोशी आपरी रचनावां सूं नारी रै रुप रो किण भांत नुंवों बरणाव करियौ है? समझावौ।

(v) 'बोल भारमली' में भारमली रौ चरित्र नारी हृदय री परतां नै किण भांत खौले ? समझावो।

7-9 egrkÅ lnHkZ xzUFk

1. राजस्थानी भाषा और साहित्य का इतिहास – डॉ. मोतीलाल मेनारिया
2. आधुनिक राजस्थानी काव्य – रामेश्वरदयाल श्रीमाली
3. अंवेर – पारस अरोड़ा
4. निजराणौ – जागती जोत विशेषांक
5. सत्यप्रकाश जोशी (मोनोग्राफ) – डॉ. अर्जुनदेव चाण
6. राजस्थानी भाषा एवं साहित्य – डॉ. कल्याण सिंह शेखावत

bdkbZ & 8

izeq[k dfo & ukjk;.kflag HkkVh

bdkbZ jph : i j[kk

8.0 उद्देस्य

8.1 प्रस्तावना

8.2 राजस्थानी साहित्य रो आधुनिक कालखण्ड

8.2.1 आजादी रै पैली रो राजस्थानी काव्य

8.2.2 आजादी सारू जन आंदोलन

8.2.3 जन जागरण– राजनैतिक, आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक अर भणाई–गुणाई रो वातावरण

8.2.4 राजस्थानी साहित्यकारां रो योगदान

8.2.5 आजादी रै पछै रो राजस्थानी काव्य

8.3 प्रमुख राजस्थानी कविवर – नारायणसिंह भाटी

8.4 नारायणसिंह भाटी रो व्यक्तित्व अर रचना संसार

8.5 कवि नारायणसिंह भाटी रै काव्य री निरख–परख

8.5.1 प्रकृति काव्य

8.5.2 छायावादी काव्य

8.5.3 प्रगतिसील कविता

8.5.4 नारी वंदना रो काव्य

8.5.5 जीव जगत रो जथारथ

8.5.6 गुमेजगाथावां भरयौ काव्य (क) दुर्गादास (ख) परमवीर

8.6 नारायणसिंह भाटी रो योगदान

8.6.1 भाव अर विचार री दीठ सूं

8.6.2 भासा अर सैली री दीठ सूं

8.6.3 नया प्रयोगां री दीठ सूं

8.6.4 काव्य री बानगी– अरथ अर व्याख्या

8.7. इकाई रो सार

8.8 अभ्यास रा सवाल

8.9 संदर्भ पोथ्यां

8-0 mís;

इण इकाई लेखन रो उद्देस्य है–

1. इण इकाई लेखन रो ध्येय/उद्देस्य आधुनिक राजस्थानी साहित्य रा काव्य री सार रूप में जाणकारी करावणो है।
2. आधुनिक राजस्थानी साहित्य रा समय अर जुग रा वातावरण री विगत मांडणी है।

3. आधुनिक राजस्थानी काव्य रा मानीता कवेसरां बाबत बतावणो है।

4. आधुनिक राजस्थानी काव्य रा वरेण्य कवि नारायणसिंह भाटी रा व्यक्तित्व अर रचनावां सूं रूबरू करावणो है।

5. नारायणसिंह भाटी रा योगदान नै दरसावणो है।

8-1 çLrkouk

1. आ इकाई राजस्थानी साहित्य रा आदिकाल अर मध्यकाल रा अध्ययन री आगली अर आखरी कड़ी है।

2. आधुनिक काल री सरूआत सन् 1850 सूं मानी जावै है। तद् सूं लैय'र अजै तांई राजस्थानी साहित्य में जको लेखन हुयौ है बो दो धारावां में बांट्यौ जा सकै– एक गद्य अर दूजो पद्य। आं दोनूं धारावां में घणकरी विधावां में मोकळो साहित्य लेखन हुयौ है पण इण इकाई में फगत काव्य बाबत ही विचार करयौ गयौ है।

3. आधुनिक राजस्थानी साहित्य रा घणाई कविवर हुया है जिणां भायं सूं नारायणसिंह भाटी रा काव्य रो मूल्यांकन इण इकाई में कर्‌यौ जा रियौ है।

8-2 jktLFkkuh lkfgR; jk vk/kqfud dky [k.M

राजस्थानी साहित्य जुगां पुराणो है। विक्रम री नोवीं सदी सूं लैय'र अजै तांई साहित्य सिरजण री आ परम्परा चाल री है। लारला बारहसौ बरसां में अलेखूं पोथ्यां रो लेखन हुयौ। भांत–भांत रा भावां अर विचारां सूं भरी–पूरी रचनावां सामी आई।

8-2-1 vktknh js igyh jk jktLFkkuh dky[k.M

राजस्थानी भासा री साहित्य सिरजण री परम्परा जुगां जूनी है। विक्रम री 12वीं सदी सूं लैय'र अजै तांई 1200 बरसां में गद्य अर पद्य री भांत–भंत री विद्यावां में अणपार–साहित्य री रचणा साहित्कार करी है। साहित्य रै साथै–साथै इतिहास, राजनीति, धरम–दरसण, खगौल–सास्त्र, समुद्र सास्त्र, ज्योतिस, जीव विज्ञान, भौतिकी रसायन सास्त्र, वनस्पति सास्त्र, अर्थ सास्त्र, समाज सास्त्र जैड़ा अनेकानेक विसय लेय'र मौलिक ग्रन्थां री अेक लाम्बी लेखन परम्परा राजस्थानी साहित्य में देखण नै मिळै। अे हाथ लिख्या ग्रन्थ देस–विदेस रा ग्रन्थ भण्डारां में देख्या जा सकै।

राजस्थानी साहित्य रा आदिकाल, मध्यकाल अर आधुनिक काल रा राज्यादातर ग्रन्थ, काव्य रा है। ओ साहित्य महाकाव्य प्रबन्ध–काव्य, खण्डकाव्य, चम्पूकाय अर मुक्त काव्य रै रूप में लिखीज्यौ। राजस्थानी री पुराणी परम्परा डिंगळ काव्य री है, जिकौ अपणी तरै रौ न्यारी–निरवाळो अर महताऊ जिणीजै। डिंगळ काव्य री आ परम्परा छन्दोबद्ध ही, जिणमें भांत–भांत रा अलंकारां सूं कविता कामिनी नै कविगण सिंणगार अर फूटरापौ दियौ। इण डिंगळ काव्य री आ खास बात ही कै इणरौ छंद विधान घणौ समृद्ध अर विद्विद रौ, वैयण सगाई री अेक नुंवी परम्परा रै साथै घणकरा अलंकारा–सूं भर्‌यौ–पूरौ अर अेक विसाळ सबद कोस– री थाती लियोड़ौ है। काव्य री इणी जूनी विसाळ अर समृद्ध परम्परा सूं प्रभाव लैय'र आज री राजस्थान कविता रौ सिरजण हुयौ है।

8-2-2 vktknh lk: tu vkUnksyu

राजस्थानी भासा रौ आज रौ साहित्य सन् 1850 री उण आजारी री पैली लड़ाई सूं सरू हुयौ मानीजै जद आजादी री रणभेरी गूंजण लागी अर रास्ट्रीय चेतना री अलख आखा भारत में जगाइजी। ओ बो समै हो जद भारतवासी गुलामी री तकलीफां नै समझी अर उणां में आजादी

री ललक जागी। अंग्रेज भारत में जिण तरै राजनैतिक दाव–पेच खेल रिया हा, भारत री जनता में घरम, जात अर खेतर रै नांव माथै फूट घाल'र राज कर रिया हा उणरौ असर रियासती (वां दिनां रा) राजपूताना पर भी हुयौ। राजपूताना में 22 रजवाड़ा हा, जिकां रा न्यारा–न्यारा नांव हा। आं रजवाड़ा री अंगरेजां सूं संधिया हुयौड़ी ही कै बे उणां री सीधी खिलाफत नीं करैला। इणरै बदळै अंग्रेज आं रियासतां री बारै सूं हुयौड़ा हमलां रै समै मदद करैला। रजवाड़ा रा राजा रियासतां रा सासक हा, पण अंग्रेजी सत्ता कद भी उणमें दखल दे सकती ही। रियासतां में राजा नौ मान हो अर राजा भी रियासत री जनता नै हैत अपणास सूं राखतौ।

जद सगळा भारत में पैलो सुतंत्रता संग्राम सरू हुयौ तद क्रान्किारी देस भगत आगै आया अर अंग्रेजां रै विरोध में भारत री सेना भी साथ दियौ। भारतीय सैनिक अंग्रेजां रै कैवण सूं खुदरा ही देसवासियां माथै गोळी चलावण सूं मना कर दियौ। फौज री इण क्रान्ति रै कारण झांसी अर दिल्ली सूं लै'र ठेठ दिखण तांई अेक क्रान्ति रौ वातावरण बणग्यौ। दिल्ली रौ आखरी बादसाह बहादुरसाह ''जफर'', झांसी री राणी लक्ष्मीबाई अर तात्या टोपे जैड़ा देस भगतां री अगवाई में सुतन्त्रता संग्राम री लपटां गाँव–गाँव तांई फैलगी। अंग्रेज इण पैला सुतन्त्रता संग्राम नै दबावण री घणी कोसीस करी। फौज अर पुलिस रौ जुलम बढ़ण लाग्यौ। आ तो दूसरा विस्व जुद्ध रै पछै री बात है जद सुभाषचन्द्र बोस जैड़ा नेता आजाद हिन्द नांव सूं अेक सेना बणाई जिणरौ अंग्रेजां रा दुसमी देसां खास तौर सूं जापान अर जरमनी सूं मदद लैर अंग्रेजां सूं लड़ाई कर, देस नै आजाद करावण रो ध्येय हो। मोकळा भारतीय इण आजाद हिन्द फौज में भरती हुया अर गोळी रौ जबाब गोळी सूं दैय'र अंग्रेजां नै भारत सूं बारै काढ़ण री रूप रेखा तैयार करी।

इणी तरै जद पंजाब रा जलियावाळा बाग में जनरल डायर पंजाब री जनता नै गोलियां सूं भून दी, तद भगतसिंह अर बिस्मिल जैड़ा सैंकड़ों क्रान्तिकारी अंग्रेजां सूं खूनी क्रान्ति करण रौ नारो दियौ जिणरै कारण कई अंग्रेज अर वांरा परिवार क्रान्तिकारियां री गोळी सूं मारिया गया। इणी समै बिहार में चेरा–चोरी काण्ड हुयौ अर जनरल डायर नै लन्दन में भगतसिंह गोळी सूं उड़ा दियौ अर खून रौ बदळो खून सूं ले लियौ। इण तरै सन् 1920 तांई क्रान्तिकारी आन्दोलण रौ जोर रियौ जिणरौ असर राजपुताना माथै भी पड्यौ। क्रान्ति रौ ओ सुर साहित्यकारां री कलम सूं उजागर हुयौ। चुरू रा संकरदान सामौर, मारवाड़ रा महाराजा मानसिंह अर बांकीदास, मेवाड़ रा केसरी सिंह बारहठ, बूंदी रा सूरजमल मीसण जैड़ा कवि अंग्रेजां रै विरोध में कलम चलाई अर जन चेतना जगाई। क्रान्तिकारी केसरीसिंह बारहठ नै तो जेळ जांवणौ पड़यौ अर वांरी सन्तान अर भाई लार्ड हार्डिंग माथै बम फैंक्यो जिणरै कारण वांनै फांसी री सजा हुई।

राव गोपाल सिंह खरवा, मारवाड़ में आहुवा अर आसोप रा ठाकूर, वांरी सेना अर जनता अंग्रेजां सूं सीधी लड़ाई मौल ली अर सेखावाटी रा डूंगजी, जवाहरजी, बखतावार सिंह, लोटियो जाट आगरा रो किलो अर नसीराबाद री छावणी लूटी। इण तरै रियासतां में भी क्रान्तिकारी आन्दोलन रौ जोर रियौ।

xkèkhoknh vkUnksy.k vj jktLFkku

अंग्रेजी सत्ता रै विरोध में सन् 1920 रै पछै अेक बदळाव आयौ। गुजरात रा कठियावाड़ी ईलाका में जलम्यौड़ौ मोहनदास करमचन्द गांधी नांव रो अेक वकील अफ्रीका सूं भारत आयौ। भारत में कांग्रेस दळ में सामिल हुयौ अर धीरे–धीरे कांग्रेस रौ प्रभावी नेता बणग्यौ। गांधी रौ ओ सोच हो कै आजादी जैड़ी पवित्र चीज माथै खून रा दाग नीं लगाणा चाहिजै।

अंग्रेजां रौ विरोध हिंसा सूं नीं अहिंसा सूं हूवणौ चाहिजै। अंग्रेजां रै विरोध असहयोग, सत्याग्रह, जन–आन्दोलन, आमरण अनसन अर भूख हड़ाताळ जैड़ा साधनां सूं करणौ चाहिजै। अंग्रेजां सूं नहीं अंग्रेजीयत सूं घिरणा हूवणी चाहिजै। मोहनदास करमचन्द गांधी री अे बातां नुंई ही जिणां

नै समझण में घणी दैर लागी पण जल्दी ही गांधीवादी विचारधारा रौ असर आखै भारत में दीखण लाग्यौ। जगै–जगै जन आन्दोलण सरू हुया अर गांधीजी खुद आमरण अनसन कर्यौ, डण्डी जात्रावां करी, जनता सूं अंग्रेजां रौ असहयोग करण री अरदास करी। पैली तो गांधीवादी आन्दोलन में थोड़ा ही लोग भेळा हुया पण देखतां ही देखतां अणपार जन इण आन्दोलन में कूद पड़यौ। अंग्रेजी सत्ता अहिंसक आन्दोलन नै दबावण री घणी कोसीस करी, निहत्था लोगां माथै घोड़ा दौड़ाया, डण्डा बरसाया, गोळियां चलाई, लोगां नै कैद कर्या पण अंग्रेजां रा जुलम झेलता थकां भी लोग आं आन्दोलनां सूं जड़ियौड़ा रिया। ज्यूं–ज्यूं अंग्रेज आं आन्दोलनां नै दबावण री कोसीस करी अे बढ़ता ही गया। सैवट अंग्रेजां नै गांधी अर दूजा नेतावां सूं बात सरू करणी पड़ी अर 15 अगस्त 1947 नै भारत नै आजाद करणौ पड़्'यौ।

इण गांधीवादी आन्दोलण रौ असर राजस्थान री देसी रियासतां माथै भी पड़्यौ अर अठां री रियासतां में गांधीवादी अहिंसक आन्दोलण सरू हुया। वां दिनां री मारवाड़ रियासत में जयनारायण व्यास री अगवाई में प्रजा मंडळ बण्यौ अर अंग्रेजां रै विरोध में सत्याग्रह, भूख हड़ताल, आमरण अनसन, असहयोग, बहिस्कार सरू हुया। इणी तरै मेवाड़ में माणिक्यलाल वर्मा री अगवाई में, ढूढाड़ में हीरालाल शास्त्री अर हाड़ौती में भैंरूलाल काळा बादळ, अजमेर में हरिभाऊ उपाध्याय अर बीकानेर में कुम्भाराम आर्य जैड़ा जन नेता आगै आया अर जनता में आजादी रौ भाव जगायौ। आं राजनेतावां रै साथै–साथै अठां रा साहित्यकार अर पत्रकार भी आजादी रा इण आन्दोलण में खुद री कलम सूं जन जागरण करण में महताऊ भूमिका निभाई। अंग्रेजां री गुलामी सूं कित्तौ नुकसाण हूयर्यौ है अर अंग्रेजां रै कारण देस रौ धन प्रदेसां पूग रियौ है। गुलामी सूं बढ़र कोई दुःख कोनी हुवै। अै सारी बातां अठां रा साहित्यकार लोगां नै मांड'र समझाई। गांधीवाद कांई है, उणरा सिद्धान्त अर उण रौ कामकरण रौ तरिको कांई है, इणरी उण समै रा साहित्यकार रियासती जनता नै पिछाण कराई। ऊमरदान, गणेशलाल व्यास ''उस्ताद'', सुमनेस जोसी, कन्हैयालाल सेठिया, सत्यप्रकास जोसी, मेघराज मुकुल, चन्द्रसिंह, रघुराजसिंह हाडा, नाथूदान महियारिया, कविराव मोहनसिंह जैड़ा सैकड़ों कवि अर रचणाकार जन जागरण खातर मोकळै साहित्य री सिरजण करियौ। अे कवि जन नै चेतायौ, जगायौ अर देस भगती रौ अेक वातावरण बणायौ।

इण गांधीवादी जुग में ही डॉ. नारायणसिंह भाटी रौ जलम हुयौ। वांरा जलम सूं लैर देस नै आजादी मिलण तांई आखै भारत अर रियासती राजस्थान में राजनैतिक हालात इण भांत रा ही हा। डॉ. नारायणसिंह भाटी रौ जलम राजस्थान री मारवाड़ रियासत में हुयौ हो। वै भी क्रांन्तिकारी अर गांधीवादी दोनूं तरै रा आजादी रा आन्दोलण देख्या हा। वीर वसुन्धरा कहीजण वाळी इण मरूधरा में सुतन्त्रता रा पुजारी देस भगतां री अेक लाम्बी परम्परा रैयी है जिणमें 'दुर्गादास' अर आज रा परमवीर 'शैतानसिंह' कवि नारायण सिंह भाटी रा चरित नायक बण्या। वांरी कीरत में नारायणसिंह भाटी ''दुर्गादास'' अर ''परमवीर'' जैड़ा दो खण्डकाव्य रच्या। दुर्गादास रा चरित नै सामी राख'र काव्य सिरजण रै लारै सुतन्त्रता सेनानी, स्वामी भगत अर देस भगत वीरां नै श्रद्धा री अंजळी अरपण रौ भाव साफ निगै आवै है।

आधुनिक राजस्थानी काव्य रौ तीसरौ चरण सन् 1947 सूं लैर अजै तांई रौ है जद देस आजाद हूयग्यो हो अर देस में हिन्दू–मुसळमाना रा दंगा सरु हुया अर महात्मा गांधी री हत्या हुई। सुतन्त्र भारत रौ संविधान बण्यौ, संसद अर विधानसभा रा चुणाव हुया। पांच–पांच बरसा री योजनावां रा खाका खींचीज्या। देस अर विदेस री नई रणनीत बणी अर पंचसील रा सिदान्ता नै आधार बणा'र भारत री अगवाई में अैड़ा देसां रौ संगठण बण्यौ, जिका न तो अमेरिका नै पाळै में हा अर न रूस नै साथै हा। प्रागतीसील विचारधारा नै आधार बणा'र कई देस बिना किणी दबाव रै राज–काज सरू कर्यौ। भारत अेक प्रजातान्त्रिक गणराजय बण्यौ अर राजसत्ता जनता

रै हाथां में आई। भारत अर पाकिस्तान दो देस बण्या, दोनां रै बिचाळै मन मुटाव अर झगड़ा चालता रिया, चीन रै साथै भी 1962 में जुद्ध हुयौ। चीन हिन्दी चीनी भाई–भाई रौ नारो लगातौ रियौ, भाई चारै री बातां करतौ रियौ अर चुपचाप भारत रा भू–भाग माथै रातों–रात विसाळ सेना भेज'र हमलो कर दियौ। भारत आ कदैई सोची ही कोनी ही कै चीन इण तरै दगो करैला। सेना री पूरी तैयारी ही कोनी जिणसूं चीन रै हमलां सूं घणौ, नुकसाण हुयौ। भारत रा अलेखूं सैनिक बलिदान दियौ। राजस्थानी वीरां री टुकड़ियां भी हिमाळै माथै पूगी अर मरुभोम रा वासी फौजी हिमाळै री बरफीली पहाड़ियां माथै बरफ रै ठण्ड रै कारण घणी तकलीफां झेली। मेजर शैतानसिंह देस री रक्षा खातर अमोला प्राण अरपण कीना अर वांनै इण वीरता खातर परमवीर रौ सम्मान मिळयौ।

शैतानसिंह चौपासनी विद्यालय में पढ़ता हां जद सूं ही कवि नारायण सिंह भाटी रौ वांसू मैळ–मिलाप हो। वै बरसां साथ रिया। इण कारण जद कवि नै ठा पड्यौ कै मेजर शैतानसिंह रौ चेसूळ में सुरगवास हूय गयो है अर वै परमवीर रौ सनसान पायो है तद कवि खुद रै मनड़ै रा भाव रोक नहीं सक्यौ अर इण परमवीर नै अंजळी अरपण करतौ ''परमवीर'' नांव सूं नामी खण्ड काव्य रच्यौ।

इणरै पछै सन् 1965 अर 1972 में पाकिस्तान सूं जुद्ध हुयौ अर फेर सारै भारत में देस भगती रौ भाव भर्‌यौ वातावरण बण्यौ। पाकिस्तान रै साथै तासकंद अर सिमला में समझौता हुया पण मन मिळ्या कोनी अर दोनूं रै बिचाळै तणाव बण्यौ रियौ। सन् 1974 तांई इण देस अर परदेस में घटी घटनावां नै नारायणसिंह भाटी निजरां देखी अर हियै अंगेजी। वांरी कविता माथै इण वतावरण रौ असर देख्यौ जा सकै। राजस्थान में आजादी पछै रजवाड़ा अर जागीर प्रथा खतम हुई। विधानसभा अर पंचायतां रा चुणाव हुया अर धीरे–धीरे आखा वातावरण में बदळाव घणी तेजी सूं हुयौ। लोगां में भणाई री ललक जागी अर जातपांत रा बन्धण ढीला हुया। अेक प्रगतिसील अर रास्ट्रीय चेतना रौ उदय हुयौ। कवि भाटी जोधपुर में पढ़ लिख–र बड़ौ हुयौ अर चौपासणी सोध संस्थान री थापना रै पछै उणरा संस्थापक निदेसक बण्यौ। कवि आजादी रा इण दौर में कैई घटनावां घटती जिणां नै निजरां देखी। कैई चरित रेखावां उणारी आंख्या रै सामी आई अर गई। जीवण में घटी घटनावां अर सुख–दुख रा चितराम उणांरी अनुभूति अर विचार, काव्य पोथ्यां रै रूप में उजागर हुया। कवि खुद रा जथारथ नै भूलाय नी सकै अर उणरा प्रभाव सूं अछूतौ नी रैय सकै। कवि रा जुग नै सामी राख'र ही उण रै साहित्य री परख, निरख करी जावणी चाहिजै। इणी कारण नारायणसिंह भाटी जुग रा राजनैतिक दरसाव नै सामी राख्यौ है।

8-2-3 tu tkxj.k& jktuSfrd] vkfFkZd] lkekftd] lkaLÑfrd vj Hkk.kkbZ&x.kkbZ jk okrkoj.k

राजस्थानी जूनी, समृद्ध, सुतंत्र अर विसाळ साहित भंडार सूं भरी पूरी भासा है। बारह सौ बरसां पैली इण भासा रौ उद्‌भव मानीजै। विद्वानां रौ मानणौ है कै दुनियां री सगळी भासावां री जननी संस्कृत है। इण रा दो रूप जगचावा हुया– अेक लौकिक संस्कृत अर दूजौ वैदिक संस्कृत। इणां दोनूं रूपां में मोकळा साहित्य री सिरजणा हुई। संस्कृत साहित्य री काव्य परम्परा पाली, प्राकृत अर अपभ्रंश भासावां सूं राजस्थानी भासा तांई पूगी। किणी भासा री विकास जातरा में उण जुग रौ असर सबसूं ज्यादा हुया करै। जिण समै रौ बो साहित्य हुवै उण माथै उण जुग री सामाजिक, राजनैतिक, आरथिक, धारमिक अर सांस्कृतिक परिस्थितियां रौ असर सबसूं ज्यादा हुया करै। ओ ही कारण है कै हरेक जुग में कदैई वीर गाथावां, कदैई भगती अर कदैई सिणगार, रीति अर नीति री रचणावां रौ लेखन इधको हुयौ। इणी आधार माथै भासावां रै साहित्य रौ इतिहास काल खण्डा में बांट'र लिखीज्यौ। साहित्य री धारा सतत बैवती रेवै, समै रै साथै उण में बदळाव आवै। भाव, भासा अर सैली रा नुंवा–नुंवा प्रयोग हुवै अर कैई भांत री पौथ्यां रचीजै। राजस्थानी भासा

भी बारह सौ बरसां रा साहित्य रा भांत–भांत री विधावां में रचयौड़ी रचनावां रा न्यारा–न्यारा सैली प्रयोगां सूं समृद्ध हुई।

lkekftd okrkoj.k

आधुनिक राजस्थानी जुग रौ दरसाव इण बात री साख भरै कै इण समै सामाजिक बदळाव भी घणी तेजी सूं हुयौ। परम्परावादी राजस्थानी समाज धीरे–धीरे कूरीतां नै छोड'र प्रगतिसील समाज रै रूप में सामी आवण लाग्यौ। परिवार, समाज, जात–पांत, बंस परम्परा, ऊँच–नीच, भेद–भाव अै सगळा ही आज रै जुग रै साथै घटण लाग्या। संयुक्त परिवार बिखरण लाग्या। मानवी रौ सोच सुवारथ पर आ'र अटकग्यौ। परिवार रौ मतलब नयौ रूप ले लियौ अर लोग, लुगाई तांई परिवार सिमटग्यौ। मां–बाप, भाई बैन रै बिचाळै हेत कम हूवण लाग्यौ अर राजसाही अर सामन्ती व्यवस्था खण्ड–खण्ड हूयगी। ब्याव–सावां में भी बदळाव आयौ। जातिगत ब्याव री जागां अन्तरजातीय ब्याव रौ दौर चाल्यौ। सती–प्रथा खतम सी हूयगी। बाळ पणै रा ब्याव, अणमेळ ब्याव अर बहुविवाह प्रथा धीरे–धीरे घटण लागी पण दहेज–प्रथा बढ़ण लागी अर होळै–होळै अे कूरीत अभिसाप बणगी। भणाई–गुणाई अर नुवां राज रा काण कायदा सूं समाज में भी भोत बड़ो बदळाव आयौ। सरकारी नौकरी में रैवण वाळौ मिनख अेक सूं ज्यादा ब्याव नीं कर सकै। कोई बाळ–विवाह अर सती–प्रथा नीं निभा सकै। दायजो मांगणौ अर लेणो, कानून री नीजर में अपराध बणग्यौ। इण तरै समाज में बदळाव आयौ अर समाज रौ रूप बदळण लाग्यौ। जात रै आधार पर ऊँच–नीच रै भेदभाव खतम हुयौ अर सम भाव रौ उदय हुयौ। ऊँची जात रा लोगां रा नीची जात सारु अत्याचार भी कम हुया। आज रै इण सामाजिक बदळाव नै डॉ. नारायणसिंह भाटी देख्यौ हो, इण कारण वांरा सगळा काव्य संसार में इण समाजू बदळाव रा चितराम मणड्यौड़ा है।

vkjfFkd okrkoj.k

डॉ. नारायणसिंह भाटी रौ जुग अरथ दी दीठ सूं घणौ कमजोर हो। नारायणसिंह भाटी रौ गाँव माळूंगो इण मरुधरा रै लाम्बा चौड़ा खेतर में फैलयौड़ा गाँवा में सूं अेक गाँव हो। जठै अेक साखी खेती सूं लोगां रौ भरणपोसण हुया करतौ। गाँव में बीणज ब्यौपार घणौ हो कोनी। अेक दो दुकानां में बैठ्या बाण्या जरूरत री चीजां राख्या करता। खाती, कुम्हार, लुहार जैड़ा दो च्यार घर खुद रै ही काम धन्धा सूं पेट पाळ्या करता। थोड़ा भोत लोग नौकरी पैसा में गाँव सूं बारै लाग्यौड़ा हा। गाँव में सातूं कोमां रा घर–बार हा। आरथिक साधना री भरपूर कमी, आवागमन रा साधन भी अणूता कोनी हा। लोग–बाग नैड़ो हूवण सूं जरूरत री चीज–बसत खातर जोधाणै आंवता–जांवता रैवै। डॉ. नारायणसिंह भाटी राजपूत परिवार सूं हा जिणारौ परिवार ज्यादातर राज री नौकरी में रियोड़ो अर परम्परावादी परिवार रै कारण ब्याव–सादी, मुकलावो, टीको अर दूजा रीत–रीवाजां में खरचौ घणौ, आमद कम ही। यूं तौ आखा मारवाड़ में ही नदियां भी बरसात में आवै। थोड़ा घणा बांध बण्यौड़ा, इणां री नहरां सूं कठैई–कठैई सिंचाई हुवै। बाकी गावां में कुवां सूं खेती हुवै। अठां रा ज्यादातर लोग परदेसा में कमाई करै, पण अठै साधन कम है। डॉ. नारायणसिंह भाटी रौ परिवर भी साधारण दरजै रौ हो। गाँव में पोसाळा रा ग्यान पछै डॉ. भाटी जोधपुर रा स्कूलां अर कॉलजां रै मांय भणाई करी नै उणांरा पिता कानसिंह भाटी उणांनै ऊँची पढ़ाई खातर बां दिना री मारवाड़ री राजधानी जोधपुर में भेज्या। डॉ. नारायणसिंह भाटी रौ जलम सन् 1930 में हुयौ जद पढ़ाई लिखाई रौ न तौ वातावरण हो अर न ही सुविधावां ही। गाँव में पैली पोसाळा हुती, पछै पांचवी अर आठवीं तांई री स्कूलां खूली। लड़कियां री पढ़ाई साव ही कम ही पण खाता–पीता घरां रा लोग, टाबरां नै पढ़ाणौ जरूर चावता। अंग्रेजां रै कारण अंग्रेजी भणाई कांनी लोगां रौ लगाव बढ़्यौ। कसबां अर सैहरां मांय स्कूलां अर कॉलेजां खुली।

वां–दिना में राजस्थान में अेक भी विस्वविद्यालय कोनी हो। इण खातर भणणियां लखनेऊ अर आगरा पढ़णै अर इम्तिहान दैवण जांवता। जोधपुर में महाराजा उम्मेदसिंह रै समै महाराज कुमार कॉलेज अर जसवन्त कॉलेज बण्यौ। सर प्रताप चौपासणी स्कूल सरु करी अर जोधपुर में महात्मा गांधी, सरप्रताप, सुमेर अर सरदार, जैड़ा नावां री स्कूलां सरू हुई। इण तरै भणाई रौ वातावरण धीरे–धीरे बण्यौ। सन् 1930 तांई महिला सिक्षा री घणी कमी ही पण धीरे–धीरे चेतना जागी अर लड़कियां अर महिलावां खातर अलग सूं महिलां महाविद्यालय बण्या। सन् 1962 में जोधपुर में विस्वविद्यालय बण्यौ अर इणसूं पैली जयपुर में राजस्थान विस्वविद्यालय सरु हुयौ। डॉ. नारायणसिंह भाटी अेम.अे. अर. एल.एल.बी. री परीक्षा पास करी अर सन् 1963 में राजस्थान विस्वविद्यालय जयपुर सूं डिंगळ साहित्य रौ विलय लै'र पी–एच.डी. करी अर भणाई गुणाई रै कारण डॉ. भाटी विद्वान बण्या।

lkLÑfrd okrkoj.k

डॉ. नारायणसिंह भाटी रै जुग रौ दरसाव सांस्कृतिक वातावरण री दीठ सूं घणौ गुमेजजोग हो। राजस्थान री संस्कृति आखी दुनिया में चावी है अर उणमें भी मारवाड़ री सांस्कृतिक धरोहर तौ खुद री अलग पिछाण राखै। आ धरती वीर अर त्यागी लोगां री है। अठै भगतां अर सन्तां री लाम्बी परम्परा मिळै। पाबूजी, हड़बूजी, रामदेवजी, मेहाजी, गोगाजी, तेजाजी, अर मल्लिनाथजी जैड़ा लोकदेवता इण धरा–धाम में औतार लियौ अर खुद री वाणी रा इमरत सूं अठां रा मिनखां में आछ्या संस्कार नाख्यां। अठां रा जन नै मिनख सूं देव बणायौ अर उणनै सदाचार, सांच, न्याव अर धरम कांनी जावण री प्रेरणा दी। इणी तरै लोक देवियां री महती किरपा इण धरा माथै रैई है। करणीमाता, जीणमाता, आईमाता, चामुण्डा माता, सिलादेवी, आवरी माता, सच्चियाय माता, केला देवी, केवाय माता, मालादेवी, चौथमाता, सीतळा माता, पीपळाद माता, खोखरी माता, राणी माता, सकराय माता, हिंगळाज माता, नागणेची माता, लटियाल माता, फळौदी माता, राजेस्वरी माता, भंवाळ माता, जमुवाय माता, साकम्भरी माता जैड़ी लोक देवियां री महिमां सूं आ मरुधरा गुमेज जोग बणी। वीरां अर वीरांगनावां री धरा रै रूप में ओ मारवाड़ जग चावौ हुयौ।

अठै रजवाड़ी राज में भांत–भांत री कळावां, तीज–तिवांर अर मेळा खेळां री रमझोळ रै सतरंगी वातावरण बण्यौ। घणां ही महल–माळिया, गढकोट अर देवळ चुणीज्या जिणां में स्थापत्य कळा रा भांत–भांत रा नमूना देख्या जा सकै।

रजवाड़ी राज में नृत्य, संगीत अर गायन नै पनपण रौ मोको मिळ्यौ। मारवाड़ रौ सांस्कृतिक परिवेस न्यारौ अर निरवाळौ हो। अठां री सांस्कृतिक परम्परावां जुगां–जूनी अर खास तरै ही। चित्रकला री मारवाड़ी सैली घणी प्रसिद्ध है। अठां रौ मिनख मान–मरजाद, वीरता अर धीरता, सदाचार, परोपकार अर सद आचरण रौ धणी है। अैड़ा ही वातावरण में कवि नारायणसिंह भाटी नै रैवण रौ मोको मिल्यौ। मारवाड़ री धनोहर रो उणारै व्यक्तित्व अर कृतित्व माथै घणौ असर निंगै आवै।

राजस्थान री संस्कृति धरम प्रधान है। धरम सद करमा अर सद् आचरण माथै टिक्यौड़ौ हुवै। उणमें लोक मंगळ रौ भाव सबसूं प्रबळ हुवै। वो सत अर न्याय रै साथै चालै, इणी कारण धरम री जड़ हमैस हरि रैवै। धरम मिनखां रै मेळ रौ नांव है, भाई–चारै अर सद्भावना रौ नांव है। मानवी मोल थापित करण वाळौ धरम ही है। राजस्थानी संस्कृति में इण–धरम रै कारण ही अेक दूजै खातर प्रेम, मान–सनमान अर हैत–अपणास निंगै आवै। धरम रा आं ही उजळा भावां सूं कवि नारायणसिंह रौ काव्य रंगीजियौड़ौ लखावै।

8-2-5 vktknh j iN jk jktLFkkuh dk0;

आधुनिक राजस्थानी कविता खुद री जूनी परम्परा नै अंगेजती थकी भाव, भासा, सैली, बिम्ब

विधान अर प्रतीकां रा नुंवा रूपां सूं निखर्‌यौड़ी अर विचार प्रधान है। आज री राजस्थानी कविता नै भारतीय अर दुनियां री दूजी भासावां री जोड़ में ल्यावण खातर राजस्थान रा कविगण अैड़ी नामी पौथ्वां री सिरजण करी है, जिकी दूजी भासावां री जोड़ में किणी भांत कम कोनी। यूं तो समकालीन राजस्थानी साहित्य रा सबळ लेखणी रा धणी कवि घणां है जिणं में चन्द्र सिंह, मेघराज, 'मुकुल', रामनाथ, व्यास परिकर, गणेसलाल व्यास, 'उस्ताद', कन्हैयालाल सेठिया, रेवतदान चारण, किसोर कल्पनाकान्त, रघुनाथ सिंह 'हाडा', लक्ष्मण सिंह 'रसवंत', कल्याणसिंह राजावत जैड़ा नांव गिनावणजोग है। आधुनिक राजस्थानी रा आं कवियां में सिरै नाम डॉ. नारायण सिंह भाटी रो है। नारायण सिंह भाटी खुद री अमोली पोथ्यां सूं राजस्थानी साहित्य नै भोत बड़ी देन दी है अर आखै साहित्य भण्डार में श्रीवृद्धि करण में मेहताऊ योगदान कर्‌यौ है। इण कारण मैं उणांनै भारतीय साहित्य रा निरमाता साहित्यकारां में अेक मांनू। नारायणसिंह भाटी सुरगवासी हुग्या है' वांरी देह बरसां पैली पंच तत्वां में लीन हूयगी, पण वांरौ सिरजण काळजयी है। वांरी कविता रौ अेक–अेक सबद लोगां नै सदियां प्रेरणा दैवतो रैवैला। उणां री कविता री अेक–अेक औळी जावण वाळी पीढ़ी नै उणरै गुमेज जोग इतिहास अर संस्कृति रौ ग्यान करावती रैवैला। राजस्थानी संस्कृति री गरबीली परम्परावां सूं सराबौर डॉ. भाटी री अेक–अेक कविता अन्धारा में उजास रौ दिवळो लियां भटकैड़ी युवा पीढ़ी नै सद्‌मारग में ल्यावण रौ काम करैला।

8-2-5 vkt jk jkt LFkkuh lkfgR;

इण राजस्थानी साहित्य रै निरख–परख रा तीन चरण है। पैलो सन् 1950 सूं लैय'र सन् 1920 तांई क्रान्तिकारी देस भगतां री कीरत रौ साहित्य। सन् 1921 सूं लैय'र 1947 तांई रो गांधीवादी साहित्य अर तीसरौ 1947 सूं लैय'र आज तांई रौ राजस्थानी साहित्य।

आज रौ राजस्थानी साहित्य गद्य प्रधान है। इणसूं पैली राजस्थानी साहित्य में भी काव्य री प्रधानता ही। राजस्थानी साहित्य रौ वीरगाथा काल, भगती काल अर मध्यकाल तांई रौ आखौ साहित्य काव्य सूं भर्‌यौ पूरौ है। हालांकै इण जुग में थोड़ो गद्य भी लिखियौड़ौ मिळै पण बो गद्य साधारण तरै रौ ही है। आज रा राजस्थानी साहित्य रै मांय गद्य री नवी–नवी विधावां रौ जलम हुयौ, जिणमें निबंध, उपन्यास, कहाणी, नाटक, एकांकी, डायरी, आत्मकथा रिपोरताज जैड़ी गद्य विधावां गिणावणजोग है। गद्य लेखण ही साहित्यकार री कसौटी रौ आधार बण्यौ, पण राजस्थानी भासा में काव्य लेखण रै साथै ही गद्य लेखण भी हूवतो रियौ इण जुग में विग्यान रै कारण दुनिया रौ दायरौ छोटो हुयग्यौ, जिणरै कारण अेक भासा रो असर दूजी भारतीय भासावां री भांत राजस्थानी माथै भी घणौ पड़यौ।

अंग्रेजी साहित्य में आधुनिक जुग में प्रेम प्रधान कवितावां जिणनै 'रौमेन्टीसीजम' रौ नांव दिरीज्यौ अर गीति–काव्य जिणनै अंग्रेजी में 'लेरिक्स' रै रूप में नाम मिळयौ रो जोर रियौ। सैले, कीट्स, बायरन जैड़ा अंग्रेजी भासा रै कवियां रौ गीति काव्य आखा जगत में चावौ हुयौ। आधुनिक जुग रा इण गीति–काव्य में ब्रिटेन रा प्राकृतिक फुटरापै रौ घणौ रूपाळौ अर आंख्या देख्यौ वरणाव मिळै। इण समै री लाम्बी कवितावां में गीत छंद रै साथ–साथै काव्य सैली रा कैई भांत रा प्रयोग हुया।

अंग्रेजी सत्ता रै कारण अंग्रेजी भासा रौ असर दूजी भारतीय भासावां री भांत राजस्थानी माथै भी घणौ पड़यौ। अंग्रेजी साहित्य रा इण गीति काव्य रौ असर भारतीय भासावां पर भी घणौ पड्‌यौ। खासतौर सूं बंगला, हिन्दी, मराठी, गुजराती जैड़ी भासावां माथै। हिन्दी अर बंगला साहित्य में अंग्रेजी साहित्य रौ प्रेम प्रधान काव्य छायावाद अर प्रकृतिवाद रै रूप में प्रसिद्ध हुयौ। हिन्दी साहित्य रै मांय जयशंकर प्रसाद, सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला', महादेवी वर्मा, सुमित्रानंदन पंत

जैड़ा नामी कवेसर प्रकृति अर छायावादी काव्य धारा नै आधार बणा'र अमोलौ अर महताऊ काव्य रच्यौ। भारतीय प्रकृति रा नाना रूपां, रितुवां अर छटावां रा सबद चितराम खैंचती अे कवितांवा बेजौड़ मानीजै। जयशंकर प्रसाद री 'कामायनी प्रकृति अर छायावादी दीठ सूं सबसूं प्रभावसाली अर महताऊ रचणा मानीजै। सुमित्रानन्दन पंत हिमाळै री गोद में बैठ'र अलमोड़ै रा रूपाळा रूप नै जिको काव्य रूप दियो, वो आज री हिन्दी कविता री अमोली धरोहर है। इणी भांत महादेवी वर्मा री गीति काव्य, प्रयोगवादी अर रहस्यवादी कविता, सूर्यकान्त त्रिपाठी री औजस्वी वाणी सूं निकळैड़ा सबद आज री हिन्दी कविता री घणी मूंगी थाती गिणीजै। बंगला में रविन्द्रनाथ ठाकुर री गीति काव्य री अमर रचणा गीतांजळी अर वांरी दूजी रचनावां प्रकृति, प्रेम अर छायावाद रौ अनूठौ मेळ लियौड़ी कवितावां है।

जयशंकर प्रसाद री छायावादी कविता रा कीं उदाहरण देखण जोग हैः

कहो कौन हो तुम,
दमयन्ती सी तरु के नीचे सोई।
हाय! तुम्हें भी छोड़ गया–क्या
अली नल सा निष्ठुर कोई।।

जयशंकर प्रसाद री अे ओळ्यां छायावादी काव्य रा बीज मंतर है। आं ओळ्यां में दरखत अर उणरी छाया रौ मानवीकरण कर उणनै अेक नयौ रूप दिरीज्यौ है। छायावाद में प्रकृति रौ मानवीकरण इण खूबी सूं कर्‌यौ जावै कै उणमें भाव अर संवेदना बणी रैवै।

आधुनिक राजस्थानी कविता में अंग्रेजी, बंगला अर हिन्दी रौ असर लैय'र आज रा जुग रा कैई नामी कवि भी सामी आया अर भाव, भासा अर सैली रा नया प्रयोग कर नुंवी कविता रौ सिरजण कर्‌यौ। यूं तो राजस्थानी साहित्य में प्रकृति काव्य रा दोय रूप सदियां सूं मिळै। अेक रूप में रचणा रै बिचाळै प्रकृति रा भांत–भांत रा रूपाळा दरसाव दिखाइजै। 'ढोल मारू' री लोक काव्य कथा सूं लैय'र 'लू' अर 'बादळी' तांई ओ रूप निगै आवै अर दूजै कानी उपभावां रै रूप में प्रकृति रा दरसाव मण्डयौड़ा कैई ग्रन्थां में देख्या जा सकै, पण आधुनिक राजस्थानी कविता में प्रकृति नै ही नायक, नायिका रूप दैय'र सगळौ काव्य ही उणनै अपरण करण री परम्परा चन्द्रसिंह अर नारायणसिंह भाटी जैड़ा आज रा दो कवियां में देखी जा सकै। चन्द्रसिंह ऊन्हाळा में इण मरुधरा में चालण वाळी लूंआ नै आधार बणा'र ''लू'' जैड़ौ प्रकृति बरणाव भर्‌यौ खण्ड काव्य रच्यौ। इणी तरै दो तीन महिनां चालण वाळी प्रचण्ड लूआं पछै आभै में आवती बादळी नै देख'र जकौ हरख उमाव इण मरुधरा रा मानवी नै हुवै, उणरै मन रा भावां नै सबद रूप देवतौ कवि ''बादळी'' जैड़ा अमोला साहित्य री रचणा करी। 'बादळी' अर 'लू' अेकानी प्रकृति काव्य है, जो दूजे कांनी प्रेमकाव्य अर तीजै कांनी छायावादी काव्य है। कवि चन्द्रसिंह 'बादळी' नै नायिका अर सूरज नै नायक बणा'र उणमें मानवी क्रियावां अर भावां रौ बीजारोपण कर इण काव्य नै मिनख रा अन्तस तांई पुगाय दियौ है। इण रा कीं उदाहरण दैखण जोग है–

जीवण नै सह तरसिया,
बंजड़ झंखड़ बाढ़
बरसै भोळी बादळी,
आयो आज आसाढ़।।
आठूं पौर उडीकतां,
बीतै दिन ज्यूं मास।
दरसण दे अब बादळी,
मत मरुधर नै तास।।

• • • • •

आस लगायां मुरधरा,
देख रही दिन रात।
भागी आ थूं बादळी,
आयी रुत बरसात।।

• • • • •

कोरां कोरां धोरियां,
डूंगा–डूंगा डैर।
आम रमा अे बादळी,
ले–ले मुरधर ल्हैर।।

इणी परम्परा नै आगै बढ़ावता कवि नारायणसिंह भाटी ''सांझ'' अर 'ओळूं'' जैड़ी दो रचणावां रची। ''सांझ'' प्रकृति काव्य है अर ''आळू'' प्रेम प्रधान काव्य है। ''सांझ'' में नारायणसिंह भाटी खुद री जलम भोम माळूंगा री प्रकृति रौ बरणाव कर्‌यौ है। माळूंगा धरती रा कैई रूप कवित निजरां देख्या, जिणरा बिम्ब सबदां रै आसरै कविता रा आधार बण्या। इण प्रकृति काव्य नै देख'र माळूंगो गाँव याद आवै। ''सांझ'' रौ दरसाव देखीजै।

भंवर झुटपुटिये ही वेळ,
खुलै बा अन्धारै री आंख।
बेल लख लचकाणी पड़ जाय,
नहाळू सिरकै पल्लौ नांख।

• • • • •

अेकली छांह नहावै नीर,
लहरां धुपै लहरियो रंग।
सांझ रौ लुटण रूप अथाग,
पवनियो तिरसौ बणै तरंग।।

• • • • •

बलू खड़ी रींझी बिरलै रूप,
बहोंनी ऊभी करै वणाव।
धरा चो हरियो मखमल ढ़ाळ,
धोरिया प्रकटै इमि अपणाव।।

• • • • •

लुकाती दिवलौ अम्बर ओट,
निरखवा आई औ संसार।
धड़कती छाती धीमी चाल,
मुळकता नैणां सुरमौ सार।

''सांझ'' सूं पैली ''ओळूं'' री सिरजण हुई। इण काव्य रै मांय कवि प्रकृति रै फुटरापा रा दरसाव दरसाया है। इण काव्य में 'सांझ' री तरै प्रकृति रौ सीधो वरणाव नीं हुय'र प्रेम रै ओळावै उणरौ बिम्ब विधान रचियौड़ो मिळै। प्रकृति काव्य री आ परम्परा आज री राजस्थनी कविता री घणकरी रचणावां में दैख्ण नै मिळै। बानगी देखीजै।

मरुधर म्हानै पोखिया
मरुधरा म्हांरो प्रांण।
राखां आखै जगत में
मरुधर रौ म्है मांण।। (चन्द्रसिंह)– मरुधर महिमा।
माघ रौ महीनों आयो बन बागां रंग सवायौ
चिड़कलियां माळा घालै, नणदुली भारी चालै
भवरां फूंलां पर डोलै, कळियां सै घूंघट खोलै
मौसम बांसती आवै, था बिन जिवड़ौ दुख पावै
सामेळो आवै फागण बाचतो, चारं कूंटां में गूंजै गाँवणां (गजान वर्मा)– बारहमासा
चभळ चभळ कर चालता ढ़ळतै पाणी पाळ।
तड़पड़ता तिसळत पड़ै, तिरणै तांई बाल।। (नानूराम संस्कर्ता)– कळायण
नान्हा गीगा पालणै खिल खिल अछळिया
चूसै गूंठो, चावसूं मारै पग्गलिया।।
बालक रमै गुडाळिया छोटा टाबरिया
छांट्यां पकड़ण छोळ में रूढ़ रूढ़ लड़खड़िया
तिरियां मिरियां तालड़ा टाबर तड़पड़तांह
भागै तिसळै खिलखिलै छप–छप पाणी मांह (चन्द्रसिंह)– बादळी
ठोडी आली ठोड़ में,
गोडी सामी पाळ
अब किण विध पाछो फिरै,
किण विधा साधे छाळ।
संका तगरां सीगटी
लपट पड्या ओयळ
जी लूंआ ले नीसरी
आयो हिरणां काळ।
(चन्द्रसिंह) ''लू''
चरम रोग चट हरै,
हटावै दाद दुखणिया
खावै खुजली मरज,
मिटावै खेद थकणिया।।
(नानूराम संस्कर्ता)– ''नीम दसदेव''
बाजै है तो कै करां।
यो समो बावरो है,
बाजे है तो बाजण द्यौ,

ठण्डो ढेरा गीतड़ला अब

लाजे है तो लाजण द्यौ।   (मेघराज मुकुल) ''सैनाणी री जागीजोत''

Nk;kokn dk0;

काव्य में प्रकृति रा जिका प्रयोग यूरोप री कैई भासावां सूं सरू हुया उणामें छायावाद भी अेक गिणावण जोग काव्य धारा कैई जा सकै। छायावादी काव्य किणनै कैयो जावै इणरी परिभासा अर तत्व कांई है? इण माथै विद्वान अर कवि विचार कर्‌यौ अर खुदरै ढंग सूं उणरी पिछाण करण री कोसीस करी।

''छायावाद सबद रौ प्रयोग दो अरथां में जाणणो चाहिजै। अेक तो रहस्यवाद रै अरथ में जठै उणरौ काव्यवस्तुं सूं हुवै, यानि के जठै कवि उण अनन्त अर अणजाण प्रियतम नै आलम्बन बणा'र घणी चितराममयी भासा में प्रेम री अनेक तरै सूं व्यंजना करै। छायावाद सबद रौ दूजौ प्रयोग काव्य सैली या पद्धति–विसेस रै अरथ में है।''

&vkpk;l jkepUæ 'kqDy

''परमात्मा री छाया आत्मा रै मांय पड़ण लागै अर आत्मा री परमात्मा रै मांय ओ ही छायावाद है।''

&Mk- jkedqekj oekl

'छायावाद प्रकृति में मानव जीवण रौ पड़बिम्ब देखै रहस्यवाद सारी दीठ मांय भगवान रौ रूप देखै। भगवान अव्यक्त है अर मिनख व्यक्त है। इण वास्तै छिंया मिनख री ही देखी जा सकै, अव्यक्त री नीं अव्यक्त तो रहस्य ही रैवै।''

&jkeÑ".k

'छायावाद अेक खास भांत री भाव पद्धति है। जीवन रै खातर अेक खास भावात्मक दीठ कोण है। जिण भांत भगती रौ काव्य जीवण री खातर अेक खास भावात्मक दीठकोण हो अर रीति काव्य अेक दूजै भांत रौ, उणी भांत छायावाद भी अेक खास भांत रौ भावात्मक दीठकोण है।''

&Mk- uxsUæ

''मानव अवस्थ प्रकृति रै सूक्ष्म पण व्यक्त फूटरापा में आध्यात्मिक छाया रै भान म्हारै मुजबूं छायावाद री अेक सर्वमान व्याख्य हू सकै।

&vkpk;l uUnnqykjs okt isa;h

''छायावाद गीतिकाव्य है, प्रकृति रो काव्य है, प्रेम रो काव्य है।''

&Mk- nsojkt

''छायावादा रै नांव सूं जिकौ हिन्दी रै मांय खास है उणनै तौ अभिव्यंजना चमत्कारा ही समझणौ चाहिजै।''

&lnxq# 'kj.k voLFkh

''.....रहस्यात्मक प्रतीकां सूं युक्त कविता रौ नांव छायावादी कविता पड़्यौ।''

&Mk- d'kjhukjk;.k ^'kqDy*

''ध्वन्यात्मकता रा लाक्षणिकता अर फुटरापा रा प्रतीक विधान अर उपचारा वक्रता रै साथै स्वानुभूति री विवृति छायावाद री ओळखाण है।''

&t;'kdj çlkn

जै सार रूप में कैयौ जावै तो ''प्रकृति रौ मानवी करण ही छायावाद है। इणरौ मतलब ओ है कै जठै कवि प्रकृति रै साथै मानवी आकार, उणरो रूप, रंग, भाव अर विचार उणरै साथै जोड़िया है प्रकृति री सारी क्रियावां उणनै मानवी लागै जद कै वै मानवी है नीं। कवि खुद रै भावां, विचारां अर क्रियावां रौ आरोपण प्रकृति पर करै। मूळरूपं सूं प्रेम प्रधान काव्य नै सबद रूप दैवण खातिर ही कवि प्रकृति रौ आसरो लैवै। हवा रौ बेवणौ भी कवि नै यूं लागै जाणै उणरी नायिका रौ चालणौ है। आभै में रंग बिरंगा बादळ अर वांरो अठी–उठी हूवणौ किणी नारी री चंचळता रौ चितराम सो दिखै अर उणनै यूं लागै जाणै बादळी रूपी नायिका अर नायक सूरज नै रिझावण खातर भांत–भांत री पौसाकां बदळै अर ओ नारी रौ बदळाव ही आभै में बादळी नायिका रा भांत–भांत रा दरसाव दिखावै। इण सम्बन्ध में कवि चन्द्र सिंह री 'बादळी' सूं लियौड़ी अे ओळ्यां देखणजोग है।

कवि चन्द्रसिंह ''लू'' काव्य में भी प्रकृति रो छायावादी रूप दरसायो है। अेक बानगी देखीजै–

मावां टाबर मेळवै
लूआं अंग बचाय
छाती मिळतां छटपटै
बिलख बिलख रह ज्याय

• • • • •

लूआं अंग लुकावती
मन री छोक छिपाय
पाणी ल्यावण दूर सूं
कूआं कुंडा जाय

• • • • •

पोखी कळियां प्यार सूं
भर भर आस अटूट
बिलखै सारी बेलड़्यां
लूआं लीधी लूट

नारायणसिंह भाटी री 'सांझ' में मानवीकरण ही बानगी देखीजै–

कांपती किरणां बांह पसार,
डूबती जांणै समदर जाय।
अरे कुण पकड़ै पुणचौ आज?
कोचरी बोली यूं कुरळाय।
हंसै किण बनड़ी तणौ सुहाग?
बादळी झीणी घूंघट ओट।
बीखरै डाबर नैणां लाज,
चमकै चोखी कोरां गोट। (2)

jglokn dk0;

आधुनिक काव्य धारावां में प्रकृति काव्य, प्रेम प्रधान, छायावादी, रहसवादी, प्रगतीसील काव्य अर

नवी कविता जैड़ी काव्य धारावां आधुनिक जुग री गिणावणजोग काव्य धारावां गिणीजै। प्रकृति काव्य रा तीन रूप इण जुग में सामी आया। अेक प्रकृति काव्य, दूजौ छायावादी काव्य अर तीजौ रहसवादी काव्य।

कवेसर प्रकृति रा कण–कण में छिप्यौड़ा रहस्य नै जाणबा री नीयत सूं घणकरौ' काव्य दुनिया री न्यारी–न्यारी भासावां में रच्यौ है। इणरा दो खण्ड हुया– अेक भगती काव्य रै रूप में प्रसिद्ध हुयौ अर दूजौ सिरजणसील काव्य रै रूप में, मध्यकाल सूं लैयर अजै तांई लिखीज्यौ। प्रकृति रौ ब्रह्माण्ड विसाळ है। इणमें भांत–भांत रा नखत, सूरज, चांद अर तारा, समदर, नदी नाळा, डूंगर खाळा आसमान अर जगती रा नाना रूप मिनख अर खासतौर सूं कवि रै मन में ओ भाव जगावै, पण इण प्रथमी रौ सिरजणाहार कुण है अर कुण आखै जगत रौ संचालण करै? किण रै कैवण सूं सूरज अर चांद उगै अर आथमै? किण भांत रितुवां में बदळाव आवै, धरती अर पेड़ पौदा फळै–फूळै। बादलां री रंगत अर बिरखा री रुत में जिका दरसाव बदळै, उणा रौ सूत्रधार कुण है? मानवी जूण रौ जलम, मरण अर जीवणौ किण रै हाथ में है? अै सारी बातां मानवी मन नै सदियां सूं झकझौर री है। कवि तौ घणौ संवेदणसील हुवै। बो हर बात रौ पड़ूतर अर संका रौ समाधान चावै। आखिर प्रकृति उणरै खातर रहस है अर बो इण रहस नै जाणबौ चावै। इता बरसां पछै भी ओ रहस बण्यौड़ौ है। इणरौ समाधान हुयौ कोनी।

अंग्रेजी अर दूजां प्रदेसां री भासावां में रहस्यवादी भाव धारा सूं रच्यौड़ी रचणावां मोकळी मिळै। भारतीय भासावां में भी रहस्यवादी काव्य भरपूर है। हिन्दी री महादेवी वर्मा रहस्यवादी कवयित्री रै रूप में जगचावी हुयी। उणां रै काव्य री बानगी देखीजै–

शून्य नभा में उमड़ जब दुख भार–सी,
नैश तम में सघन छा जाती घटा,
बिखर जाती जुगनुओं की पंक्ति भी।
जब सुनहले आंसुओं के हार–सी,
जब चमक जो लोचनों को मूंदता।
तड़ित की मुस्कान में वह कौन है?

आधुनिक राजस्थानी काव्य में आखी प्रकृति रा इण काम–काज रै लारै किणी अज्ञात सत्ता रौ संचालण होवण री धारणा लैय'र काव्य लिखीज्यौ है पण उणरी तादात कम है। नारायणसिंह भाटी खुद री कृति ''सांझ' में रहस्यवादी काव्य नै भी आखरां ढ़ाळ्यौ है जिणरा दोय उदाहरण दैखण जोग है–

कहदै कुण अेड़ौ जग मांय,
करै जो परभातां री साँझ।
दिनां री सूरज हंदी जोत
झड़ै क्यूं रातड़ली री जांइ?
प्रात री बाल हँसी रै मांय
जूंझतै सिखरां जोबन बीच।
ढ़ळता दिनड़ां री उण पाळ
बता कुण बैठ्यो आंख्यं मींच?

प्रकृति रा इण रहस नै देख'र कवि रै मन में कैई तरै रा भाव आवै अर बो दारसणिक बण'र खुदरा काव्य नै नुंवा भाव अर विचार दैवै। बो अन्यौक्ति अर रूपकां रा प्रयोग कर खुदरी अनुभूति

नै सबदां ढ़ाळी है तौ कठैई अन्योक्ति रा प्रयोग कर मानवीय भावां नै प्रकृति चितरामां सूं दरसाया है। कठैई प्रकृति रा न्यारा रूपां नै उपमावां दैय'र काव्य रूप दियौ है। बानगी रूप अे ओळ्यां देखीजै–

मिलण ने आई दिन सूं रात,
पिघळता ढळिया साम्ही ढाळ।
रह्यौ न 'दिन' दिन, रात न 'रात'
बिचाळै सांझ बणी जंजाळ।
अचपळौ दिनड़ौ होसी रात,
चानणौ होसी घोर अन्धार।
कोड री इण मिटवा री वेळ,
सांझ रै दिवलै ह्वेगी झाळ।

8-3-4 ukjk;.kflag HkkVh jh thouh

डॉ. नारायणसिंह भाटी रौ जलम जोधपुर रै कनै बसयौड़ा माळूंगा गाँव में सन् 1930 में हुयौ। आपरै पिताजी रौ नाम श्री कानसिंह भाटी हो। कानसिंह जी जोधपुर 'स्टेट रेलवे' में 'सीनियर स्टेसन मास्टर' हा। आपरी बाळपणै री भणाई गाँव माळूंगा में ही हुई अर पछै आप राजस्थान री नामी हाई स्कूल चौपासनी सूं दसवीं तांई री भणाई करी। इणरै पछै आप महाराज कुमार कॉलेज सूं अेम, अे. री सन् 1954 में करी, सन! 1955 में जसवन्त कॉलेज सूं अेल.अेल.बी. पास करी अर पी.–एच.डी. री उपाधि राजस्थान विस्वविद्यालय, जयपुर सूं ली। थोड़ा दिन आप वकालात भी करी पण बठै आपरौ मन रम्यौ कोनी।

सन् 1955 में में 'चौपासनी शिक्षा समिति', राजस्थानी शोध संस्थान री थापना करी अर आपनै इणरा निदेसक बणाया। आप इण संस्था में अर पद माथै सन! 1994 तक रिया, राजस्थानी भाषा, साहित्य अर संस्कृति री अमोली पोथ्यां अनै 'परम्परा' जैड़ी जगचावी पत्रिका रौ सम्पादन कर इणरा अेक सौ अेक अंक निकाळ्या। 18 अप्रैल सन् 1994 में जोधपुर में आपरौ सुरगवास हुयौ।

कवेसर नारायणसिंह भाटी री जिनगानी बाबत बांरी खुद री दियौड़ी जाणकारी नीचे मुजब है–

''जठै तांई फैमेली बैक ग्राउण्ड रौ सवाल है घर में कोई कविता लिखण री सांतरी परम्परा रैयी व्है, अेड़ी बात तो ही कोनी। फादर कणां–कणां दोहा सोरठा बणा भी लेवता अर वांनै परम्परागत कवियां री कवितावां भी खूब सारी याद ही, पण इणमै आप आमतौर सूं आ ई मान सकौ कै अेक सहज रुची ही, जैड़ी के कोई भी चोखै भलै संस्कार सम्पन्न घर री व्है। बड़ा फादर री परसनल्टी रौ म्हारै माथै खासो असर रियौ। फादर तो सर्विस में हा। लारै घर रा करता–धरता बड़ा फादर ही हा। कोट कचेड़्यां रा काम, नेम–टेम सूं बंध्योड़ी दिनचरया, आया गया रौ आव–आदर, लिहाज, काण–कायदा, कुरब, रुतबौ, कुल मिलार आ समझौ आप के घर रौ वातावरण वां सगळी औसत मरजादा सूं जुड़योड़ौ हो, जिका कै उण बगत किणी भी ठीकोठाक हालत रै राजपूत परिवार री व्है सकती।

म्हारै विकास रै बाबत म्हैं आ कैय सकूं कै घरवाळां रौ सैयोग ई रियौ क्यूं कै बै कदेई दिक्कत नीं बणिया। म्हारौ लिखणौ–पढणौ बांनै सुहावतौ रियौ अणखणौ नीं। घरवाळां रै सैयोग रोई तौ नतीजौ हौ कै म्है अेम. अे., अेल. अेल. बी. तांई लगोलग पढ़ सक्यौ।

आगै चाल'र पढ़ण नै चौपासनी इसकूल में भरती हुयौ नवीं दसवीं में ई म्हैं पैलीवार कविता

लिखण री कोसीस करणी सरू करी ही।

कॉलेज में भरती व्हैण रै सागैई अेक बड़ी दुनियां में आया। नवै ढ़ंग री कवितावां पढ़ण, लिखण री ज्यादा सुविधावां, नया–नया लोगां सूं परिचै इत्याद व्हेणो, मिलणो सरू हुयौ। लिखणौ म्हैं फस्ट ईयर सूं ई सरू कर दियौ हो। हिन्दी में तो पैली भी लिखतौ ई हे साथै–साथै राजस्थानी में भी लिखणौ सरू कर्‌यौ।''

कवि डॉ. भाटी री इण आप बीती सूं आ जाणकारी मिळै कै गाँवाई परिवेस में जलम्या, पळया अर भण्या नारायणसिंह भाटी नै कविता कानी लैजावण में वांरै पिता श्री कानसिंह रौ काव्य सारू लगाव–महताऊ रियौ। संस्कार रूप में साहित्य अर फैर कविता कानी बाळक मन माथै जिकौ असर पड्‌यौ इण सूं डॉ. नारायणसिंह भाटी कवसेर बण्या।

डॉ. भाटी री काव्य सिरजणा माथै दूजौ असर पड्‌यौ 'रौमेंटिक' कविता रौ जिणनै हिन्दी में छायावादी काव्य रौ नाम दीरीजियौ। कवि भाटी माथै हिन्दी रा जयशंकर प्रसाद री 'कामायनी' अर बंगला कवेसर रवीन्द्र नाथ ठाकुर री अतुकान्त कविता रौ सबसूं ज्यादा असर रियौ। इण सांच नै हियै अंगेजतौ कवि खुद कैवै।

''रौमेन्टिक कविता म्हंनै अपील करती रयी। हिन्दी में पंत, प्रसाद, निराला, महादेवी अंग्रेजी में सैले, कीट्‌स, बायरन वगैरा अर बंगाली में रवीन्द्र नाथ टैगोर री कवितावां। वां दिनां म्हैं कॉलेज लाइब्रेरी में, जठै तांई लाइब्रेरी बन्द नीं व्है जावती लगोलग बैठो रिया करतौ। आ समझण री कोसिस करतो कै 'रौमेंटिक' कविता में वा कांई खास बात है जिकी उणरै एक्सप्रेसन नै पावरफुल बणावै। रौमेंटिक कविता री मनोभूमी, सिल्प, मानवीकरण, विसेसण विपर्य इत्याद अलंकार, नूंवौ छंद विधान, इमेजेज में कविदीठ रौ पसराव, म्हनै उत्तेजणा देवतो अर कविता नै लैर म्हैं खुद नै ज्यादा पुख्ता अर संस्कारित व्हेतो अनुभवतौ। हिन्दी कवियां में खासकर प्रसाद री कामायनी अर बंगाली में टेगौर रौ फ्रीवर्स म्हंनै प्रभावित करतौ रयौ।''

श्री कोमल कोठारी री मानता है कै– ''नारायणसिंह रै ''आंसू'' काव्य कठै न कठै असर में लिया है अर वै आपारा सरूपोत रा छंद गुण गुणावणा सरू किया।''

म्हारी मानता है डॉ. नारायणसिंह भाटी मूळरूप सूं प्रकृति अर प्रेम रा कवि है। उणारौ मन मरूधरा री प्रकृति रा भांत भतीला रंगा नै आखरां ढाळण में घणौ रमै। ओ ही कारण है कै उणारी सांझअर 'ओळूं' जैड़ी रचना प्रकृति बरणाव सूं भरी पूरी है। कोमल कोठारी री कयौड़ी आ बात म्हारी मानता नै संबळ दैवै।

''कविता रौ औ रंग नारायणसिंह नै आपरी गांवाई यादां समेत कठै न कठै हिलाया व्हैला अर वै आपरी पैली कवति रौ विसै चुण्यो– 'सांझ'। गाँव री सांझ अर खास कर वां यादां सूं रंगीज्यौड़ी 'सांझ' जिकी वां रै माळूंगा गाँव री सांझ ही। वै ई रूंख–रोई, वे ई मगरा, वै ई जीव–जिनावर, वौ ई चौगिड़दौ वातावरण।''

कवि नारायणसिंह रा लेखण माथै राजस्थानी इतिहास अर संस्कृति रौ गेहरो असर साफ निंगै आवै। कवि इण सत नै उजागर करतौ कवि खुद कथै–

''परम्परा अर 'रौमेंटिक एटीट्‌यूट' रै बिच्चै जकौ जुड़ाव म्हैं अनुभवतो रयौ, तद वौ कठै न कठै अवेचतण में हौ साफ अर सांप्रत नीं। मनमें कठेई आ ही कै राजस्थान री कलचर में जका उदात तत्त्व रिया है, वांनैं नूंवै रौमेंटिक ढाळै में प्रजेन्ट करूं, समै सापेख। वै भी अैड़ा तत्व, जिका सेवट आपरी पौंच सूं 'औन दी हौल' भारत री कलचर नै कन्ट्रीब्यूट करै। अैड़ा तत्वां रौ उथलौ वरतमान रै परिपेख में जरूरी व्है, क्यूं कै वै किणी भी देसरी लूंठाई में वकत राखै। आं तत्वां रौ जकौ 'चार्म' अर अैट्रेक्सन' हो वो म्हनै परम्परा सूं जोड़यौ। पुराणै साहित्य सूं म्हैं आज भी

उत्तौई राजी व्हूं जितौ कै आज रा साहित्य सूं।''

खूद री पोथ्यां बाबत कवेसर कैवै–

''सन् 1955 में 'सांझ' अर 'मेघदूत' रौ अनुवाद तो म्है अेम. अे. करी तदतांई छप छपग्यो हो। 'परमवीर तौ देखावौ, चीन री लड़ाई कद हुई ही, सन् 1962 में, तौ सन् 1963 में छपी ही अर 'जीवणधन' सन् 1965 में।

डॉ. नारायणसिंह भाटी री बारह काव्य पोव्यां छपी–जिणांरी विगत नीचै मुजब है–

1. ओळूं
2. सांझ
3. मेघदूत (अनुवाद)
4. जीवणधन
5. दुर्गादास
6. परमवीर
7. कळप
8. मीरां
9. बरसां रा डीगोड़ा डूंगर लांघिया
10. मिनख नै समझावणौ दोरौ
11. पतियारै
12. सूखीधर री इमरत बेल

lEiknu& डॉ. नारायणसिंह भाटी राजस्थानी भासा रा कैई नामी ग्रन्थां रौ सम्पादन भी कर्‌यौ जिणामें नीचै लिख्या ग्रन्थ गिणावणजोग है–

1. मारवाड़ रा परगना री विगत (तीन भाग)
2. महाराजा मानसिंह री ख्यात
3. महाराजा तखतसिंह री ख्यात

अे तीनूं ग्रन्थ राजस्थान प्राच्य विद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर सूं छप चुक्या है।

4. डिंगळ कोस
5. राजस्थानी वात संग्रह

हिन्दी भासा में लिखी पोथ्वां

डॉ. नारायणसिंह भाटी राजस्थानी रै साथै–साथै हिन्दी भासा में भी महताऊ ग्रन्थां रौ लेखण कर्‌यौ–इणां में खास पोथ्यां नीचे मुजब है–

'डिंगल गीत साहित्य'–ओ डॉ. भाटी रौ 'शोध प्रबन्ध' है।

म्हंनै डॉ. नारायणसिंह भाटी नै नजदीक सूं दैखण, समझण अर उणारै साथ बातचीत रौ मोको मिल्यो। म्हैं उणां री कविता उणारै मूंडै सुणी है अर उणरै प्रभाव नै परतख देख्यौ अनै महसूस करयौ है। डॉ. भाटी मंच रा कवि नीं हा अर न ही बे मंच रौ सहारो ही लियौ। उणांरी कविता में भाव रै साथै चिंतण री गहराई भी समायौड़ी है। खुद री रचणा 'दुर्गादास' नै जद बै भाव विभोर हूय'र सुणाता–तद वांरी वाणी रौ औज देखणजोग हुया करतौ। दुर्गादास जैड़ा देस भगत, स्वामी भगत, वीरवर, चरित नायक, सेनानायक, चतुर राजनीतिज्ञ अर महामानवी गुणां रा

धणी रा चरित नै सबदां ढाळणौ घणौ दोरो काम है– पण डॉ. भाटी इण महान चरित नायक रौ बड़ी खूबी अर प्रभावी भासा सैली सूं बरणाव कर्‌यौ है। इस काव्य री नीचै लिखी ओळयां म्हंनै डॉ. भाटी सुणाई ही जिणांनै बे इण काव्य री सबसूं प्रभावी मानता हा–

अस रा असवार ऊजळा
रयौ ऊजळै वागां
ऊजळी खागां
उजळै मनां
राखियौ खत ऊजळौ
पण असल रंगरेज आसरा
थें रंगियौ कसूंबल धरा–पोमचौ,
बिनां कर रगियां।

• • • • •

प्रणपाळ! थूं ऊचौ प्रिथीपाळ सूं,
थारौ अस ऊंचौ आसमांन सूं,
थूं और असवारां नित ऊंचौ
पण सही जाणजे
आसरा! इळा में–
थांसू ही थारो जस ऊंचौ।

• • • • •

काळी घणघोर घटा ऊमटी
अचाणी तेग–वेग सूं विपद ची।
धमकिया धू–प्राची
औरंग चौरंग घटा ओसरी,
अटा चढ़ देखियो नर नारियां
काळी छबकाळी कांठळ विष–चूंवणी
कांकड़ क्रमि
मां–भू भरिया दृग
हिये कंपकंपी
रूं–रूं विष–छांवळ हहरियौ,
अरड़ायौ आडावाळौ
लूणी सिथळ गात थई
कुरळाया कायर मोर
सरणाटौ चहुं ओर छायो।
बखत रै खेत निपजिया दुरगदास,
आयां बखत जुग–मांझी फेर आवसी।

और माणस मर खूटसी इळारा,
पण जुंगा–जायौड़ा तो
जुगा ही जीवसी।

8-4 ukjk;.kflag HkkVh jk jp.kk lalkj

राजस्थानी भासा रा मोबी कवि डॉ नारायणसिंह भाटी री बारह पौथ्यां में प्रकृति, प्रेम, 'रौमेन्टिक' दीठ रौ काव्य, बिना छंदरौ मुक्त काव्य, अंग्रेजी रा 'लिरीक्स' (गीतिकाव्य), कथा प्रधान प्रबन्ध काव्य, खण्ड काव्य, भाव अर चिंतन प्रधान कवितावां, व्यक्ति चितराम लियौड़ो काव्य, आधुनिक भावबोध, बिम्ब अर प्रतीक रौ आधार लैय'र काव्य रच्यौ है। डॉ. भाटी रौ समै सन् 1930 सूं लैय'र सन् 1994 तांई रौ है। वै सन् 1949 में काव्य रौ लेखण सरू करयौ अर 1994 री 18 अप्रैल नै जद वां रै सुरगवास हुयौ तद तांई वां री लेखनी चालती रैयी। 'परमवीर', 'दुर्गादास', 'मीरां' जैड़ा खण्ड काय अेकांनी, सिणगार, देस–भगती, स्वामी भगती, त्याग बलिदान, समरपण जैड़ा उच्च मानवी मूल्यां सूं भरया पूरा है तौ दूजै कांनी 'ओळूं' 'सांझ' जैड़ी प्रकृति अर प्रेम प्रधान काव्य रचणावां है। 'मिनख नै समझावणौ दोरो', 'पतियारो' 'कळप' 'बरसां रा डिंगोड़ा डूंगर लांघिया' जैड़ी पौथ्यां नव भावबोध, चिन्तण अर सैली प्रयोगां सूं भरी–पूरी है। डॉ. भाटी संस्कृत रा महाकवि कालिदास री काव्य कृति 'मेघदूत' रौ राजस्थानी अनुवाद करयौ जकौ घणौ जगचावौ हुयौ। डॉ. नारायणसिंह भाटी एक भावुक कवि रै रूप में जाणीजै। 'परमवीर शैतानसिंह' रौ चीन रा जुद्ध में बलिदान होवण सूं वां रौ कविमन अेकांनी वां रै साथ पढ़यौड़ा शैतानसिंह जैड़ा सापुरुस रै विजोग सूं दुखी है तो दूजी कांनी उणां री वीरता, देस भगती, साहस अर परमवीर रै रूप में कमायोड़ा जस सूं वां नै दूजी कांनी चिंतण सूं उपज्या विचारा रौ दरसाव घणै ओपतै ढंग सूं 'परमवीर'' काव्य कृति में साम्ही आयौ है।

डॉ. नारायणसिंह भाटी रा काव्य में, राजस्थानी काव्य परम्परा रा डिंगळ काव्य रा भांत–भांत रा दरसाव, अेक सबळ अर टकसाळी भासा में कलम री कोरणी सूं सबद रूप लियौ बो बेजोड़ है। वां रै कनै भासा री विरासत अर सबदा रौ भण्डार हो। डॉ. भाटी सबदां नै तरास'र उणां नै जकौ निखार दियौ उणसूं इणां रौ काव्य अेक अलग पिछाण बणां सक्यौ।

डॉ. भाटी रा जुग में गणेसीलाल व्यास 'उस्ताद', कन्हैयालाल सेठिया, रेवतदांन चारण, सत्यप्रकास जोसी, चन्द्रसिंह 'बिरकाळी', गजानन वर्मा, रघुराजसिंह हाडा, किसोर कल्पनाकांत, मेघराज मुकुल, डॉ. मनोहर शर्मा जैड़ा राजस्थानी भासा रा सिरमोर कवि आपरी मायड़ भासा में काव्य री सिजरणा करता हा। इणां लूंठां कवियां बिचाळै खुद री अलग पिच्छाण बणाणी अर अलग काव्य सैली रा प्रयोग करणा, काव्य भासा रौ ठरकौ पाठकां रै साम्ही राखणौ जिकौ दूजां कवियां सूं न्यारो निरवाळौ हो, कवि ने आधुनिक राजस्थानी कविता जगत में अेक निकैवळी पिछाण दीवी।

डॉ. नारायणसिंह भाटी राजनैतिक दीठ सूं उण जुग रा कवि है जद 1847 री क्रान्ति व्हैय चूकी ही अर अंग्रेजां रै खिलाफ अेक वातावरण आखा भारत में बण चूक्यौ हो। क्रांतिकारी देस भगत बसंती चोळा धारण कर, मायड़ भौम रै खातर सरवस अरपण करण नै साम्ही आ चूक्या हा। जलियावाळा बाग री अंग्रेजी जुल्मां री कथावां देस भगतां रा रोंगटा खड़ा कर दैवण वाळी ही। इणी समै सन् 1920 में गांधीवादी आहिंसा री सुरूआत हुई। आखी दुनियां में दो विस्वजुद्ध व्हिया। 'हिरोसिमा' अर 'नागासाकी' री विनास लीला सूं आखी मानवता कांपण लागी तौ दुजै कांनी विग्यान रा नुवां नुवां आविस्कार व्हिया, मिनख, अंतरिख में जाय पूग्यौ। विग्यान रै रूप में मिनख रै कनै इत्ती बड़ी ताकत आयगी कै बो जद चावै सगळी दुनियां नै मटियामेट कर सकै। सागेई विग्यान रै कारण मानवी नै घणकरी बिमारियां सूं छूटकारौ मिळयौ, उणरी ऊमर बढ़ण लागी अर विग्यांन रौ सहारो लैय'र मिनख अग्यान रौ अंधेरो दूर करण लाग्यौ अर मिनखा नै सुखी करण खातर बडा–बडा बांध, सरोवर बणावण लाग्यौ। इण विग्यानी होड़ में मिनख रौ सुख चैन ई बट्यौ, उणमें मानवता रौ भाव कम हुयौ अर सुवारथ रौ भाव प्रबळ हुयौ।

भीड़ तो बढगी पण जिणनै सही अरथां में मिनख कह्यौ जावै उणनै ढूंढणौ मुसकिल हुयग्यौ। इण घटतै मिनखपणां नै दैखर डॉ. भाटी जैड़ौ कवि खुदरी कविता में नित बदळतै चरित अर आचरण नै घणै प्रभावी ढंग सूं दरसायौ। उणां री अेक काव्य रचणा रौ नाम ई है 'मिनख नै समझावणौ दोरो'। ओ बो मिनख है जकौ घोर स्वारथी है मतलबी है, आचरणहीन है, बो खुद रै मतलब री बात समझाणी चावै। उणनै नैतिकता अर आदर्स री सीख सुवावै कोनी। डॉ. भाटी री जिनगाणी में अैड़ा कैई पळ आया व्हैला जद बे मिनख रा कैई रूप देख्या व्हैला, आख्यां देख्यां घणकरा दरसाव उणां री कविता रा आधार बण्यां। बे जुग रा सत नै आखरां ढाळयौ अर मिनख रा छळ प्रपंच अर दांवपेचां नै समझता थकां भी अेक महा मानवी री खोज रौ सिलसिलो खुद री कविता सूं बणायौ राख्यौ। उणांनै कीं अैड़ा व्यक्ति चितराम भी दैखण नै मिळ्या जका आज रै मिनख रा आदर्स बण सकै। अैड़ा में 'पीथळ' जैड़ा राजस्थानी कवि, रवीन्द्रनाथ टेगोर जैड़ा विस्वकवि, सैले, कीटस, बायरन, अर मिल्टन जैड़ा अंग्रेजी कवि उणांनै घणां प्रभावित कर्‌या। डॉ. भाटी उणांरै साम्ही नत मस्तक व्हैय'र उणांनै श्रद्धा री काव्य औळयां अरपण करी। इणी तरह 'मीरांबाई', 'दुरगादास', 'सैतानसिंह' जैड़ा महान् मानवियां नै श्रद्धा री अंजळी दैवता थकां उणां माथै काव्य रचणावां रची। साधारण मानवी भी जको इण जगत में वां री निजरा साम्ही आयौ अर जिणरा करम, ब्यौवहार अर अच्छाइयां सूं कवि प्रभावित हुयौ उण नै खुद री कविता रौ नायक बणाय'र उणरी कीरत में आखी कविता मांडी। इण तरै रा लोगों में 'कम्पोजिटर गोरधन', 'बुकलिफ्टर तेजपाल', 'गवरीबाई', 'नूरो', 'गाडोळियो लुहार', 'निराला', 'अज्ञेय' जैड़ा खास गिणावणजोग है। नारायणसिंह भाटी अंग्रेजां री गुलामी, रजवाड़ी राजस्थान अर आजाद भारत रा कैई दिन देख्यां, उणांनै राजनीति री नित घटती घटनावां प्रभावित नीं कर सकी अर वे खुद रै भावां अर चेतना नै काव्य रूप देवता रिया। आजाद भारत रा कैई सपना वां रा भी रिया व्हैला पण बां री कविता सूं ओ ठा पड़ै, कै बे भौतिक बदळाव सूं इत्ता दुखी नीं हा जित्ता बदळतै मिनखा सूं दुखी हा। हालांकै बे जुग रा प्रभाव सूं मुगत नी हा, जको बे देखता अर जठै वांनै दोगलापणो लागतो उणनै सबद रूप दिया बिनां रैवता कोनी। उणांरी कविता रा नाम, 'नुई शिक्षा', 'इक्कीसवीं सदी', 'म्हारै सै' र रो मास्टर प्लान', 'वौ ही नेता बण जावै', 'आ जनता', 'पिच्छाण में ई नहीं आवै', 'अंतरिख, उच्छाव' जैड़ी कवितावां जुग रा सांचा दरसाव पाठकां रै साम्ही राखै। 'नगटाई रो सिक्को', 'ज्ञान रो गिरण' जैड़ी कवितावां चिंतण प्रधान है अर पाठक नै समै अर जुग रा सत सूं रूबरू करावै।

कवि री मान्यता है कै आज पतियारो नी रियौ, जिणरै कारण हर मिनख दुखी है, बैचैन है, असांत है। जद मिनख सूं मिनख रौ पतियारो नीं रैवै तद अैड़ी संकट री वैळां आवै कै मिनख मिनखपणौ भूल जावै। 'पतियारो' काव्य पौथी सूं कवि आ सीख दैवणी चावै कै आज पतियारा री घणी जरूरत है। पतियारो ही मिनख नै मिनख सूं जोड़ सकै। मिनख नै टूटण सूं बचाय सकै। इणी तरै 'कळप' काव्य कृति उण कवि रा नित रा कळाप नै साम्ही राखै, बिना सोच अर पीड़ रै काव्य रौ जलम ई नी हुवै, कठैई कोई गहरी अनुभूति हुवै जकौ अंतस तांई पूग'र कवि नै झकझौर दैवै उणरौ छाया रूप ई कवि री अभिव्यक्ति बणै। जित्ती गहरी अभिव्यक्ति हुवै उत्ती ही काव्य रचणा सबळी मानिजै अर जे कवि इण ऊंडी अनुभूति नै उत्तै ई प्रभावी ढंग सूं अभिव्यक्ति दैय'र सिरजण कर सकै तौ वां रचणा अमोली बणै। अभिव्यक्ति सारू रचणाकार री भासा सैली अर उणरौ सबद भण्डार भरयौ–पूरो अर प्रभावी हूवणौ चाहिजै। हर मिनख संसारी करमा में इत्तौ उळज्यौ रैवै के उणरौ सोच उजागर नीं हुवै! अे तौ साहित्यकार, भगत अर संत हुवै जिका जद आखौ जगत सोवे तद जागै अर आखो जगत रोवै तद हंसै, ओ जागणौ अर रोवणौ ई सिरजण रौ कारण बणै। इणी चिंतणधारा रौ आधार लैय'र डॉ. भाटी 'कळप' काव्य री रचणा करी है।

डॉ. नारायणसिंह भाटी 'आधुनिक जुग रा आगीवाणा कवि हा। वे नुंवा भाव अर विचार लैय'र महताऊ काव्य री सिरजणा करी पण उणानै परम्परावादी कवि मान्या जावैं नुवी। नुवी कविता बाबत डॉ. भाटी री खुद री मानता है कै, 'नवी कविता रै धारै नै धुरापुळ सूं देखियां और तथ सामी आवै कै कविता में पैलां सूं इधको विसय–विस्तार हुयौ है उठै ही उणमें व्यंग री अनोखी खिमता आई है, पण सपाट बयानी

रै बहाने कोरे गद्य री तोड़ियौड़ी मरोड़ियैड़ी ओळ्यां नै कविता नीं कही जा सकै। संवेदना कविता रौ मूळ धरम है। जिकी कविता संवेदनसील नीं हुवै वा कितरी ही कळा रा कळाप परोटती थकी भी कविता नीं बण सकै। आज नवी कविता रै खाते में घणकरी संवेदनहीन कवितावां ही देखण में आवै जिकी अेकर आंख आगे कर निकळ्यां न तो पाछी पढ़ण रौ मन हुवै न हिये में ही ऊतरै, क्यूंकै हिये नै प्रभावित करण वाळी कविता वा ही हुवै जिकी आपरी ओळ्यां में संवेदन री ऊरजा, अंवेर नै राखै। इण संवेदना रै पांण ही ओळियां में लय आपौ आप आवै जिणसूं कविता में सहजता री सबळाई नै गाढ़ रौ बंधेज बापरै। इण तरै री कविता रौ सिरजण कवि जद ही कर सकै जद बौ किणी प्रसंग री अनुभूति आप में जाग्यां (इन्सपायरहुयां) ही लिखै। कोरी बौद्धिक चिंतना या कुढण सूं बापरियोड़ी कविता आंख सूं आगै नीं ऊतरै उणरौ थान उण छापल पानै माथै ही थरपीज नै रै जावै। एक हिये री बात दूजे हिये नै उणी सबळाई साथै प्रभावित करै जद ही वा कविता है।

आज रै भौतिकवादी संवेदनहीण जुग में कवि रौ कर्म इणी खातर पैलां सूं भी घणौ कठण पण मैताऊ बणग्यौ है, क्यूंकै संवेदणसीलता मानवता री अनिवार्य जरूरत है नै इणनै हर हालत में जीवती राखण में कवि री मोटी भागीदारी है जे कवि ही औ काम नीं करैला तो दूजौ कुण करैला? संवेदना माथै ही मिनखपणै रा सारा रिस्ता कायम है। भौतिकता री बधती संत्रास सूं मुगती संवेदन नै सिरै राखियां ही मिळ सकै है। संस्कृति नै भी संवेदन ही परोटे, पनपावै, संवेदनहीण संस्कृति अर कळा री बात कौरी छळावौ है। लारला कीं बरसां में लिखीजियोड़ी म्हारी अै कवितावां युग–बोध री परतख पीड़ सूं प्रेरित होतां थकां ही इण छळावै रै जाळ सूं मुक्त है।

.... कवि वाणी रौ साधक व्है। उणंरी कथनी अर करणी में जितरौ आंतरौ बधसी उतरी ही उणारी साधना कमजोर नै प्रभावहीन होसी। साहित्यकार साहित् रा मापदण्ड बदळण री कितरी ही बात करो पण उणनै आपरै प्रति वफादार तौ रेणौ ही पड़सी।

¼ifr ;kjk½

8-5-1 çÑfr dk0;

डॉ. नारायणसिंह भाटी आधुनिक राजस्थानी साहित्य रा चावा अर सिरमौर कवि हा। बे प्रकृति कवि रै रूप में घणा प्रसिद्ध हुया। 'सांझ' जैड़ो नामी प्रकृति काव्य राजस्थानी साहित्य नै वांरी मेहताऊ देन है। यूं तौ प्रकृति काव्य री परम्परा आदिकाल सूं ही दुनिया रा सगळा साहित्य में देखण ने मिळै, पण हर देस री प्रकृति न्यारी–न्यारी हुवै। बठां री रितुवां, पेड़–पौदां, फळ–फूल, जीव–जीनावर अर पंखेरू भी भांत–भांत रा व्है। इण खातर प्रकृति काव्य रौ बरणाव भी भांत–भतीलौ हुवै। भारत प्रकृति री दीठ सूं दुनिया रा सब देसां सूं न्यारौ अर रूपाळौ है। इत्ती रितुवां अर प्रकृति रौ इत्ते विध–विध रौ रूप दुनिया में कठैई नीं मिळै। दुनिया रा कैई देसां में फगत ठण्ड ही पड़ै अर बै सूरज री धूप खातर तरसता रैवै। 'साईबेरिया' अर 'यूरोप' रा कैई देस इण रा उदाहरण है। इणी तरै मध्य एसिया, अफ्रीका अर राजस्थान जैड़ा भू–भाग भयंकर गरमी खातर जाणीजै। कठैई बरफ घणौ पड़े अर कठैई बिरखा भी घणी व्है। कठैई पाणी री अेक–अेक बूंद खातर लोग तरसै। इणही तरै सगळा देसां में सगळी रितुवां रा दरसण भी नी हुवै।

भारत ही अेक अेड़ौ देस है जठै सगळी रितुवां रौ आणन्द लियौ जा सकै। अेकानी हिमाळो है अर दूजी कानी मरुस्थल रौ अबखो भू–भाग है। दक्षिण में फैल्योड़ौ समदर है। गंगा, जुमना, कावेरी, नरमदा, रावी, चिनांव, झेलम, चम्बळ, लूणी, गण्डक जैड़ी नदियां अर सतपूड़ा, अरावळी परबतां री लाम्बी कतारां भारत रै इण प्रकृति वैभव रौ बरवाण करै।

आखा भारत में राजस्थान री प्रकृति कीं न्यारी अर निराळी है। अठै अेकांनी पहाड़ है दूजी कांनी रैतीला टिब्बा है। बिरखा कम हुवण रै कारण बरसाती नदियां अर पाणी नै बचायौ राखण खातर

समन्द, सरवर, झीलां, कुवा, बावड़िया, टांका घणी तादाद में निंगै आवै। गरमी घणी, ठण्ड थोड़ी। सावण अर भादवो, बिरखा रुत रै कारण सुहावणौ लखावै। गरमी में तावड़ौ घणौ पड़ै, लूआं बाजै। बसन्त थोड़ा ही दिनां रौ मेहमान हुवै। फागण री रुत सबसू सुहावणी कहीजै। इण तरै छ रितुवां रा भांत–भांत रा दरसाव इण राजस्थान में निगै आवै। सूरज री किरण सबसूं पैली राजस्थान रा आथूणा भू–भाग में पसरै अर सबसूं ज्यादा सूरज री किरणां इण आथूणी धरा में ही पसरती आवै। रातां ठण्डी अर सुहावणी लागै। 'सांझ' अर सुबै री प्रकृति रा चितराम घणां सुहावणा अर मनमोवणा लागै। गरमी री रुत में आखै तावड़ै तपैड़ा प्राणियां नै मरुधरा री ठण्डी रातां ताजगी देवै अर उणा'री थकान मिटावै। राजस्थान री इणी भांत–भतिली प्रकृति नै अठां रा साहित्यकार अर खासतौर सूं कविगण खुदरी कलम री कोरणी सूं इतै प्रभावी ढ़ंग सूं आखरां ढ़ाळी है कै उणनै पढ़तां अर सुणतां घणौ आणन्द आवै।

आज रा राजस्थानी कवियां में चन्द्रसिंह सबसू पैला अर जगचावा प्रकृति कवि गिणीजै। उणां री रचियौड़ी 'लू' अर 'बादळी' सबसूं सिरै रचणावां है जिणांनै प्रकृति काव्य री पांत में राखीजै। अे दोनूं रचणावां खण्ड काव्य अर मुक्तक काव्य रूप में रचियौड़ी है।

चन्द्रसिंह रा प्रकृति काव्य में दोय रूप सामी आवै। अेक है छायावादी प्रकृति रूप अर दूजो रहस्यवादी प्रकृति रूप। छायावादी काव्य में प्रकृति रौ मानवीकरण कर दियौ जावै अर नायक नायिका रै रूप में आखै काव्य रौ मन्डाण मांडीजै। चन्द्रसिंह री 'बादळी' काव्य में 'बादळी' नै नायिका अर सूरज नै नायक रूप में दरसाया गया है। यूं तो सूरज अर बादळी भाव अर भासा सूं परै है, पण कवि खुद री भावनावां नै इण काव्य सूं इण भांत दरसाई है, जाणै वै सजीव प्राणी है अर वांरौ क्रिया विधान मानवी नायक नायिका रै ज्यूं व्है रियौ है।

प्रकृति रै दूजा रूप में रहस्यवादी दीठ लैय'र कवि प्रकृति रै बारै में जाणणौ चावै अर खुद ही सवालां रौ जवाब दैवतो निगै आवै।

आज रा राजस्थानी साहित्य में प्रकृति रा दोय रूप ओर है अेक पूरी काव्य कृति अथवा रचणा प्रकृति नै ही आधर बणा'र लिखीजै अर दूजो बो काव्य रूप है जठै प्रसंगवस प्रकृति रौ बखाण हुवै। 'लू' अर 'बादळी' दोनूं रचणवां प्रकृति काव्य ही है। आखी प्रकृति नै ही आधार बणा'र आं काव्य कृतियां री रचणा हुई।

डॉ. नारायणसिंह भाटी री पैली रचणा 'ओळू' ही पण प्रकाराण री दीठ सूं 'सांझ' पैली पोथी मानीजै है। 'सांझ' पैली जोधपुर सूं छपणवाळी 'प्रेरणा' पत्रिका में धारावाहिक रूप में छपी अर उणरै पछै सन! 1954 में पोथी रै रूप में सामी आई। इण बावत उत्तर देवता डॉ. भाटी खुद ही बतावै कै–

''लिखण रै लिहाज सूं 'ओळूं' म्हैं सन् 1949–50 में लिखी ही पण पोथी रै लिहाज सूं 'सांझ' पैली छपी। बीयां ओळूं रा कीं छंद अर 'जीवण–धन' में संकलित 'विधवा' इत्याद कवितावां उण बगत कॉलेज मैगजीन में छप्या हा। 'सांझ' पैली तो 'प्रेरणा' में धारावाहिक छपी अर सन् 1954 में किताब रै रूप में आई।''

प्रकृति काव्य री इणी परम्परा में डॉ. नारायणसिंह भाटी रौ नाम घणै मान सूं लियौ जावै। वांरी रचियौड़ी 'सांझ' अर 'लू' 'बादळी' रै पछै महताऊ गिणीजै। 'सांझ' मरुधरा रै अेक गाँव री सांझ है। डॉ. भाटी रै खुद रै गाँव री सांझ है, पण उण सांझ रै दरसाव नै कवि साधारणीकरण सूं सार–भौम बणा दियौ है। यूं लागै जाणै आ सांझ आखै राजस्थान री है, अेक गाँव री नीं है। इण तरै सांझ में प्रकृति रौ अेक बडौ फैलाव है अर गैरी दीठ है। बियां सैली री दीठ सूं देखां तौ 'सांझ' लाक्षणिक सैली में रयियौड़ी प्रौढ रचणा है। इण 'सांझ' में जथारथ है फगत कल्पना कोनी। इण 'सांझ' में प्रकृति रै छायावादी रूप है, मानवीय क्रियावां है। जदै ही तौ 'सांझ' बैलां

पर बांह पसार पौढ़ जावै अर डूंगर रै ऊपर सूं रात झांकती निंगै आवै। ओ झांकणौ अर पोढ़णौ मानवी क्रियावां रौ रूप है। इण तरै कवि प्रकृति रौ मानवीकरण कर दियौ।

कवि 'सांझ' काव्य में खुद रा देख्यौड़ा दरसाव अर भौयौड़ा' सत नै उजागर कर्‌यौ है, जिणसूं आ कृति सजीव अर प्रभावी बणी है। इण तरै 'सांझ' में पिछमी धरा रा गाँवां रा मारमिक चितराम है अर दूजी कांनी उण गाँव में फैल्यौड़ी भूख, बेकारी अर सौसण री छिब भी साफ नींगै आवै। सांझ रौ दरसाव तौ थोड़ो सो हुया करै, पण उणरै साथै गाँव रौ लोकजीवन जुड़ियौड़ौ हुवै। डॉ. नारायणसिंह भाटी आं थोड़ा पल–छिणां रा देख्यौड़ा दरसावां नै आखै खण्ड–काव्य रौ रूप दे दियौ अर 195 दूहां में ओ काव्य रच दियौ, जिणरा अेक–अेक सबद में प्रकृति रै अेक–अेक दरसाव है। जीव–जीनावरां अर पंखेरूवां री धड़कण है।

'सांझ' अेक दैनिक जीवन रौ अंत है। मानव री दिनचरिया रौ समापन अर बिसराम रौ समै है। मिनखां रा कई काम सांझ सूं जुड़ियौड़ा है। दिन भर री तपत, रै पछै सांझ रौ आवणौ अर उणरौ होळै–होळै ढ़ळणौ प्रकृति रा भांत–भांत रा उपादान नै नुंवा रंगरूप दैवै। सांझ री अनुभूति हर मानवी अर जीव–जिनावरां नै हुवै गाय, भैस जैड़ा पसु अर पेड़ पौधां, सगळा इण सूं प्रभावित हुवै। 'सांझ' काव्य में कवि डॉ. भाटी इणरौ सांतरौ बरणाव कर्‌यौ है। सांझ रै धीरे–धीरे आवण सूं दिनभर रा थाका मिनख हरखीजै। इणरी अेक बानगी देखीजै–

डीगोड़ा डूंगर धोरां मांझ,
बरसतौ झीणोड़ौ बिसरांम।
जिकण में भींजै बा इकलाण,
बिराजी सांयत बण जजमांन।।

आं औळ्यां में कवि नै सांझ रै समै ऊंची–ऊंची पहाड़ियां अर रेतीला टिब्बां रै बिचाळै हळको–फूळको विसरामा लागै अर उणमें 'सांझ' भींग्यौड़ी है। सुख–सान्ति जजमान बण'र बिराजमान है। कवि डॉ. भाटी रौ औ सबद–दरसाव परिवेस अर प्रकृति रै सूक्ष्म अर स्थूल भावां नै मूरत रूप दैवणवाळौ है। बिसराम रौ बरसणौ अर सान्ति रौ बिराजणौ अेक मौलिक सूझ है।

सांझ री वेळा अंधेरौ आपरी आंख्या खोले अर लतावां लाज सूं सिकुड़जावै अर मुरझाता फूलां नै खींच'र लाज रै कारण ही झुक, लजावण रौ कवि बरणाव करै जिणरी बानगी देखीजै–

झंवरा झुटपुटिये री बेल,
खुलै बा अंधारै री आंख।
बेल लख लचकांणी पड़ जाय,
लजाळू सिरकै पल्लौ नांख।

'सांझ' रै समै रा बादळां री छटा न्यारी ही है। बा पळ–पळ में खुदरौ रूप बदळै। 'सांझ' री लालिमा सूं आकास में छायौड़ा बादलां रौ रूप अैड़ौ निंगै आवै है जाणै लाल रंग घोळ दियौ हुवै अर सांझ रूपी सुन्दरी सिनान रै पछै आपरौ कसुमळ चीर निचौड़यौ हुवै। इणरी बानगी देखीजै–

हुवो थिर समदर आभौ जांण,
कसां में घुळै कसूंबल रंग।
निचोयौ सांझ–नार जिमि चीर,
दई कै देवत–नैण सुरंग।।

इणी तरै कवेसर भाटी पीळा–पीळा बादळां रै च्यारूं कानी फूटयौड़ी सूरज री किरणां रै फुटरापै नै देख कैवै–

चिळकै सोने रा चीलरिया,
बंधगी बा रूपाळी पाळ।
कूंपळो किण रो ढुळियौ आज?
गुदळतो घण असमांनी ढ़ाळ।

कवि आकास मांय मटमैले अर रंग बिरंगा बादळां रा बदता मनमोवणा रूप नै इण भांत दरसावै–

ऊफणी आडै छाज कठैक?
उरसां सुगन–चिड़ी री पांख!
गेरूआं तीरां पांण पयाण,
हंसला पौढ़ाण नस नांख।

पंखेरूवां रौ कलरव सांझ रै वातावरण नै अेक निराळो रूप दैवै। बानगी देखीजै–

घणी चिड़कल्यां री चैंचाट,
रूंख री डाळां रौ संसार।
करै खुल मन री बातां दोय
मानीजै सुख–दुख री मनवार।

आकास में उड़ता कागलां यूं लागै, जाणै बिना बीन्द री चंचळ कागलां री बरात किरण सूं ब्याव करण खातर आथूण कांनी उड़ री हुवै–

बींद बिन चळ हाडां री जान, परणवा किरण उडी आथूंण।
मुधारो मिळियौ ले पड़–जांन, जदे अै बळिया माथो धूंण।।

इण भांत कवि सांझ रै समै पसु–पंखेरूवां रा क्रिया–कलाप, बाजरे रा खेत, मारग माथै चालता बटोई, गुवाळां अर गायां रा झुण्ड, गायां दूहणौ, मिन्दर री आरती, बालिका सूं ऊंची राग में गाईजण वाळौ 'वीरो' गीत अर विरहणी नारियां सूं गायौ जाणै वाळो 'काछबियो' गीत रौ घणौ सांतरौ अर फूटरौ बरणाव कर्‌यौ है।

'सांझ' मांय मानवी भावनावां रौ प्रकृति माथै सफळ अरोपण कर'र काव्य नै प्राणवान बणा दियौ है। कवि सांझ सुन्दरी नै जळ मांय न्हावण खातर उतरी देख'र हवा तरंग बण'र जळ में छिप जावण रौ मौलिक बरणाव कर्‌यै है–

अकेली छांह नहावै नीर,
लहरां धुपै लहरियौ रंग।
सांझ रौ लूटण रूप अथाग,
पवनियो तिरसौ बणै तरंग।

कवि सांझ रा भांत–भांत र चितराम मांड्या है, सांझ बनड़ी रौ रूपाळो रूप कवि रै आखरां ढळ्यौ है। 'सांझ' नै राजस्थानी नारी रै रूप में निरखतो कवि उणमें माटी रो रंग इण भांत भरै–

हंसै किण बनड़ी तणौ सुहाग?
बादळी झीणी घूंघट ओट।
बीखरै डाबर नैणां लाज,

चमक्कै चोखी कोरां गोट।

कवि बनड़ी रौ रूपक बांधतो फैर कैवै–

लहरै रैंण रंगाणा केस,
जिण में लुकी रूप री राग'
काजळिया कंवळां तणौ पराग,
बनी रै थिर जोबन रो थाग।
आवै कूं कूं पगल्या मेल।
अठै तौ कांटा रौ संसार!
संभै ना थांसूं हळको चीर।
जिकण में रिमझोळां रो भार!

आं ओळियां में सांझ रूपी मन रा भावां नै प्रकृति री क्रियावां रै साथ बांध'र उणनै छायावादी रंग दियौ गयौ है।

सांझ री वैळा गाँवो में जिको वातावरण दैखण नै मिळै उणरौ सबद–चितराम मांडतौ कवि सांतरौ अर मनमोवणो बरणाव इण भांत कर्‌यौ है–

नगारा संख आरती धूप,
धुंअै ने झांपै है झणकार।
टुळकिया अेवड़ धोरै ओट,
सुणीजै किलकारी उण पार
सोयगा मारग आंख्यां मींच,
झाड़कां लूंबै झीणौ बाव
सांझ रो रोही में रणवास
खेजड़ा ऊभा दे दे घाव।।

8-5-3 l[kh ?kj jh bejr cy

डॉ. नारायणसिंह भाटी री आखरी पोथी है 'सूखी धर ही इमरत बेल'। कवि इण पोथी नै जीवतै जीव रची ही। आ कवि रै च्यार बरसां री मेहणत रौ फळ रूप है। कवि रै सुरगवास हुयां रै च्यार बरस पछै उणां रै सपूत इण पोथी नै छपाई है। इण पोथी में जैसाणै री माटी री सुगन्ध अर बठां री कळा, संस्कृति अर प्रकृति रा भांत–भांत रा रूपाळा रूप अेक सबळ भासा सैली अर भाव री गम्भीरता नै लैय'र रच्यौड़ी है। इण पोथी में डिंगळ काव्य परम्परा री डकरेळ राजस्थानी भासा रा दरसण हुवै। इण पोथी में 42 कवितावां है, सगळी अेक सूं अेक सिरै अर चिन्तण प्रधान। इण काव्य पोथी रा सात पड़ाव है, 'उमाव', 'बीज', 'कूंपळ', 'फाल', 'रसाळ', 'सौरभ' अर 'साध'।

जैसळमेर री वसुन्धरा स्थापत्य कळा सूं भरपूर है। बठां रा मिन्दर, 'मेल–माळिया, बठां रौ किलो, हवैलियां, जाळी, झरोखा देखणजोग है। इण धोरां री धरती रा जीव–जीनावर, पंखेरू न्यारा निरवाळा है। बठां री प्रकृति रा रंग रूप भी अपणै आप में बेजौड़ है। पाणी री भांत मानवी घणो गैहरो है। 'बो धीजे रौ धणी है बो हिम्मती, वीर अर भगती रा भाव लियौड़ौ है। बिखै रा दिन भोग्योड़ौ ओ मानवी उण अमोला लोक साहित्य अर लोक कळा नै जलम दियौ जिकां री धूम आज आखी दुनिया में सुणीजै। मुधरी 'मांड' राग में गायोड़ा अठां रा लोक गीत घणां प्रभावी है

अर मानवी मनां में आणन्द अर पीड़ रा भाग इत्ता गैहरा भर दैवै कै बो आं गीतां नै कदै भूल नीं सकै। इण धरा अेक सूं अेक, बढ़'र बातपोस, गीतकार, राग–रागण्यां बजावण वाळा जंतर, सूरवीर अर सुघड़ नारी रतन संसार नै अमोली थाती रै रूप में दिया है। जैसाणै री इण सतरंगी संस्कृति रौ दरसाव आं कवितावां में नारायणसिंह भाटी माण्ड्यौ है।

नारायणसिंह भाटी रै काव्य री आ खास बात मानीजै कै उणमें राजस्थानी भासा री ठेठ लोक सूं जुड्योड़ी सबदावली रा दरसण हुवै। उणां नै साहित्य रै साथै–साथै इतिहास, भूगोल अर अंग्रेजी साहित्य रो भी ग्यान हो इण कारण बे खुद री कविता नै व्यंजनावां सूं संवारी। बे जिण सबद रौ प्रयोग बे खुद री कविता में कर्‌यौ उणरी परम्परा री उणानै जाणकारी ही। बे कम सूं कम सबदां में कैवता अर उणनै उणरी परम्परा सूं जोड़'र प्रभावी बणावता। ओ ही कारण है कै नारायणसिंह भाटी री कविता नै झट नीं समझ्यौ जा सकै। इणनै समझण खातर कविता रै जुग रौ दरसाव पाठक रै सामी हूवणौ चाहीजै।

नारायणसिंह भाटी री कविता में राजस्थान छन्दां अर अलंकारां रा प्रयोग ओपता अर फबता है। वांरी कविता में उदातता है, गम्भीरता है, चिन्तण है, कोरी नारा बाजी कोनी। बै जिका प्रकृति रा चितराम मांड्या है, बै नामी है। बै मन रा भावां नै संजीव करण में अर मौलिक बणायो राखण में कोई कमी नीं राखता। सबदां री मणियां सूं काव्य रा बांध्यौड़ा रूपक अमोला है। अेक बानगी देखीजै–

''निज इंडै री ब्रिमांड सुघड़ाई ने
ज्युं ध्यान मगन जोगी सेवै
बिरमा रै तत्व स्वरूप नै
उर–धड़कण संचरावै उण में
मूंन भासा रौ ऊंडौ अरथाव
सिसु री सधती सारत में
सारै
अगम पिछम उथळीज्या
मोटा अखाड़ां रै पार
सास्व सिरजण'रा संस्कारू भाव
जुगां–जुगां रै थ्यावस री।
मरमीली भासा
जग सोवै जद कवि जागै
सुणै गुणै संवेदन भासा
करम–भोम में सिरज–बीज री
साध सधी इमरत अभिलासा।
म्हारा डाया!
इण सूखी धरती में
खेजड़ कुमट कैर कंकेड़ा ही
आंबा आंबली
थो'र नै खींप ही है कदंब–कुंज
रसा रसाळ रा साजता सिंगार
परकत पुन्न रा परतख आधार

इणी खातर खेजड़ी नै तुलछी ही मांन
बाळी वय पूजै है
सिरधाळू सनमांन
इणी जागा देवता रौ थरपियौ है थांन

जैसाणा री धरती बाळू रेत री है जिणरी जाणकारी करावतौ कवि कैवै–

बळती बाळू'री
ओळियां–ओळियां
अेकठ हुयौ है
मांड धरा में
अंतस तप रै
हाटक हठ रौ
आकळ इतियास।
वाल्हा थूं संपजै
इणरी सुवास।

कवि इण धरती री लोक संस्कृति री पिछांण करावतौ कैवै–

पाबू रा परवाड़ा नै
रामदे रा गीत
आवड़ रा तूठणा
जसमादे री जीत
रूपांदे री बेल
कलावत काछबौ नै
माड़ेची मूमल रा रंग भर–गीत
रतनराणै री झुरवीं प्रीत
रायधण रंजणी जोड़ी री परतीत
सामरी रै साध री सरसती नीत
आयल री आण में ऊगतौ आदीत
झेडर री डुरकी में झुरतौ संगीत
सायर! थूं सुणसी
दिस–दिस
ढांणी–ढांणी नै
मारगां–मारंगा
कमायचै–कमायचै
कमायोड़ी राग
पेरवैं–पेरवैं
पीलणौ पराग

करताळां री ताळनै नड़ रौ नाद
पूंगी रौ लैरो सनै
मोरचंग रौ स्वाद
लियौ जिकां री बची है बात
सांस रै स्वर सूं सधी है सौगात
नाक सूं निभी है सुगंधी औकात
अमरता तुली है हियै री बिसात।

8-5-4 tho.k&èku

'जीवन–धन' कविवर डॉ. नारायणसिंह भाटी री पांचवी काव्य पौथी मानीजै जिणमें मुगतक कवितावां है। कवि नारायणसिंह 'मूमल, पासाण सुन्दरी, विरह, रविन्द्रनाथ रै प्रति, काळ, माणस, पीथळ, कवि कीट्स रै प्रति, प्रेम, सिणगार, रूसणौ, बसन्त' जैड़ी नमी कवितावां इण संग्रै री गिणावण जोग रचणावां है।

'जीवण–धन' री सगळी कवितावां में मन रै भावां री ऊंडी अनुभूति री रूपाळी अभिव्यंजना, सबदां रौ फूटरो सौष्ठव अर चितराम कोरती काव्य सैली रा दरसाव घणां मोवणा है। 'मूमल' प्रीत पगी बा नार है जिणरै अणन्त प्रेम अर विरह री दाझ पाठक नै झकझौर दैवै। मूमल री ओळखाण करावतौ कवि कैवै–

जुगां री जोत! रूप री रास!
मिनख रै सपरां रौ सिंणगार–
झुरै है रंग री मैफल बीच
माड़ेची मूमल थारै लार।

इण संग्रै री दूजी मेहताऊ रचणा है, 'पासाण सुन्दरी'। डॉ. नारायणसिंह भाटी अेकर म्हंनै बतायौ हो कै बै कैई बरसां पैली ओसियां रै प्रसिद्ध मिन्दर रै सामी भाटे सूं तरासीयौड़ी इण सुन्दरी नै निजरां दैखी ही। किणी अग्यात कारीगर इण नारी फूटरापै नै कळा री दीठ राख'र प्रितपगी परणेतण पुतळी रै रूप में घड़ी ही। पण मूरत रा विसाळ नैण, अचंचळ सुन्दरी रौ रूप अर प्रण कवि रै अन्तस बस्यौ, जिणनै सबद रूप देवतो कवि इण कविता नै रची है। इण अदेही पासाण सुन्दरी नै किणी चतर नर विरह री झालां झळसाइ है जद ही बा सयन हींण बण अजै लग पंथ लीण है। इण काव्य री कीं ओळ्या इण भांत है–

थूं कुण ऊभी
हे सयाणी सूरत
पासांण मूरत
नग्र देह
भग्र गेह
अतीत री कला–द्रष्टि तळै।

इण कविता रौ अेक–अेक सबद मिनख नै झकझौर दैवै अर कैई सवाल खड़ा कर दैवै। सफळ कविता बा ही कहीजै जिणरै खतम हुतां ही पाठक री चेतना चेतन हू ज्यावै, आ ही इण कविता री सफळता है।

इण संग्रै री तीन कवितावां नामी सुरसत सुतां रै नाम है, जिणांमें अेक है अंग्रेजी रौ नामी कवि

कीट्स अर दूजौ है राजस्थानी भासा रौ सिरै कवि पृथ्वीराज राठौड़ जिणां नै 'पीथळ' रै रूप में आखौ जगत याद करै। तीजौ कवि है बंगला भासा रौ कवि गुरु रविन्द्रनाथ ठाकुर। यूं तौ अे काव्य रूप में सिरद्धा री अंजळी रूप है, पण कवि नारायणसिंह भाटी रै काव्य री परख भी आं काव्यासां सूं हूवै–

हे! परदेसण बाड़ी रा सुघड़ पांवण
रस रूप रंग री रीझणहार
सत रा तंत परखणिया
थनै असत छळग्यौ,
कुण–मौत?
नहीं,
बा तो सरब जुगां रौ अमर सत है।
– 'कवि कीट्स रै प्रति'

जूंझ्या केइक जूंझार
कीरत रा कमठांण में।
झाली थें रिझवार
सरसत री कल्यांण रा।।
–'पीथल'

हे कवि गुरु!
कल्पना कल्पबेल थारी
भांत भांत पुहप–गंध छकी
छाई म्हारै भावुक हिये कुंज
मन हेताळू गैळीज लहरीजियौ
अधखुली आंख उळझी
फूल–पांरव।
–'रविन्द्रनाथ रै प्रति'

मांणस
अरे भाईड़ा मांणस।
थूं मांणस ही रहिजे।
थूं करै इतरा कळाप
पण कळाप रै काळै समंद में
मिनखपणौ नहिं डूबौ चाहीजै।
तिरै सोही तरणी
रहै सोही करणी,
सुण इतरी बात–
आप मरियां कोई

जुग परळै कहीजै?

अरे भाईड़ा मांणस!

8-5-4 dGi

'कळप' नारायणसिंह भाटी री अस्सी कवितावां रौ संग्रह है जिणरै सिरजण रै आधार रौ हवालौ दैवतो कवि खुद लिख्यौ है– ''म्हारै जाझै जीवण–संघर्ष रै दौरान म्हैं इण भागती–ऊळझती दुनियां नै जेड़ै 'मोरल क्राइसेस' में देखी–परखी, सुणी–समझी अर भुगती उणरा चेतण–अचेतण अनुभव ही आं कवितावां में बोलता हुया है। किणी वाद–बिचळाव रा ओला लैवण री अबखाई नै आगी राखियां ही हियौ कीं हळकौ हुयौ है। जिण क्रम सूं अै कवितावां ऊखली उणी अंदाजे अठै छपी है।''

'कळप' री कवितावां में कवि आप बीती अर देखी–परोटी जिनगानी रा अनुभव प्रभाव ढंग सूं पाठकां सामी राख्या है। कवि री दीठ में साहित्य सिरजण घणी साधना रौ काम है– कोई सहजैही कवि बण जावै–आ जचै कोनी। इण बाबत कवि कथै ''मौलिक रचना वा ही है जकी इण पूरी ओप में ही आपरै ओप री पिछाण राखै। बारलै प्रभावां नै भी आपरै आगे–अंगेज नै सहजता रै सीगै गाळण–ढाळण सूं ही वांरौ सही सिरजणाऊ फायदो लेखक रै माफफत हुवै। ... म्हनै परतख लागै–कविता घणी समाजू अर 'रियलिस्टिक' बणावण रै हाकै में हीले लागतां–लागातां कविता घणी निजू नै अबूझ होती जा रैयी है, कई बार तौ इत्तरै निजू कै खुद कवि ही पांचू दिनां उणनै परगट में हेजतो लाजां मरै।''

सिरजक रा सिजरण ऊपर जुग रा वातावरण रौ घणौ असर हुया करै पण रचणाकार री कलम री ताकत सबसूं सबळी मानीजै। सामरथवान रचणाकार में जुग बदळाव री ताकत हुवै तद ही उणरी रचणा न्यारी पिछाण बणै। सिरजक रौ सोच निजूकुंठावां सूं घणौ अळगो अर अगमदीठ लियौड़ौ हूवणौ चाईजै। सिरजक नै भासा, साहित्य, समाज अर संस्कृति री परम्परा रौ पूरो ग्यान हूवणौ चाइजै। उणनै समाजू जीवण दरसण री गेहराई, मठोठ अर मरोड़ री पिछाण हूवणी चाहिजै जद ही बो काळजयी सिरजणा कर सकै। कवि रा आखरां में इण भाव नै समझ्यौ जा सकै

आखर री औकात किती सी
रस रसणा री धारां
बिन बींध्यौ मोती किम सोहे
सुरसत हंदै हारां।

• • • •

जीवण सधियां आखर साधै

अरथ न आय उधारा

जूंझारां री जांन गयां बिन

सजै न सीस उतारा।।

8-5-4 ^cjlk jk MhxkMk Mxj ykf?k;k* &

आ नारायणसिंह भाटी री रच्यौड़ी गीति काव्य री पौथी है जिणमें राजस्थानी भासा में रच्यौड़ा सौ गीत भेळा है। आं गीतां में मरुधरा री प्रकृति अर नारी रा उदात अर फूटरापा भर्‌या दरसावां नै आखरा ढाळ्या गया है। आं गीतां में सिरजण री ताकत री छिब अर आजरी बुजती जिन्दगानी में नई चेतना भरण री ताकत भी है। भांत–भांत री बिम्ब अर रूपक आं गीतां में अेकानी राजस्थानी भासा री खिमता रा दरसाव दिखावै तो दूजी कानी कवि रै अन्तस रा भाव

मूंडै बोले। आं गीतां में अंग्रेजां रै 'लिरिक' काव्य री झलक अर हिन्दी रा गीति काव्य री बानगी मिळै अर छायावादी काव्यधारा रा दरसाव सामी आवै। अेक–अेक गीत में हैत–प्रीत, रीत–खीज अर विजोग री पीड़ सूं गळगळै अन्तस रा भांत–भांत रा भावां रा दरसण हुवै। कवि री भासा पर इत्ती जोरदार पकड़ है कै वो पंखेरूआं, पैड़पोधां अर सूरज चांद जैड़ा प्रकृति रा रूपां नै घणै ओपतै अर प्रभावी ढ़ंग सूं आं गीतां में पिरौया है। यूं लागै जाणै भासा रौ अेक–अेक सबद कवि रा भावां नै भलीभांत पाठक रै हियै लग पूगा रियौ है। अेक बानगी देखणजोग है–

इण पुळ किरत्यां कपोळ
सनमुख टंगी है चंदै री आरसी
खुली है जरी तारां सितारां री हाट
किरण सिळायां डूबी है काजळ डूंगरां।

कवि नारायणसिंह भाटी हियै रा हैत नै हरैक रै सामी नी ल्यावणी चावै इणी कारण किणी हमजोळी रै सामी हैत री हेमाणी नै दरसावणी चावै। प्रीत रा जूना पड्योड़ा भावां नै आखर देवतौ कवि कैवै–

सुंदर थांनै भूल्यां
कीकर पार पड़ै हो
औ जीवण घमसांण जुझारू
पग–पग पिसण अड़ै हो
जिण कर जुलफ संवारी थांरी
उण कर पेच पड़ै हो।

बाळपणै री प्रीत मानखै री सबसू अमोली थाती हुया करै। औस्था रा डीगोड़ा डूंगर लांधियां पछै भी हेताळु रौ न तौ हैत भुलाईजे अर न'ही उणरी मनरळी, मुळकणौ अर रूसणौ भूलीजै। प्रेम री इण मीठी उसांस नै अंगेजतो कवि केवै–

म्हारां तो थोड़ो सो निरखणौ
नै थांरौ होळै–सै मुळकणौ
औसरते आबड़ंग री अंगड़ाई में
कूपळिये बिरछां तळ खिंवी ज बीज
अजे उण बूठोड़ै री सौंधी आवै सांस
बरसां रा डीगोड़ा डूंगर लांघियां।
बा बादळियै बटाऊ री चढ़ती बेस
थांरै अंगां रौ डूंगरियौ उठाव
भल आपै आई सैंधी सुघड़ाई री
घुळती नै पिघळती पिछांण
सासां सरूपाई रा समंद में
तिरी है हेत हीलोळा बण बीजळी।

इण गीति काव्य, में प्रतीक विधान घणो ओपतौ अर फबतौ है। इणी भांत उपमावां दैवण में कवि नूंवा प्रयोग कर्‌या है। कवि रा आं गीतां में भाव, भासा, बिम्ब, प्रतीक अर सैली रा ओपता प्रयोग देखीजै

नीम्बूड़ा लियौ रे नारंगी उफांण
आंख्यां री फांक्यां रौ पाणी आवटियौ।
आज म्है देख्यौ रूप में रूप रौ
नै रस में रस रौ रसाव
चढ़ती वय रौ चढ़ते झोटां झूलणौ
तीजां रौ तिरणौ बायरिये री बांह
आभलियौ आळस छोड
चंदै रौ चन्दाकार टैलणौ।
घण घेर घुमेर नीमड़ली री
पीतळवीं पसम में
छौगा तो छूटा है
हर कर सिंदूरी हुलास री
प्रीत झौलै झिळकै उछाव
प्राणां रै पावक रा जांणै झेरणां

कवि खुद री हरख नै आखी प्रकृति रौ हरख बणाय दैवै। कवि नै मन रौ मोद आं सबदां में फूट पड़ै–

पीपिया फूटा है बैरण बड़ली री प्यास
जांणै सूरज सुभाव रा चावता चूमा
अधर पलव पितळ ठया अरूणाई रै ठांव
मुळकाई मठारिया है उफणवां ऊरबा
अणबोल्यै बोल रा घुळै है उमाव
निसकारां नितरिया है तरूणाई रा तुजरबा।

कवि रै अंतस रौ भाव उण अजाण रूपसी रौ रूप देख'र बरबस आखर रौ रूप ले लेवै अर उणनै छायावादी चिन्तण रौ आसरो लैय'र इण भांत काव्य रूप दे देवै–

'आज म्है देख्यौ रूप में रूप रौ
नै रस में रस रौ रसाव
चढ़ती वय रौ चढ़ते झोटां झूलणौ
तीजां रौ तिरणौ बायरियै री बांह
आभळियौ आळस छोड़
चंदै रौ चंदाकार टैलणौ।'

इण संग्रै री छोटी–छोटी कवितावां हेत–पगी है। किणी हेताळू रै हैत रा भाव लियौड़ा अै चितराम घणां मारमिक है। जिन्दगानी रा आखरी पड़ाव तांई पूगतां–पूगतां आ अन्तस री पीड़ अेक फेर सजळ व्है जावै। जद ही अे नीचै लिख्या बोल कवि री कलम सूं आखरां ढलै–

''म्हारै रै कोडां री बंटीली बेलड़ी
पच पच चढै रातोकै झुरमटियेरी
नखरांळी डाळां डाळां डाळ

कोइ दिन रा झुर झुर झर पड़ै
अै चढ़णा नै उतरणा झेराव
झोकायत हिवड़ै रा किया झेरणा।''

इण तरै इण पौथी रो अेक–अेक सबद प्रकृति अर नारी रै भावां सूं मंड्यौड़ौ है, जिणनै आं सबदां में पारखी दरसायौ है–

''यहाँ की प्रकृति और नारी की उद्दात सर्जक शक्ति संशलिष्टत्व को युगानुकूल सौन्दर्य–बोध की चेतन उर्मियों से तराश कर कवि ने जो चित्र गीतों के माध्यम से उभारे हैं वे हमारे बुझते जीवन को नये संस्कारों से अनुप्राणित करने की अपूर्व क्षमता रखते हैं। संशलिष्ट बिम्बों के बीच फूटने वाली अर्थवत्ता की झंकार हर पंक्ति में लहरा कर पाठक के मानव को आलोड़ित करती है। प्रत्येक गीत पावस के तलैया की तरह छलक कर दूसरे गीत में अपनी गमक भरता हुआ पूरी कृति को एक सार्थक भराव से गहराता है।''

8-5-4 ^feu[k u l e>ko.kk nkjk g*

डॉ. नारायणसिंह भाटी री रच्यौड़ी 49 कविता वां रो संग्रै आज रा जथारथ नै उजागर करै। कवि भाटी खुद रै जिनगानी में घटी बां घटनावां नै इण काव्य पोथी में सिरजण रौ आधार बणायौ है जिणरै कारण कवि रा भाव अर विचार चेतन हुया अर कवि रै कलम री कोरणी सूं आखर रूप में ढ़ळ्या। 'वियतनाम री वसीयत' नांम सूं रच्यौड़ी आ रचणा उण राजनीति दाव पैचां नै पाठकां रै साम्ही राखै है, जिणसूं लाखां मिनखां री मौत हुई। पण आजादी खातर जुझंता बै देस–भगत सुळी माथै चढ़ग्या पण नीं तौ मरजाद छौड़ी अर नीं ही आजादी। कवि रै सबदां में 'वियतनाम' री कथा गुमैज जोग है, जिकी सदियां लग आवण वाळी पीढ़ी नै जुंझार वणावैला अर मरजाद री रखवाळी रौ हैलो देवती रैवेला। कीं औळ्या देखीजै–

मिनख री आजादी खातर
मूंघै मोल बपरायोड़ी
इण गाढ़ी गुमेज माथै
किसै जुग रौ
उन्मूक्त आकास
नीं अंजसैं?

इणी भांत 'आजादी रौ मोल ही आलम री नींव है' कविता सुतन्तरता री अलख जगावणवाळी है। 'इंकलाब अधूरौ है', 'मुजीब री मौत माथै', 'नेपोलियन री नीत सूं' जैड़ी रचणावां मानखे रै आजादी रै हैत अर देस भगती री गुमैज गाथावां सूं भर्‌यौड़ी है। आजादी रा दीवाना नै कवि नमन करै अर 'वियतनाम री वसीयत' मांडतौ कवैसर कथै–

रंग है,
वां जुंझारां रै लोही रै रंग नै
जिकौ आवणवाळी
आजाद पीढ़ियां री रंगां में
आज ही रमग्यो
जिणसूं लागै कै'
मौत री मोद मरजाद सूं तुलग्यौ'

डॉ. नारायणसिंह भाटी परम्परावादी कवि है। मनुज में उणारी आस्था घणी है, पण जद उणानै आ ठा पड़ी कै बंगलादेस नै आजाद करावणिया मुजीबुरहमान री उणरा ही देसवासी हित्या कर दी तद डॉ. भाटी खुद रै अंतस री पीड़ नै दरसावतो कैयौ–

इण दुनियां रै चिरताळै इतिहास री
अेक असलियत
हरामखोरी री खाद में ऊगोड़ी है
हर ख्यात में दोगलाई रौ
लाम्बो दाखलौ है
इणी खातर औ जिहाज
हर बार उथळीजै।

• • • •

जीभ सूं अेक ही जजबात
घड़ी–घड़ी ऊखळै
लख–लख लानत है
इण नुगरै मिनख री
नागी नबाबी माथै।

कवि भाटी मिनखां रै बिचाळै हैत अर अपणास नै घणौ जरूरी मानै। उणांरी धारणा है कै ओ ही मुगती रौ मारग है। पण मनुज इण हैत–अपणास नै अपणावै कोनी–खुद रै हीयै अंगैजे कोनी, जिणरै कारण जगत में इत्ती मारा–मारी है। कवेसर रै सबदां इण भातं समझ्यौ जाय सकै है–

जुग जंतर रा आंतरा में
आप ही अपणास छोड जाऊं,
तौ मुआं ही मुकांतर पाऊं,
जोयेड़ी जोत रौ कांई जोणौ है
होवते काम रौ कांई होणो है
अणु नै उछेड़णौ सोरौ है
पण मिनख नै समझावणौ दोरौ है।

कवि रौ मन जूना जींवता चितराम देख घणौ हरखीजै। बो निजरां देख्यां दरसावां नै सबद रुप दैवै–

जूनै जस रा
सेवरा संवारती
पोढगी पीढ़ियां
चौरासी जूण नै चौसठ जोगणियां
अवतारां रा उतारा लेती
जुगां–जुगां जोखमिया जाम जराय
समै रा पारै री परणेतण ज्यूं,

ऊंची चढ़ी नै नीची ऊतरी।

कवि री भासा भावां अनुगामी है अर उणरा अेक–अेक सबद में परम्परा अर संस्कृति रा छीणा पण गेहरा दरसाव मंड्या है, 'लोक देवता पाबूजी', 'कुंवर तेजाजी' अर 'रघुवंस री रीत' देखियां जैड़ी कवितावां इणरी साख भरै। कवेसर कळा रौ पारखी, कलाकार नै आदर दैवणियौ अर लूंठा सुरसतां नै नमन करणवाळौ है, जदी उणरी कलम सूं माड़ेची, मूमल, रतनाकार आराधना, भरथरी री गुफा नै देखियां, कवि कीटस, पृथ्वीराज राठौड़ अर उणांरी वेलि, मांगणियार, भंवर–लैराकी जायण गवरी, जसमल ओडण, गांवेड़ी गुसांई, देवदासी, आद कवितावां आखरां ढ़ळी है।

8-5-4 ifr;kjk

'पतियारौ' डॉ. नारायणसिंह भाटी री महताऊ काव्य पौथी है, जिणमें इकत्ताळीस कवितावां है। आं कवितावां में कवि आँख्यां देख्या चितराम अर भोग्यौड़ा सत नै कविता रौ रूप दियौ है। कवि री दीठ में कवि रा करम अर वाणी में अेकरूपता रैवणी–चाहिजै। आज रा कवि नै डॉ. नारायणसिंह भाटी खुद री दीठ सूं देख्यौ अर उणरै बारै में कथ्यौ है–

''कवि वाणी रौ साधक है उणरी कथनी अर करणी में जितरौ आंतरौ बधसी उतरी ही उणारी साधना कमजोर नै प्रभावहीन होसी। साहित्यकार साहित्य रा मापदण्ड बदळण री कितरी ही बात करौ पण उण नै अपणै आपरै प्रति वफादार तौ रेणौ ही पड़सी।''

कवि री आ धारण है कै मिनख रौ पतियारो घटतो जाय रियौ है। आज मिनख खुद ही परम्परा सूं कटतौ जावै है, उणनै गत री पिछाण कोनी अर आगत रौ भरोसो कोनी। उणरै सामी त्यागी, तपसी अर साधकां री साधना रा अेलाण कोनी। नई पीढ़ी नै आज रौ ही नीं आवण वाळै काल रौ भी पतियारौ चाहिजै। कवि रौ कैवणौ है, कै वो आज'रा मिनख नै काल रौ भरोसो दिरावण खातर ही 'पतियारौ' लिख्यौ है। उदाहरण देखीजै–

हूं आखर नै अंजाम इण खातर देऊं, कै
सिस्टी रौ सार अकारथ नीं जावै
हूं रातां रा रातीजोगा इण खातर जागूं, कै
जोत री जुगत कजळीज नीं जावै
हूँ परम्परा रा पाल इण खातर खोलूं, कै
पीढ़ियां रै प्रांण रौ वेग सध जावै
हूँ छंदां रा छिंणगा इण खातर छांटू, कै
प्रीत री पिछांण नवी कूंपळ काढै
हूं आज नै उथेलौ इण खातर देवूं, कै
मिनख नै काल रौ पतियारौ आवै।

आज रा जथारथ नै पाठकां रै सामी राखतौ कवि जनतन्त्र रा आधार, जन री हकीकतं रौ बयान करतौ कैवै–

आ जनता
हजारां बरसां सूं
गाडरां री गत हालती रही
राखती रही पगां रै पांण
गेहूँ रा खेतां रै
थथोबां रै पांण

कदे माळवै में मरी
नै कदै जमना री तीर।

जनतन्त्र री राज व्यवस्था में जनता रौ जागरूक अर भणियौ–गुणियौ हुवणौ घणौ जरूरी है। जिण देस में भणाई–गुणाई री कमी हुवै बठां रा जनतन्त्र सारू कहीज्यौ है कै 'बो जनतन्त्र मूरखां रौ झुण्ड है।'' आपणै देस री राजसत्ता में जन री उपेक्षा हूय री है, जिणरै कारण जनता रौ मान घट रियौ है अर सत री जागां असत् रौ जोर बढ़तो जाय रियौ है। मिनख रौ मौल नांणा सूं नापीजण लाग्यौ है। कवि इणनै पतन रौ मारग मानै ''कागजी नांणा' नै कवि सन्देस देवतौ कैवै–

म्हे सुणता आया, कै
दाम सूं सगळा काम, नै
धरम रा धाम सधै
पण हमे थारी औकात
दिन रा घटै नै
रात रा बधै।

कवि खुद रै जुग में मिनख री 'नकटाई' नै रूबरू देखी। कठैई 'ग्यान रौ गिरण' लाग्यौड़ी देख्यौ, कठैई रूळेट 'राजनीति री जेमती' रा दरसाव देख्या, तौ कठैई विलायती होटलां री चसक अर मद री गेळ गळीजियौड़ी अर भटकेड़ी 'गोरड़यां रा गात' देख्या, कठैई खुद रै ही सहर रौ 'मास्टर प्लान' देख्यौ, राजनीति रा बदरंग रूप देख्या अर इण तरै खुद रै अन्तस में ऊपजी संवैदना नै आखरां ढ़ाळतौ कवि इण पोथी री घणकरी कवितावां रची है। आ रचना मुक्तक काव्य है जिणमें न्यारा–न्यारा दरसाव है, व्यक्ति रेखावां है अर कठैई कठैई कड़वो सत है। इण सबां रै बिचाळै हिन्दी रा 'निराला', 'अज्ञेय' जैड़ा महान कवियां री ओळूं में रचियौड़ी दो कवितावां है जिणमें पैली है ''निराला नै खरा समाचार'' अर दूजी है ''अज्ञेय रै गियां पछै''। इण सूं पैली पृथ्वीराज राठौड़ अर रविन्द्रनाथ टैगोर, अंग्रेजी रा शैले अर कीट्स जैड़ा कवियां माथै कविता रौ सिजरण कवि भाटी कर्‌यौ है। हिन्दी रा नामी कवि अज्ञेय नै अरपण कर्‌यौड़ी कविता री बानगी देखीजै

थंनै कुण कैवै
थूं अज्ञेय हौ?
थूं सदा ही ज्ञेय रह्यो।

इणी तरै 'पौलियो कुम्भार' नारायणसिंह भाटी री प्रतीकात्मक कविता है, जिणमें मिनख नै बिरमाजी री माटी सूं घड़ियोड़ौ पुतळो मान'र इणरी तुलना कुम्हार री माटी सूं करी है। इण माटी नै कुम्हार भांत–भांत रा आकार दैवै जिणनै प्रजापत रौ मान दीरीजै अर उणरा घड्‌यौड़ा बासण लोगां रै काम आवै। इण कारण इणरै चाक रौ आखी जगती खातर घणो मोल है। बो खुद री कल्पना नै आकार दैवै, बो इणरौ सिरजणहार है।

डॉ. भाटी री दीठ में दूजो सिरजणहार कवि है, जिकौ ब्रह्माजी रै बरोबर मानीजै, पण रचणाकार खुद रै सिरजणहार भांत–भांत री विधावां में सिरजण तौ करै पण बो सिरजण न तो बदळाव अर क्रान्ति रौ हेलो दैवै अर न हीं उणमें इत्तो प्रभाव है जिणसूं पाठक बैचैन हू ज्यावै। आज सिरजण री गत देख'र कवि भाटी नै कैवणौ पड्‌यौ–

''भाया थारा जाया हमें पगे नीं हालै
इण माटी में थारौ पळकौ है

पण पांणी नीं
रीत है पण रवानी नीं।''

इणी तरै इण पौथी री घणकरी कवितावां विचार प्रधान है अर व्यक्ति रेखावां रा चितराम घणा सजीव है। इण में 'कम्पोजिटर गोरधन', 'बुक लिफ्टर तेजपाल', 'नूरो नहीं रियो', 'गडोळियो लुहार' जैड़ा व्यक्ति चितराम घणां मेहताऊ है। कवि भाटी कविता खातर संवेदना नै महताऊ मानै अर संवेदनसील सबदां री जोड़नी नै कविता नीं मानै। कवि कैवै–

''पण सपाट बयानी रै बहाने कोरे गद्य री तोड़ियोड़ी मरोड़ियोड़ी ओळियां नै कविता नीं कही जा सकै। जिकी कविता संवेदनसील नीं हुवै वा कितरी ही कळा रा कळाप परोटती थकी भी कविता नीं वण सकै। आज नवी कविता रै खाते में घणकरी संवेदनहीन कवितावां ही देखण में आवै, जिकी अेकर आँखा आगे कर निकळयां न तो पाछी पढ़ण रो मन हुवै न हियै में ही ऊतरै, क्यूं कै हियै नै प्रभावित करण वाळी कवितावां ही हुवै जिकी आपरी ओळियां में संवेदन री ऊरजा अंवेर नै राखै।''

कवि नारायणसिंह भाटी री आं कवितावां में संवेदना री गैहराई साफ निगै आवै जद उणां री 'समै री गज' अर 'अन्तरिख उछाव' जैड़ी कवितावां निरखां अर परखां। इणरी बानगी देखीजै

'मिनखा जूण री पाकी पड़
हाडकां रै रावणहत्थे री
तांत हेटै
मढी मढ़ाई मजबूरियां रौ
पलट पलट नै पीड़ीजतौ
रीकणौ रियाज है ('समै री गज')
'किणी जोगी रै हाथ सूं छूटोड़ै
चांदी रै खप्पर ज्यूं
औ आठम रौ चांद
खांगौ व्हेतां ही
कितरा तारां रा मोती
इण में सूं बिखरग्या
ज्यांरी आब सिष्टी नै संतुलन दै
अर देवै ऊंडी समझास रौ एक सरगम, ('अंतरिख उछाव')

8-5-5 ehjk

डॉ. नारायणसिंह भाटी री महताऊ रचणावा में 'मीराँ' खण्ड काव्य गिणावणजोग है। आ काव्य पौथी परम 'वैष्णव' भगत अर सगुण उपासिका मीरांबाई री चरित कथा नै सामी राख'र लिखीजी है। डॉ. नारायणसिंह भाटी मध्यकाल री अेक क्रान्तिकारी महिला नारी मीराँबाई रै चरित रा इतिहास सूं सन्दरभां नै सामी राख'र इण काव्य सूं ओ दरसावण री कोसीस करी है, कै उण महान भगत आत्मा रौ असर मानवता माथै बणियौ रैवैला। आ चरित गाथा नारी समाज रौ गौरव है। मीराँबाई जिण हिम्मत अर भरोसे समाजू काण–कायदां री कुरीतियां नै तौड़ी अर भगती जगत रा आडम्बरां नै हठावण री कोसीस करी, बा बेजैड़ है। मीराँ रै इण वीरांगना रूप नै दरसावतौ कवि कैवै–

वां दोय करां करताळां
आगे–
असपतियां री

सहस सहस अस खुरताळां आंकियोड़ी
वीर गाथावां
गुदळीजती जावै
जुग समर जांझर झणकारां
कांम कबांणां केळीजी
कनक सर सिखा
कजळीजती लागै।

कवेसर नारायणसिंह भाटी री दीठ में मीराँ री मूरत नीचै लिख्या सबदां में देखी जा सकै है–

''मीराँबाई मध्यजुगीन राजस्थान रौ अेक अेड़ौ चरित है जिणरी जोड़ रौ दूजौ चरित सोधणौ मुसकिल है। उणरौ अजूणौ जीवण उण समै री देण है जद राजस्थान री सामन्ती परम्परा रै समंद री लैरां आपरी पूरा–पूर छौळां माथै ही। मीराँ उण अथाह समंद नै तिर नै पार निकळी औ ही मीराँ रौ सांचौ जीवण पथ है– इतिहास री छोटी मोटी गळियां सूं इधकी उणरी अंतर जात्रा रोसीली लखावै उतरी ही रूपाळी है।''

मीराँ री आ चरित गाथा नारी मुगती रौ। हेलो लियौड़ी है। मीराँ रौ चरित नारायणसिंह भाटी री काव्य पोथी रौ आधार बण्यौ। कवि नै मध्यकाल रौ अेड़ो चरित ही ज्यादा प्रभावित कर सक्यौ जिकौ अेकानी मध्यजुग रा आडम्बरां अर झूंठी मान मरजादावां नै तौड़'र उण ईस री सरण लेवै जिकौ अनिवासी है, घट–घट वासी है अर जिणरी मधुरा भगती सूं मीराँ रौ चुड़लौ अमर हू जावै। मीराँ रौ काव्य काळ री सीमा सूं परै इमरत रौ कूंपळौ है जिको किणी सींव में बन्धे कोनी, बो अजर है, अमर है। मीराँ रौ चरित मध्यकाल रा राजस्थान रौ पराम्पराऊ बन्धना अर कांण कायदा रै बिचाळै समाज सुधार रै सन्देसौ लियां कवि रै सामी आवै। मीराँ चरित रा इण उजळा पख नै सामी राख'र ही कवि 'मीरां काव्य' नै सबदां रै बन्धना बान्ध्यौ है। कवि रा इण सत नै नीचे लिख्यां मुजब समझयौ जा सकै है–

''बींरै जीवण उण अबखी बेळा में पुरस री वीरता नै हुलरावतां थकां ही समाज रै सरवांगीण जोखम नै अजमावण सूं अळगौ रह्यौ अर वा अधूरी आतमा ज्यूं पुरख री पड़दै री पड़छांई बण पति री जीवण सिंज्या साथै आथम जावती। उणरी इण आथमती छिब नै मोटे जिग ज्यूं बड़बोली व्यवस्था रा लोभी पुरख देखता सरावता।

पण उणी समाज में पळी मीरांबाई रौ मतवाळौ मारग उण सांवठी बजर व्यवस्था री सीमावां में सूं न्यारौ ही निकळियौ।''

इण तरै डॉ. नारायणसिंह भाटी मीराँ रै चरित नै नूंवी दीठ सूं देख्यौ अर परख्यौ है। वांनै ओ चरित न्यारौ–निरवाळौ लाग्यौ जिणनै कवि अेक नुंवा भावबोध, बिम्ब विधान अर रचणा सिल्प री बारीकी सूं तरासं'र गैहरी चेतना रै साथै काव्य रूप में रच्यौ है।

सगळी पौथी नै आठ किरणां में बांट'र इण मेहराबी चरित नै पाठकां रै सामी राख्यौ गयौ है। आं किरणा में अेकानी मध्यकाल रा इतिहास री झांकी है, तौ दूजी कानी मीरां रै आराध्य गिरधर नागर रौ विराट रूप, वांरी लीलावां, उणा रै निजधाम बिन्दरावन, बठां री कुंज गळ्यां द्वारका रा भांत–भांत र दरसाव रूपाळै रूप में सामी आवै। नन्द भारद्वाज डॉ. नारायणसिंह भाटी रै 'मीरां' काव्य री निरख–परख कर्यां पछै सत ही लिख्यौ है–

''रचना–सिल्प री दीठ सूं 'मीरां' निस्चै ई राजस्थानी री अेक बेजोड़ काव्य क्रती है। कवी कनै जठै उण मध्य–जुगीन सांस्क्रतिक परिवेस नै रूपावण वाळी सिमरथ सबदावळी है, उठै ई आधुनिक भाव–बोध रै मुताबिक नुंवौ रचना–विन्यास अर जीवंत काव्य–भासा री ओपती गैरी जांणकारी ई। आपरी काव्यानुभूति री बुणगट रै दौरांन कवि नारायणसिंह भाटी री मनगत अर

चेतना में कठै ई आ मांयली इंछा जरूर रैयी दीखै कै वै 'मीरां' नै अेक 'अेपिक' काव्य रचना रौ सरूप दे सकै। 'मीरां' री काव्य संरचना अर कथणी रै मिजाज में इण कामना नै बखूबी पिछांणी जा सकै अर इण रूप में 'मीरां' रौ मूळ सुर अेक प्रगीत रचना रौ ई रैयौ। मीरां रै जीवण रा मुख्य घटना–परसंगा री अठै फगत सूचना ई मिळै। औ सिल्प किणी महाकाव्य रौ नीं व्हैयर अेक लांम्बी कविता रो सिल्प कैवणौ ज्यादा सही है– अेक अैड़ी लांम्बी कविता जिणमें कवी महाकाव्य रा मांयला गुणां नै बखूबी समेटण री कोसीस कीवी।''

8-5-5 ^n|xkZnkl*

कवेसर डॉ. नारायणसिंह भाटी री छंद में रच्यौड़ी आ फगत तीस पद्यां री रचणा है। इण में सतरवी सईका रा स्वामीभगत अर देस भगत वीरवर दुर्गादास री चरित गाथा नै काव्य रूप दियौ गयौ है। दुर्गादास रौ चरित अैड़ौ महान् चरित है जिको काळ री सीमा में बान्ध्यौ नीं जा सकै उणरै लूंठा चरित रा सगळा गुण काळजयी है। आज भी दुर्गादास जैड़ा वीरां री हर देस नै जरूरत है। दुर्गादास कदैही जूंनो नीं हुवै बो काळजयी है। अैड़ा महान चरित नै डॉ. नारायणसिंह भाटी री उणरा त्याग अर साधना नै भावां भरी आ काव्यांजली बेजोड़ है अर राजस्थानी साहित्य री अमौली थाती है। राजस्थानी रा नामी विद्वान सौभाग्यसिंघ शेखावत इण काव्य री कूंत करता ठीक ही लिख्यौ है–

''दुर्गादास रो व्यक्तित्व मुगलकालीन भारत में कोहीनूर री तरै चमचमावतो रैयौ है। मुगल सम्राट उणनै हासल करण सारू बेहद लालायित हो, पण बो उण नै प्राप्त करनै आपरै ताज नै सुसोभित को कर सक्यो नीं। बो दुर्गादास श्री भाटी री वाणी रै माध्यम सूं आज भारत नै मिलग्यो। 'दुर्गादास' रै जरियै राजस्थानी साहित्य में पैली बार अतुकांत सैली रो सफळ प्रवेस हुयो है। . ... दुर्गादास में अेक आदर्स देसभक्त अर ऊंचै नेतृत्व रो निरूपण हुयो है, जिको काळ विसेस रो हुवता थकां ई काळ री सीमा–रेखावां में बन्ध्योड़ो कोनी। बो बीत्यौड़ै जुग रौ आदर्स कोनी। आज ई दुर्गादास सिरखी राष्ट्रभक्ति री जरूरत है अर आगै ई रैसी। ओ ई प्रेरक स्वर श्री भाटी री वाणी सूं निकळी 'दुर्गादास' री पंक्तियां में गूंजे हैं।''

वीरवर दुर्गादास वां दिनां री मारवाड़ रियासत रा महाराजा जसवन्तसिंह रा स्वामी भगत सेनापति हा। महाराजा जसवन्तसिंह अफगानिस्तान रा जमरूद में जुद्ध करता सुरगवासी हुया, मुगल बादसाह औरंगजेब इण बिखै रै समै जद मारवाड़ पर कब्जो करण री नीत सूं राज परिवार नै बन्धी बणा लियौ तद दुर्गादास वीरता चतराई अर समझदारी सूं मारवाड़ रा उत्तराधिकारी अजीतसिंह अर राज परिवार नै लैय'र बड़ी मुसकिल सूं मारवाड़ पूग्या। औरंगजेब वांनै घणां लालच दिया अर जागीर दैय'र अजीतसिंह नै उणनै सौंप दैवण री घणी चालां चाली पण ओ स्यामधरमी नर पूंगव बिक्यौ कोनी। उणरौ साहस, धीरज, वीरता कदै डिगी कोनी। दूर्गादास खुदरी मायड़भोम अर राजा खातर घणां दुख झेल्या, उण त्याग रै कारण ही दुर्गादास रौ नांव आज भी अजर अर अमर है। दुर्गादास रा चरित गुणां सूं असर लैय'र ही नारायणसिंह भाटी इण काव्य री सिरजणा करी है। इण काव्य में कोई कथा कोनी फगत इतियास री कथा नै ही आधार बणा'र इण काव्य रौ तानो बानो गुंथिज्यौ है। इण तरै राजस्थानी संस्कृति री महान परम्परावां अर मानव मूल्यां नै उजास देवणवाळौ ओ अमर काव्य है। 'दुर्गादास' काव्य में राजस्थानी साहित्य अर संस्कृति री औपती छिब देखण नै मिळै। लोक कळा रा पारखी कोमल कोठारी रै सबदां में दुर्गादास काव्य री खास विसेसतावां इण मुजब है–

''दुर्गादास'' सूं राजस्थानी साहित्य री परम्परा जीवती है। इणी सारू इणरी काव्यगत सैली परम्परा सूं घणी आगे बधगी है। राजस्थानी साहित् री खासी जाणकरी होवण रै कारण ई अै राजस्थानी साहित् नै दुर्गादास में अेक साव नुंवी सैली दे सकिया ....आपणी परम्परा माथै

आधारित 'दुर्गादास' रै मारफत राजस्थानी साहित में इण क्रान्तिकारी सैली रौ निरमांण होयौ कै वा मुगत छंद में लिखियोड़ी पैली काव्य पोथी है ..... अेक कांनी जठै छंद विधान री दीठ सूं दुर्गादास में राजस्थानी काव्य सैलियां रै खिलाफ जबरदस्त विद्रोह है तौ दूजी कांनी भासा री दीठ सूं लेखक 'दुर्गादास' में परम्परा नै खासी हद तांई जीवती राखी है।''

इण भांत 'दुर्गादास' काव्य डिंगळ काव्य रौ सबसूं पैलो अतुकान्त मुगत काव्य कैयो जा सकै है। डिंगळ गीतां री काव्यगत विसेसतावां इणमें परतख निंगै आवै। इणरी भासा औजमयी है। उपमा, रूपक, उत्प्रेक्षा जैड़ा अलंकारां सूं सज्यौ संवर्‌यौ ओ काव्य खुद री मौलिकता लियौड़ौ है। इणमें पैलीबार अतुकान्त सैली रौ सफळ प्रयोग हुयौ है अर वीर रस, जुद्ध धरम, दान अर दया जैड़ा भेदां रा सजीव चितराम मंड्‌यौड़ा है। छंद रा बन्धना सूं ओ काव्य मुगत है। इणरौ सिरजण प्रकृति रा भांत–भांत रा रूपाळा रूपां अर मरुधरा री प्रकृति रै मानवीकरण रा लाक्षणिक सबद संकेता सूं हुयी है।

'दुर्गादास' डॉ. नारायणसिंह भाटी री सबसूं नामी पौथी है, जिणसूं राजस्थानी काव्य रो नयो अध्याय सरू हुवै। हिन्दी रा मनीसी विद्वान अर कविवर डॉ. शिवमंगलसिंह, 'सुमन', दुर्गादास काव्य री तारीफ करता लिख्यौ है–

''मुक्त भावाभिव्यंजन में सामाजिक यथार्थ और अंतर्भूमि की भावगरिमा का ऐसा भव्य समन्वय मैंने कहीं नहीं देखा। मैं लेखक की इस उदात्त धारणा–शक्ति पर मुग्ध हूं और हृदय से उसे साधुवाद देता हूँ।''

दुर्गादास री कीरत बखाणतौ कवि कथ्यौ है–

बखत रै खेत निपजिया दुर्गदास,
आयाँ बखत जुग–मांझी फेर आवसी।
और माणस मर खूटसी इळारा,
पण जुगाँ–जायोड़ा तो–
जुगाँ ही जीवसी।।

8-5-5 ijeohj

डॉ. नारायणसिंह भाटी री महताऊ पोथ्यां में देस भगत मेजर शैतानसिंह माथै रचित उणारौ काव्य परमवीर है। मेजन शैतानसिंह इणी मरुधरा रा सपूत हा जिणा रणकौसळ, अदम्य साहस, वीरता, देस भगती जैड़ा गुणां रै कारण आखी दुनिया में नाम अर जस कमायौ। मेजर शैतानसिंह चौपासनी विद्यालय में पढ़यौड़ा है जठै नारायणसिंह भाटी भी पढ़या करता हा। जद बे देस के खातर खुद रा अमोला प्राण दे दिया, तद डॉ. नारायणसिंह भाटी रौ कवि हीयौ इण परमवीर री श्रद्धा में नत हुयग्यौ अर वै खुद रै अन्तस री भावान्जळी रूप में इण काव्य री रचणा कर जन–जन रै सामी राखी। इण पोथी री रचणा करण बाबत कवि खुद ही बतावै कै–

''परमवीर तो देखावौ, चीन री लड़ाई कद हुई ही, हसन् 1962 में, तौ सन् 1963 में छपी ही।''

'परमवीर' भाव, भासा अर सैलीगत प्रयोगां री दीठ सूं आज रा राजस्थानी साहित्य री अमोली पौथी मानीजै। कवि डॉ. भाटी 'परमवीर' शैतानसिंह री जीवनी अर वांरा परिवार री गुमेज गाथा सूं इण रचणा री सरूआत करी है अर पछै परमवीर शैतानसिंह री वीरता अर देस भगती सूं भरी गाथा नै घणै प्रभावी अर मारमिक रूप सूं आखरां ढ़ाळी है। इण काव्य रचणा में अेकानी डिंगळ काव्य परम्परा री छिब दैखण नै मिळै तौ दूजी कांनी आज री राजस्थानी काव्य री मठोट अर मरोड़ भी साफ निंगै आवै।

डॉ. भाटी री लिखी आ चौथी रचणा 'परमवीर' राजस्थान रा मेजर सैतानसिंह 18 नवम्बर 1962 रै दिन चीनी आक्रमण करणियां सूं जूंझर देस री आजादी री रक्षा सारू बलिदान दियौ इण

सम्बन्ध में लिख्यौड़ी वीर रस प्रधान पौथी है। भावां रौ नयौपण, बरणाव रौ चमत्कार अर प्रसाद गुण सूं भर्‌यौ–पूरौ ओ मुकतक काव्य राजस्थानी वीरकाव्य परम्परा में आपरी नई निरवाळी ठौड़ राखै। नारायणसिंह भाटी री पोथी रै बारै में राजस्थान रा विद्वान डॉ. कन्हैयालाल सहल कैवै कै–

''परमवीर री रचना कर श्री नारायणसिंह भाटी ने भाटी योद्धा के बलिदान के अनरूप ही अपनी प्रस्तुत कृति द्वारा महाकवि ईसरदास, दुरसा आढ़ा तथा सूरजमल मिश्रण की साहित्यिक परम्पर को अक्षुण्ण रखा है।''

राजस्थानी भासा रै ख्यात नांव साहितकार श्री सौभाग्यसिंह सेखावत परमवीर बाबत सत ही कयौ है–

''इयां तो आ मेजर शैतानसिंह नै आधार बणायर नै उणां रै उत्सर्ग सूं प्रेरणा लेयर लिखीज्यौड़ी रचना है, पण लेखक चरित्र नायक रै चरित्र नै सीमा में बांध'र उण नै नां तो सामयिक रचना बणण दी है अर नां घटनावां रो कोरो वर्णन करनै अेक घटना विसेस रो इतिवृत्त लिख्यो है। जाग्रत राष्ट्र रै कर्त्तव्यनिष्ठ सेनापति रै दायित्व नै कृति में प्रमुख मान्या है।''

''परमवीर'' रै त्याग रौ कारण दरसावतौ कवि केयौ है–

चीनी कियौ चुसूळ गळ,
टीडी दळ ज्यूं जंग।
तदे कुमायू फौज रौ,
मांझी हुयौ मतंग।

• • • •

तिण वेळा ललकारिया,
सैतांने निज सूर।
बहती परळै बीच में,
पग रोपे भरपूर।

डॉ. नारायणसिंह भाटी राजस्थानी सबदां री जूनी परम्परा रा पारखी कवि हा। राजस्थानी भासा री विसाळ सबद सम्पदा मांय सूं सबदां रा मोती चुण–चुण इण काव्य रौ सिरजण कर्‌यौ, जिणरै कारण आ रचणा कथ्य रै साथै सिल्प री दीठ सूं भी महताऊ गिणीजै।

8-6 dfo jh dr

डॉ. नारायणसिंह भाटी राजस्थानी भासा रा मौबी कवि, नामी गद्यकार अर सम्पादक हा। उणां बारह काव्य पौथ्यां री सिरजणा करी अर राजस्थानी गद्य नै समृद्ध करण नै खुद री कलम सूं ओपतो गद्य रच्यौ उणां री सम्पादन ग्रंथ भी गिणावण जोग है। मूळ रूप सूं नारायणसिंह भाटी कवि हा अर आज रा राजस्थानी कवियां में वांरी अलग पिछांण ही। नारायणसिंह भाटी सबदां रौ अेक नुंवो भण्डार अर काव्य सैली रा नुवां प्रयोग आज री राजस्थानी कविता नै दिया। वारां काव्य में विचार अर भावां रो गैहरो तालमेल देखण नै मिळै। नारायणसिंह भाटी इण बाबत खुद लिख्यौ है–

''परम्परा अर 'रौमेंटिक एटीट्यूट' रै बिच्चै जकौ जुड़ाव म्हैं अनुभवतौ रयौ, तद वौ कठै न कठै अवचेतण में हौ, साफ अर सांप्रत नीं। मन में कठेई आ ही कै राजस्थान री कलचर में जका उदात्त तत्व रिया है, वांनै नूंवै रौमेंटिक ढाळै में प्रजेंट करूं, समै सापेख। वै भी अैड़ा तत्व, जका सेवट आपरी पौंच सूं 'औन दी हौल' भारत री 'कलचर' नै 'कन्ट्रीब्यूट' करै। अैड़ा तत्वां रौ उथळौ वरतमान रै परिपेख में जरूरी व्है, क्यूंकै वै किणी भी देस री लूंठाई में वकत राखै। आं तत्वां रौ जकौ 'चार्म' अर 'अैट्रेक्स्न' हौ, वो म्हनै परम्परा सूं जोड्‌यौ। पुरांणै साहित् सूं म्हैं आज भी उतौई राजी व्हूं जित्तौ कै आज रै साहित सूं।''

कवि नारायणसिंह भाटी री आ पक्की मान्यता ही कै–

''दरअसल कविता अेक ऊंडी कळा है। कविता नै चारज करणो अबखौ कांम है, हरेक रै बस रौ कांम नीं। कवी में गरभवांन सबदां री पकड़ चाईजै। अेक अेक इमेज नै पकांवणी पड़ै। पैली अंगरेज जींयां मुरगै नै 'फ्राई' करणौं व्हेतौ उणनै कांईंठङ्ग कित्ता मुरगा खवाय खवाय'र ताजौ करता, वींयां ई कांईंठां कित्ता अनभव, कित्ता लखाणं खायां रै मारफत अेक इमेज बणै। पछै, आगै इण ई ढ़ाळै आप पूरी कविता रौ बणणौ समझ'र देखावौ तौ सरी।''

नारायणसिंह भाटी री कविता में भासा अर विचार दोन्यां रौ ताळमेळ गैहरो है। यूं लागै जाणै वांरा विचारां नै पूरी गैहराई अर क्षमता सूं पाठक लग पूगावण री ताकत उणांरा सबदां में है। जित्ता गैहरा वारां विचार है उणी तरै री वांरी भासा है। कविता नै बै मानवी संस्कारां नै उदात पृष्ठभूमि माथै संस्कारित करण री अेक चेतन प्रक्रिया मानै है। इणी भांत कविता बाबत उणांरी धारणा है कै बा ''अेक 'इनर अर्ज' जकी अपारै संस्कारां नै भळै उदात्त अर परिस्कृत करे अर औ सें करै बा सौन्दर्य बोध रै मारफत। कविता में नारेबाजी उणनै 'इनफिरियर' किस्म री कविता बणाय देवै।''

विचारां रै साथै–साथै अन्तस रा गैहरा भावां नै भी नारायणसिंह भाटी री काव्य भासा औपतो सिणगार दियौ अर कोमल कान्त पदावली रै रूप में पाठक लग पूगाया। इण तरै नारायणसिंह नै भाटी आधुनिक राजस्थानी भासा रा मोबी कवि कैयौ जा सकै है, जिणां रौ काव्य जुग बदळाव रौ काव्य है। जै नारायणसिंह भाटी नै जुग वरवरतक कवि कैयौ जावै तो बो वढ़ा–चढ़ाय'र कैयौड़ी बात–नीं हुवैला।

8-7 bdkb jk lkj g&

आधुनिक राजस्थानी काव्य री सार रूप में बानगी सामी राखणी अर इण जुग रा नामी कवियां अर उणांरै काव्य रो मूल्यांकन इण इकाई में हुयौ है। आधुनिक राजस्थानी काव्य भाव रै साथै चिंतन प्रधान है। नया विसय, नयो सोच, नयो सिल्प अर भासा रा प्रयोग आज रै राजस्थानी काव्य री खास बात है। जुग रा वातावरण नै सामी राख मानीता कवि नारायणसिंह भाटी री कविता नै समझण अर समझावण री कोसीस इण इकाई में हुई है। कवि रा व्यक्तित्व अर कृतित्व री निरख परख समालोचक री दीठ सूं करीजी है।

8-8 vH;kl jk loky

1. आजादी रै पैली राजस्थानी कविता री विसेसतावां दरसाओ।
2. नारायणसिंह भाटी रै काव्य री भासा अर सिल्प री कांई खास बात है? समझावो ।
3. ''नारायणसिंह भाटी प्रकृति काव्य रा जोगा कवेसर है'' इण कथन नै समझावो।
4. नारायणसिंह भाटी री आधुनिक राजस्थानी काव्य नै काईं देन है? उदाहरणां सूं समझावो।
5. आजादी रै पछै रा राजस्थानी काव्य री मूळ चेतना नै समझावो।

8-9 lnHk ikF;k

1. समकालीन राजस्थानी काव्य : संवेदना अर सिल्प– कुंदन माली
2. भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में राजस्थानी कवियां रो योगदान– डॉ. नृसिंह राजपुरोहित
3. आधुनिक राजस्थानी काव्य– रामेश्वरदयाल श्रीमाली
4. राजस्थान का स्वतंत्रता संग्राम काव्य– राजस्थान साहित्य अकादमी, उदयपुर (राज.)
5. इन्साइक्लोपीडिया ऑफ इंडियन लिट्रैचर– डॉ. हीरालाल माहेश्वरी
6. भारतीय साहित्य रा निरमाता– नारायणसिंह भाटी– लेखक प्रो. कल्याणसिंह शेखावत
7. राजस्थानी भाषा एवं काव्य – डॉ. कल्याण सिंह शेखावत

bdkbl & 9
ie[k dfo & jornku pkj.k

bdkbl jk eMk.k

[k.M &1

9.0 उद्देस्य

9.1 प्रस्तावना

9.2 जुग रो दरसाव

- 9.1 कवि री जीवनी
- 9.2 सिरजण

[k.M &2

4.0 कवि री रचनावां

- 4.1 चेत मांनखा
- 4.2 नेहरुजी नै ओळमो
- 4.3 उछाळो

[k.M & 3

5.0 कवि रा काव्य री निरख परख

- 5.1 भाव, भासा अर सैली
- 5.2 चिंतन री गहराई
- 5.3 सामाजिक क्रांति रा सुर
- 5.4 करसै, मजूर अर गरीब री वाणी

[k.M & 4

6. काव्य रा उदाहरण

[k.M & 5

7.0 राजस्थानी काव्य परम्परा

- 7.1 आधुनिक राजस्थानी कविता
- 7.2 कवि रेवतदान रो योगदान

[k.M & 6

8.0 अभ्यास रा सवाल

9.0 संदर्भ पोथ्यां

1-0 míL;

1. इण इकाई लेखन रो उद्देस्य राजस्थानी भासा रा जगचावा कवि रेवतदान चारण री जीवनी अर सिरजण री जाणकारी विद्यार्थिया लग पुगावणी।

2. आधुनिक राजस्थानी साहित्य री सार रूप में जाणकारी करावणी।

2-0 iLrkouk

1. इण इकाई रो आधार आधुनिक राजस्थानी साहित्य री जुगां जूनी परम्परा है।
2. इण इकाई सूं आधुनिक काव्य री प्रमुख काव्य धारावां, रचनाकारां अरयुगीन वातावरण री विगत पाठकां सामी राखी गई है।

3-0 tx jk njlko

कवेसर रेवतदान चारण रो जुग सन 1924 सूं 1997 रै बीच रो है। आं 73 बरसां में 23 बरस रियासती राज रा अर लारला पच्चास बरस आजाद भारत रा है। आं 24 बरसां में भारत अंग्रेजा रो गुलाम हो– राजस्थान 22 रियासतां मै बंटयौड़ौ हो जठै राजसाही रै साथै जागीरदारी प्रथा प्रभावी ही। जमीन रो धणी जमीदार हो पण करसो मैनत कर संकट झेल खेती करतो। उण करसे री सगळी जिंदगी गरीबी में बीत जाया करती। जागीरदार खेत लाटतो–करसे री फसल खुद रै अठै ले जावतो। जागीरदार कनै कानूनी अधिकार भी हा।

इणी तरै उण जुग रो समाज जाति, धरम अर रंग भेद सूं भरियौ हो जठै जाति अर धरम मिनख पर हावी हा। समाज चार वरणा में बटयौड़ौ हो। ब्राह्मण, क्षत्रीय, व्यापारी अर सूद्र। अे वरण बणिया तो काम रै आधार पर हा, पण अे जनम सूं पिछाण बणाली। बाळपण में ब्याव, अनमेल ब्याव, अेक सूं ज्यादा सगपण, टीको, दायजो, सती हूवण रो रिवाज उण जुग रै समाज री बुराईयां ही– जिणसूं मनुज दुखी हो।

खेतीबाड़ी, बीणज–व्यौपार, नौकरी, मजदूरी, काम–धंधा उण जुग रै समाज रा धन कमावण रां जरिया हा। पूंजीपति राजसत्ता सूं मिळ'र धन रै बळ जन रो सोसण करतो। साधारण जन अनपढ़ या कम पढ़िया, लिख्या हा जिणसूं व्यापारी रकम उधार दैय'र ब्याज रै मकड़जाळ में उणांनै फसांयौ राखतो।

धरम मिनख री कमजोरी बणग्यौ हो। धरम धन अर सत्ता सूं सांठगांठ करली ही। इण कारण धरम रा धज्जाधारी राज परिवार अर पूंजीपति रा हिमायती अर प्रचारक बणग्या हा।

जुग रै इन वातावरण रै बीच कवि रेवतदान जनम लियौ, जवान हुआ अर बुढापे लग पूग्या करसा अर मजदूर रा हिमायती बण्या। बे खुद री कलम सूं उण जुग नै सामी राख– बदळाव री आवाज उठाई। मानखै नै खुद री कविता सूं चेतायो।

3-1 dfo jh thouh

कविवर रेवतदान चारण रो जनम सन् 1924 में मारवाड़ रियासत रा गांव मथाणियां में हुयौ। भैरूदान जी चारण आपरा पिता हा।

आप बी.ए. अर एल.एल.बी. री पढ़ाई पूरी कर वकालात सरू करी। आपरो राजनीति कानी झुकाव हो इण कारण बे राजस्थान में 'प्रजा सोसलिस्ट पार्टी, नै थापित करी। बे इण 'पाटी रा संस्थापका में हा। समाज में फैलगौड़ी असमानता, सोसण, अर भेदभाव नै मिटावण खातर ही रेंवतदान चारण राजनीति रै अपणाई अर बीस बरसां तक मथाणिया गांव का सरपंच रिया।

राजनीति अर जनसेवा रै साथ–साथ आपरो खुद री मायड़भासा राजस्थानी खातर घणो लगाव अर आदरभाव हो। बे खुद री मावक भासा राजस्थानी में ही काव्य रच्यौ अर खुद री कविता नै बदळाव री हथियार बणायौ। बे आखी जिंदगी राजस्थानी री संवैधानिक मानता खातर झूंझता रिया। ओ दुरभाग रियौ कै उणारो सपनो अजै पूरो नीं हू सकयौ है।

आपनै आपरी काव्य पोथ्यां पर 'साहित्य अकादमी', नई दिल्ली रो सबसूं बडो ईनाम मिल्यौ अर

'राजस्थान रत्नाकर', नई दिल्ली आपनै सम्मानित करिया।

आप कवि सम्मेलना में ओजस्वी वाणी सूं खुद री कवितावां रो पाठ कर सुणबावाळां नै चेतन कर दिया अर राजस्थानी भासा नै आखै भारत में चावी करण में महताऊ भूमिका निभाई। राजस्थानी भासा रा इण लाडला कवि रो सुरगवास 17 जून 1997 में जोधपुर में हुयौ।

3-2 jorn ku pkj.k jk fljt.k

रेवतदान चारण री तीन काव्य पोथ्यां अजै लग छपी है–

1. चेतनमानखा
2. उछाळो
3. नेहरु जी नै ओळमौ
4. फुटकर काव्य

'चेत मांनखा' कवि रेवतदान चारण री पैली काव्य पोथी है जिणरो सम्पादन कोमल कोठारी करियौ। इण पोथी में कोमल कोठारी 'चेत मानखा री समीक्षा रै रूप में कवि री दीठ, रचना रो रचाव, कवितावां री विसेसतावां अर समूह चेतना जगावण री हूंस रा दरसाव पाठकां सामी राख्या है। कवि रा काव्य रो भाव बोध अर जुगबोध लोकवाणी बण आखरां ढळ्यौ है। भासा री ताकत देखणी व्है तो 'चेत मांनखा' री कवितावां नै पढणी पड़सी। इण काव्य संग्रह री तेईस कवितांवा राजस्थानी भासा री अमोली थाती है, जिणामें जुग रो जथारथ, जागीरदार अर पूंजीपति नै चेतावणी, गरीब अर सोसित री करुण कथा मंडयौड़ी है। काव्य रो एक–एक सबद गहरा घाव करै अर बदळाव रो हेलो। खुद री भासा सेली भाव बोध अरजुग बोध रै कारणै।

रेवतदान चारण आधुनिक जुग रा नामी कवि मानीजै।

कोमल कोठारी रै सबदां में – 'श्री रेवतदान चारण की प्रस्तुत कविताएं राजस्थानी भासा में है। इन कविताओं के विषय राजस्थानी जन–जीवन के नाना रूपात्मक अनुभवों से अलंकृत हैं। राजस्थानी भाषा एवं यहां के जन–जीवन के चित्रण का प्रयत्न कवि की इस मनोराय की ओर इशारा करता है, जहां उसने भासा की सामाजिक आवश्यकता एवं अपने सामाजिक कर्त्तव्य के बीच काव्यात्मक समन्वय प्रस्तुत करने का प्रयत्न किया है।

........श्री रेवतदान की कविता में समय को व्यक्त करने की ताकत है।

.... किसान और जन साधारण का चित्रण, राजस्थानी प्रकृति एवम् उसके साथ उनका आत्मानुराग, उनके दैनंदित कार्य व्यापार एवं उनकी पृष्ठभूमि में उनकी सहज नैतिकता के आधार पर बने हुए सौन्दर्यानूभूति के मार्मिक तथ्य– ये ही कुछ विषय हैं जिन्होंने श्री रेवतदान की कल्पना को प्रेरणा दी है।''

इण तरै आ बात साफ व्है कै– ''रेवतदान चारण करसा अर मजदूरां रै दुःख दरद सूं जुड़नै समाज सापेक्ष सामाजिक क्रान्ति री बात करी अर आपरै बगत रा समाजू ढांचै माथै हमलौ कर बदळाव रा भाव दरसाया।

रेवतदान चारण सोसण मुगत समाज री थामना रा हिमायती हा। बे संघटन रा महात्म समझता हा–इणी कारण 'उछाळौ' कविता में लिख्यौ–

lTtk vd l?kê.k] iFk iyê.k] jkt myê.k vkt c<k
eu e feu[kki.k u.k ljki.k] [kk/k [kki.k ey d<k
ri vEcj Hkk.k /kjk fdjlk.k] ilhu j ik.k t ikdr [krh

i.k eNk j rk.k fd;k djMk.k] fcuk ?kelk.k dkbZ ykVy [krhAA

इण काव्य रा एक–एक सबद में बदळाव रो हेलो है। घमसाण रो हेलो है। जन चेतना जगावण री हूंस है।

m.kjh dfork ^ekVh Fkus cky.kk iMlh* dbZ loky mBkos T;w
d.k /kjrh jk vnkrk g] d.k /kjrh jk /kkj.kgkj\
d.k /kjrh jk djrk&/kjrk] d.k /kjrh j Åij Hkkj\
fd.k j gkFkk [kr&[kr e] yhyh [krh ikd g\
fd.k j ik.k ns l jh xkMh] v/kfcp vkrh Fkkd g\
dg.kk iMlh [kjk u [kkVk] lkpk Hkn [kky.kk iMlh\
ekVh Fkus cky.kk iMlhA

कवि रेवतदान चारण 'इन्कालब री आंधी' रा चितेरो है। करसै री दुरदसा अर सोसण रा परतख देख्यां दरसाव उणरी, कविता में मंडया है। कवि रेवतदान चारण खुद कैवै– ''जमींदार रै घरै जायौ जलमियौ। ठकराई रै ठाठ बाट में पळ्यौ। बणिया व्यौहार रै सांचलै रूप नै खरी मीट सूं पिछाणियौ, क्यूं कै म्हारै गांव में बणिया बसती ई खासी भली है। आं सगळी बांतां रै साथै बारह मास भूख सूं बाथैड़ा करते, करजै सूं कजिया करतै, ऊनालै रै तपतै ताविड़ियै तड़फड़ातै, सीसाळै सीजतै अर चौमासै भींजते, अष्टपौर कादौ, कचोबतै करसै नै ई परतख देख्यौ। करड़ा लाटा लाटता ठाकरां, अणूंता ब्याज उगावता बौरां अर आं दोनुवां रै पोचा परतापा सूं कळपता करसां नै दीठा तो म्हारौ कवि जागियौ। इणरै सिवाय कुदरत री करड़ांण आगै निबळा करसां नै निवता देखिया। करसां नै जद भूंडै ढाळै पण चौड़े धाड़ै लूटीजता देखिया तो म्हारै काळजै करोत बैगी। लगान, बीघोड़ी, हांसल अर डोढे–दूणै ब्याज आगै करसै नै कायौ हूयौड़ौ देखियौ जणै म्हारो कवि सांयत नीं राख सकियौ। सैवट म्हैं कायौ व्हैयनै भांत–भांत सूं करसै नै चेतायौ।''

'उछाळो' रेवतदान चारण री बा काव्य पोथी है जिण पर उणांनै साहित्य अकादमी, नई दिल्ली रो ईनाम मिलियौ हो। 'उछाळौ' पोथी में 'विडम्बनावां, मोहभंग, व्यंग्य, वैवस्था रै छळ छद्म, पाखंड अर नुंवी राजनैतिक सामाजिक वैवस्था री खामियां उजागर हुई है। इण संग्रह री कवितावां आजादी रै पछै री है जद महात्मा गांधी रा चेला सत्तधारी बणतां ही जनता सूं करयौड़ा कोलवचन अर वादा भूलग्या, तद जन रो उणां सूं मोहभंग हुयौ। लोकतंत्र में लोक निबळो अर तंत्र (सत्ता) बलवान हुयग्यौ तद जनकवि गणेसलाल व्यास अर रेवतदान चारण नै कैवणौ पड़ियौ।

'राज बदळग्यौ म्हांनै कांई

जनकवि गणेसलाल व्यास 'उस्ताद'

tn vkck j vdMkM;k] ikd cki fcjFkk D;w yfM;k\
Hkrk BkM iyhr txko.k] vxjtk l D;w vfM;k\
/kjrh tk;k ek.kl u] pknk jk pko yxk;k D;w\
vkn vH;kxr djlk] u vnkrk uko fnjk;k D;w\
ehyk tk; etjk j xkHkk] jxr jGk;k D;w\
t vk b jker je.kh gh rk FkkFkk liuk D;w ?kfM;k\
(रेवतदान चारण 'उछालौ पाना 41–42)

आजादी रा मोवणा सपना पूरा हुया कोनी, सोसण मिटियौ कोनी, घी–दूध री नदियां बही कोनी, अन्याव मिट्यौ–कोनी, बैवस्था बदळी पण ढंग–ढाळौ सुधरयौ कोनी, गरीब और गरीब हुयग्यौ अर अमीर–घणो

अमीर बणग्यौ। समाज रो ढांचो चरमरायग्यौ बेरोजगारी, इत्याचार, नारी रो अपमान अर चरित हनन बढ़ग्यौ। न्याय मिलणो मुस्किल हुयग्यौ क्यूं कै सब जागां भ्रस्टाचार फैलग्यौ। मिनख सूं भारी रिपिया पईसा हूयग्या। ग्यानि–ध्यानि रूळता फिरै पण मूरखां रा भाव बढ़ग्या। कवि रेवतदान चारण खुद रा काव्य में जुग रा इण सत नै प्रभावी भासा में उजागर करियौ है।

''आजादी पछै री गत नै समझावतो डॉ. अर्जुनदेव लिखै ''नुंवी व्यवस्था सूं सिरजणाऊ उम्मीद रा सपना बैगा ही टूट गिया। राजस्थानी कवि नै ठा पड़गी कै रैयत साथै चूक होयगी है। उणनै खुद रै छळीजण रौ दुख उत्तै नीं हौ जितरों आखै समाज रै छळीजण रौ हौ। समानता अर सहयोग रै सपनौ, ईज बणयौड़ै रैयौ। ..... जागयोड़ै जनबळ री आकास में तीणो करण री मंसा बैगी ही मौळी पड़गी। राजस्थानी कवि जाणगियै कै उणियारा बदळिया है व्यवस्था नीं बदळी है। नुंवै राज में नुंवा राजा थरपीजगिया।''

रेवतदान चारण री छोटी सी काव्य पोथी है– 'नेहरुजी नै ओळमो' इणमें पूंजीपतियों अर राजनेतावां रा गठजोड़ा नै आजाद भारत री जनता रै सामी ल्यावण रो साहस कविवर करियौ है। सेठां रै सोसण रै कारण मजदूर अर करसै री दुरदसा इणमें दरसाईजी है। नेहरुजी भारतीय जन साधारण रा हिमायती हा पण आजादी मिलतां ही धन्नासेठ सरकार पर हावी हूयग्या–जिणसूं गरीब पिसीजण लाग्या। कवि सेठां नै सोसण सूं मजदूर अर किसान नै मुगत करण री मांग नेहरु जी सूं करी है।

5-0 jornku pkj.k jk dkO; jh fuj[k&ij[k

5-1 Hkko] HkkIk vj lyh

रेवतदान चारण री काव्य भासा राजस्थानी है, जिणमें लोक रा सबद, मुहावरा, लोकोक्तियां, कहावतां रो मेळ है। कवि री भासा उणरै भावां रै मुजब असरदार है। जूनी डिंगळ काव्य परम्परा रो प्रभाव लियौड़ी आ भासा अर सैली जन जन रा हीवडै रमी। जैड़ा भाव बैड़ी ही भासा। उछाळौ कविता री भासा में 'वीर' देखीजै।

^tk.k dgjh xg l vkt d<;k] tk.k eg ipM rQku p<;kA
tk.k cht iGkiG eg p<;k] tk.k rhM /kjkry ?kj p<;kA
tk.k ifN >iê.k] ckt p<;k] tk.k cht dMdr xkt p<;kA**

b.kh rj fl.kxkjh xhr e HkkIk jk cnGko vkirk vk[kjk <G;k gA

'बायरियौ' गीत री सबद रचना देखण जोग है।

राजस्थानी रा ठेठ देसज सबदां रा ठाठ कवि रा काव्य में आया है ज्यूं रूपाळी, कसूंबो, गोफण, उछाळौ, ममोळियो, बिरखा, बीनणी, भातो तीतर बरणी, किरत्यां, हिरण्या, पाणतियौ, चड़स लाव, पींच, डांफर, आद।

rV Egkjk cktMk jh yc] rV mG>h tk;]
dkb fipjx ekfG; jk iYyk ygjk;
cjh pojh jh pnMh e lG iM tk;
/khe /khe j ck;fj;k] >kyk lg;k u tk;A

vko fcj[kk jh #r] >e lfj;k iou
yko xkjh jk lnlk] ij vkok j ltuA

lyh& लोक रो मन लोकगीतों में रमै। लोक री इण मनगत ने सामी राख'र कवि लोक सैली में लिख्या जका आज लोकगीत बणग्या। गीत छंद राजस्थानी भासा रो जगचावो छंद है। रेवतदान चारण इण गीत

छंद में जको गीतिकाव्य रच्यौ है बो बेजोड़ है जिणमें लोक रो मानस है, लोक रा भाव है, लोक रा गीति तत्व है, लोक ही राग है।

dgkork@egkojk@ykdkfä ;k & पग मंडणा, बोलै ज्यांरा बिकै बूमड़ा, खाती ही रोटी माटी री पण गीत बीरै रा गाती ही, नागोरी गेहणो नीवां रै नीचै दबियौड़ी जुग जुग री माटी अर थड़ी करै जैड़ा प्रयोग कवि री कविता नै सजाई संवारी अर लोक काव्य रो रूप दियौ।

जन काव्य री आ विसेसता मानीजै कै बो कहावतां, मुहावरां अर लोकोक्तियां नै आतमसात कर खुद री बात नै जनभासा में जन लग पुगावै। रेवतदान री भासा में लोक प्राणवान है।

Nn fc/kku & रेवतदान चारण डिंगळ काव्य परम्परा नै नुवां भाव, तेवर, छंद विधान अर सैली दी है। दूहा, गीत छंदां नै सामी राख'र काव्य री रचना करी है। कवि छंदां रा बंधन तोड़िया भी है।

5-2 fpru jh xgjkb

रेवतदान चारण का काव्य में लोक चेतना अर चिंतन घणौ गेहरो है। लोक री पीड़ नै समझण अर सबदरूप देवण में कवि पारंगत है। अबोला लोक री वाणी ही कवि री कविता में सबद रूप धारण करियौ है।

'खेत बण्या रणखेत, खेजड़ी ऊपर धजा फरुकै,

धोरां ऊपर बंध्या मोरचा, ऊभी फौज उडीकै

हेलो देवां जितरी जेज
महै हां माटी रा रंगरोज
धरती ज्यूं चावां ज्यू रंग दां।

कवि अगमदीठ रो धणी है। बदळाव री आंधी रा बावड़ उणनै लागा है। जद ही बो लिखै–

अंधार घोर आंधी प्रचण्ड
आ धुंआधोर धंव धंव करती।

आवै है उर में आग लिया, गढ कोटां बंगलां नै ढहती।

कवि काम करण रो हिमायती है बो कैवै
घण मूंघा मोती मत ढळका
रोया रूजगांर मिळै कोनी
व्है लखपतियां रो राज जठै
भूखां रौ पेट पळै कोनी।

5-3 lkekftd Økfr jk lj

रेवतदान जी बरसां जिण समाज में रिया, उणरो ढांचो जरजर हू चूक्यौ हो। उणमें बदळाव री जरूरत ही। जात अर वरण रो आधार लैय'र बणयौड़ो ओ बोदो समाज मनुज नै आगै नहीं बढ़ण दैवै। समाज में फैलयौड़ी कूरीतां–बाळ विवाह, अनमेल ब्याव, दायजो, सती प्रथा जैड़ा दळदळ में मिनख दुखी हो।

कवि सामाजिक क्रान्ति रो उद्घोस खुद री कविता सूं पुरजोर सबदां में करियौ। रेवतदान चारण री धारणा ही कै लिछमी सगळा झगड़ा रो मूळ है, इण खातर उणनै चेतावतो कवि कैवै।

t ix /kj nhuk lBk ?kj] rk ixk ikxGh dj nkykA
egyk x< dkVk cxyk jk] c liuk ge Hkykrh tkAA

5-4 djl] etj vj xjhc jh ok.kh

रेवतदान चारण करसै, मजदूर अर गरीब रो हिमायती है। उणरो काव्य करसै, मजूर अर गरीब री वाणी है। उणरी कविता रो एक–एक आखर सोसण री आग में तपयौड़ौ सो लागै। काळ री मार सूं घबराया करसै री मनोदसा रो चितराम देखीजै।

?kj NVk] ?kjckj NVX;k] vkl ?kVxh tho.k jh
dk;k g;u tj ?kkfG;k] fgEer dhuh tho.k jh

राजस्थान री धरती मरुभोम कहीजै, जठै काळ री काळी छाया सदा मंडरावती रैवै। बिरखा री हमैस कमी रैवै। करसौ खेती तो करै पण नीपजै कीं कोनी–सैवट करसो मजदूर बण जावै अर नगरां री सरण जाय बापड़ो गरीब बण जावै। इण भांत रा पीड़ भर्‌या दरसाव कविवर रेवतदान खुद री निजरां देख्या हा। इण कारण उणारा काव्य में जुग रो जथारथ सबद रूप लियौ है।

6-0 dk0; jk mnkgj.k

bdykc jh vk/kh

अंधार घोर आंधी प्रचंड
आ धुंआधोर धंव–धंव करती
आवै है उर में आग लियां, गढ़ कोटां बंगळां नै ढहती।

बैताळ बतूळौ नाचै है, जिण रै आगै संदेस लियां
राती नै काळी पीळी आ, कुण जांणै कितरा भेख कियां
वे संखं वजै सरणाटां रा, कोई गीत मरण रा गावै है
डंकै री चोट करै भीतां, बायरियौ ढोल बजावै है
विकराळ भवांनी रमै झूम, धरती सूं अंबर तक चढ़ती
अंधार घोर आंधी प्रचंड, आ धुंआधोर धंव–धंव करती

आवै है उर में आग लियां
गढ़ कोटां बंगळा नै ढहती।

नीवां रै नीचै दबियोड़ी, जुग–जुग री माटी दै झपटौ
लै उडी किलां नै जड़ामूळ, पसवाड़ौ फेर लियौ पलटौ
तिणकै ज्यूं उडगी तरवारां, घोचै रो रूप कियौ भालां
रूंखां रै पत्ता ज्यूं उडगी, वै लाज बचावण री ढालां
वा पड़ी उखरड़ी में बोतल, मद पीवण रा प्याला उडग्या
वे देख जुगां रा सिंघासण, रड़बड़ता पडिया ठोकर में
वे ऊंधा लटकै अधरबम्ब, नहि झेलै अम्बर नै धरती
अंधार घोर आंधी प्रचंड, आ धुंआधोर धंव–धंव करती

आवै है उर में आग लियां
गढ़ कोटां बंगळां नै ढहती!

आंधी आ अजब अनूठी है डूंगर उडग्या सिल उडी नहीं
सिमरथ वै ढहग्या रंग–महल, हळकी झूंपड़िया उडी नहीं
उड गयौ नवलखौ हार देख, मिणियां री माळा पड़ी अठै
उड गई चूड़ियां सोनै री, लाखां रौ चुड़लौ उडै कठै
उड गया रेसमी गदरा वै, राली रै रंज नहीं लागी
आ फिरै कामेतण लड़ाझूंम लखपतणी मरगी लड़थड़ती

आवै है उर में आग लियां
गढ़ कोटां बंगळां नै ढहती!

अंधकार मत जांण बावळा, इंकलाब री छाया है
इण भाग बदळिया लाखां रा, केई राजा रंक बणाया है
रै आ वा काळी रात जका, पूनम रौ चांद हंसावै है
रै आ वा वाल्ही मौत जका, मुगती रौ पंथ बतावै है
रे आ वा भोळी हंसी जाका, के मरती वेळा आवै है।
इण धुंआधार रै आंचळ में इक जोत जगै है जगमगती
अंधार घोर आंधी प्रचंड, आ धुंआधोर धंव–धंव करती

आवै हैं उर में आग लियां
गढ़ कोटां बंगळां नै ढहती!

lcnk jk vjFk &

अंधार–घन अंधेरा, धंब धंब – अग्निजलने की ध्वनि, आग– अग्नि, काळी– स्वाम पीळी– पीलापन, राती– लाल, नृत्य करे, भेख – भेर्व धारण करना, बायरियौ– पवन विकराळ – भंयकर, अंतर – इत्र, अंदाता– अन्न देने वाला, अडोळा – विलंकृत, अणगिण – अनगिनत, अथाग – अथाह, अभागौ – दुर्भाग्यशाली, माटी– मिट्टी, रूंख – वृक्ष, अघरबम्ब –, सिला – पत्थर की शिला, नवलखौ – नवलखा, लाखां – लाख, कामेतण – कर्म करने वाली, राली–, बावळा – पागल अथवा भोलापन, इंकलाव – क्रान्ति, वाल्ही – प्रिय, आँचळ – आंचल, जोत – ज्योति, वेळा – समय।

dk0; jk lkj

- एक प्रचंड आधी आ रही है। भंयकर आंधी। घोर अंधकारपूर्ण! गीत में उसके धुंए के गोटे उठ रहे हैं। धंव–धंव की आवाज करता हुआ लपटों का भयावह चीत्कार सर्वत्र फैलता जा रहा है। अंतराल में उसके आग है, दहकते हुए अगारे हैं, धधकती हुई लपटें हैं। गढ़, किले, कोट और बंगलों को ढहाती हुई यह आगे बढ़ती जा रही है। बढ़ती ही जा रही है।
- इस ध्वंसात्मक आंधी ही हरावल में, विकराल नृत्य करता हुआ यह ताल–विहीन निर्बंध अंधड़ तो उसका संदेशवाहक है। कभी लाल, कभी पीली तो कभी काली, कभी कुछ तो कभी कुछ। न जाने कितने वेश ओर कितने बाने पलटती हुई यह अविराम गति से आगे बढ़ती ही आ रही है। सन्नाटों के ये सनसनाते भीषण स्वर तो जैसे अगणित शंखों की अगणित आवाजों को द्य प्रतिध्वनित कर रहे हैं। यह मौत को आवाज है। ये मौत के स्वर है। दीवारों पर डंकों की चोट गूँज रही है। ये मौत के स्वर हैं। दीवारों पर डंके की चोट गूंज रही है। ये मौत के नगाड़े हैं। हवा तो जैसे ढोल का तीव्र गर्जन पैदा कर रही है। ये मौत के ढोल हैं। यह मौत का गर्जन है। यह विकराल भवानी अपना विकराल ही रूप धारण किये धरती और अंबर के बीच सर्वत्र फैल गई है। विकराल है उसका यह खेल। विकराल है उसका यह अनोखा नृत्य।
- गर्वोन्नत किलों के नीचे जुग–जुग से दबी हुई मनुष्यों की वह अदृश्य माटी इस आँधी का स्पश्र पाकर आज फिर से जिन्दा हो गई है। एक ही झपेटे में ज्वालामुखी के समान ऊपर उठ कर उसने किलो के जड़ से उखाड़ फेंका है। सारे जमाने को उसने उलट–पुलट कर रख दिया है। तलवारों की धार पर राज्य करने वालों की चमचमाती तलवारें तिनकों के समान इस आँधी में उड़ी चली जा रही हैं। भालों की तीखी नोंक से शासन करने वालों के भाले भी तृणावत उड़े चल जा रहे हैं। लाज बचाने वाली वे ढालें आज अपने स्वामियों को अनाथ करके वृक्षों के

अकिंचन पत्तों के समान उड़ी चली जा रही है। मस्ती का समुद्र लहराने वाली बोतल कूड़े–करकट के ढेर पर पड़ी उन मतपालों का उपहास कर है। अधरों का स्पर्श कर इतराने वाले वे मद भरे प्याले आज इस आँधी में निरुद्देश्य उड़े चले जा रहे हैं। रंगीले राजाओं की वे रंगीन महफिले आज अपने ठाट–बाट के साथ हवा हो गई हैं। हवा हो गये वे अटूट महल और महलों के सत्ताधारी वे रक्षक भी। यह देख ये सिंहासन है – युग–युग की शक्ति के प्रतीक, शासन के प्रतीक। ये आज इस तहर ठोकरों में पड़े हैं और यह देख – ये मुकुट है। राज्य करने वाले राजा के सिर पर शोभा देने वाले मुकुट। सूने आकाश के तीव्र गति से उड़े चले जा रहे हैं। युग–युग के शासन करने वाले उन सत्ताधारी राजा–महाराजाओं को न आकाश में कहीं ठोर हैं न धरती पर ही कोई आश्रय।

- बड़ी अनूठी है यह आँधी और अनूठे ही हैं इसके सारे परिणाम भी। पर्वत उड़ गये पर एक छोटी सी शिला अपनी जगह से हिली तक नहीं। बड़ी अनूठी है यह आँधी जो एक ही झटके में समर्थ रंग–महलों को ढहा गई, लेकिन घास–फूस की हलकी झोंपड़ियाँ तूफान में ज्यों की त्यों बनी है। यह देख–इस आँधी में यह नवलखा हार तो उड़ा चला जा रहा है पर कच्चे मिनकों की विजय माला श्रम के गले में वैसी ही झूम रही है। सोने की चूड़ियाँ झनझनाती उड़ी चली जा रही हैं किन्तु लाख का बना हुआ यह अमर सुहागा चुड़ला मेहनत की कलाई छोड़ कर कहाँ जाय? इस आँधी के झोंके के रेशमी गदरे उड़ गये, मसनद और गलीचे उड़ गये पर गरीब की राली को इस आँधी में धूल का एक कण तक न लगा। अनूठी है यह आँधी और अनूठे ही हैं इसके सारे परिणाम कि लाखों कि सम्पत्ति वाला वैभव तो एक पल में लड़खड़ा कर मौत के हवाले हो गया और मेहनत पर जीने वाली इन्सानियत, जिन्दगी की ताल पर मेहनत के तराने गाती हुई लूम–झूम रही है। मौत को चुनौती दे रही है।
- अजब अनूठी यह आँधी और अनूठे ही हैं इसके सारे परिणाम भी। सर्वत्र अंधकार छा गया है– पर वह अंधेरा नहीं हैं, इन्कलाब की दीप्त छाया है। इस तूफान की इस तूफानी छाया ने लाखों इंसानों के भाग्य बदले हैं। राजाओं को दर–दर का भिखारी बना दिया है और दर–दर के भिखारियों के याचक हाथों में शासन की बागडोर संभला दी है। यह आँधी वह काली रात है जिसके अंक में पूनम का ज्योतिर्मय चांद मुस्कुरा रहा है। यह अनूठी आँधी एक अनूठी ही मौत के समान है। जो इंसान को मुक्ति का मार्ग बताती है। यह वह भोली मुस्कान है जो मौत की विभीषिका के बीच भी जिन्दगी के अधरों पर खिल उठती है। इन अनूठी आँधी के धुंआधोर आँचल की ओट में एक सुखद जोत जगमगा रही है और जिसकी जगमगाहट में चमक रहा है मेहनत करने वाले इंसानों का उज्ज्वल भविष्य।
- एक प्रचंड आँधी आ रही है। भंयकर आँधी। घोर अंधकारपूर्ण। गति में उसके धुंए के गोटे उठ रहे हैं। धंव–धंव की आवाज करता हुआ लपटों का भयावह चीत्कार सर्वत्र फैलता जा रहा है। अंतराल में उसके आग हैं, दहकते हुए अंगारे हैं, धधकती हुई लपटें। गढ़, किले, कोट और बंगलों की ढहाती हुई यह आगे बढ़ती जा रही है। बढ़ती ही जा रही है।

6-0 dk0; jk mnkgj.k

fyNeh

ओढ़यां जा चीर गरीबां रा
धनिकां रौ हियौ रिझाती जा
चुंदड़ी रौ अैक झपेटौ दै, अै लिछमी दीप बुझाती जा!

हळ बीज्यौ सींच्यौ लाई सूं, तिल–तिल करसौ छीज्यौ हो
ऊंनै बळबळतै तावड़ियै, कळकळतौ ऊभौ सीझ्यौ हौ
कुण जांणै कितरा दुख झेलया, मर खपनै कीनी रूखवाळी
कांटां–भुंरट्टां में दिन काढ़या, फूलां ज्यूं लिछमी नै पाळी
पण बणठण चढ़गी गढ़–कोटां, नखराळी छिण में छोड साथ
जद पूछ्यौ कारण जवाण रौ, हंस मारी बैरण अेक लात
अधमरियां प्रांण मती तड़फा, सूळी पर सेज चढ़ाती जा
चुंदड़ी रौ अेक झपेटौ दै
अै लिछमी दीप बुझाती जा!

जे घड़ी विधाता रूपाळी, सिणगार दियौ है मजदूरां
रखड़ी बाजूबंद तीमणियौ, गळहार दियौ है मजदूरां
लोई में बोटी बांट–बांट, जिण मेंहदी हाथ लगाई ही
फूलां ज्यूं कंवळा टाबरिया, चरणां में भेंट चढ़ाई ही
घर री बू–बेंट्यां बिलखी पण लिछमी थनै सजाई ही
इक थारी जोत जगावण नै, घर–घर री जोत बुझाई ही
पण अैन दिवाळी रै दिन बैरण, सांम्ही छाती पग धरती
ठुमकै सूं चढ़ी हवेली में, मन मरजी रा मटका करती
जे लाज बेचणी तेवड़ली, तो पूरौ मोल चुकाती जा
चुंदड़ी रौ अेक झपेटौ दे
अे लिछमी दीप बुझाती जा!

इतरा दिन ठगती रैई है, थूं भोळी बाण छळ जाती ही
खाती ही रोटी माटी री, पण गीत वीरै रा गाती ही
जे हमें जांण रौ नांम लियौ, तौ जीभ डांम दी जावैला
जे निजर उठी मैलां कांनी, तौ आंख फोड़ दी जावैला
जे हाथ उठायौ हाकै नै, नागोरी गहणौ जड़ दांला
जे पग धर दीनां सेठां घर, तौ पगां पांगळी कर दांला
महलां गढ़ कोटां बंगळा रा, वे सपना हमें भुलाती जा
चुंदड़ी रौ अेक झपेटौ दै
अे लिछमी दीप बुझाती जा!

lcnk jk vjFk

धनिक – पूंजीपति, लिछमी – लक्ष्मी, दीप – दीपक, बळबळते – जलते हुए, सीझ्यौ – जला (कटट सटे) पाळी – पालन – पोषण करना, नखराळी – नखरेवाली, बैरण – शत्रु रूपाळी – सुंदर, गळहार – गले का हार, बिलखी – रोई, जोत – ज्योति, जांण – जाने का, मेला – महलों, हाकै – चिल्लाना, सपना – स्वप्न, पगां – पैरों से पांगळी – पंगु।

dk0; jk lkj

- आज अपने मदभरे यौवन में इठलाती हुई तूं भूल गई है, अपने जन्मदाता किसान को कि किन मुसीबतों का सामना करते हुए उसने तेरा पालन–पोसण किया था। तुझे दुलारा कर बड़ा करने के लिए तिल–तिल कर जली थी उसकी देह। उसकी काया। तेज दुपहरी में उसने हल चलाया

था। स्वयं भूखे रह कर उसने खेत में बीज बोये थे और अपना खून–पसीना देकर उसने बीज को सींचा था। अंगारे बरसाती हुई उन विदग्ध ज्वालाओं में उसकी देह सीझ गई थी। सीझ गया था उसका प्राण और झुलस गई थी उसकी प्राणवन्त चेतना। तेरे लिए उसने कितने दुःख उठाये? कितनी तरह के दुख उठाये, उन्हें केवल दुख उठाने वाला किसान ही जानता है। अपने जीवन को खपाते हुए उसने तुझे जीवन–दान दिया था। स्वयं ने कांटों और भुरंटों में दिन बिताये, लेकिन तुझे उन शूलों से बचाते हुए फूलों के समान पाला और बड़ा किया पर लिछमी, तेरी कृतघ्नता की भी कोई मिसाल नहीं है। होश संभालते ही तूने ठुकरा दिया अपने जीवनदाता को। पालन करने वाले पालनहार का साथ छोड़ते हुए तुझने पल भर की भी देर नहीं की हुई। गढ़, कोट और बंगलों में जा चढ़ी। बन–ठन कर। जाने का कारण जानना चाहा तो उसके जवाब में मिली एक कठोर प्रताड़ना। एक निर्लज्ज मुस्कान। तेरी निर्दयता से बस यह एक ही प्रार्थना है कि इन तड़फते प्राणों को अधमरा छोड़ कर मत जा। जाना ही है तुझे तो इन सिसकते प्राणों को एकदम समाप्त करके ही जा।

- यदि विधाता के कुशल हाथों ने तेरा सृजन किया है तो मजदूरों के मेहनती हाथों ने तेरा शृंगार के सम्पूर्ण आभूषण क्या रखड़ी, क्या, बाजूबंद, क्या तिमणिया और क्या गले का हार–यह सब कुछ मजदूरों ने अपनी मेहनत से गढ़ कर तुझे पहिनाये हैं। तेरे हाथों पर लगी मेहंदी की लालिमा, मजदूरों के खून की लालिमा है। मजदूरों ने अपनी माँसपेशियों के साथ घिस–घिस कर ही इस लालिमा को यह रक्तिम रूप प्रदान किया है। फूलों की बहू–बेटियाँ अपनी देह की लज्जा को ढकने के लिए कपड़ों तक को रोती–बिलखती रहीं पर श्रमजीवियों के मेहनती हाथों को तुझे ही सजाने से फुरसत नहीं मिली। घर–घर की जोत बुझा कर उन्होंने केवल तेरी जोत को ही सदैव प्रज्वलित किया है। हे लिछमी, तेर कृतघ्नता की तो कहीं कोई सीमा ही नहीं है। इन सब एहसानों का तूने इस रूप में बदला चुकाया कि ठीक दीवाली के दिन मन के सभी अरमानों को अपने पाँवों तले कुचलती हुई धनवानों की हवेलियों में जा चढ़ी–ठुमके के साथ, नखरों के साथ मनमर्जी के मटके करती हुई। यदि तूने अपनी लज्जा को बेच डालने का फैसला किया है तो लगे हाथों उसका पूरा मोल भी चुकाती जा। तुझे श्रमजीवियों के बलिदानों की एक–एक पाई अदा करनी होगी।
- अब तेरी प्रवचना का अंत आ गया है। इतने दिनों से तो भोले इंसानों की भलमन्साहत का नाजाइज फायदा उठाकर उन्हें ठगती आ रही है। तेरे मदभरे रूप ने हमेशा उनके साथ छल किया है। पति के मेहनत पर गुलछरे उड़ाती थी और गीत गाती थी भाई के पर अब तेरी छलना का अंत आ गया है। यदि जाने का एक भी बोल जबान पर लाई तो तेरी जबान लोहे की गर्म–शलाख से दाग दी जायेगी। महलों की ओर यदि लालसा भरी दृष्टि से ताकने का दुस्साहस किया तो उन ललचाई आँखों को ही फोड़ दिया जायेगा। शोरगुल की आवाज मचाकर यदि किसी को भी इमदाद के लिए पुकारने की कुचेष्टा की तो तुझे नागोरी गहनों (हथकड़ी और बेड़ी) से जकड़ दिया जायेगा। पूँजीपतियों के महलों की ओर तनिक–सा भी पाँव बढ़ाया तो तेरे उन पथभ्रष्ट पाँवों को ही काट डाला जायेगा। अब तेरी प्रवंचना का अंत आ गया है। भूल जा अपनी पुरानी हरकतों को। भूल जा उन सपनों को जो महल, गढ़, कोट बंगलों में देखें थे। अब उनके साथ तेरे सपनें भी सारे समाप्त हुए।
- दीप–मालाओं की जगमगाहट के भीतर तेरे हृदय की कालिमा साफ झलक रही है। अब उसे छिपाने की व्यर्थ चेष्टा न कर। हे लिछमी! अपनी चुंदड़ी के एक झपेटे में बुझा दे इस जगमगाती कालिमा को। तत्काल ही बुझा दे।

7-0 tuh jktLFkkuh dk0; ijEijk

राजस्थानी साहित्य री गद्य अरपद्य री दो धारावां में लारला बारह सौ बरसां सूं भांत भांत री विधावां में सिरजण लगोलग हूय रियौ है। राजस्थानी साहित्य रा आदिकाल, मध्यकाल अर आधुनिक कालखण्डां में अपार अर विध–विध रो साहित्य मानीता साहित्यकारां रच्यौ है। राजस्थानी साहित्य में सबसूं पैली काव्य रो सिरजण हुयौ अर कई बरसां पछै गद्य साहित्य रो। राजस्थानी काव्य रा दो रूप सामी आवै पैलो लोक काव्य रो मौखिक रूप अर दूजो अभिजात साहित्य रो काव्य रूप।

vkfndkyhu dk0; & राजस्थानी साहित्य को आदिकाल विक्रमी 12 सूं 15 सदी लग मानीजै। आदिकाल रो राजस्थानी काव्य वीरता, भगती, नीति अर सिणगार री विसयवस्तु नै आधार बणा'र लिखीज्यौ पण वीरगाथावां भरिया काव्य री प्रधानता रै कारण ही इण जुग रा काव्य रो नामकरण वीरगाथाकाल हुयौ। इण जुग में महताऊ काव्य ग्रंथां रै साथै–साथै इतर काव्य रचनावां भी सामी आवै। इण जुग रा महताऊ काव्य ग्रंथा अर उणांरा रचनाकारां में नीचै लिख्या कवेसर खास गिणीजै–जैन कवि वज्रसेन, सालिभद्र सूरि, कवि असिगु, धर्म कवि, पतहण कवि, जिनभद्रसूरि, सुमति मणि, अभयदेवसूरि, श्रीधर व्यास, बादरढाढी, सिवदास गाडण, शाङ्गधर, कवि असायत, नरपति नाल्ह, 'कवि कल्लोल' भट्ट केदार आदि।

e/;dky vFkok Hkxrhdky & विक्रमी संवत 1500 सूं 1700 तक रो समय राजस्थानी साहित्य में मध्यकाल अथवा भगती काल कहीजै। इण जुग में सगुण अर निरगुण काव्य धारावां में भगती काव्य री सिरजणा हुई। सगुण भगत अर निरगुण संत कहीज्या। संतवाणी लोक सूं जुड़ी–भाव अर भासा लोक री अंग्रेजी। लोक भासावां में संतवाणी आखरां ढळी। आकारहीन प्रभु री वाणी रो आधार लियौ। मूरत पूजा अर मिंदर थापना रो विरोध कीनो।

दोनूं भगती धारावां रा न्यारा–न्यारा पंथ थरपीज्या। सैकडूं रचनाकार अपार अर असरदार साहित्य रच्यौ।

इण जुग रा महताऊ राजस्थानी भगत रचनाकारां में जैन कवि, जयसागर सूरि, कवि देपाल, कवि दामो, भांडव व्यास, गणपति, कुसललाभ, समय सुंदर, हरिकलस, हेमरतन, सूरि चारण, कविवर पसायत, खिड़िया चानण, आसानंद बारहठ, ईसरदास बारहठ, रामा सांदू, अल्लूजी कविया, मालासांदू, दुरसा आढा, पृथ्वीराज राठौड़, मीराँबाई, संतकवि, अभ्रदास अर अनंतदास, जांभोजी, जसनाथजी, हरिदास, परसुराम देव, लालदास, चरणदास, रामचरण, दरियाबजी, हरिराम, रामदास, लालगिरी, संतदास, जीजीबाई, दादूदयाल, समान बाई, सहजोबाई, दयाबाई आद।

7-1 vk/kfud jktLFkkuh dk0;

आधुनिक राजस्थानी काव्य सन् 1850 सूं लैय'र आज तक रो गिणीजै जिणरा दो महताऊ भाग करिया जा सकै। एक आजादी रै पैली रो अर दूजो भारत री आजादी रै पछै रो। ईसवीं सन 1850 सूं 1947 लग आधुनिक काल रो एक काल खण्ड है जिणमें अंग्रेजी री गुलामी सूं देस नै आजाद करावणी री काव्य चेतना है। गुलामी सबसूं खराब है अर आजादी मानवी रो मूळभूत अधिकार। इण जुग रा राजस्थानी कवि खुद रा काव्य लेखन सूं आजादी री बात पुरजोर सबदां में उठाई। आं कवियां में खास हा बाँकीदास आसिया, संकरदान सामोर, सूरजमल्ल मीसण, ऊमरदान, केसरीसिंह बारहठ आद। स्वतंत्रता अर वीरता भरिया काव्य रै साथै भगती, नीति अर देस प्रेम रा काव्य रो सिरजण भी राजस्थानी कवि करता रिया है। जिणां में मेंवाड़ रा महाराज चतुरसिंह, अलवर रा रामनाथ कविया, सीकर रा हिंगळाज कविया, आदि प्रमुख है।

ऊमरदान लालस इण जुग रा सांतरा दरसाव अर नाथ संता री पोल खोलण में कसर नीं राखी। सगळों ऊमर काव्य सामाजिक बदळाव अर जन चेतना जगावण वाळो है। गणेसलाल व्यास, उदयराज उज्वल,

नाथूदान महियारिया, नारायणसिंह भाटी, सत्यप्रकास जोसी, चंद्रसिंह, मेघराज मुकुल, नानूराम संस्कर्ता, डॉ. मनोहर शर्मा, गजानन वर्मा, रघुराजसिं हाडा, विस्वनाथ विमलेश, लक्ष्मणसिंह रसवत, कानदान, किसोर कल्पनाकांत, कान्ह महर्षि, कल्याणसिंह राजावत, हरीश आदानी, सत्येन जोसी, रेवतदान जी रै जुग रा साथी कविगण हा।

7-2 j[onku pkj.k jk ;kxnku

रेवतदान चारण आधुनिक राजस्थानी भासा रा मोबी कवेसर हा। उणां रै काव्य सूं राजस्थानी भासा समृद्ध हुई है। रेवतदानजी प्रभावी भासा, सैली, सिल्प अर नयो तेवर राजस्थानी काव्य नै दियौ। डिंगळ काव्य परम्परा नै निभावता थका खुद री कविता रा छंदां में बदळाव भी करियौ।

रेवतदान चारण प्रगतिसील काव्य धारा मान्यौड़ा कवि हा।

बे काव्य नै कवि सम्मेलना रै मंचां में चावो हूवण जोग बणायौ। रेवतदान जी कविता नै लोक रंजण री जागां इंकलाब लावणवाळी आंधी रो रूप दियौ। कलम री कांई ताकत व्है– रेवतदान चारण जन नै समझाय दी। भगती, नीति अर सिणगार रै साथै कविता नै आधुनिक चिंतन और प्रयोग भी दिया। रेवतदान जी आज री राजस्थानी नै भाव सूं विचारकानी ले जावण में महताऊ भूमिका निभाई।

8-0 vH;kl jk loky

1. रेवतदान चारण रो जनम और सुरगवास कद हुयौ?
2. रेवतदान चारण री किसी पोथी पर उणानै साहित्य अकादमी, नई दिल्ली रो ईनाम मिल्यौ।
3. रेवतदान चारण री राजस्थानी साहित्य नै कांई देन है?
4. रेवतदान चारण किण काव्य धारा रा कवि मानीजै?
5. कवि रेवतदान चारण रो राजस्थानी काव्य नै कांई योगदान है उदाहरण सूं समझावो।

9-0 egrkÅ ikF;k

1. चत मानखा– रेवतदान चारण
2. नेहरु जी नै ओळमो– रेवतदान चारण
3. 'उछाळो' रेवतदान चारण
4. राजस्थानी भाषा एवं साहित्य – प्रो. कल्याणसिंह शेखावत, आनन्द प्रकाशन, जोधपुर
5. बगत री बारखड़ी – डॉ. अर्जुनदेव चारण, कवि प्रकाशन, बीकानेर
6. समकालीन राजस्थानी काव्य – कुंदनमाली, अंकुर प्रकाशन, बीकानेर
7. आलोचना री आंख सूं – कुंदनमाली
8. 'परम्परा' (हेमाणी अंक) – प्रकाशन राजस्थानी शोध संस्थान, चौपासनी, जोधपुर

bdkbZ 10

iæe|[k dfo & Jh dUgS;kyky lsfB;k

bdkbZ jk eMk.k

10.0 उद्‌देस्य

10.1 प्रस्तावना

10.2 कन्हैयालाल सेठिया री साहित्य – साधना

10.3 सेठिया जी रै काव्य रो भावपक्ष

10.4 सेठिया जी रै काव्य रो कलापक्ष

10.5 ‘बटाऊ’ अर कुण ‘जमीन रो धणी’ कवितावां री समीक्षा

10.6 सार

10.7 सबदावली

10.8 अभ्यास सवाल

10.9 बोध सवाल

10.10 संदर्भ ग्रंथ अर दूजी उपयोगी पोथ्यां।

10-0 mn~ns';

इण इकाई मांय राजस्थानी अर हिन्दी रा चावा–ठावा कवि कन्हैयालाल जी सेठिया अर वां री साहित्य साधना रै सम्बन्ध में अध्ययन करांला। कन्हैयालाल जी सेठिया राजस्थानी री आधुनिक कविता में अेक सिरै कवि गिणीजै। राजस्थानी में आपरा 14 काव्य संग्रै प्रकासित हुया है।

1. इण इकाई सूं विद्यार्थी कन्हैयालाल जी सेठिया रो सामान्य परिचै प्राप्त कर सकैला!
2. आधुनिक राजस्थानी काव्य धारा में सेठिया जी रै काव्य रै योगदान बाबत जाणकारी प्राप्त कर सकैला।
3. सेठिया जी री रचनाधर्मिता रो सामान्य परिचै प्राप्त कर सकैला।
4. ‘बटाऊ’ अर ‘कुण जमीन रो धणी’ कवितावां रै भाव पक्ष नै समझ सकैला।
5. कवितावां में आयौड़ा कठिन सबदां रा अरथ जाण सकैला।
6. सेठिया जी रै साहित्य सूं सम्बन्धित ग्रंथां अर दूजी पोथ्यां री जाणकारी लेय सकैला।

10-1 iLrkouk

कविता मिनख रै हिये रो इमरत है। कवि री देह तो नासवान है। कवि री कलम सूं मंड़्या आखर अमर है। वे उणरी मेधा री, भाव प्रवणता री अर काव्यकला री सदियां तांई साख भरै। राजस्थान री धरती इण लेखे घणी उर्वरा है। केई कालजमी कविसरां इण धरती माथै जनम लियौ अर आपरै वाणी–अमरत री सौगात समाज नै सूंपिया। आदिकाल सूं लेयर आज तांई आ काव्य धारा लगातार देखी जाय सकै। धरती माथै जद अंधारों पसरै तो लोग सूरज नै उडीकै अर समाज मांय जद अंधारो पसरै तो लोग कवियां रै सबदां रां उजास नै उडीकै। कवि आपरै बगत अर आपरै समाज रो साचो चितराम मांड’र लोगां नै सावचेत करै। कवि धरम भी ओ ईज है।

जे आपां राजस्थानी री काव्य धारा री पड़ताल ठेठ आदिकाल सूं करणी चावां तो ओ साच मतै ई परतख हुय जासी कै ऊपरली ओळ्यां में कथ्यौड़ी बातां में कितरो सांच है। वीरगाथा काल, भगतीकाल,

रीतिकाल अर आधुनिककाल री समाजू रचना न्यारी–न्यारी, लोगां री आकांक्षावां अर अबखायां न्यारी–न्यारी, समस्यावां न्यारी–न्यारी अर कवियां री सामाजिक पिछाण पण न्यारी–न्यारी। आ भिन्नतावां रै व्हैतां थकां भी राजस्थानी रा कवियां आपरी भूमिका रो निबाह करण में खरा उतरिया, आ अठां रै कवियां अर अठां री कविता री सै सूं जबरी विसेसता है।

इण इकाई मांय कवि कन्हैयालाल जी सेठिया रो जनम 11 सितम्बर, 1919 नै सुजानगढ़ जिला चुरू में व्हियौ। आप राजस्थानी अर हिन्दी रै अलावा उर्दू में भी रचना कीधी। राजस्थानी में आपरी 15, हिन्दी में 18 अर उर्दू में 2 पोथ्यां छपी। आपरी केई क्रतियां रा अंग्रेजी, बांग्ला, मराठी अर जर्मन भासावां मांय अनुवाद व्हिया।

सेठिया जी री प्रमुख राजस्थानी रचनावां

मींझर, सबद, कूंकूं, धर कूंचा धर मजलां, मायड़ रो हेलौ, दीठ, गळगचिया, कक्कौ कोड रौ, लीलटांस, हेमाणी, रमणिये रा सोरठा, सतवाणी, अघोरी काळ, लीक लकोळिया।

iqjLdkj lEeku

- भारत सरकार कांनी सूं साहित्य अर पढाई रै खेतर में उल्लेखजोग योगदान सारू 'पद्मश्री' सम्मान।
- राजस्थान विस्वविद्यालय, जयपुर कांनी सूं डी. लिट् री मानद उपाधि।
- 'निर्ग्रन्थ काव्य संग्रै सारू भारतीय ज्ञानपीठ कांनी सूं सन् 1986 मांय मूर्ति देवी सम्मान।
- साहित्य अकादेमी, दिल्ली कांनी सूं 'लीलटांस' काव्य संग्रै पर राजस्थानी सिरजण रो अकादेमी पुरस्कार।
- राजस्थानी साहित्य अकादमी, उदयपुर कांनी सूं सन् 1984 मांय सर्वोच्च 'मनीषी समान' दिरीजियौ।
- राजस्थानी भाषा, साहित्य एवं संस्कृति, अकादमी, बीकानेर कांनी सूं सन् 1987 मांय सूर्यमल्ल मीसण पुरस्कार।

आं पुरस्कारां रै अलावा आपनै राजस्थानी फाउण्डेशन कांनी सूं प्रवासी राजस्थानी गौरव सम्मान, हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग कांनी सूं 'विद्या वाचस्पति' उपाधि, भारतीय भाषा परिषद् कांनी सूं रामेश्वर टांटिया पुरस्कार, राजस्थानी वेलफेयर एसोयिएशन, मुंबई कांनी सूं नाहर सम्मान, महाराण मेवाड़ फाउण्डेशन, उदयपुर कांनी सूं महाराण कुंभा पुरस्कार, लोक संस्कृति शोध संस्थान कांनी सूं एल. पी. टैस्सितोरी स्वर्णपदक अर राजस्थानी अकादमी, दिल्ली कांनी सूं सन् 1997 में लखोटिया पुरस्कार सूं सम्मानित करिया गया।

लारलै दिनां राजस्थानी परिषद्, कोलकाता कांनी सूं सेठिया जी रा सगळा साहित्य नै 'सेठिया समग्र' रै पेटे चार खण्डां मांय छपयौ है।

11 नवंबर 2008 नै राजस्थानी रा इण सपूत रो कोलकाता में सुरगवास व्हैग्यौ।

10-2 lsfB;k th jh lkfgR; lk/kuk

सेठिया जी री साहित्य साधना रो खेतर घणो व्यापक है। व्यापकता रै सागै इणमें संवेदना री गैराई अर अभिव्यक्ति री कुसळता रा दरसण व्है। आपरी केई कवितावां तो इती चावी व्ही के लोगां नै कंठै याद है। राजस्थानी रै स्कूली पाठ्यक्रम में आपरी कविता 'पातळ अर पीथल' केई बरसां तक रैयी। आ कविता 'अरे घास री रोटी.....' (कविता री पैली ओळी) कैतां ई लोगां नै याद आ जावै। राजस्थानी भासा री की चुण्यौड़ी कवितावां मांय इण कविता री गिणती करी जाय सकै जो लोगां नै लोक काव्य ज्यूं मनभावती लागै।

राजस्थानी भासा मांय सेठिया जी री पैली पोथी 'रमणिये रा सोरठा' है। ओ अेक सम्बोधन काव्य है। जिण तरै किरपाराम खिड़िया राजिया रा सोरठा लिख्या जिणांमें राजिया नांव रा सेवक नै सम्बोधित करता वे आपरी बात कैवै है उणईज तरै सेठिया जी 'रमणिये' नें सम्बोधन करता थका इण सोरठा री रचना करी है। 'मींझर' कविता संग्रै (सं. 2029 वि.) में आपरी 52 कवितावां है। बटाऊ, दूबड़ी, खेजड़ी, फूल तो आपै ही कुमळासी, कुण जमीन रो धणी, पातळ अर पीथल, धरती धोरां री अर जलमभोम जिसी भावपूर्ण अर जन जन रै हिरदै बसी कवितावां इण संग्रै में है।

'गळगचिया' आपरा मन मोवणा गद्य गीता रो संग्रै है। इण संग्रै रो हिन्दी में अनुवाद भी लारलै दिनां व्हैग्यौ है। 'कूं कूं' अपरी 71 कवितावां रो संग्रै है। थोड़ा सबदां में ऊंडी अर महताऊ बात कैवणो सेठिया जी री निजू विसेसता है।

सन् 1973 में 'लीलटांस' कविता संग्रै छप्यौ। 'मींझर' री कवितावां में छंद लालित्य रा दरसण हुवै तो 'लीलटांस' री कवितावां में वैचारिक भंगिमा निगै आवै। सन् 1979 मांय सेठिया जी रो छठो काव्य संग्रै 'धर कूचां धर मजलां' सामी आयो। इण संग्रै में कवि दूहा छंद रो प्रयोग कीधौ है। 'धर कूचां धर मजलां' मांय कवि जीवन रै विविध पखां नै सांवटता थको कलात्मकता सागै प्रस्तुत कीधा है। सै सूं बड़ी खूबी जकी इण संग्रै री रचनावां में निजर आवै वा है गैरी आध्यात्मिकता।

'सतवाणी' (सन् 1987) सेठिया जी रो महताऊ काव्य संग्रै है। इण संग्रै में 331 छंद है। 'सबद' काव्य संग्रै नै सतवाणी परंपरा री कड़ी रै रूप में ही ओळख्यौ जा सकै। कवि इण स्रिस्टी नै भी सबद–स्रिस्टी ही मानै। 'अघोरी काळ' में कवि री 27 कवितावां है। आं कवितावां में काळ अर उण सूं उपजी भयावह स्थितियां रो बरणाव है। 'मायड़ रो हेलो' कवि री सामाजिक सरोकारां नै दरसावण वाळी पोथी कही जा सकै।

दीठ (सन् 1988) री कवितावां सनातन सांच अर जुग धरम सूं पाठक नै जोड़ै। सनातन सूं वर्तमान अेक सतत काल प्रवाह है। कविता सारू लाजमी है के इण प्रवाह री अखण्ड धारा नै पाठक साम्ही परूसै। 'दीठ' री कवितावां पाठक नै खुद रै मांयनै झांकणै री प्रेरणा देवै है। इण तरै अै कवितावां आत्म चिंतन री क्रिया कांनी पाठक रो ध्यान खींचै। 'कक्कौ कोड़ रो' (सन् 1989) की कविताओं में कवि अेकर फैरूं प्रक्रति कांनी आवतौ दीखै। 'रोहीड़ो, मतीरा, रात–दिन' आद कवितावां में कवि प्रकृति रा उपादानां रै माध्यम सूं गूढ़ मनोभावां री व्यंजना करै। इण संग्रह री कवितावां में कवि मिनख नै आपरै अंतस नै टटोळणै रै सागै ही परिवेस री पड़ताल करण रो भी आह्वान करै। इण हीज क्रम में 'लीक–लकोळिया' कविता संग्रै 1991 ई. मांय साम्ही आवै। टाबर पाटी माथै सूं आड़ी–सूधी लेणां खेंचे कै भांत–भांत रा सबूझ–अबूझ चितरांम मांडै। ओ टाबर रो लेखताभ्यास है। इण हीज गत कवि मानै के काव्याभ्यास री इति कदै ही नीं हुवै। कोई कितरौ ही बड़ो कवि व्है जावै पण इणनै अभ्यास री दरकार हुवै। पूर्णता रो कोई छेहलो छोर है ही नीं जो इण बात नै मानै उणरै अभ्यास रो कदै ही अन्त नीं हुवै। तुलसीदास जैड़ा सिद्ध कवि लिखै है– 'कबित विवेक एक नहिं मोरे, कहहुं लिखि कागद कोरे।' आ सलीनता अर अभ्यास सारू अनुरक्ति ही कवि नै ऊंचाई माथै पुगावै।

सार रूप में कयौ जाय सकै के 'सिरजण री व्यापकता अर गहनता रै पाण सेठियाजी आधुनिक राजस्थानी काव्य धारा री पैली पांत रा महताऊ कवि बण्या।

10-3 lfB;k th j dk0; jk Hkko i{k

भाव रै अभाव में कविता नीं व्है सकै तो सिल्प रै बिना भाव मुखर नीं व्है सकै। इण तरै कविता में भावपक्ष अर सिल्प पक्ष दोन्यां रो मजबूत व्हैणो जरूरी है। सेठिया जी री कविता में अै दोन्यूं ही पख आपरी ठौड़ सांतरा नजर आवै। पैलां भाव पक्ष री थोड़ी चरचा जरूरी है। भाव कांई है ? जको कीं आपां देखां, भोगां, समझां उणरी या उण रै प्रति मन पर हुयौड़ी प्रतिक्रिया भाव कहीजै। प्रतिक्रिया तो सगळा लोगां माथै व्हैवै क्यूंकै ज्ञानेन्द्रियां सगळा कनै है। फेर कविता सगळा नीं करै, नीं कर सकै। क्यूं ? इण 'क्यूं' रो

पडूत्तर कदास ओ व्है सकै कै संवेदना सगळा लोगां में एकजिसी नीं व्है। संवेदना रो फरक ई अेक जणै नै कवि बणा देवै तो दूजै नै फगत स्रोता। साधारण जन किणी दरसाव देख'र आगै बढ जावै पण कवि उणनै नै किती ई ताळ मानस अर संवेदण स्तर माथै जीवै। ओ फरक ही कवि बणावै। दूजै सबदां में कैवां तो बाहरी दरसाव रो आंतरिक जगत सूं जुड़ाव काव्य सिरजण रो बीज बणै।

आपां रै चारूं कांनी रूपाळी प्रकृति पसर्‌यौड़ी है। समाज है। लोग–लुगायां, टाबर–बूढा जन है। मां–बाप भाई–बैन, धणी–लुगाई, बेटा–बेटी, अड़ौसी–पड़ौसी जैड़ा सम्बन्ध है। नगर–गांव है, गळी मोहल्ला है। पसु–पक्षी है। ज्ञान है। विज्ञान है। विज्ञान रै आविस्कारां रै मिली सुविधावां है। सागै ई मानवी में जहर घोळबा वाळा मिनख भी है। खुद री तिजोरियां भरण वाला सोसक भी है। विज्ञान रै आविस्कारां सूं उपजी विनास री आसंका भी है। प्रकृतिवादी कैवे के कुदरत तो हर चीज चोखी ई बणावै पण स्वारथी मिनख उणमांय आपरो दखल करै अर इण में इमरत री जगा जहर भर देवै।

सेठिया जी अेक ठौड़ कैवे

ekGhMk er pV] Qy rk
vki gh deGkI h
?kMh L;kr v vkj eGd y
Qj dn uk vkIhA ¼eh>j dk0; Ix½

ऊपरली ओळयां में संसार री नस्वरता री तरफ कवि इसारौ करै, तो नीचै लिखी ओळयां में वो मौत नै ललकारतौ दीखै।

e Fke tB gh e tyk g
e [kkt ekM n o xyk
e I.;k&v.kI.;k dj pky
fur ekr fetkt.k jk gykA ¼eh>j½

कवि जीवन नै एक पथिक री निजर सूं देखै। पथिक री दीठ निरमळ हुयां करै। उण री दीठ में अनुराग अर विराग रो अद्‌भुत मेळ व्है। वो मारग रा फूल देखै तो सूलां नै भी आंख्यां सूं ओझळ नीं करै। ओ निरमोही सुभाव कवि री कसौटी है। अै ओळ्यां इण तथ्य री साख भरै।

/kj dpk Hkb /kj e tyk
ctj /kjrh ixk gykA
D; fcMdknkok Qyk u \
D; fcIjkok IGk u \
Ixyk Ikx feyk jDo
ekjx cxrk fd;k VGk \

(धर कूंचां धर मजलां)

आध्यात्मिक परस रै बिना कविता काळजयी नीं व्है सकै। आध्यात्मिकता जड़ सूं चेतन रो संवाद है या परस्पर संवाद है। जको इण संवाद नै सांभळ सकै अर समझण री खिमता राखै वो ई कवि कहलावण रो अधिकारी बणै।

Åij L; /kkGh #b i.k eu Iko eyhu
xjc xG;k tn xnM Hkjh fiukjk ihuA ¼/kj dpk /kj etGk½

आध्यात्म अर जड़–चेतन संवाद जीवन रो अेक पख है। समूचौ जीवन नीं। जीवन अनंत है। उणरा दरसाव अर पसराव पण अनंत है। राजस्थानी री भूमि नै काळ सूं आयै साल बाथेड़ा घालणा पड़ै। अठां रै लोगां नै रोटी रा फोड़ा, ढांडा–ढोर अर चारै–पाणी रो टोटो। कवि री दीठ सूं अै दरसाव कींकर बच सकै ? राजनीति करणवाला लोग प्रांत री प्रगति रा ढोल तो घणां ई बजावै पण अकाळ री बगत भूख सूं पिचकी पांसळयां अर अेक–अेक तिणकै नै टटोळता आंसू भरिया नैण उणांनै नीं दिखै, पण कवि अै दरसाव अणदेख्या नीं कर सकै–

iMX;k urkok jh
vdy ij iRFkj
d n nlh
fr lk;k u ik.kh
Hk[kk u vUu
vM[k tk dl;Vj \ ¼v?kkjh dkG½

अकाळ री विभीसिका चारूंमेर पग पसार री है। गांव रा गांव सूना व्हैग्या है। मानवीय सम्बन्धां रै बीच भी दरारां पड़गी है। नीचै री ओळयां में कवि री व्यथा देखी जाय सकै जकी उणरै सामाजिक सरोकारां सूं उपजी है–

fQj@gkMrk@v?kkjh dkG
l.k*j ndky
Hkkt NV;k ekuk[kk
iM;k lko luk
xko vj xokM
fcNM;k xko l
ukuk Vkcj
VV X;k lEcU/k*j lxi.k
fjjko ,d ,d eBBh
nk.kk j [kkrj c
tdk ckt rk vUunkrkA ¼v?kkjh dkG½

'अघोरी काळ' री लगोलग सारी रचनावां में अकाळ री विभीसिका में पिसीजते मिनख री दुरदसा रो लेखो मिलै है। इण तरै सूं इण संग्रै नै कवि रै सामाजिक सरोकारां रो दस्तावेज कैय सकां।

इणीज भांत 'मायड़ रो हेलो' (वि. सं. 2041) नै भी सामाजिक सरोकारां रो काव्य संग्रै कैय सकां। 'मायड़ रो हेलो' री बीस कवितावां में कवि री आ पीड़ उजागर हुई है के राजस्थान रै आठ करोड़ रैवासियां री भासा राजस्थानी ने संवैधानिक मान्यता क्यूं नीं मिल सकी।

ek;M Hkkk lk ckyrk
ft.ku vko ykt
bL;k dirk l n[kh
vk[kk nl lekt A ¼ek;M jk gyk½

राजस्थानी भासा नै मान्यता रै सवाल पर ओ तरक दियौ जावै के राजस्थानी नै मान्यता देवण सूं हिन्दी

कमजोर व्है जासी पण ओ तरक सारहीन अर बोदो है। भासाविद् साक्षी है के राजस्थानी अर हिन्दी रो नीं तो कदैई र हो अर नीं व्हैला। जे गैराई सूं विचार करां तो राजस्थानी भासा नै मान्यता देवण सूं हिन्दी री ताकत बधसी।

भासा मिनख नै रचै। भासा रै जरिये ही मिनख आपरी जमीन सूं जुड़ै, आपरी संस्कृति सूं पिछाण करै अर इण धारा नै आगे बधावै।

10-4 lfB;k th j dk0; jk dyki[k

सेठिया जी लाम्बी काव्य अभ्यास रा कवि है। अनुभव री दीठ सूं भी विविध अनुभवां री पूंजी वांरै कनै है जकी वांरै काव्य में मूंडै बोलै। देस आजाद व्हियौ जद बे 28 बरस रा मोट्यार हा। वां रो बाळपण अंग्रेजां रै राज में बीत्यौ। सुजानगढ़ जैड़ै औसत आकार रै कसबे में जाया जनम्या सेठिया जी रै जीवण रो बेसी बगत कोलकाता महानगर मांय बीत्यौ। जीवण रा निव्यासी बसन्त भोगण वाळै इण कवि रै कला पख माथै चर्चा करती वेळां अै सगळी बातां विचार करणजोग है। कोलकाता महानगरी संस्कृति, साहित्य अर कलावां रै लेखे आपरी ठावी ठौड़ राखै। संगीत अर कविता, विचार अर क्रांति इण माटी री ओलखाण है। इसे कोलकाता नगर री आबोहवा रो असर कवि सेठिया जी रै कलापख माथै साफ निजर आवै।

दूहो राजस्थानी रो लोकप्रिय छंद है। सोरठो भी इण हीज परिवार रो है। राजस्थानी रै घणखरा कवियां री तरै सेठिया जी भी आं पारंपरिक छंदा रो प्रयोग आपरी काव्य रचना में ओपतै ढंग सूं कीधौ है। गीत सैली में 'मींझर' री कवितावां घणी जग चावी व्ही। 'पातळ अर पीथळ' जेड़ी छंदबद्ध रचना में कवि संवाद सैली रो पण प्रयोग कीधौ है। छंद कठैई छोटी बेहर रा है तो कठैई लांबी बेहर रा। अलंकारां में उपमा, उत्प्रेक्षा, रूपक, अनुप्रास, उत्प्रेक्षा आद अलंकारां रो प्रयोग व्हियौ है। उदाहरण देखीजै –

lenj /kjrh jk
dG;k nkj ?kk?kjkA
vkHkk cknGk jh
dkjh fn;kMh yxMhA
rkoMh lkuy dkpGh
Qrb
l vki [kh ncMhA ¼d d ½
fxxu yhyk ukGj
pkn dkph fxjh
Hk[k cxr j gkFk
e vekol jh ?kjh ¼d d ½

प्रतीकां रो ठावकौ प्रयोग भी सेठिया जी री कविता में खूब हुयौ है–

fiPNe jh ftuxk.kh
lklrk Hkkx.k jh gkM
ijc jh Fke*j lkp.k jk ,d ekM
br*d Qjd L;
fiPNe e tye t)
vj ijc e c)A ¼yhyjkl½

'सबद' रचना छंदबद्ध है। अेक उदाहरण :

/kjrh dkxn gG dye
fcj[kk efl jk uhj
ck;k vk[kj ch t tn
lcn mX;k xHkhjA ¼lcn½

10-5 ^cVkÅ* vj ^d|.k tehu jk /k.kh* dforkok jk dk0; lkUn;& ,d fuj[k&ij[k

cVkÅ

'बटाऊ' कविता कवि रै 'मींझर' काव्य संकलन मांय संकलित है। निरख–परख रै पैलां मूळ कविता नै बांचणी जरूरी है–

cVkÅ] pkY;k etyk feylhA
eu jk ykMw [kk*j dnbZ
l|.;k u dkbZ /kkI;k \
mX;k gFkGh :[k d.kkbZ
n[;k ugh dGk0;k \
lqjt ok gh tdk jkr jh&
Nkrh QkM+ fudGlhA
cVkÅ pkY;k etyk feylhA
xy jk rk dke vrk gh
ix uk lh/k crkoS
ok etyk uS ?kj cBk gh
fd.kuS Y;kj feykoS
bl h g;k rk ix vkGk jk
Mko ikxGk iMlh
cVkÅ pkY;k etyk feylhA
rik rkoMk yvk ck tk
pkoS p<k Fkdyk
i.k cxrk tk l|.k /kj dpk
/kj etyk jk gykA
tn liuS jh dGh Fkkjyh
Qy lkp jk c.klh
cVkÅ] pkY;k etyk feylhA

बटाऊ (राहगीर) नै सम्बोधित करता थका इण गीत में कवि, जथारथ सूँ रूबरू होवण रो संदेस देवणौ चावै। मन रा लाडू खावणौ, हथेळी रूंख उगावणौ जैड़ा मुहावरा रो भी इण गीत मांय ओपतो प्रयोग व्हियौ है।

'सूरज वो ही जको रात री छाती फाड़ निकळसी' इण ओळी में कवि ओज अर उछाव रो संदेस देवै। भाव ओ है के जे उजास री कामना है तो खुद सूरज बणो। सूरज रात रै अंधारै सूं उजास री भीख नीं मांगै वो तो अंधारै री छाती फाड़'र प्रगट व्हे जावै।

आगे कवि कैवै के रास्ते रो काम तो फगत दिसा बतावणौ है चालणो तो पगां नै ई पड़सी। रास्तो मंजिल तांई पुगा जरूर देवै पण खुद चाल'र कठैई नीं जावै। रास्तौ थिर है, पग गतिमान है। गति अर अगति

रै झगड़ै सूं ई ही प्रगति व्हियां करै। अगति रो रोणौ रोयां सूं नीं तो कदैई प्रगति व्ही है नीं व्हैला।

कळी में फूल छुप्यौड़ौ व्है है जिण गत कल्पना में जथारथ छुप्यौ रेवै। कवि कैवे कै जे थनै थारां सुपना सांचा करणा है तो जतन करणो पड़सी। अणथक मैनत करणी पड़सी। बिन मैनत सब सून। मैनत मजल रो दूजो नांव।

आ कविता आज री युवापीढ़ी नै सतत संघर्स अर अणथक परिश्रम रो संदेस देवै।

ईं कविता री भासा सरल अर बोलचाल री है। जका प्रतीक, बिम्ब अर अलंकार काम में लिया गया है वे भी सरल है। सीख प्रेरणादायी अर वैवारिक है। आज रै मोट्यारां नै काम में लागणो पड़सी। फगत अनुकरण कर्‌यां काम नीं चालै। आळस अर प्रमाद नै छोडर लक्ष्यसिद्धि सारू जतन करणो ही सफळता रो मूल मंत्र है। घर बैठां किणरी मनचीती व्ही है आज तांई ? लक्ष्य री दिसा में अणथक गतिमान रह्‌यां ही लक्ष्य री प्राप्ति होवै है।

आज इण कविता रो महतब ओजूं बढ़ग्यौ है। आज हरेक मोट्यार रा सुपना तो घणा ऊंचा पण उणरै अनुपात में उछाव अर परिश्रम रो अभाव। कार्य संस्क्रति (वर्क कल्चर) दिनूंदिन छीजती जाय री है। मनमोवणा विज्ञापन आज रै युवक रै हियै में सुपनां रा बीज तो बोय देवै पण सुपनां नै साकार करण सारू जिण भांत अर गति सूं जतन करणा चावै उणरै बाबत कीं नीं कैवे। इणरो नतीजो ओ व्है रियौ है कै युवक सुपनां री भूल भुलैया मांय पज्योड़ो अपराधां अर असामाजिक कामां री गैल पकड़ लेवै। आ यत सांचाणी चिन्ता जनक है। इण दीठ सूं आ कविता अेक उजास थंभ रो काम कर सकै–

d|.k tehu jk /k.kh \
d|.k tehu jk /k.kh \
gkM ekl pke xkG
[kr e: ilo lhp
y| yiV BM eg
l: lo nkr Hkhp]
QkM pkd dj dj] tkr.kh*j cko.kh
ok tehu jk /k.kh*d vk tehu jk /k.kh \
en fio etk mM
dj: t|ye lkdMh
Bx c.;k Bkdjk
fgn gkb gdMh
jkr&fnu j:;r u yV.kh*j [kkl.kh]
vk tehu jk /k.kh*d ok tehu jk /k.kh \
[kMh Qly djk d|Md
Hkj: C;kt ckf.k ;
cGn cp C;kt j:
C;kt u mxkkf.k ;
jkt lhj pkj d d dj*j djl.kh]
vk tehu jk /k.kh*d ck tehu jk /k.kh \

d.k tehu jk /k.kh \

आपां रो देस भारत खेती प्रधान कहीजै। खेती अर खेती सूं जुड़ियौड़ा उद्योग धन्धा अठां रै मिनख री जीवन–रेखा है। राजस्थान भी इण दरसाव सूं जुदा नीं। इण मूळ विचार सामी इणरी पूठ में इण कविता री इतिहास सूं आज तांई री जांच कर सकांला! इण कविता मांय महताऊ सवाल ओ उठायो गयो है के जमीन रो मालिक कुण ? करसो कै जमींदार। आ कविता कवि रै 'मींझर' काव्य संकलन में छप्यौड़ी है। पोथी रै पैले पाने माथै आ टीप आपांनै इण कविता रै इतिहास कांनी ले जावै। टीप है– ''सन् 1946 स्यूं 1960 तांई लिख्यौड़ी राजस्थानी भासा री कीं कवितावां।''

सन् 1946 में भारत गुलाम हो। राजस्थान में ई. जमींदारी प्रथा चालती ही। जमींदार गांव रो राजा होंवता। करसै रो जमीन माथै कोई हक नीं। खेती करणों उणरो काम। वो काम करतो। आज री बगत सूं उण बगत री तुलना करां तो सगळी चीजां साफ निजर आय जावैला। किसान रै मैणत माथै जमींदार आराम करता। मदपान करता। किसान अर दूजा मजूर लोगां माथै भांत–भांत रा जुलम करता। रही–सही कसर गांव रो महाजन पूरी कर देवतो। जरूरत पड्यां वो किसान नै ब्याज माथै रूपया तो देवतो पण खेत गैणा अडावै राख लेतो। जद किसान महाजन रा रुपया सूद समेत जमा नहीं करा सकतो तो उणरी खड़ी फसल कुड़क करा ली जावती। इण तरै सूं जमीदार, गांव रो महाजन जमीन रा महकमा रो काम देखण वालो कर्मचारी मिल'र करसे नै चूंटता रैवता। लगातार सोसण सूं दबयौड़ा किसान री पीड़ इण कविता मांय साकार व्ही है। कविता प्रगतिसील विचारां सूं प्रेरित है अर इण बात रो जवाब मांगे कै जमीन रो असली मालिक कुण ? किसान कै जमींदार, महाजन या जमीहाकम ? किसान अेकलो अर अे तीन। कीकर पार पड़ै ?

किसान दिन रात मैनत कहै हाड–मांस, चाम नै गाळ'र पसीना सूं खेत नै सींचै। लू री लपटां, ठंड री ठार अर मेह री झड़ सूं बाथेड़ा घालै। जमीन नै हळ चला'र बीज बोवै। साख री रूखाळी करै पण जद फसल पाक'र खळा में आवा री बगत नैड़ी आवै तो जमींदार रा लठैत कारिंदा, महाजन रो मुनीम, मय बहीखाता रै अर जमी महकमा रो कामगार रोबदाब सूं सैं कीं खोस लै। फेर भी करसौ हिम्मत नीं हारै। आगली दांण उणरो टापरो बिक जावै। वो भूखो रैय'र बीज रो जुगाड़ करै। बरखा रा छांटा पड़ै तो वो हरखै अर ईस नै धन्यवाद देवै के रामजी उणरी सुणी, पण ओ सुख कठां तांई फसल रै खेत सूं खळा में आवण तांई। फेर वा ही पुराणी कहाणी दोहराई जावै।

आज हालात इतरा माड़ा नीं है। करसा रो रुतबो बढ्यौ है पण फरक इतो ई पड्यौ के जको करसो हो जमींदार री भूमिका निभावण लागग्यौ अर खेत मजूर करसै री भूमिका करण नै मजबूर। भू सुधार कानून, करसां नै सरकारी सहायता, उन्नत खेती रा तरीका सिखावण री योजना इकाई बुवाई सिंचाई निराई गुड़ाई जेड़ी क्रियावां मांय मसीना रो प्रयोग हूवण लागो। किसानां री आर्थिक दसा भी सुधरी अर उणरौ कानूनी रुतबो भी बध्यौ। राजनीति में उणरी भागीदारी पैली रै मुकाबले कीं बत्ती होवण सूं राज अर उणरा कारिन्दा उणसूं नरमाई पण बरतण लागा है तो ई इण कविता में उठायोड़ौ सवाल यक्ष प्रस्न री दांई ऊभौ है। 'कुण जमीन रो धणी ?' मैंणत करण वाळो मिनख भलांई वो किसान व्है या खेती मजूर, उणरी स्थिति में कांई बदळाव आयौ ओ बुनियादी सवाल है। इण कविता रो ओ सवाल चाळीस–पचास बरस बीत्या पछै भी आज ज्यूं रो त्यूं जवाब पूछै– 'कुण जमीन रो धणी ?' आ अेक विचारोत्तेजक कविता है जकी राज व्यवस्था, समाज व्यवस्था, मजूर री लाचारी, कानूनां री पेचीदगी, नौकरसाही, नेता साही आद री कैई पड़तां खोलै।

10-6 lkj

सार रूप में कह्यौ जाय सकै के कन्हैयालाल जी सेठिया आधुनिक जुग री राजस्थानी कविता री पैली पांत रा कवि है। वां री कविता प्रक्रति री कविता है। वे भौतिक प्रकृति नै भी देखे अर मिनख रै मांयली प्रक्रति नै भी बांचै। वां री कविता में लौकिक सूं अलौकिक तांई, भौतिकता सूं आध्यात्मिकता तांई, अेक

झीणी पगडंडी सावळ देखी जाय सकै। दरसण रो जकौ गैरो अरथ है बे उण नै जीवै। सरल भासा में बात कैवण री वां री सैली सूं वां री वैचारिक कविता भी विचारां रा बोझ तळै दबती नीं दीखै बल्कि पाठक तांई कवि रा मरम नै असरदारढंग सूं पुगावै। जका बिम्ब, प्रतीक, छंद अलंकार, संवाद आद वे आपरी कविता में लिया है बे आम पाठक री समझ रै दायरै मांय होवण सूं वां री कविता वाग्जाळ नीं बण'र पाठक नै कीं न कीं संदेस देवै, विचारोतेजना देवै। सेठियाजी री कविता पढ़णौ इण दीठ सूं हरेक पाठक सारू अेक सुखद अनुभव बण जावै अर आ अेक सफल कविता कहीजै, जकी सुलझियोड़ै कवि री कसौटी भी है।

16-7 lcn Hk.Mkj

कुंभलासी	–	कुम्हला जाएंगे
मजलां	–	मंजिलें
मिजाजण	–	अभिमानिनी
बिड़दावां	–	प्रशंसा करें
सगला	–	सब
टलां	–	टल जाएं
रलां	–	एकाकार हो जाएं
पीन	–	धुनना (रुई को)
गूदड़ै	–	बिस्तर–रजाई (रुई अथवा कतरतों से बने ओढने बिछाने के)
तिसाया	–	तृषित, प्यासे
दकाल	–	जोर की आवाज ललकार
सगपण	–	सगाई
नासेर	–	नारियल
सासतो	–	शाश्वत
पिच्छम	–	पश्चिम
मसि	–	स्याही
धाप्यौ	–	तृप्त हुआ
अतो ही	–	इतना ही
थारली	–	तुम्हारी
बटाऊ	–	पथिक
पसेव	–	पसीना
उगाणियूं	–	उगाही करने वाला
सीर	–	साझा
धणी	–	स्वामी/पति
मद	–	मद्य (शराब)
फूस पान	–	घास–फूस
टापरो	–	कच्ची झोंपड़ी
जुगात	–	उपाय, जुगत

रैत – रैयत, प्रजा

10-8 vH;kl jk loky

1. सेठिया जी रो जनम कठै व्हियौ ?
2. सेठिया जी री जनम तारीख कांई है ?
3. सेठिया जी री राजस्थानी पोथ्या रा नांव लिखो।
4. राजस्थानी रै अलावा सेठिया जी और किण–किण भासावां में रचना कीधी ?
5. साहित्य अकादेमी दिल्ली कांनी सूं आपनै किण पोथी माथै पुरस्कार मिल्यौ ?
6. सेठिया जी रो सुरगवास कद व्हियौ ?
7. मींझर कविता संग्रै कुण सै बरस में छप्यौ ?
8. 'लीक लकोळिया' रो कांई अरथ व्है ?
9. स्कूली विद्यार्थियां में आपरी कुणसी कविता सैं सूं बत्ती लोकप्रिय व्ही ?
10. आपरी किण क्रति में अकाळ बरणाव है ?
11. 'मायड़ रो हेलो' कविता संग्रै रो मूळ ध्येय कांई है ?
12. 'लीलटांस' री वे पंक्तियां लिखो जिणां मांय अगूणै अर आथूणै री तुलना करीजी है।
13. 'बटाऊ' कविता रो मूल संदेस कांई है ?
14. 'बटाऊ' कविता सूं मोट्यार वर्ग कांई प्रेरणा ग्रहण कर सकै ?
15. 'कुण जमीन रो धणी' कविता में समाज रै किण वर्ग री अबखायां रो लेखो है ?
16. 'कुण जमीन रो धणी' कविता आज रै संदर्भ मांय किण तरै प्रासंगिक है ?
17. आज जमींदारी प्रथा तो नीं है पण उणरी ठौड़ दूजी अबखायां किसान रै साम्ही ऊभी है। अे अबखायां पुगावण वाळा कुण है ?
18. सेठिया जी री कविता पढणौ पाठक सारू किण तरै रो अनुभव है ?

10-9 ck/k loky

1. कविता मिनख रै हियै रो इमरत किण तरै है ?
2. 'रमणिये रा सोरठा' किण तरै रो काव्य है ?
3. 'रणिये रा सोरठा' रो काव्य प्रकार समझावण खातर इण इकाई में किण कवि री पोथी रो उदाहरण दियौ गयौ है ?
4. 'कोई कित्ते ई बडो कवि व्है जावै उणनै अभ्यास री दरकार हुवै।' – क्यूं ?
5. 'मींझर' काव्य संग्रै री वे पंक्तियां लिखो जकी संसार री नासवानता कांनी इसारो करै।
6. सेठिया जी रा सामाजिक सरोकार वां री किण रचना सूं सामी आवै ?
7. मातृभासा समझावौ रो प्रयोग नीं करण वाळा लोगां नै कवि किण सबदां में फटकार लगाई है?
8. 'आळस अर प्रमाद नै छोड़'र लक्ष्य सिद्धि सारू लगातार जतन करणो ही सफळता रो मूळ मंत्र है।' अै विचार कवि सेठिया जी री किण कविता में प्रगट व्हिया है ?
9. 'कुण जमीन रो धणी' कविता में किण विचार रो हवालो है ?
10. सेठिया जी आधुनिक राजस्थानी कविता री पैली पांत रा कवि क्यूं मानीजै ?
11. इण इकाई में सामिल कियोड़ी सेठिया जी री दोय कवितावां ('बटाऊ' अर 'कुण जमीन रो धणी') में सूं आपनै कुण सी कविता बेसी पसंद आवै अर क्यूं ?

10-10 dUgS;kyk lsfB;k jh mi;ksxh iksF;k

10-10-1 dfo jh jktLFkkuh jpukok

1. 'रमणिये रा सोरठा'
2. 'मींझर' (स्व. मुरलीधर सराफ स्मृति ग्रंथमाला, कोलकाता वि.सं. 2029)
3. 'गळगचिया' (स्व. मुरलीधर सराफ स्मृति ग्रंथमाला, कोलकाता वि.सं. 2029)
4. 'कूँ कूँ'
5. 'लीलटांस'
6. 'धर कूंचा धर मजलां'
7. 'मायड़ रो हेलो'
8. 'सबद'
9. 'सतवाणी' – (दिव्या प्रकाशन, सुजानगढ़ (राज.) वि.सं. 2044)
10. 'दीठ' – (प्रका. भालोटिरया प्रकाशन, 3 न्यू रोड़, अलीपुर–27, सन् 1988 ई.)
11. 'हेमाणी' – (डूंगरमल सुराणा सदर थाना, दिल्ली संवत् 2056 वि.)
12. 'कक्कौ कोड रो'
13. 'अघोरी काळ'
14. 'लीक लकोळिया'
15. 'नीयड़ो'

10-10-2 vuqokn

1. अनुवर्तन– सेठिया रै राजस्थानी काव्य संग्रहां सूं चुणियौड़ी कवितावां रो हिन्दी अनुवाद
   अनुवादक– डॉ. भगवतीलाल व्यास
   छपणिया– (पैली वार) अंकुर प्रकाशन, उदयपुर
   ,, – (दूजीवार) राजस्थानी परिषद्, कोलकाता 2007
2. सरस अरस – सेठिया जी री पोथी 'गळगचिया' रो हिन्दी अनुवाद 2008 ई. में छपी
   छापणिया – राजस्थानी परिषद्, कोलकाता
   अनुवादक – डॉ. भगवती लाल व्यास

10-10-3 nwth iksF;k

1. सेठिया समग्र भाग–1
   श्री कन्हैयालाल सेठिया रा हिन्दी ग्रंथों रो संग्रह
2. सेठिया समग्र भाग–2
   श्री कन्हैयालाल सेठिया रा राजस्थानी ग्रंथां रो संग्रह
3. सेठिया समग्र भाग–3
   श्री सेठिया जी रो दूजी भासावां में रचित साहित्य।
4. सेठिया समग्र भाग–4
   (अनुवाद खण्ड) सेठिया जी री रचनावां रा अंग्रेजी, हिन्दी आर बंगला भासावां मांय अनुवाद।
5. राजस्थानी भाषा और साहित्य – डॉ. मोतीलाल मेनारिया
6. राजस्थानी भाषा एवं साहित्य – डॉ. कल्याण सिंह शेखावत
7. राजस्थानी भाषा और साहित्य – डॉ. हीरालाल माहेश्वरी

bdkbl & 11

i`e[k dfo&j?kqjktflag gkMk

bdkbl jk eMk.k

11.0 उद्देस्य

11.1 प्रस्तावना

11.2 प्रस्तुति को रूप

11.4 राजस्थान अर राजस्थानी

11.5 राजस्थानी साहित्य

11.6 राजस्थानी साहित्य की विसेसता

11.7 आधुनिकता को सूत्रपात

11.8 आधुनिक साहित्य को रूप

11.9 राजस्थानी पद्य–साहित्य

11.10 कवि को कवि–कर्म

11.11 कवि रघुराजसिंह हाडा को अभिव्यक्ति पख (पक्ष)

11.12 आधुनिक राजस्थानी काव्य में रघुराजसिंह हाडा को योगदान

11.13 अभ्यास सवाल

11.14 संदर्भ ग्रन्थ

11-1 mn~nsL;

- ई इकाई का अध्ययन करवा सूँ राजस्थान अर राजस्थानी भासा की जाणकारी मिल सकैगी।
- राजस्थानी का जूना–पुराणा साहित्य को मर्म पिछाणबा की खिमता विकसित हो सकेगी।
- साहित्य में जनजीवन की धड़कन कस्याँ अपणो रूप प्रकट करै छै ईं का संकेत मिलेगा।
- साहित्य में आधुनिकता को रूप ढ़ळतो हुयो देख्यो जा सकेगो।
- गद्य अर पद्य को आँतरो राजस्थानी भासा में 'ज्यादा कोई न' ईं की पिछाण करी जा सकेगी।
- आधुनिक राजस्थानी पद्य साहित्य को विस्तार जाण्यो जा सकेगो।
- आधुनिक पद्य–रचनाकाराँ सूँ परिचय प्राप्त करयो जा सकै छै।
- राजस्थानी पद्य–रचनाकाराँ में, रघुराजसिंह हाडा की खास पिछाण देखी जा सकैगी।
- रघुराजसिंह हाडा का कवि–कर्म की झाँकी देखबा मई मिलैगी।
- रघुराजसिंह हाडा को राजस्थानी साहित्य नै योगदान स्पस्ट करयौ जा सकैगो।

11-2 iLrkouk

राजस्थान भारत–संघ को एक राज्य छै। यो ईं क्षेत्र (खेतर) में' आबा हाळी रियासंतौ ईं जोड़'र बणायो ग्यो छै। रियासतां जुड़ी तो वीं सूँ सम्बन्ध राखबा हाळा जनपद भी जुड़ गया। मोटा तौर पे राजस्थान में हाड़ौती, मेवाड़ी, मारवाड़ी, मेवाती, मेरवाड़ी, ढूँढाड़ी का क्षेत्र आवै छै। भरतपुर, धौलपुर अर करौली में,

'ब्रजभाषा' को प्रचलन छै। माळवी, बागड़ी, गौडवाड़ी, डाँगी (डाँग क्षेत्र की) राँगड़ी, पंजाबी, हरियाणवी का क्षेत्र भी राजस्थान का अंग छै। सर जार्ज ग्रियर्सन भारत को 'भाषा सर्वेक्षण' करा'र ई क्षेत्र क' विसय में' संकेत करया छै, क' हाड़ौती राजस्थान की बोल्याँ में, सबसूँ कम लोगां द्वारा बोली जावै छै। ईं को कारण यो छै कै हाड़ौती केन्द्राभिमुखी बोली छै; पर केन्द्र की हिन्दी भासा कै सबसूँ निकट की छै।

राजस्थान बणग्यो तो राजस्थान की सभी जनपदाँ की वाणी राजस्थानी भासा बणगी। ईं नातै सारी जनपदीय बोल्याँ को साहित्य राजस्थानी साहित्य कहीजबा लागग्यो।

एक भासा दूसरी सूँ नाळी (अलग) लागै छै क्रियापद सूँ अर सम्बन्ध प्रत्यय सूँ। पुराणी राजस्थानी में 'छ' क्रिया को प्रयोग होवै छो–जोधपुर–बीकानेर का साहित्य में भी ईं का उदाहरण मिल जावैगा। आज हाड़ौती अर ढूँढाड़ी में' तो 'छै' क्रिया का प्रयोग होबा लागग्यौ।

अस्या ही पूर्वी राजस्थान में 'छै' क्रिया को अर पस्चिमी राजस्थान में 'ह' क्रिया को प्रयोग होरयौ छै। हाड़ौती मँ' सम्बन्ध–प्रत्यय 'क' प्रयोग में आवै छै पण जोधपुर–बीकानेर में प्रयोग में' आबा हाळो सम्बन्ध प्रतयय 'र' छै। जन भासा में' अस्या नाळा–नाळा (अलग–अलग) प्रयोग मान्य होवै' छै।

हिन्दी में' 'ह' (है) क्रिया को प्रयोग हो रयौ छै, पण गुजराती, राजस्थानी (पूर्वी), हरियाणवी, नेवाड़ी, पहाड़ी, मैथिली, बंगला, असमिया मैं, 'छ' को ई प्रयोग होवै छै। हरियाणवी मै' 'छ' 'स' हो जावै' अर बंगला में आछैया 'आश्चै'। 'छ' अर 'ह' – दोन्यूँ ई क्रियापद संस्कृत की अस् धातु सूँ ई विकसित होया छै।

11-3 iLrfr dk :i

ई इकाई में' राजस्थानी साहित्य की चर्चा करी जावेगी। विसेस तौर सूँ आधुनिक राजस्थानी साहित्य की पद्य विधा पै प्रकास डाल्यौ जावेगो। ईं इकाई को रूप आस्यां समझयो जा सकेगो।

अ. राजस्थानी साहित्य

ब. आधुनिक राजस्थान गद्य साहित्य

स. आधुनिक राजस्थानी पद्य साहित्य

ईं ब्यौरा ईं पूठ भूमि बणा, र आधुनिक पद्य साहित्य में रघुराजसिंह हाडा को योगदान बतायौ जावेगो।

राजस्थानी में गद्य भी इतनो ई पुराणो छै' जतनो पद्य। संस्कृत परम्परा में, गद्य रचना करबो कवियाण का' लेख' की कसौटी मानी गी छै। या बात राजस्थानी क' कारण' भी कही जा सकै छै। राजस्थानी भासा में गद्य में' भी तुक मिलाबा का प्रयास करयाग्या छै। अस्याँ गद्य भी पद्य की भांत लुभावणो होग्यो। गद्य–पद्य में, ज्यादा अन्तर न रह्यौ।

सबद गूढ़बा अर जड़बा की बात करी जावै छै। राजस्थानी गद्य में सबद जड़बा की विसेसता पैदा होई। यूँ तो पद्य में' सबद जड़बा की सार्थकता ज्यादा नजर आई। एक कहणात छै–बोल अर टोळ जमाबा सूँ जमै। ईं को अर्थ यो ई छै क' जस्या टोळ ईं दीवार में' आछी तरह सूँ जमाणी पड़ै छै न तोऊ गुड़क जावेगो अर दीवार ढस (ढ़ह) जावेगी उस्याँ ईं पर को (बोल) भी समझ–बूझ'र प्रयोग करणो पड़ै छै। कवि रघुराजसिंह हाडा कस्याँ जुमाया ईं को अध्ययन करणो छै। श्री हांडा का काव्य को गहराई सूँ अध्ययन करबो भी ईं इकाई को उद्देस्य छै। ईं उद्देस्य की पूर्ति भी हो जावेगी।

11-4 jktLFkku vj jktLFkkuh

'राजस्थान' सबद को प्रयोग तो मध्यकालीन साहित्य में भी मलै छैः पण 'राजस्थान' नाम की एक संगठित राज्य संज्ञक इकाई को गठन तो 30 मार्च 1949 क' दिन होयो! ऊँ बगत कोटा, बूँदी, झालावाड़

अर टोंक ई ऊँ का अंग छा। फैर चित्तौड़, डूंगरपुर, कुसलगढ़ आदि रियासतां मिली। धीरे–धीरे जोधपुर, बीकानेर, जयपुर अर मत्स्यसंघ का राज्य भी सम्मिलित होगा। अजमेर सबसूं पाछै 1956 में राजस्थान में मिल्यो।

ई राजस्थान में जनपदीप बोल्याँ नाळी–नाळी (अलग–अलग) बोली जावै छी। हाड़ौती, मेवाड़ी, बागड़ी, मारवाड़ी, ढूँढाड़ी, मेरवाड़ी, माळवी, सेखावाटी, जसी बोल्याँ का नाम खास रूप सूं गिणाया जा सकै छै। यां सब बोल्यां का अपणोरूप सरूप छै। लहजो नाळो–नाळो छै। अठी करौली, भरतपुर में 'ब्रजभाषा' बोली जावै छै। गंगानगर में, पंजाबी बोलबा वाळा मिलेगा तो हरयाणा सूं सट्या हुया भू भाग में हरयाणवी को बोलबालो छै।

राजस्थान की यां जनपदीय बोल्यां मांय सूं कुछ में साहित्य–रचना भी होई। खासतौर सूं मारवाड़ी बोली में प्रचुर मात्रा में साहित्य रच्योग्यो। दूसरी जनपदीय बोल्यां में भी साहित्य–रचना तो होई, पण कम होई।

राजस्थान राज्य बण्या, क पाछै राजस्थानी भासा की जो पिछाण बणी वा राजस्थान की सब जनपदीय बोल्याँ सूँ ई बणी। राजस्थानी भासा का आधार पै बण्यो हुयो राज्य कोई न। हिन्दी का निर्माण अर विकास में राजस्थान को अवदान भुलायो न जा सकै। हिन्दी साहित्य को आदिकाल तो राजस्थानी साहित्य सूँ ई बण्यौ छै।

राजस्थानी भासा में' लोक अर क्लासीकल परम्परा को मिल्यो–जुल्यो रूप मलै छै। यूं कैवां तो अतिसयोक्ति न होगी क' राजस्थानी साहित्य तो लोक हरदां में सूं ई पैदा होयो छै। 'ढोला मारू रा दूहा' राजस्थानी भासा की पहली प्रामाणिक रचना छै। ऊ ई लोक सैली की रचना मानीगी।

अब तक आदिकाल की नरी सारी रचना प्रकास में आई छै। बे लोक–सैली की ही छै। लोग–बाग बडीबडी पोथ्यां ई कंठाग्र कर सुरक्षित राख सकै छै तो छोटी–छोटी जीवन सूं जुड़ी पद्य–बद्ध कहाणियां याद राखबा में कांई जावै छो ? वाँ ई भी कंठाग्र करली। पण आगै, चाल'र वां कहाणियां को उद्देस्य लुप्त होग्यो फगत कथा–तत्त्व ही बच्चो रहग्यौ।

लोक की कहाणियां उद्देस्य परक होवै छी। वा प्रथा आज भी चाल रही छै। कहाणिया को नायक राजा सूं सरू होवै क' दाणा मांगबा हाळा बामण सूं, जीवन में, विपदा का पहाड़ तो आ'र रस्ता रोकैगा ई। अन्त में' सध्यो होयो वाक्य आवेगो–जस्यां वां की विपदा अर कठिनाईयां टळी सबकी ई टहै अर सब आनन्द को लाभ लैवै। काई अबखाई नै आवै।

अस्या साहित्य ई लोगां नै–कंठाग्र कर'र राख्यो है। ई सूं आगै जा'र लिखबा की रूचि बढ़ेगी। लिख्योग्यो बो साहित्य तो बचग्यौ बाकी को रूप बदळतो चल्योग्यौ। राजस्थानी का यो सरूप पछाण्यो जा सकै' छ।

11-5 jkt LFkkuh lkfgR;

हिन्दी का आदिकाल अंर मध्यकाल का इतिहास को मुख्य आधार तो राजस्थान को साहित्य ई छै। राजस्थान में 'डिंगळ अर पिंगल में' साहित्य की रचना होई। पिंगल 'छन्द शास्त्र' पर आधारित ब्रहभासाबहुल सबदावली की रचना को नांव पड़यौ। पिंगल क' समानान्तर 'डिंगल सबद प्रयोग में' आयो जी ई कौई डींग मारबा की भासा समझी, तो कोई डांगरां की डकराबा जसी भासा समझी। एक सुधी चिन्तक मत स्थापित करयौ क' 'डिग–विहायसौ' धातु सूं बण्यो 'डींग' को अर्थ 'परिपुष्ट, समृद्ध' छै। पींग (पतळो) अर डींग (मोटो–सुदृढ़) तो समझ में 'आवै छै' पण डींग को अर्थ 'दिव्य, मन में' दिव्यल पैदा करबा हाळो' भी तो हो सकै छै।

राजस्थानी भासा में सबसूँ ज्यादा वीर अर श्रृंगार को वर्णन मिलै छै अर भगती को वर्णन भी छै। पण भगती को स्थायी भाव भी रति ही छै। ई लेखै भगती वर्णन भी श्रृंगार को ही रूप छै। राजस्थानी भासा को प्रमुख रस तो वीर छैः। रसराज श्रृंगार ऊं को अंग छै। वीररस को स्थायी भाव उत्साह सारी

सकारात्मक प्रवृत्तियाँ को जनक छै। दिव्यता का भाव भी वीर रस में ई जागै' छै। वीररस का सूदन जस्या कवि का मूँडा सूँ कड़वा छन्द सुण'र बेरयां का छक्का छूट जाबो करै'छा। सांच का रस्ता प' चालबा हाळा क' मन में' दिव्य भाव जगेगा ही।

11-6 jktLFkkuh lkfgR; dh fo l l rkok

पाछला एक हजार बरसाँ सूं राजस्थानी में लगातार साहित्य रचना हो रही छै। वर्तमान राजस्थान में' सम्मिलित सभी जनपदीय बोलियां में' साहित्य लिख्यौ जा रचौ छै। कोमल भावाँ की अभिव्यक्ति कोमलकान्त पदावली में' होई तो कठिन भावाँ की अभिव्यक्ति कठोर सैली में' होई।

'ढोला मारू रा दूहा' लोक सैली की रचना छै; अर 'वेलि क्रिसन रूक्मिणी री' जसी 'क्लासीकल' श्रेणी की रचना भी मिलै छै। संसार की सभी भासावां में' पद्य की रचना पैली होई; पण राजस्थानी में गद्य की रचना भी उतनी ही पुराणी छै, जतनी पद्य की।

राजस्थानी को रचनाकार जन–जीवन सूं जुड़यो होयो छो। ईं लेखे ऊँ की रचना में, जीवन को सत्य झांकै छै। जीवन सान्त छो। हड़बड़ी अर भागमभाग कोई न छी। ईं कारण नीरांत अर नचीताई सूं सोचबा अर मांडबा को मौको छो, जीं को लाभ रचनाकारां उठायो। कोई कमी न छोडी।

राजस्थान की भूमि वीरभूमि छै। कर्नल टॉड मांडी क' राजस्थान की चप्पा–चप्पा भूमि थर्मापॉली छै अर जूझबा हाळो वीर ल्योनीदास छौ। थर्मापोली की घाटी में' गिरिसंकट में, ल्योनीदास ईरान की लक्षाधिक सेना नै तब ताईं रोकी जद ताईं स्पार्टा की सेना सहायता' क' लेखै आ'र न पूगी। राजस्थान का रचनाकार धरती की वन्दना करी, धरती का पूत की वन्दना करी, रणवीरां को जस बखाण्यो अर वीरांगना की पूजा का गीत गाया।

अे काम ऊँचो संवेदनसील मिनख ई कर सकै छै। ऊँ जगत–पिता क' सामी झुकैगो भी। ऊँ का मन में' कृतज्ञता का भाव भगती की धारा बहाबो करै छै।

राजस्थानी को आदिकाल अर मध्यकाल को साहित्य वीरता, शृंगार अर नीति सूं भरयौ हुयौ छै। ऊँ में' तलवार की खनखनाहट भी छै अर वीणा की झंकार भी। नीति तो जीवन ऊँचा आदिर्सां की आड़ी ले जाबा को नाँव छै। नीति सम्बन्धी साहित्य की मात्रा कम कोई न, घणो रच्यो ग्यो।

चारण कवियां की परम्परा चाली। रासो ग्रन्थ रच्या गया, ज्यां में' चरित नायक का जस को गान करयौ गयो। गुणागार तो परमात्मा छै। ऊँ का एक–दो गुणाँ सूं ही भगतां अपणै' भीतर उतारया। ईं भांत गुणानुवाद की परम्परा चाली। देवतां को गुणानुवाद करबो तो आदमी का सुभाव में' छै; पण गोस्वामी तुल्सीदास जी मिनख का गुणानुवाद ईं पसन्द न' करै –

dhUg ikÑr tu x.kxkukA
flj /kfu fxjk ykfx iNrkukAA

चारण कवि अस्या भी होया ज्यां वीरां ईं माथो कटाबा क' लेखै प्रेरणा दी।

राजा चारण रचनाकारां को आदर करै छा अर वांको अनुसासन भी मानै छा। अे तो चावै' छा क' कोई बांकी कीर्तिकथा लिखै पण डरपै भी छा,क' रचनाकार वाँ का धर्म, कर्म, अर चरित्र की आलोचना भी कर सकै छा।

रचनाकार समाज की कमियां, कमजोरियां को तो चित्रण करै ई छो, मन माफक समाज बणाबा क' लेखै मारग बताबो भी करै छो। साहित्यरचनाकार अपना कर्म खातर पूरी तरह सूं पाबन्द छा।

भगती भाव में' रमै छा तो पूरा मनोयोग सूँ, देवी माता की मनुहार करै छा क' वा समाज ई सगती देवै अर सारा संकट दूर करै।

धर्म विरोधी सत्ता को विरोध करबा में' रचनाकार कदै ई पाछै' नीं रहयो भलाँ ईं सत्ताधारी स्वदेसी होवै क' परदेसी। पराधीनता सबसूँ बडो पाप छै–या बात रचनाकार का चित–मन में बसगी छी।

व्यक्ति सूं समाज न' टकरावै–या कोसिस रचनाकारां खूब करी। जद आ प्रवृत्ति कमजोर पड़ी तो व्यक्ति अर समाज की टकराहट सरू होगी। असी टकराहट सूँ कोई को भी हित कोई न।

11-7 vk/kfudrk & l : vkr

अधुना को अर्थ 'अबार' छै। आधुनिक को अर्थ होयो – अबार – ईं काळ खण्ड सूँ संबंधित। आधुनिकता ईं समै सूँ संबंधित होबा को भाव। काळ को प्रवाह तो अनन्त छै। ऊँ में वर्तमान का क्षण ईं पकड़बो बड़ो टेढो काम छै पण वर्तमान का क्षण ईं पकड़वा की चाह कर समझदार मिनख में' होवै छै।

भारत में' 'ईस्ट इंडिया कम्पनी' बौपार करवा आई अर राज करबा लागगी – आ नुई घटना हुई। देस अर समाज ईं ले'र सोचबा हाळा लोगां अँगरेजां ईं देस सूं बारै काढ़बा को प्रचार करयौं ईं सोच सूँ आधुनिकता को सूत्रपात होयो।

एक घटना और हुई – 1857 को सुतंत्रता संग्राम अंगरोजाँ खदेड़बा क' कारण ई होयो छो। वीर देसभगत अपणा प्राण गँवाया, पण सफळता न मिली। कतना ईं देसमगतां ईं सूळी पर टाँग दिया गया। लोगाँ में आवेस तो घणो छो; पण काँई भी न कर पाबा की निरासा भी छी ।

कालिदास की पोथी – 'अभिज्ञान शाकुन्तल' को जस्टिस सर विलियम जोन्स अँगरेजी में अनुवाद कर दियौ । ऊँई देख'र पस्चिम में' नुवो सोच जाग्यो तो भारत का सजग रचनाकार भी पस्चिमी साहित्य का सम्पर्क में' आया । हिन्दी भासा में' भारतेन्दु हरिश्चन्द्र तो 'भारतेन्दु मण्डल' बणा'र साहित्य की श्रीवृद्धि में' जुट गया । राजस्थान का रचनाकार भी नया सोच सूँ प्रभावित हो' र रचनाकर्म में' लागग्या। रचना का विसय बदल गया । भासा को रुप बदलग्यों अर सैली में' भी बदलाव आग्यो । जीवन सूँ जुड़ाव तो पैली सूँ ईं छो; पण नैतिकता ईं चुनौती देबा हाळा झंझावाताँ को चित्रण अपणै आप उभर'र सामनै आग्यौ।

11-8 vk/kfud lkfgR; dk :i

परिस्थितियाँ बदलबा सूँ रचनाकर्म की तासीर बदली । 1857 की विफल क्रान्ति क' पाछै रचनाकार अनुभव करयौ क' समाज अर ऊँ का सोच में' बदलाव लायाँ बिना देस की आजादी सुरक्षित न रह सकै। तो जींसूँ भारत एक अर भारतीय समाज एक अर अखण्ड बण्यौ रैवैं ईं विचार ईं एक जोरदार अभियान को रूप देबा क' लेखै साहित्य रचना होबा लागी – राजस्थानी को आधुनिक काल तो ईं लेखो–जोखो दीखै' छै ।

- आजादी की चाह छी – आजादी का तराना माँडया गया ।
- उत्तम समाज की चाह छी – भयमुक्त समाज की धारणा साहित्य में आयगी ।
- समाज में' कमजोरियाँ छी – वाँ पर तीखी निगाह डाली गई एक–एक कमजोरी ईं दूर भगाबा लेखै साहित्य में' प्रेरणा भर दी ।
- मिनख अर मिनख क' बीच की दूरी ईं दूर करबा को विचार साहित्य को विसय बणग्यौ ।
- राजस्थान में राजावां को राज छो । ऊँ व्यवस्था ईं बदलबा की तैयारी की सुरूआत साहित्य करी।
- नारी को समाज का विकास में' पूरी योगदान हो सकै ईं साध सूं नारी जागरण की आवाज साहित्य में' गूंजबा लागगी ।

- स्वामी दयानन्द सरस्वती अर विवेकानन्द की प्रेरणा अर महात्मा गांधी को उद्‌बोधा–आं नै नुवो भविस गढबा की ताकत दी अर कलम भी ।
- रास्ट्रवाद, अन्तररास्ट्रीय वाद की व्यापक दीठ साहित्य को विसय–विकार दूर करयौ ।
- वर्तमान क’ प्रति असंतोस अर नयो करवा की चाह पैदा होई ।

11-9 jktLFkkuh i|&lkfgR;

कड़रवा गीत गा’र युद्ध वीराँ चेताबा की रचनाकार की रचना परम्परा सूँ पुराणो परिचय छो। पद्य–बद्ध कविता में’ ऊँ ताकत को पूरो उपयोग करयो गयौ । नया युग की नयी चुनौतियां ईं स्वीकार कर’र राजस्थान का साहित्यकार युग धर्म निभायो ।

विदेसी सत्ता को बहिस्कार करयौ, स्वदेसी सासकां नै राजधर्म निभा क’ कारण’ मार्ग दिखायो, वां की चारित्रिक कमजोरयाँ उजागर करी, अत्याचार–अनाचाराँ को विरोध करयौ, समाज की रीत–नीत की परख करी – कुरीतियाँ ईं दूर करबा को जतन करयौ – जतन करवा हाळा आन्दोलनाँ को समर्थन करयौ, लोक की सगती जताई, मिनखचारा को महत्त्व समझयौ अर समझायो, मजहबी ढ़कोसलाँ को विरोध करयो। मिनख को दब्बूपणो न रूच्यो – बो जनजागरण पैदा करबा’में जुटयौ रचनाकार । नुवा जुग को वैतालिक बणबा में’ ऊँनै’ कोई कसर न छोडी ˙

मध्यकाल को पद्य–साहित्य सगती अर भगती का गीत गाबा क’ लेखै’ याद करयौ जावेगो। आज का युग को साहित्यकार ऊँकी सावचेती क’ लेखै अपणी पिछाण बणा पायौ। अपणी अर अपणा की कमजोरी बीं सूँ सहन न होई ।

आधुनिक साहित्यकारां में’ उदयराज ऊजळ साफ घोसणा करी क’ – ‘‘दीपै वाँ रो देस, ज्यारों साहित जगमगै।’’ अतनी बात ओर कही –

lkfgr fcuk lekt e] lkgl jg u lÙk A
lr&lkgl fcu lo`nk tho.k n[kh txÙk AA

किसान अर मजदूर साहित्य का विसय बण्या । वाँ का जीवन स्तर ईं उठाबा क’ लेखै साहित्य आवाज उठाई । महात्मा गांधी अछूतोच्दार आन्दोलन चलायौ । ऊँ की सफलता को दरसाव भी साहित्य में देख्यो जा सकै छै –

xk/kh ckFkk ?kkr] Åpk fd;k vNr u A
lr ÅtG ljlkr] Hkkjr jk e[k ekfu;k AA

आजादी की लड़ाई चाली जित्ते आजादी की मांग ई रचना को मुख्य विसय होबा करै छौ । आजादी मिलगी तो आजाद भारत का निर्माण का सुर साहित्य में गूंजबा लागग्या ।

कल्याण सिंह राजावत ईं चेतना का गीता रो ज्ञान करायो –

Egkj xhrk jh uoyh xhrk ckpk vc
e uoh Hkkouk NUn tkM dj Y;k;k g A

गजानन वर्मा मिनखाजूण को रूप बदलवा की बात करी। रूत बदली तो समाज में, मेहनतकस का जीवन में भी नुंवो बदलाव आणो चाहिजे –

:r vycyh
fnu vycyk
vkHkk cny jx cnGxh feu[kk t.k ijk.kh A

गणपतिचन्द्र भंडारी भी नुँवा जुग को स्वागत करवा की बात दोहराई –

jkt <Gh ijHkkrh xkrh uoh ftUnxh vko g
tkx tkx ekVh jk ekVh] ekVh Fku txko g
lrk er j vtk.k] cBk gk; tk fdlku dkGh jkr xb

आजादी मिल्याँ पाछै काळ भी पड़यौ। सहायता का नांव लेर घणी लूट माची। नन्द भारद्वाज चितराम खींच्यो छै –

Qj dkG iMX;k b.k eyd e
[kyX;k Q: Qehuk jk dkeA
teh u vkneh v.k[kko.kk ykx A
pkfxMn ilj;k
vy[k /kkjk jh ?ke?kj e
xEekMk xko
Egkj prr e pDdkjk ekj A

सोया होया सपनाँ ई पूरा करवा क' लेखे डॉ. मनोहर शर्मा पृथ्वी का पुत्र ईं जगाबा में कसर न छोड़ी–

cht ,d lk;k liuk jk
Nk;k e lku jk lr
cknG jh cnk ckyh & mB
tkx tkx fijFkh jk ir A

मिनख का मिनखपणाँ जगाबा क' लेखे' वां गीत मांडयो –

t.k t.k e prurk ilkj
lx.kk lk;k ;k x< rkj
xt.k ykx dj jl idkj
vEcj e pky vej jkx
r tkx tkx vk feu[k tkxA

अतना जागरण–गीतां क' बाद भी मिनख ई मर रयो छै। मिनखपणा क' बिना मिनख काँई को। सोसाण की चाकी चाल ई रही छै। उधारी का जाळ में' फंसग्या वाँकै' लेखे मरबो ई एक विकल्प र्‌हग्यौ । करसाण तो अन्नदाता होवै छै। देसभर में' हजारूँ करसा आत्महत्या कर ली। कोई क' दरद न होयो।

ईं स्थिति को कारण पूंजी को असमान बंटवारो छै। गरीबाँ की संख्या बढ़ र्‌ही छै। आ बात दूसरी छै क' करोड़पति बढ़ रिया छै।

मिनख चन्द्रलोक में पहुंच गयो। आसमान में' उड़ल्यो पण मिनख दूसरा मानवी नै पिछाणबो भूल ग्यो। अस्यां तो खाई बढ़ती ही जावैगी। विपदा बढती जारी छै, साता सूं रहवो ई भूल र्‌हया छै लोग।

मिनखनै जीवतो राखणो छै तो ऊँ ईं मिनखपणा का लक्खण सिखाणा पड़ैगा। ईं में घणा सारा लोग कार्यक्रम बणा'र आगै आ भी रिया छै।

यो काम करबा वाळी एक आवाज रघुराज सिंह हाडा की छै।

11-10 dfo j?kjkt fl g gkMk dk dfo&de

कवि रघुराजसिंह हाडा जस्यो अनुकरणीय जीवन अपणै लेखे' चुण्यौ–आदर्सां क' लेखे' समर्पित करयौ, ऊँ क' ई अनुरूप कविकर्म श्री निभायौ।

रघुराजसिंह मानै छै क' श्रेस्ठ मिनखपणा सूँ ई श्रेस्ठ समाज अर 'श्रेष्ठ राष्ट्र बणै' छै। ईं सूँ अपणै आप ईं 'श्रेष्ठ' बणाबो समाज अर 'राष्ट्रनिर्माण' को ही एक रूप छै। सारा सुधार अपणै आप सूँ सुरू होवै छै। एक 'कर्तव्यनिष्ठ' अर संवेदनसील मिनख को जीवन रघुराजसिंह हाडा को आदर्स रहयौ। ईं धारणा नै रघुराजसिंह' हाडा नै 'श्रेष्ठ' अध्यापक बणा दियौं। कवि का सुनागरिक अर सुसिक्षक का व्यक्तित्व नै ऊँ का कविक्रर्म की भूमिका बणाई। ईं सूँ बो हुंकार अर ललकार को कवि बणग्यौ।

साहित्य में' आधुनिक जुग चिन्तन अर निर्माण को छै। जे ईं छोड़ देवै तो गळकाट होड अर लूटखसोट को युग रह जावै छै। रघुराजसिंह हाडा मनुज ईं मिनख का रूप में' ऊभो देखबो चावै छै। ईं में' जो भी बाधा आवै या रूकावटां आवै, बांकी बिना परवाह करयां आगै बढ़ै अर साबित कर देवै क' ऊं मिनख ई छै – या सबसूं बडी कामना छै रघुराजसिंह हाडा की।

भारत तो वेदभूमि छै – देवभूमि छै। मिनखाजूण में' आग्यो, ऊँ क' लेखै तो वेद को सन्देस छै – उद्यानं ते नावयानम् अर्थात् हे मनुज। थानै ईं तो ऊपर ही उठणो छै, उन्नति ही करणी छै, नीचै की आडी–पतन का मार्ग पर न जाणो–उत्–ऊपर + यानम् – गति अर्थात् अधोगति को मार्ग न' अपगाणो।

'राष्ट्रकवि' मैथिलीशरण गुप्त कही छी – 'नर हो न निराश करो मन को,; रघुराजसिंह हाडा भी उस्यॉं ईं कही – मिनखपणो मत भूल।' कवि मिनख नै केन्द्र बणा'र चिन्तन करयौ। प्रकृति को ओ विराट् संसार अर मिनख अकेलो। ऊँ ई असी जिन्दगी जीणी छै क' ऊ प्रकृति को भी सिणगार करै अर मानवी भी लागै । कवि भाव को गीत गायो –

> pkyk Nr i* pky pkn.kh ih Y;k]
> vkl ikNk ekl ekQd] eu[k tekjk th Y;kA

दुनियॉं में अतना छल–छन्द, धोखाधड़ी, अविस्वास, अर डर है जका मिनख नै हंसबा न दे। बगत बगत की बात छै। प्रकृति सूँ ताकत ले'र हंसी–खुसी को जीवन जीबा को बगत आयौ है। कवि कैवै –

> pke:; Ny tkG fcNko* Mxj Mxj Mjiko
> eGdkck rk nj] mexk eu e b ej tko
> ;k lkik dk fo"k dnjr dk dky cfy;k dhY;k
> pkyk Nr i* pky pkn.kh ihY;kA

रघुराजसिंह हाडा नामी गीतकार छै। गीत हिन्दी में' भी मांडया अर हाडौती (राजस्थानी) में भी। देस का सगळा बडा सहरां में, वां गीता सूं' हलचल मचगी। सबको सुर नाळो–नाळो, सबकी धज नाळी–नाळी, कहबा को ढंग नाळो; पण सारा गीतां में' एक ही सोच–वो भी पांच हजार बरसां सूं सुण्यो जातो वेदव्यास को सुर बण्यौ – मनख सूं बढ़'र कोई भी कोई न –

> ^u ekuq"kkr J"Brj fg fdfprA**
> j?kjktfl g gkMk b gkMkrh {k= e* ink gkck
> okGk ^jk"V* dk igjknkj d ;k tk ldk N

कवि की हिन्दी कृतियां छै – 'बोलते पत्थर', 'हाड़ौती गरिमा', 'राजस्थान गौरव', मौसम और मन, शब्दों के स्वार्थ, वृक्षमित्र 'अनुताप कहानी संग्रह' अर 'रोटी और फूल' – एकांकी संग्रह छै। 'यदाकदा' निबन्ध संग्रह छै।

राजस्थानी भासा की पोथ्यां' छै – 'अणबाच्या आखर, 'घूघरा', हरबोलो, फूल केसूला फूल', 'हरदोल' म्हारो गाँव, भूतपट्टी छै; क्यूँ म्हां पढ़ाँ अर आभलखींवरा।

11.11 dfo dk vfHk0;fDr i{k

श्री रघुराजसिंह हाडा ज्यादातर गीत लिख्या छै। लोक सूँ ई धुन पकड़ी अर नुवा उपयोगी अर सार्थक सबद जड़ दिया। ज्याँ में' नाळा–नाळा पक्ष, नई सजधज क' साथ देख्या जा सकै छै।

गेयता रघुराजसिंह की रचना को मुख्य गुण छै । समै का प्रभाव सूं कवि मुक्त छंद' की कविता भी मांडी पण वांमें भी लय साधना छै। अस्यौ लागै छै' क असी कवितांण में भी गेयता खोजी जावै' तो कोई गलती न होवेगी। कवि समसामयिकता का प्रभाव सूं गजलाँ भी मांडी छै। दूसरा रचनाकारां क' लेखे कवि की या सफलता अनुकरणीय उदाहरण बणगी।

कवि गीतां की धुन लोक सूं ली। पुरसारथ का सुर क' लेखे' असी धुन चुणी अर करूणा का भाव ईं दरसाबा दूसरा प्रकार की धुन अपणाई। सीख देबा क' कारण' दूजै प्रकार की धुन। प्रकृति का सुन्दर चितराम खींचबा ताजगी जगाबा हाळी नाळी धुन।

जे एक धुन में, उसी ई बात दोहरा दी जावै' तो कविता में, समरसता आ जावैगी। कविता तो नांव ई नित्य नवीनता को छै –

''क्षणे क्षणे यन्नवतामुपैति तदैव रूपं रमणीयतायाः।'' रघुराजसिंह की कविता तो नित्यनवीनता की रसभरी छटां छै। पुनरावृति कठै भी न' होई। कवि की कविता अलग–अलग रसाँ मँ, रगी–पगी छै।

रघुराज सिंह हाडा एक–एक सबद–भावां अनुसार रच्यौ अर अनुभव में पच्यो होयो–प्रयोग में लियो छै। ईं सूँ भासा घणी सगतीवान बणगी। गांवां का रोजाना प्रयोग का छोछा सबदां में कवि की कविता नई भावदिया छै। ईं सूं कविता में नुंवो फुटरापो – नई चमक अर भावां ईं नुवा आयाम मिल गया।

11.12 vk/kfud jktLFkkuh dk0; b j?kjkt fl g gkMk dk ;kxnku

एक मिनख को ईं जगत् ईं कॉईं योगदान छै ? ईं सवाल को उत्तर घणो बडो भी होसकै छै अर घणो छोटो भी हो सकै छै । सबसूँ छोटो अर सटीक उत्तर यो छै। क' ऊ मिनख की नाईं लाग रयौ छै अथवा यो क' ऊ मिनख छै। मिनख बण जाबो, कस्याँ भी अर कोई सूँ भी कम योगदान कोई न। असीई बात कवि का बारा में कही जा सकै छै।

कवि रघुराजसिंह हाडा पाठक का मन में' आत्मविस्वास जगावै छै क' ऊ आदमी बण सकै छै। कवि गुरु का रूप में जिन्दगी जीवी, सिक्षक को धर्म आछी तरै सूँ पिछाण्यौ। सच्चो मिनखपणा को जीवन जियो भी अर कविता में ऊँ ईं आखरां ढ़ाळयौ भी।

कवि मधुरा गीताँ में' अपणी बात कही। मांडया ई न, जन–मंचाँ पर जा'कर सुणाया भी। आचार्य कविता में कान्ता सम्मत उपदेस मान्यौ छै। वेदमाता की भासा मातृसम्मित उपदेस की भासा छै। रघुराजसिंह हाडा की भासा सिक्षकसम्मित उपदेस की भासा छै। ऊ में' थोड़ा सा सबदां में, घणी सारी बात कहदी जावै छै। जतनी कही ऊँ सूँ ज्यादा खुद कर दिखा दी। रघुराजसिंह आदेस सूँ ज्यादा आदर्स में' विस्वास करै छै।

रघुराजसिंह हाडा राजस्थानी पद्य साहित्य नै ताकतवर सैली दी अर प्रभावसाली भासा भी। लोकजीवन सूं जुड़ाव होवा क' नातै कवि नै अपना रचनाकर्म में' कॉंई भी बाधा न' आई। सामान्य आदमी की समझ सूँ कवि परिचित छै। ऊँका अनुभव ऊ समझ सकै छो। ऊँ ई प्रकट करबा क' लेखे ऊँ को साहित्यिक रचनाकर्म में' कवि घणो कुसळता सूँ उपयोग करयौ छै। ऊँ में' कवि नै सफलता मिली।

राजस्थानी पद्य साहित्य नै कवि सरल, सरस अर प्रभावी भासा अर अछूता अनुभव दिया। नुंओ सोच दियो अर साधारण मिनख नै ओ बिस्वास दियोक' ऊ जनम सूं तो मिनख छै; पण सोच, समझ, आचरण अर व्यवहार सूँ भी मानव हो सकै' छै। जो जीवन–ऊँ ई उरण साधबा की जुगत बताई।

11-13 vH;kl loky

- राजस्थान अर राजस्थानी को सरूप समझावौ।
- राजस्थानी साहित्य की विसेसता बतावो।
- राजस्थानी पद्य साहित्य का वर्ण्यविसय की जाणकारी करावो।
- आधुनिकता को राजस्थानी साहित्य में' काँई सरूप है ?
- आधुनिक राजस्थानी पद्य – साहित्य नै रघुराजसिंह हाडा को काँई योगदान छै।
- रघुराजसिंह हाडा को कविकर्म कीं बात में दूसराण'क' लेखे अनुकरणीय बणग्यो ? लिखौ।
- रघुराजसिंह हाडा का अभिव्यक्ति कौसल की जाणकारी उदाहरणां सूं समझावो।

11-14 lanHkZ xzUFk

1. राजस्थानी भाषा और साहित्य – डॉ. मोतीलाल मेनारिया
2. राजस्थानी भाषा एवं साहित्य – डॉ. कल्याणसिंह शेखावत ।

इकाई – 12

प्रमुख कवि – मेघराज 'मुकुल'

इकाई री रूपरेखा

12.0 उद्देस्य

12.1 प्रस्तावना

12.2 मेघराज मुकुल : अेक ओळखाण

12.3 'उमंग' रा आखर

12.4 'अनुगूंज' रा सुर

12.5 मंच रा सबळ हस्ताक्षर

12.6 वीरांगनावां रौ विड़द

12.7 नूंवैपण रा हिमायती

12.8 इकाई रौ सार

12.9 अभ्यास सारू सवाल

12.10 महताऊ पोथ्यां

12.0 उद्देश्य

इण इकाई रौ खास उद्देस्य राजस्थानी अर हिन्दी रा सिरैनांव कवि स्व. मेघराज 'मुकुल' रै व्यक्तित्व अर कृतित्व सूं विद्यार्थियां नैं रूबरू करावणौ है। कवि–सम्मेलन रै मंच रा महारथी 'मुकुल' राजस्थानी में वीर अर श्रृंगार रस री कींअेक अैड़ी कवितावां सिरजी, जकी लोक में चावी होय'र काळजयी बणगी। ओजस्वी कवि मेघराज मुकुल कवि हुवण रै साथै–साथै सुरीला गीतकार ई हा। इण इकाई रै माध्यम सूं विद्यार्थी राजस्थानी अर हिन्दी रा कवि–गीतकार मेघराज 'मुकुल' रै गीतां–कवितावां रै काव्य–सौस्ठव, सौन्दर्य–चेतना अर उणमें अभिव्यक्त सांस्कृतिक अर मानवीय मूल्यां नैं भी सावळसर समझ सकैला। आंरै अलावा इण इकाई सूं विद्यार्थियां नैं स्व. मुकुल रै काव्य–कौसल बाबत कीं औरूं बातां री भी जाणकारी मिलैला। ज्यूंकै–

1. स्व. मेघराज मुकुल स्वातंत्र्यप्रेमी कवि हा अर उणां रौ घणखरौ साहित्य देस भगती सूं दीपतौ रैयौ है।
2. राजस्थानी रै सागै–सागै बांरौ हिंदी काव्य सिरजण ई सांगोपांग रैयौ है।
3. मेघराज मुकुल रै काव्य–सिरजण में राष्ट्रीय चेतना रा स्वर किण भांत उजागर हुया है।
4. मुकुलजी टाबरां सारू बाल–साहित्य ई रच्यौ है।

आं रै अलावा राजस्थानी काव्य–जगत में स्व. मेघराज मुकुल रौ कांई योगदान रैयौ है इणरी विरोळ भी इण पाठ में करीजी है।

12.1 प्रस्तावना

राजस्थानी भासा रौ गद्य साहित्य गजब रौ है, तो पद्य साहित्य ई आपरी निरवाळी पैठ राखै। राजस्थानी री प्राचीन काव्य–सैली 'डिंगळ' में काव्य–सिरजण री लूंठी अर सिमरध परम्परा रैयी है, तो आज री राजस्थानी कविता ई भारतीय साहित्य री किणी दूजी प्रांतीय भासावां में सिरज्योड़ी कवितावां रै सैंजोड़ राखी जाय सकै।

राजस्थान रा कवीसरां री ओजस्वी वाणी सूं निकळ्या कविता रा कळझळता अंगारा रूपी आखर अठै रा रांगड़ वीरां री रगां में रगत बणनै रम्या है। राजस्थानी भासा रै काव्य रौ अखूट खजानौ अणगिण रत्नां सूं भरयौ पड़यौ है। अगन झाळां सूं प्रज्वलित, माटी री महक सूं सुरभित अर भगती री मंदाकिनी सूं पावन अर जीवण–जोत सूं जगमग करतौ राजस्थानी रौ मध्यकालीन काव्य रातौ–मातौ है।

राजस्थानी साहित्य री वीरगाथा काळ री इण विरासत नैं आधुनिक राजस्थानी कवि नीं फगत अंवेर'र राखी बल्कै राजस्थानी भासा रै गौरव नैं थापित करण सारू ई सरावण जोग खैचळ करता रैया है। राजस्थानी साहित्य रै आधुनिक काळ री सरुआत मांय डिंगळ काव्य सूं प्रेरित होय'र अठै रा कवियां छेहला सासकां, सामंतां री बिड़द बांचता रैया, पण अंगरेजां रै आवण अर बांरी दमनकारी प्रवृत्तियां रै सागै–सागै देसी सासकां–सामंतां रा अत्याचार जुग–चारणां नैं नवबोध रा गीत गावण सारू प्रेरित करया। शंकरदान सामौर, बांकीदास, सूर्यमल्ल मिश्रण सरीखा क्रांतिचेता कवियां री कविता रै संखनाद सूं राजस्थानी रौ दिग्दिगंत गुंजायमान होयग्यौ। कवियां मांय नूंवौ चाव अर उछाव–उमाव छावण लाग्यौ।

सूर्यमल्ल मीसण सूं सरू होय'र आधुनिक राजस्थानी कविता आज काव्य रा नूंवा क्षितिजां नैं परस रैयी है। आजादी री अलख जगावणिया राजस्थानी कवियां मांय सूर्यमल्ल मीसण 'वीर सतसई', शंकरदान सामौर 'देस–दरपण' अर 'वखत रौ वायरौ' जैड़ी उम्दा काव्य–कृतियां रच'र उण बगत रा सासकां नैं इचरज में नांख दिया। राजस्थानी रा प्रख्यात कवि उदयराज उज्ज्वळ राष्ट्रपिता महात्मा गांधी सूं प्रभावित होय'र मोकळी सिरै रचनावां सिरजी अर वीर–रसावतार सूर्यमल्ल मीसण री परम्परा में इज नाथूसिंह महियारिया 'वीर सतसई' री रचना करी। ऊमरदान लाळस नैं राजस्थानी रौ पैलौ प्रगतिसील कवि मान्यौ जावै, परम्परागत काव्य–सैली सूं न्यारी निरवाळी सुधारवादी दीठ सूं सिरज्योड़ी लाळस री कवितावां मांय जन–जागरण रा सुर प्रमुख है। इणी'ज काळ रा कवि बावजी चतरसिंह रै काव्य मांय लोकोपकारी अध्यात्मवादी प्रवृत्ति रा दरसण होवै। क्रांतिकारी कवि केसरीसिंह बारहठ रा 'चेतावणी रा चूंगट्या' नैं वीर–रस री सिरै कृति कैयौ जावै। बिजौलिया आंदोलण रा प्रणेता क्रांतिचेता विजयसिंह 'पथिक' आंदोलनात्मक गतिविधियां नैं तो आपरै जीवण रौ अंग बणायो ई, साथै ई उणां जन–जागृति रा भावां सूं सराबोर सिरै गीतां री रचना पण करी। प्रगतिसील मूल्यां री थरपणा करण वाळा रचनाकारां मांय गणेसीलाल व्यास 'उस्ताद' रौ नांव सिरमौड़ है। 'उस्ताद' मानवता रा प्रबळ पखधर कवि हा। इणी भांत राजस्थानी गद्य मांय शिवचंद्र भरतिया रौ स्थान बो इज है, जकौ कै हिन्दी मांय भारतेंदु हरिश्चंद्र रौ है। आधुनिक राजस्थानी काव्य मांय प्रकृति–काव्य रौ सूत्रपात चन्द्रसिंह विरचित 'बादळी' सूं मान्यौ जावै। प्रकृति रै सुतंत्र आलंबन–चित्रण रै कारण आ कृति नीं फगत राजस्थानी बल्कै हिन्दी जगत मांय ई सांगोपांग ढंग सूं चरचित अर समादृत होयी। चन्द्रसिंहजी रै अलावा प्रकृति काव्य रै रूप मांय नानूराम संस्कर्ता री 'कळायण', सुमेरसिंह शेखावत री 'मेघमाळ' अर सूर्यशंकर पारीक रै 'धरती' काव्य री सिरजणा सरावण जोग है। राजस्थानी मांय नूंवी कविता रा मंडाण 1970 सूं मानीजै। इण दसक मांय राजस्थानी रा ख्यातनांव कवि कन्हैयालाल सेठिया, किशोर कल्पनाकांत, सत्यप्रकाश जोशी, नारायणसिंह भाटी आद अेक कांनी जठै छंदबद्ध कवितावां रै मार्फत ख्याति हासल करी, बठै ई दूजै सांमी सामयिक बदळावां सूं प्रेरित होय'र नवबोध री कवितावां नैं मुगत छंद में रच'र अभिव्यक्ति रै इण नूंवै रूप रौ श्रीगणेस कर्यौ।

इण काळ सूं पैलां मेघराज मुकुल, रेंवतदान चारण, गजानन वर्मा आद मंचीय कवितावां रै माध्यम सूं आपरी ओळखाण भारतभर में बणायी। इण इकाई रा कवि मेघराज मुकुल री सैनाणी कविता तो इत्ती लोकचावी होयी कै उणां नैं हिन्दी रै कवि–सम्मेलन में ई खास तौर सूं राजस्थानी री बानगी राखण सारू बुलाया जांवता।

12-2 dfo ifjp

आधुनिक राजस्थानी काव्य–जगत में मेघराज 'मुकुल' रौ नांव किणी परिचै रौ मोहताज नीं है। मेघराज

मुकुल रौ जलम चूरू मांय हुयौ। साहित्य कांनी उणां रौ बचपन सूं लगाव रैयौ। वांरी कविता 'सैनाणी' रौ जद पैली वेळा आकासवाणी सूं प्रसारण होयौ तो बै आखै राजस्थानी जगत रा पसंदीदा कवि बणग्या अर हिन्दी साहित्य जगत में ई उणां री इण कविता नैं घणी लोकप्रियता मिली।

'अलगोजो' में पैलै कवि रै रूप में प्रस्तुति देंवतां राजस्थानी साहित्यकार श्रीमंत कुमार व्यास लिख्यौ, ''प्रो. मुकुल राजस्थान रा बै अमर कवि है, जिका हिन्दुस्तान रै हरेक प्रान्त मांय आपरी कवितावां सूं राजस्थानी भासा रौ माथौ ऊंचौ उठायौ है, मुकुलजी री भारत–व्यापी लोकप्रियता रौ कारण बणी– इणां री राजस्थानी कविता 'सैनाणी'। इण कविता री तारीफ नीं फगत राजस्थान रा जननेता करी बल्कै भारत रा प्रधानमंत्री पंडित जवाहरलाल नेहरू अर समाजवादी नेता श्री जयप्रकाश नारायण पण करी। श्री मैथिलीशरण गुप्त री 'भारत भारती', स्व. सुभद्राजी चौहान री 'झांसी वाली रानी' री तरिया इणां री 'सैनाणी' रौ भी भारत री जनता कांनी सूं मोकळौ सुआगत होयौ। भावां री गंभीरता, भासा री मधुरता, कल्पना री स्वाभाविकता, व्यक्तित्व रौ आकर्सण अर सैली रौ नाटकीय ढंग, आं सगळी बातां रौ मेळ मुकुलजी में मिलै। इणी खातर मुकुलजी, प्रसिद्धि मांय हिन्दी रै किणी चोटी रै कवि सूं लारै नीं रैया। 'सैनाणी' रा कवि पुराणी परम्परा रा गीत ई नीं लिख्या, बल्कै जनजीवण नैं आगै बधावण वाळै साहित्य रै निरमाण मांय भी जबरौ योगदान दियौ। वास्तव में मुकुलजी जनकवि अर लोकगायक हा।

मेघराज मुकुल री कवितावां में जित्तौ दमखम हो, बित्तौ ई बांरौ कंठ सुरीलौ हो। बै इण कविता नैं भी तरन्नुम में गाया करता। आपरै पैलै कविता संग्रै 'उमंग' मांय मेघराज मुकुल लिख्यौ है, ''कविता अर संगीत म्हारै जलम रा साथी रैया है।'' इण भांत आपां देखां कै कविता रा कणूका अर संगीत रा सुर जिणां री रग–रग में रम्योड़ा हुवै उण कवि रै काव्य–कौसल में किण बात री कमी होय सकै। मेघराज मुकुल जद भी कवि–सम्मेलन रै मंच माथै आपरौ कविता–पाठ करता तो बांरी ओजस्वी वाणी सूं श्रोतावां रा रूं–रूं वीर रस सूं भरीजनै ऊभा होय जावता। वीर रस रौ इण भांत श्रोतावां में संचरण करणिया मुकुल राजस्थानी री चारण काव्य परम्परा री याद दिरावै। हालांकै बांरी कवितावां में चारण–सैली देखण नैं नीं मिलै, पण देस माथै होंवता हमलां, अंदरूणी अत्याचारां नैं आपरी कवितावां में अभिव्यक्ति देय'र बै जनकवि रै रूप में आपरी अलायदी पिछाण बणायली ही।

मुकुल हिन्दी अर राजस्थानी दोनूं ई भासावां में समरूप सिरजण करया करता। औ इज कारण है कै बांनैं राजस्थानी रै साथै–साथै हिन्दी कवि–सम्मेलन रै मंचां माथै ई आपरी काव्य प्रतिभा दिखावण रा बराबर अवसर मिलता रैया। मुकुल रै पैलै कविता संग्रै ''उमंग'' मांय भी उणां री हिन्दी अर राजस्थानी दोनूं कवितावां भेळीज्योड़ी है। हिन्दी कवितावां मांय 'भारत वंदना', 'जन–जन जाग रहा है' आद कवितावां रास्ट्रीय चेतना अर देसभगती सूं दीपती है। कीं कवितावां प्रगतिसील काव्य रै सैंजोड़ लखावै। आपरी हिन्दी कवितावां मांय ई राजस्थानी रा आंचळिक सबदां रौ प्रयोग देखण नैं मिलै।

मेघराज मुकुल रौ दूजौ कविता–संग्रै 'अनुगूंज' नांव सूं छप्यौ। इण मांय उणां री 41 कवितावां छप्योड़ी है अर घणखरी कवितावां भारत रै पड़ौसी देस चीन अर पाक रा नापाक इरादां नैं उद्घाटित करण वाळी है। औ कविता–संग्रै जिण बगत छपियौ उण बगत चीन अर पाकिस्तान भारत रा विरोधी मुल्क बणग्या हा। इण संग्रै री घणकरी कवितावां में चीन नैं चेतावणी दिरीजी है।

मुकुल री केई कवितावां दैनिक 'राष्ट्रदूत', 'दैनिक लोकमत', साप्ताहिक 'वर्तमान', 'हरावळ', जागतीजोत', 'माणक' आद पत्र–पत्रिकावां में ई प्रकासित हुई है। मेघराज मुकुल मूळ रूप सूं मंच रा कवि हा, इणी वास्तै उणां री कवितावां में ओज है अर गीतां में माधुर्य। आपरी राजस्थानी कवितावां 'सैनाणी', 'कोडमदे' अर 'लोरी' नैं तो राजस्थानी साहित्य जगत भुलाय ई नीं सकै।

12-3 mex

मेघराज मुकुल रौ पैलौ काव्य–संग्रै 'उमंग' हिन्दी अर राजस्थानी कवितावां रौ सिरोळौ संग्रै है। इणमें देसभगती सूं दीपती कवितावां रै अलावा कीं कवितावां में प्रगतिसील विचारधारा ई है। आप मूळदान

देपावत (मनुज) री भांत विप्लवी कवि लखावै। कवि रौ मुख्य सुर बगावत रौ है। आ बगावत धरम रै नांव माथै बधतै अंधविस्वासां सूं अर साथै ई समाज में व्याप्त सामंतसाही व्यवस्था सूं भी है। समाज रै गरीब तबकै सूं कवि री सहानुभूति है, तो भगवान रै पेटै कवि री नास्तिकता सांमी झळकै। बै देवतावां नैं आदर्स रूप में स्वीकार जरूर करै, पण भगवान री तरफ सूं सहायता अर सैयोग में बांरो विस्वास कोनी–

आज कितने देव जिनको मनुजता स्वीकार है?
मैं नया मानव जिसे देवत्व से इनकार है।

(उमंग, पृष्ठ 6)

इणी भांत सोसित जन री अबखायां रौ चित्रण करता थकां कवि उणरी आवाज नैं बुलंद करणी चावै। राजस्थानी में इण भांत री मोकळी कवितावां लिखीजी है, जिणमें मंच रा चावा ठावा कवि मनुज देपावत, रेंवतदान चारण, करणीदान बारहठ अर रघुराजसिंह हाडा आद रा नांव सहजां गिणाया जाय सकै। मेघराज मुकुल ई आपरी उमंग कविता पोथी में एक हिन्दी कविता री सरूआत इण भांत करी है–

नंगी पड़ी धरा थी पहले, भूख स्वयं अब नंगी है।
मां की छाती से चिपटे, शिशु को जीने की तंगी है।।

(उमंग, पृष्ठ 5)

इण भांत इण काव्य–संग्रै री घणकरी कवितावां में दबयौड़ा जन री बात नैं कवि जोरदार ढंग सूं उठाई है अर सामंतसाही व्यवस्था नैं मिटावण री जरूरत बताई है। मुकुल री कवितावां रौ मूळ उद्देस्य अेक अैड़ै समाज री व्यवस्था लावण सूं है, जिणमें अमीर–गरीब जैड़ी परिभासावां ई नीं लाधै अर उण समाज में समरसता देखण नैं मिळै, पण आज स्थिति उलटी है। गरीब और ज्यादा गरीब होंवतो जा रैयो है अर अमीर ओर ज्यादा अमीर। अैड़ी स्थिति में कवि रा आखर आग उगळणा सुभाविक है।

मेघराज मुकुल हिन्दी अर राजस्थानी दोनूं भासावां में लिखता रैया। इण संग्रै में वांरी दोनूं भासावां री कवितावां संकलित है। राजस्थानी री लोकप्रिय कविता 'सैनाणी' भी इणी संग्रै में छप्योड़ी है। कवि रौ पैलौ संग्रै हुवण रै कारण इणरौ नांव भी 'उमंग' सटीक लखावै।

12-4 ^vuxwt* jk lj

'अनुगूंज' मेघराज मुकुल रौ दूजौ कविता–संग्रै है। औ काव्य–संग्रै सन् 1967 में छप्यौ, जिणमें उणां री 41 कवितावां है। इण संग्रै री घणखरी कवितावां में पाड़ोसी देस चीन री चालबाजी रौ सांगोपांग विरोध करीज्यौ है। क्यूंकै उण बगत चीन भारत माथै हमलौ कर्‌यौ हो।

कवि आपरै इण काव्य–संग्रै में आपरी बात 'शक्ति के क्षणों का सृजन' नाम सूं राखतां थकां लिख्यौ है–

''अनुगूंज कविता संग्रह शक्ति के क्षणों का सृजन है, जिसमें देश की भावनाएं एकरस होकर व्यक्त हुई हैं। अधिकांश कविताएं सन् 1963 की हैं, जब आततायी ने इस पावन भूमि पर अपनी कुदृष्टि डाली थी।''

इण कविता संग्रै री कवितावां पढियां पछै मेघराज मुकुल रै रास्ट्रप्रेम री दृढ़ भावना उजागर हुवै।

12-5 ep jk lcG gLrk{kj

मेघराज मुकुल आपरै बगत रा अैड़ा जबरा लिखारा हा कै उणां री जोड़ रौ दूजौ मिलणौ घणौ दौरौ हौ। सन् 1945 सूं लेय'र 1960 तांई कविता रै क्षेत्र में अेकछत्र राज हो। 1945 रै दीनाजपुर सम्मेलन सूं आपरी मंच री जातरा सरू होई। जठै आपनैं अथाग हेत मिळियौ। आपरी कवितावां री बार–बार मांग अर मांग पूरी होवण पर ताळियां री गड़गड़ाहट आपरै खातर जनमानस में हेत–हिंवळास नैं दरसावै। जद मांझळ रात नैं आपरा मिसरी जैड़ा मधरा गीतां माथै सुणण वाळा नाचण लाग जावता तद उण दरसाव नैं देखण सारू दूजा कवि तरसता। मुकुलजी जद ई मंच माथै आवता तौ खासा ताळ तांई ताळियां इण आस में बाजती रैवती कै उणां रौ काव्यपाठ श्रोतावां नैं बेगौ ई सुणण नैं मिळसी। जद आप काव्य–रस बिखेरता

तौ उणनैं भेळौ करणै वाळां री कोई कमी नीं रैवती। आपरै गळै रै मिठास सूं लोग बेगा ही तिरपत कोनी होवता। आपरी रचनावां लोगां रै हिरदै मांय बसियोड़ी ही। मंच माथै आवतां ई लोगां री फरमाइसां सरू होवती जकी खतम होवण रौ नांव ई कोनी लेवती। मुकुलजी री मूरत स्रोतावां री आंख्यां में ई नीं बल्कै उणां रै काळजै में बसियोड़ी ही। मंच माथै मुकुलजी खातर स्रोतावां रौ औ अथाग स्नेह, आपरी वाणी सूं लोगां रौ लगाव अर मंच माथै आपरी जबरी मांग नैं देख'र उण बगत रा केई कवि मांय रा मांय जळता, केई ईसकौ करता अर केई बिना बात री गिंध फैलाय'र वांनैं भांडता रैवता। पण मुकुलजी आपरै स्रोतावां रै हेत नैं देख'र आं फालतू बातां माथै दर ई ध्यान नीं देंवता।

बगत रै सागै बदळनै रौ सुभाव मुकुलजी री खास कला ही। आपरै जीवनकाळ में कविता जितरा मोड़ अर पड़ाव लिया, मुकुलजी उण सूं हमेस दो पांवडा आगै ई रैया। आप गजल हुवै चावै छंदबद्ध कविता, चावै मुगत छंद हुवै, बैलैड हुवै, चावै नूंवा गीत, आप सदीव ताजा सूं ताजा बिम्बां अर उपमानां रौ प्रयोग करता हा। आप राजस्थानी रै सागै हिन्दी अर अंग्रेजी में भी रचनावां करी। आप कविता रै सागै नाटक, रेडियो रूपक अर ओपेरा लिखिया। आकासवाणी अर दूरदरसण में लगोलग कार्यक्रम दिया। आप देस–विदेस में जात्रावां कर'र आपांरी संस्कृति नैं घणी ऊंची ठौड़ दिराई अर आखी उमर साहित्य री जोत जगाई राखी।

मेघराज 'मुकुल' रौ मंच माथै काव्यपाठ करणौ राजस्थानी कविता रौ आधुनिक दौर रौ मंच माथै चौड़ै–धाड़ै जलम होवणौ मान्यौ जावै। फेर तौ राजस्थानी रै इण कवि–गायक री घर–घर, सम्मेलन–सम्मेलन चरचा चाल पड़ी। मान–मनवार, आव–आदर, काव्यपाठ करणै सारू न्यूंता अर आपरै खातर अणछक हेत, घणै रूपां मांय मिलण लाग्यौ। मंच माथै मुकुल री ख्यात सूं दूजा कवियां नैं जलण होवण लागी, पण मुकुल नैं मंच माथै काव्यपाठ करतां देख'र वै लोग पसीना–पसीना होय जांवता।

प्रो. मेघराज मुकुल राजस्थानी में थोड़ौ लिखियौ, पण जकी रचनावां करी वांरी मरोड़ अर मठोठ देखण जोग है। वां री सगळा सूं सिरै अर काळजयी रचना 'सैनाणी' मानीजै। इण कविता में अेक वीरांगना रै वीरत्व नैं घणै मार्मिक ढंग सूं प्रगट करीज्यौ है।

'सैनाणी' री सरुआत सिणगार रस सूं करी है, पण इण कविता रौ अंगीरस 'वीर' रस ई है। वीर अर सिणगार रै सागै रौद्र, भयानक अर वीभत्स रस ई इण कविता में देखण नैं मिळै। आ अेक ई कविता कवि मेघराज मुकुल नैं कवि–सम्मेलन रा मंचां रा सिरमौड़ बणा दिया। रस रै मुजब ई हाव–भाव रै सागै पाठ करण सूं 'सैनाणी' स्रोतावां रै मन–मगज में आपरी अमिट छाप छोड़ जांवती।

राजस्थानी कवियां री कवितावां अर गीतां रौ 1953 में छप्यौ संकलन 'अलगोजो' रा सम्पादक स्रीमंत कुमार व्यास चावा कवि प्रो. मुकुल रो परिचै देंवता थकां लिखै, ''श्री मैथिलीशरण गुप्त री 'भारत–भारती' अर सुभद्रा कुमारी चौहान री 'झांसी वाली रानी' री भान्त मेघराज मुकुल री 'सैनाणी' रौ भी भारत री जनता द्वारा मोकळौ स्वागत हुयौ है। भावां री गंभीरता, भासा री मधुरता, कल्पना री सगळी बातां रौ मेळ मुकुलजी में मिळै है। इणी खातर मुकुलजी प्रसिद्धि में हिन्दी रै किणी ई कवि सूं लारै नीं रैय सक्या।''

12-6 ohjkxukok jk foMn

जिण बगत देस री आजादी री लड़ाई अेक मोड़ माथै पूगगी ही, च्यारूंमेर जोसीला भासण सुणण नैं मिळता हा अर वो जुग गांधी, नेहरू, पटेल आद राजनेतावां रौ जुग हौ। रास्ट्रीय आंदोलन रै इण जुग मांय हजारूं लोग जेळ री जातनावां भुगत रैया हा। करो या मरौ री त्यारी होयगी ही। 'अंग्रेजों भारत छोड़ो' रौ बिगुल बाज चुक्यौ हो। उण बगत दिनाजपुर रै हिन्दी कवि सम्मेलन में सगळा कवियां नैं अेक दियै रौ रूप देय'र खुद सूरज रै ज्यूं कवि मेघराज मुकुल दमकण लाग्या। आपरै कंठ री ताकत सूं राजस्थानी वीरांगनावां री विड़द गाय'र आप सगळा स्रोतावां नैं आपरै कांनी देखण नैं मजबूर कर दियौ। वीरांगनावां खातर आपरै मन में आदर–भाव ई हौ जिणरै कारण आप 'सैनाणी', 'कोडमदे' अर 'चंवरी' जैड़ी कवितावां रौ सिरजण कर'र वांनैं मंच माथै जस दिरायौ।

^luk.kh* रौ कथानक कोई नूंवी बात नीं है। जूनी अर अैतिहासिक घटना पर आधारित इण कथानक रौ प्रयोग राजस्थानी कवि करता रैया है। स्व. कन्हैयालाल सेठिया री कविता 'धरती गोरा धोरां री' में भी इण वीरता नैं बखाणीजी है– ''चूंडावत मांगी सैनाणी, सिर काट दे दियो क्षत्राणी।'' बस, काव्य री इणी दो ओळ्यां पर टिक्योड़ी 'सैनाणी' कविता में कवि इण घटना नैं जीवंत बणाय दी है। कविता री सरुआत में वीरांगना हाडी राणी रै सिणगार रौ वरणाव कवि कर्‌यौ है–

सैनांण पड़्यौ हथळेवै रौ,
हिंगळू माथै पर दमकै ही।
रखड़ी फेरां री आंण लियां,
गमगमाट करती गमकै ही।।

जद हाडी राणी नववधू रै रूप में सिणगार कर'र सुहागरात नैं आपरै रंगम्हैलां में पूगै तौ उणनैं सहनाई री ठौड़ अेकाअेक जुद्ध रौ संखनाद सुणीजै। राणी जद आपरै चूंडावत सरदार सागै आलिंगनबद्ध हुवण लागै उणी बगत जुद्ध रौ औ संखनाद उणनैं सकपकाय देवै अर वा झिझक'र उठ बैठी हुवै। चूंडावत ई गतागम में पज जावै। आपरी दोघाचिंती दरसावतौ वो जुद्ध री बजाय प्रेमालाप रौ पख खांचै–

रजपूती मूं पीळौ पड़ग्यौ,
बोल्यौ– रण में नहीं जाऊंला।
राणी थांरी पलकां सहला,
मैं गीत हेत रा गाऊंला।।

प्रेम–पास अर मोहजाळ में उळझ्योड़ै धणी री कायरतापूर्ण मनसा नैं जाण'र चूंडावत राणी रै झाळ उठ जावै। उणनैं आ बात अंगैई बरदास्त नीं है कै म्हारै कारण म्हारौ सायबौ आपरै कर्तव्य नैं बिसर जावै अर मेवाड़ री आन–बान अर सान नैं भूल जावै। वा उणमें वीरत्व रा भाव जगावण री कोसिस करती थकी कैवै–

बोली रजपूतण नाथ आज थे,
मती पधारौ रण मांही।
तलवार बताद्यौ मैं जासूं,
थे चूड़ी पैर रहौ घर मांही।।
कह कूद पड़ी झट सेज त्याग,
नैणां सूं अगनी भभक उठी।
चंडी रौ रूप बण्यौ छिण में,
विकराळ भवानी घमक उठी।।

इण भांत अेक वीरांगना री भावना नैं मुकुलजी घणै फुटरापै सागै उकेरी है। आपरै पीहर अर सासरै दोनूं पखां माथै कळंक नीं लागै इण सारू आ वीरांगना आपरा अरमान खतम कर'र आपरी वीर परम्परा नैं निभाई है–

बोली आ बात जचै कोनी
पति नैं चाऊं मैं मरवाणौ।
पति म्हारौ कोमल कूंपळ सो,
फूलां सो छिण में मुरझाणौ।।

राणी व्यंग्य वचन बोलती थकी कैवै–म्हैं रण में भेज'र म्हारै धणी नैं मरवाणौ कोनी चाऊं क्यूंकै म्हारौ सायब कूंपळ सो कंवळौ है, कठैई मुरझाय नीं जावै, इण वास्तै म्हनैं इज रण में जावणौ पड़सी। जद चूंडावत सरदार रै बात समझ में आई तौ सज–धज'र घोड़ी माथै बैठ'र जुद्ध सारू रवाना हुयौ। अेक वीरांगना री भावना नैं कवि घणी चतराई सूं साम्हीं राखी है। नारी मन री भावना नैं समझ'र कवि लिखै–

पैलां राणी नैं हरख हुयौ–
पण फेर जान–सी निकळ गई।
काळजियौ मुंह कांनी आयौ,
डब–डब आंखड़ियां पथर गई।।

झरोखै सूं निहारती हाडी राणी रा नैण जद चूंडावत रै नैण सूं मिळिया तद चूंडावत सरदार रौ मन डिगण लाग्यौ। चूंडावत आपरै सेवक नैं सैनाणी मंगावण सारू मै'ल मांय भेज्यौ। राणी समझगी कै सरदार रौ मन हाल तांई उण में ही अटक्योड़ौ है, वो कांई रणखेत लड़ैला। वा गरजती थकी सेवक सूं कैयौ, ''कह दे कै राणी मरगी।'' पण अेक खिण सेवक नैं रोक'र पाछौ कैयौ–

फिर कह्यौ– ठैर लै सैनाणी,
कह झपट खड़ग खींच्यौ भारी।
सिर कट्यौ हाथ में उछळ पड़्यौ,
सेवक भाग्यौ लै सैनाणी।।

इण तरै आपरै हाथां सूं, आपरै खांडै सूं आपरै सीस कमळ नैं छेद'र सेवक नै 'सैनाणी' रै रूप में देय हाडी राणी अमर होयगी। सरदार सैनाणी देख'र बोल्यौ–

थे सुभ सैनाणी दी राणी,
है धन्य धन्य तूं छत्राणी।
मैं भूल चुक्यो हो रण पथ नैं,
तूं भलो पाठ दीनौ राणी।।

हाड़ी राणी रै मुंड नैं गळै मांय माळा रै रूप में पै'र महादेव रै ज्यूं चूंडावत सरदार रणखेतर मांय तांडव कर्यौ। बैर्‌यां मांय हाहाकार मचग्यौ। चूंडावत सरदार नैं जुद्ध मांय विजयस्री मिळी।

आ कथा सामंतकालीन वीरता री कथा है। आपरै धणी नैं रणखेत मांय जाय'र जुद्ध लड़णै री प्रेरणा देवण वाळी अेक नूंवी परणेतण राणी रौ बळिदान इण कविता में उजागर होवै। आपरै संजोयोड़ा सुपना नैं अेक खिण में ही खतम करणौ वीरांगना रै इज वस री बात है। आपरै देस अर परिवार रै स्वाभिमान सांमी अै सुपना तुच्छ लाग्या। वा आपरौ बळिदान देय'र आपरौ नांव इतिहास में सोनै रै आखरां सूं लिख दियौ।

जद दिनाजपुर रै कवि सम्मेलन मांय देव–पुरुस जैड़ौ मिनख बिना नाज–नखरां रै आ कविता गाई तौ जनता में सरणाटौ छायग्यौ। कविता खतम होवतां ई गड़गड़ाहट अैड़ी सरू हुई मानौ खतम होवण रौ नांव ई कोनी लेवती। मिनख री मेदनी जाणै सुध–बुध खो बैठी। इण कविता रौ अैड़ौ प्रभाव हुयौ कै स्कूल–कॉलेजां री छोर्‌यां, बहू–बेट्यां, आपरी साड़ी री कोर फाड़'र मुकुल रै राखी बांधण लागी। रेलगाड़ी में जातरा करता लोगां नैं पतौ लाग जावतौ कै इण गाड़ी में मुकुल है तौ बै रेलगाड़ी रोक'र कवि नैं उतार लेवता अर आपरै नगर में ले जाय'र ई मानता। अेक वीरांगना री पद्य कथा रौ अैड़ौ प्रभाव जनमानस माथै पड़्यौ कै मिनख–लुगायां मांय चेतना आई अर बै आजादी री लड़ाई रै मांय कूद पड़्या।

मुकुलजी आपरी कविता ^poj॥* मांय लोकदेवता पाबूजी राठौड़ रै ब्याव री बगत वाहर चढण अर वांरी नूंवी परणेतण सोढी राणी रै मनोभावां रौ मार्मिक चित्रण कर्यौ है। कविता री सरुआत में इज ब्याह सूं पैली अेक वीरांगना री मनःस्थिति रौ स्वाभाविक रूप सूं चित्रण कवि कर्यौ है–

मन में आसा री जोत जगी,
नैणां में रूप कंवारौ हो।
हिवड़ै में सुपनौ मुळकै हो,
सुपनै में प्रीतम प्यारौ हो।।

नारी रै मन री भावना नैं कवि मुकुल इतरी सरलता सूं प्रस्तुत करी है कै पढण वाळां नैं इमरत घोळ

मिळै। आपरै पति सूं मिलण रै चाव नैं कवि घणै फुटरापै सूं सांमी राख्यौ है–

हिंगळू में लाज लिपट बैठी,
नैणां में काजळ सरमायौ।
बैणां में घुळग्या मधुर गीत,
जद पाबू तोरण पर आयौ।।

पण जद चाणचक चंवरी री बगत चारणी देवळदे आई तो जाणै तूफान आयग्यौ। औ तूफान बणी–बणाई गिरस्थी नैं बसण सूं पैली ई उजाड़ दियौ–

कइयां बोलै कुळवधू आज
कइयां बोलै अणबसी नार।
कइयां बोलै चुड़लौ सुहाग,
कइयां बोलै अधखिल्यौ प्यार।।
आंसू में भीज्यौ घूंघटियौ,
मैंदी फीकी दीखण लागी।
चंवरी में धुंऔ घुटण लाग्यौ,
जद आग काळजै तक लागी।।

इण तरै अेक घायल हिरणी रै ज्यूं सोढ़ी राणी तड़फण लागी। पाबू रै सांमी हाथ ऊंचा कर दिया। पण फरज आडौ आयौ। राणी पाबू नैं फरज सूं मुख मोड़ण दियौ कोनी। वा अेक वीरांगना रै ज्यूं पाबू नैं जुद्ध सारू भेज दियौ। चंवरी रा फेरा अधूरा रैयग्या–

धरती री प्रीत कंवारी है,
फेरा भी पड़्या अधूरा है।
पर अमर प्रीत रै नैणां में,
चंवरी रा सुपना पूरा है।।

आपरै पति नैं धरम निभावण सूं नीं रोक'र सोढ़ी अमर सुहागण बण जावै। मेघराज मुकुल इण पद्य कथा नैं इतरी मार्मिकता सूं प्रस्तुत करी है जिणसूं नारी नैं समाज मांय ऊंची ठौड़ मिळै।

'सैनाणी' अर 'चंवरी' रै पछै ^dkMen* मुकुलजी री अेक लूंठी नै सबळ रचना है। जद सार्दुल आपरी परणेतण कोडमदे नैं विदा कर घरै लावै तो दोन्यूं रै हिवड़ै रा मीठा सुपनां नैं कवि घणी सरसता सूं प्रस्तुत कर्‌या है। संयोग सिणगार री आ बानगी देखण जोग है–

दो नैण लाज सूं भीज रया,
दो रूप तृस्णा सूं खीझ रया।
दोन्यूं रा सपनां जाग रया,
इक दूजै पर दोऊं रीझ रया।।
ज्यूं होठ हिलै त्यूं सांस चलै,
पुनि हाथ बढै धड़कै छाती।
सरमाणै री है बात किसी,
जद इक दूजै रा म्हे साथी।।

चांदणी रात मांय चालतां दोन्यूं वर–वधू आपरा भविस रा सुपना संजोय रैया हा। इतरै में काळ रै रूप मांय दुस्मण आय जावै। जुद्ध रौ संखनाद बाज जावै। हाथी चिंघाड़ै, घोड़ा हींसै, म्यानां सूं तलवारां बारै आय जावै, तकड़ौ कजियौ हुवै। सार्दुल रै सागै कोडमदे ई आपरी सरम छोड'र वीरां रै समान जुद्ध में उतर जावै–

बादळ गाज्यौ, अंबर कांप्यौ,
फिर एक बार हुंकार उठी।
वर और वधू रै हाथां में,
प्रलयंकारी तलवार उठी।।
खुल दूर पड़्यौ कांगण डोरौ,
बहग्यौ सिंदूर पसीनै में।
मैंदी रौ हाथ कटारी लै,
चलग्यौ कितणां रै सीनै में।।

पण होणी नैं कुण टाळ सकतौ हौ। वीर सार्दुल वीरगति नैं प्राप्त हुयौ। अेक नूंवी नवेली ब्याहता री आंख्यां सांमी उण रौ सुहाग लुट जावै तौ उण री कांई दसा हुवै, पण इण मिथक नैं तोड़'र राणी कोडमदे री आंख्यां सूं अेक आंसू ई कोनी ढळक्यौ–

लुट गयौ सुहाग रणदेवी रौ,
पण अेक नहीं आंसू ढळक्यौ।
गमगमाट करतौ मुख सुंदर,
ज्यूं भोर हुई त्यूं–त्यूं भळक्यौ।।

अेक वीर क्षत्राणी री इतरी ओजता अर वीरता री विड़द गाय'र कवि कोडमदे नैं अमिट बणाय दियौ। कोडमदे आपरै पति रै सागै सती होवण रौ प्रण पाळै। पण सती होवण सूं पैली वा आपरौ अेक हाथ काट'र आपरै सासरै इण हरख सागै भेजै कै उणरी सासू ड्योढी माथै खड़ी उणरौ मारग जोवती होसी। उणरै पछै दूजौ हाथ आपरै बाबल नैं भेजण खातर आपरै सैनिक नैं काटण रौ आदेस दियौ पण सैनिक रौ हियौ कांप जावै। राणी गरजती थकी सैनिक नैं आदेस देवै अर दूजै ई पळ हाथ कट'र अळगौ होय जावै।

धणी रौ अचाणचक हमलै में मार्‌यौ जावणौ, कोडमदे द्वारा आपरा दोनूं हाथ काट'र भेजणा अर नूंवी ब्याहता रौ सती होवणौ तीनूं ही करुण प्रसंग है। राणी कोडमदे सोचै कै जिण हाथ नैं ब्याह री वेळा बाबल सार्दुल नैं सूंपै वो सार्दुल ई उणनैं छोड़'र दूर देस बस जावै तौ अै हाथ कांई काम रा ?

बोली– बाबल ही दान कर्‌यौ,
पति नैं यो हाथ, हाथ में लै।
पण पिया बस्यौ जा दूर देस,
कै करस्यूं हाथ साथ में लै।।

अेक वीरांगना री इत्ती गैरी सोच, आपरै धणी रै खातर अथाग हेत राजस्थानी वीर परम्परा अर संस्कृति री अेक लूंठी बानगी है। कवि मुकुल सिणगार वरणन रै सागै वीर अर रौद्र रस सूं सराबोर कर'र इण कविता सूं नारी रै भावां नैं सिरमौड़ ठौड़ दी है।

मुकुलजी री नारी–चेतना माथै आधारित काव्य रचना है– ykjh। गरीबी रै कारण अेक मां आपरै टाबर रौ पेट भरणै में अपणै आप नैं बेबस मानै। बा कैवै–

दूधौ कियां पियाऊं ओ लाल ?
तन्नै कियां जियाऊं ओ लाल ?

आज री अफसरसाही माथै कवि गै'री चोट करी है। कवि रौ कैवणौ है कै पैली मिनख नैं काम रै बदळै खूब दाम मिळिया करता हा। घर में सगळा पेट भर सुख री रोटी खावता, पण आज न जाणै कांई हुयौ है कै इण सुख रै आगै अेक पाळ बंध'र रैयगी। कवि कैवै–

मैं कुणबै में बहू बणी थी,

सासु सुगणी भली घणी थी;
पोस्यो, पोयो पाणी ल्याती
मन न धापतौ इतणौ खाती;
दूधां न्हाती, पूतां फळती
दही बिलोती, सुख में पळती;

पण कवि आज री स्थिति नैं दरसावतां लिखै–

आज न बै दिन मिलै उधार
सूख गई आंचल में धार;
अब सुख आगै बंधगी पाळ
दूधौ कियां पियाऊं ओ लाल?
तन्नै कियां जियाऊं ओ लाल?

कवि कविता रै सारै सूं बतावै कै दफ्तर में अफसर खूब खावै। मिनख रो सगळौ लोही चूस लेवै। अेक भूखौ मिनख आखर कद तांई भूख सूं लड़तौ काम करैला ? कवि कैवै–

मैं जाणूं पति कितौ कमावै ?
दफ्तर में अफसर खावै;
भूख रौ माथौ गरणावै
लिखतां लिखतां नस तरणावै;

आखर में उण नारी रौ धीरज छूट जावै। वा आपरै धणी मांय चेतना जगावती थकी उण सूं कैवै–

आज भंवर मत घरां पधारौ
जोर नहीं मरती रौ म्हारौ;
मन्नै नहीं दुख, मैं तौ जाऊं
धरती नैं चेतन कर जाऊं;
अब तो बिजळी बेगी पड़सी
मिनखां रा बैरी सै बळसी;

इण तरै दुखां री रात कटै अर नूंवै परभात मांय मिनख में चेतना जागै। वा नारी आपरै मिनख रै सागै टाबरां मांय ई चेतना जगावै अर अन्याय सूं लड़णै रौ साहस देवै। निबळी जनता मांय नूंवी चेतना जगाय'र सबळ बणावण रौ काम वा नारी करै।

इण तरै कवि मुकुल आपरी कवितावां रै सहारै अैड़ी वीरांगनावां री विड़द–गाथा गाई है जकी आज ई अखियातां में चावी है अर जन–जन सारू प्रेरणा री पुंज बण्योड़ी है।

12-7 uoi.k jk fgek;rh

कवि नैं सदीव बगत रै सागै–सागै आपरै काव्य मांय बदळाव करतौ रैवणौ चाइजै। जकै कवि री कविता में बगत री चाल री पिछाण नीं हुवै, बगत नैं बदळण री खिमता नीं हुवै अर नूंवै भावां नैं पकड़ण री खिमता नीं हुवै तौ वा कविता निमळी अर भावहीण हो जासी। भावहीण कविता सदीव पांगळी हुया करै। पांगळी कवितावां बदळाव री दौड़ में खासी लारै रैय जावै। सिरजण री चिणगारी रै बिना चेतना री आग कियां लागै।

मुकुलजी रौ मानणौ हो कै कविता आत्मा रौ रस अर जीवण रौ सार है। इण खातर आ जे रास्तौ भटकगी तौ जीवण रसहीण, गंधहीण अर सारहीण हुय जासी। आजादी रै पछै मुकुलजी री कवितावां में आजादी रौ हरख–बधावौ तो हो ही, पण सागै आम आदमी नैं जगावण रा सुर ई हा। आजादी रै पछै जका सुपना

आम आदमी देख्या हा, बै सगळा स्वारथी राजनीति अर अफसरसाही रै आगै धरासाई होयग्या। मिनखां बिचाळै पनपती खटाई नैं खतम करण री बात मुकुलजी रै काव्य मांय दिखण लागी। बखत रै मुजब आपरौ काव्य नारी रौ सिणगार अर उणरै विड़द नैं छोड'र नवजुग में मिनखाचारै रौ पाठ पढावण लाग्यौ। कवि आजादी री आरती आपरै काव्य सूं करी।

कवि 30 मार्च, 1968 नैं राजस्थान दिवस रै दिन ^fdjR;k* नांव री पोथी रो लोकार्पण करायौ। उण बगत तांई भारत आजाद होयां नैं 21 बरस होयग्या। बदळाव नैं अंगेजण वाळा कवि मुकुल इण री भूमिका में लिख्यौ, ''किरत्यां राजस्थानी भासा में म्हारी दूसरी पोथी है। ईं में सब तरै री कवितावां है, पण पुराणी कवितावां नैं घणी जगां कोनी दी है। पुराणै सिल्प नै अलबत थोड़ौ आराम दियौ है। नयैपण रै जोस में बीचरकै इसा नारा नीं दिया है, जिका नई कविता री आड़ लेय'र कविता रै डौळ नैं सूगलौ कर दै। भावां री किरण में केई रंग है, पण एक–एक रंग आपरै रूप में निखरयोड़ौ है। 'सैनाणी' री याद लोगां नैं आज भी आवै है, पण पुराणौ सामंती स्वाद वरतमान परिस्थितियां रै अनुकूल नीं है अर अब तो पाठकां नैं 'सैनाणी' सूं अळगौ स्वाद चाखणौ पड़सी। जुग री मांग भी इसी बण रैयी है।

....किरत्यां में माणस रै मन रौ रस मोकळौ मिळसी पण कुमाणस वास्तै सूग ई सूग पांती आई है। जे बखत मोड़ ले लियौ तौ कुण जाणै काल पछै के होसी ?....किरत्यां में संघर्ष रौ जबरौ उछाळौ है। अेक–अेक कविता में झूंझळ घुरियां काढै है। आंख्यां री सुरखी जद तांई न्याव रै सूरज री लाली नीं लावै, इत्तै बणी रहसी। वर्तमान हालचाल भी कीं इसा ई दीखै है। सारौ रास्ट्र भभक रैयौ है। लाचारी री आंख्यां सूं भी चिणगारी ऊपड़ै है। जागां–जागां जठै झूठी ऊंचाई है, बठै रास्ट्र रौ चरित्र गंदगी सूं भरयौ पड़्यौ है। कवि इसै बखत में न गीत गावै है, न सिल्प रै फेर में झूठा करतब दिखावै है। बात सीधी कैंणी अर गरिमापूरण कैंणी।....कल्पना रंगीन नीं होवै तौ कोई बात नीं, सांच रै सागै तौ रैवै है। अन्याय नैं तौ ललकारै है।''

कवि साचाणी में आपरै हियै री बात खोल'र सांमी राख दी है। कविता जे रसहीण होवैला तौ वा आपरै मारग सूं भटक जावैला। कवि रै मुजब सबदां नैं तोड़–मरोड़'र अर तुकबंदी रौ सारौ पाय'र काव्य रौ सिरजण करणौ आछी बात कोनी। जकी कविता धड़कण तांईं नीं पूग सकै वा काळजयी कोनी रैय सकै। मुकुलजी री कवितावां आधुनिक जुग रै मांय जथारथ नैं जीवंत करै। आम आदमी दिन–भर काम करै पण उणरै हाथ कीं नीं लागै। देस रै मांय पड़तौ काळ, ऊपर सूं कुमाणसां रौ बोलबालौ, इण सबसूं सावचेती रा भाव कवि आपरी कवितावां में दिखाया है। बानगी देखौ–

चूंचाड़ी लागैगी थारै अरे कुमाणस !
तूं धरती जायौ होकै भी
धरती रा माणस खा जावै।
धरम ओट ले, सबद पोट ले, हिये खोट ले
घी में गळग्या/नरम वोट ले
अणछाण्यौ पी जावै रगत आज माणस रौ
और भूख भोभर में बैठी
सिकै अमीरी रै चूल्है में।

इण तरै मुकुल री कविता मांय और भी अलेखूं रंग मिळै पण नूंवै भावबोध नैं बगत सारू बदळण रा भाव वांरी रचनावां में ठौड़–ठौड़ देखण नैं मिळै।

12-8 bdkbZ jk lkj

मेघराज मुकुल आधुनिक राजस्थानी साहित्य रा आगीवाण कवि हा। आप अैतिहासिक पात्रां नैं सहारौ बणाय'र पद्यकथा रौ सिरजण करण में पारंगत कवि हा। इणरै सागै ही आप प्रगतिसील काव्यधारा रा सबळ अर किसान–मजूरां रा हितैसी कवि हा। आप प्रगतिसील सुर नैं वाणी देवण सारू प्राकृतिक

प्रतीकां रौ सहारौ लियौ हौ। आपरी 'डांफर' इण विगत री सिरमौर रचना है। मुकुलजी री 'छिंयां–तावड़ौ' कविता मांय छियां नैं 'धनवान' अर तावड़ै नैं 'गरीब' रौ प्रतीक मानीज्यौ है। सोसक अर सोसित रै भेद नैं प्राकृतिक प्रतीकां सूं बांध्यौ है। सामाजिक कृति होवण रै कारण बळिदान कथावां लिख'र आप कमजोर समाज मांय प्राणां रौ संचार कर्‌यौ। जद देस आजाद होयौ तौ अबूझ लोगां नैं आजादी रौ मैतब बतायौ, नूंवा–नूंवा सपना दिखाया। जद देस अर समाज में भ्रस्टाचार फैलण लाग्यौ तद आपरी कविता गैराई लेवण लागी। कवि नूंवी कविता नैं अंगेजियौ भी है। साच में मुकुल री कविता आपरौ जुग जीयौ है। राजस्थानी कविता में मुकुलजी री ठावी ठौड़ है।

मुकुलजी नीं फगत नूंवै जुगबोध रा कवि हा बल्कै बै कवि–सम्मेलनां रै मंच रा भी सबळ हस्ताक्षर हा अर उणां री तुलना हिन्दी रा रास्ट्रीय कवियां सूं करीजती। हिन्दी रा कवि–सम्मेलनां में ई मुकुलजी राजस्थानी रौ प्रतिनिधित्व करता रैया अर हिन्दी श्रोतावां नैं ई मुकुलजी री सैनाणी अर दूजी रचनावां ऊंडै तांई प्रभावित करती। बिंयां भी मुकुलजी राजस्थानी अर हिन्दी दोनूं ई भासावां में आपरी कवितावां सिरजी अर रास्ट्र स्तर पर थापित हुया। दिनाजपुर राजस्थानी सम्मेलन सूं उठाव लेवण वाळा कवि मेघराज मुकुल आपरी राजस्थानी कवितावां रै पाण आखै देस में आपरी न्यारी–निरवाळी पिछाण बणाई।

मुकुलजी हिन्दी अर राजस्थानी नैं लेय'र कदैई दोघाचिंती में नीं रैया। इणी कारण उणां रै कविता–संग्रां मांय हिन्दी अर राजस्थानी दोनूं ई कवितावां अेकै सागै छपती। वै इण बात नैं चोखी तरै जाणता हा कै राजस्थानी या किणी प्रांतीय भासा रै सबळ होयां ई हिन्दी रौ हित होय सकै है। वांरौ औ सोच घणौ लाजमी अर आज भी प्रासंगिक है। साचै अरथां में मुकुलजी हिन्दी अर मातृभासा राजस्थानी रा हिमायती अर परिपक्व कवि हा।

12-9 vH;kl lk: loky

lks NkVk loky

1. मेघराज मुकुल री सुप्रसिद्ध कविता रौ नांव कांई है ?
2. 'सैनाणी' कविता कुण–सै पात्र माथै केन्द्रित है ?
3. 'कोडमदे' किण कवि री रचना है ?
4. मेघराज मुकुल री कविता 'सैनाणी' रौ अंगी–रस कांई है ?
5. राजस्थानी कविता–संकलन 'अलगोजो' किण बरस में छप्यौ ?
6. मेघराज मुकुल री सैनाणी सगळां सूं पैलां कुणसै सम्मेलन में प्रसिद्ध हुई ?
7. मेघराज मुकुल रै हिन्दी कविता–संग्रै रौ नांव कांई है ?
8. 'किरत्यां' किण कवि री रचना है ?
9. मेघराज मुकुल रौ जलम किण जिलै में हुयौ ?
10. मेघराज मुकुल रै पैलै काव्य–संग्रै रौ नांव कांई है ?

NkVk loky

1. राजस्थानी कवि–सम्मेलन में मेघराज मुकुल रै सागेड़ी च्यार कवियां रा नांव बतावौ?
2. आजादी री अलख जगावणिया राजस्थानी कवि कुण–कुण हा ?
3. मेघराज मुकुल रौ नूंवै जुगबोध री कविता बाबत कांई विचार हो ?
4. राजस्थानी काव्य–संकलन 'अलगोजो' मांय मुकुल री कुण–कुण सी कवितावां छपी?
5. मुकुलजी री कविता 'सैनाणी' री प्रसिद्धि रौ खास कारण कांई हौ ?
6. मेघराज मुकुल रै काव्य–संग्रह रा कांई–कांई नांव है ?

7. 'अलगोजो' रा संपादक स्रीमंत व्यास मुकुलजी बाबत कांई लिख्यौ है ?
8. मुकुलजी री तुलना हिन्दी रा कुण–कुण सा कवियां सूं करीजै ?
9. सैनाणी कविता रै पात्रां रा नांव कांई है ?
10. आपरै काव्य–संग्रै 'किरत्यां' री भूमिका में मुकुलजी कांई खास बात लिखी है ?

cMk loky

1. मुकुलजी राजस्थानी कवि–सम्मेलन रा लूंठा हस्ताक्षर हा। खुलासौ करावौ?
2. 'सैनाणी' कविता में हाडी राणी री वीर–भावना रौ मार्मिक चित्रण हुयौ है। सिद्ध करौ?
3. नूंवै जुगबोध री कवितावां बाबत मुकुलजी रौ कांई सोच हौ ? विस्तार सूं लिखौ।
4. 'कोडमदे' कविता रौ कथानक आपरै सबदां में लिखौ?
5. मेघराज मुकुल रै राजस्थानी काव्य–सिरजण री विरोळ करौ?

12-10 egrkÅ ikF;k

1. उमंग (कविता–संग्रै) : मेघराज मुकुल
2. अनुगूंज (कविता–संग्रै) : मेघराज मुकुल
3. किरत्यां (कविता–संग्रै) : मेघराज मुकुल
4. अलगोजो (राजस्थानी गीत–कविता संग्रै) : संपादक स्रीमंत कुमार व्यास
5. राजस्थान का स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी काव्य, बीकानेर के संदर्भ में : बनवारी लाल साहू
6. राजस्थानी भासा और साहित्य – डॉ. मोतीलाल मेनारिया
7. राजस्थानी भासा एवं काव्य – डॉ. कल्याणसिंह शेखावत